File No. -CCRT/JF-3/51/2015

COMPLETE PROJECT REPORT

For the period ended on 31ST December 2017.

आधुनिक मैथिली गीतिकाव्य ओ परम्परा

Aadhunik Maithili Geetikavya O Parampara

चन्दन कुमार झा

Chandan Kumar Jha

Enrollment No: JF20140268

Junior Fellowship-2013-2014

Field:-**Literature,** Sub Field:-**Maithili**

Scheme for Award of Fellowship to Outstanding Persons in the Field Of Culture for the year 2013-14.

Centre for Cultural Resources and Training

Ministry Of Culture, Govt. Of India

विषय सूची

***विषय-प्रवेश*: पृष्ठ संख्या-** **1-10.**

मानव जीनवमे गीतिकाव्यक महत्व, मैथिली गीति-परम्पराक स्रोत परिचय, आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यक विकास परम्पराक परिचय।

प्रथम अध्यायः गीतिकाव्यक उद्भव ओ विकास, पृष्ठ संख्या- **11- 26.**

गीतिकाव्यक उद्भव, गीतिकाव्यक परिभाषा, गीतिकाव्यक विशेषता, गीतिकाव्यक भेद, भारतीय गीतिकाव्यक परम्परा, जयदेवक गीतगोविन्द, पालि तथा प्राकृत गीतिकाव्य।

***द्वितीय अध्याय: मैथिली गीतिकाव्यक परम्परा,* पृष्ठ संख्या:-** **27-55.**

प्राचीन मैथिली गीतिकाव्यक स्रोत-ग्रन्थ, चर्यापद, प्राकृत पैंगलम, धूर्तसमागम आ वर्णरत्नाकर आदिमे मैथिली गीतिकाव्य, विद्यापति पदावली, विद्यापतिक समकालीन ओ परवर्ती कवि, मैथिली गीतिकाव्यक विकासमे मध्यकालीन नाटकक योगदान, पूर्वांचलीय गीतिकाव्य।

तृतीय अध्याय : आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यक विकास, पृष्ठ संख्या- **56- 65.**

आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यक पृष्ठभूमि, आधुनिक गीतिकाव्यक उन्मेष, युगप्रवर्त्तक कवीश्वर चन्दा झा।

चतुर्थ अध्याय: बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्धक मैथिली गीतिकाव्य,पृष्ठ संख्या- **66-81.**

पृष्ठभूमि, मैथिली गीतिकाव्यक राष्ट्रवादी स्वर, मैथिली गीतिकाव्यमे छायावाद,मैथिली गीतिकाव्यमे प्रगतिवाद आ प्रयोगवाद।

पंचम अध्याय : बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्धक मैथिली गीतिकाव्य, पृष्ठ संख्या- 82- 100.

मैथिली नव कविता आ नवगीतक विकासक पृष्ठभूमि,नवगीतक उद्भव ओ विकास, नवकविता ओ नवगीतमे अंतर,नवगीतक विषयगत वर्गीकरण, मैथिली गजल, आधुनिक भक्ति-गीति।

षष्ठ अध्याय: समकालीन मैथिली गीतिकाव्य,पृष्ठ संख्या- 101-109.

एकैसम शताब्दीमे मैथिली गीतिकाव्य, समकालीन मैथिली गीतिकाव्यक स्वर-वैविध्य, समकालीन मैथिली गजल।

सप्तम अध्यायः प्रतिनिधि गीतकार आ गीत-संग्रह, पृष्ठ संख्या- 110- 124.

कविवर जीवन झा, यदुनाथ झा “यदुवर”, सीताराम झा, भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', काशीकान्त मिश्र 'मधुप', प्रो. ईशनाथ झा, आरसी प्रसाद सिंह, उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', मायानन्द मिश्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, गंगेश गुंजन, मार्कण्डेय प्रवासी, शान्ति सुमन, सियाराम झा 'सरस', बुद्धिनाथ मिश्र, जगदीशचन्द्र ठाकुर 'अनिल', चन्द्रमणि आदि।

उपसंहार: पृष्ठ संख्या- 125- 128.

सहायक ग्रन्थ सूची- पृष्ठ संख्या- 129-133.

विषय-प्रवेश

गेयता मनुष्यक आदिम प्रवृति थिक आ गीतिकाव्य मानवक सहजात। मानवीय भावोद्रेकक जतेक घनिष्ठ सम्बन्ध गीतिसँ छैक ततेक वाणीक कोनो आन रूपसँ नहि। सुख अथवा शोक, चिन्तन अथवा हर्षोल्लास, जीवनक प्रत्येक अवस्थामे मनुष्यकेँ गीतिक अवलंबन प्राप्त होइत रहल अछि। हर्ष अथवा विषादक क्षणमे, जखन कखनहु मनुष्यक चेतना स्पन्दित होइत छैक, ओकर ठोर हिलैत छैक, तखन-तखन ओकर सुख वा दुःखानुभूति गीतेक माध्यमे अभिव्यक्त होइत अछि। मनुष्य अपन नेना अवस्थाक अचेतनतहुमे गीतक प्रति आकर्षित होइत अछि। पश्चात् जीवनक विभिन्न अवस्थामे सेहो गीत ओकरा शोकमुक्त करैत छैक, सुखानुभूतिक अभिव्यक्तिक क्षमता प्रदान करैत छैक, ओकर चिन्ताकेँ चिन्तनमे परिवर्तित करैत छैक, सर्वोपरि जीवन-संघर्षक सम्बल बनैत छैक।

अर्थात् गीतिकाव्यक जन्म मानसक विशुद्ध भाव-भूमिपर भेल अछि। ई भाव-भूमि असीम अछि, अनन्त अछि। इएह कारण थिक जे आदिकवि वाल्मीकिसँ लऽ कऽ आइ धरि कवि लोकनि गीतिक रचना कऽ रहल छथि, मुदा एकर भाव-भूमिक नवीनता अक्षुण्ण अछि।[1] गीतिकाव्य भारतीय वाङ्मयक सर्वाधिक प्रचलित, लोकप्रिय, हृदयग्राही आ प्रशंसित विधाक रूपमे अपन स्थान बनओने अछि।

गीतिकाव्यक इतिहास ओतबे पुरान अछि जतेक मानव-जातिक सभ्यता। मानव जीवनमे एकर महत्ता एहीसँ प्रमाणित होइत अछि जे आदिम युगसँ आइ धरि मनुष्यक सुख-दुःख, आस-नैराश्य, हर्ष-विषाद, उत्थान-पतन, आस्था-अनास्था, सफलता-असफलता, युग-जीवनक जटिलता, टीस तथा वेदनाकेँ गीत हजारो-हजार वर्षसँ अभिव्यक्त करैत आबि रहल अछि। अनुकूल वा विपरीत परिस्थितिमे, शरीरश्रम कि विश्रामक्षणमे किंवा संघर्षक पथपर डेग-डेगपर वा सफलताक आनन्दातिरेकमे, वस्तुतः जीवनक प्रत्येक मोड़पर गीति मानव-मनकेँ अपन सुकोमल ओ कमनीय प्रभावसँ स्पंदित-आनन्दित करैत रहैत अछि। एहि प्रकार कहब अतिशयोक्ति नहि होयत जे गीतिकाव्य मानव सभ्यताक विकासक ओ दर्पण थिक जाहिमे मानव जातिक सुख-दुःख, वैयक्तिक भाव, संवेग आओर इच्छा-व्यापारक व्यापकता प्रतिबिंबित होइत अछि।

जीवनमे गीतक महत्वकेँ रेखांकित करैत एलेन लोमैक्स कहने छथि- लोकजीवनक उदय, विकास एवं समस्त विस्तारक हेतु गीति अत्यावश्यक अछि। ई लोकमे सुरक्षाक भावना दृढ. करैत अछि। एहिमे लोकक जीवन एवं लोकक भूमि जादू जकाँ समाहित एवं गुंजित रहैत छैक। ओ लोककेँ अपन समुदायमे, अपन स्थानपर नाचब, पूजा करब, लड़ब अथवा प्रेम करबाक भावनाकेँ जगा कऽ तैयार करैत अछि।[2]

मनुष्य विविध कलाविधा यथा- साहित्य, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला आदिक माध्यमे अपन मनोभाव आ विचार संसारक समक्ष प्रस्तुत करैत अछि । यद्यपि ओ संसारसँ फराक सोचैत-विचारैत अछि तथापि समाजक समक्ष अपन विचार प्रकट करबाक लेल ओकरा आतुरता रहैत छैक । मानवक सुख-दुखक अभिव्यक्तिक इएह अनिवार्यता साहित्यक कारण मानल जाइत अछि । मानवीय अभिव्यक्तिक क्षिप्रतम ओ तीव्रतम माध्यम रूपमे काव्यक उपयोगिता सर्वसिद्ध अछि । कवितामे जीवन आ जगतक परस्पर रागात्मकता अभिव्यक्त होइत अछि । एकर अभिव्यंजनाक परिधि ततेक सूक्ष्म ओ विशाल होइत अछि जाहिमे जीवनक सर्वाधिक प्रभावशाली ओ सचित्र व्याख्या सम्भव होइत अछि । आ तेँ कविताकेँ शब्द-जीवन सेहो कहल गेल अछि । एहिमे जीवनक विभिन्न स्तर, विभिन्न परिस्थिति ओ विविध अंतर्दशाक तीव्रतम अभिव्यक्ति होइत अछि। भावक तीव्रताक आधारपर विभिन्न साहित्यिक विधाक प्राचीनता सिद्ध होइत अछि। पद्यमे गद्यक अपेक्षा अधिक तीव्रानुभूति होइत अछि । अतः पद्यकेँ गद्यक अपेक्षा प्राचीन मानल गेल अछि । तहिना पद्य साहित्यक मध्य गीतिकाव्यक भाव-तीव्रता सर्वाधिक होइत अछि । अतः गीतिकाव्य प्राचीनतम काव्यप्रकार थिक आ लोकगीत गीतिकाव्यक आदि स्वरूप ।[3] लैटिन तथा अंग्रेजी साहित्यक अमेरिकी विद्वान एच.टी.पेक (Harry Thurston Peck) अपन पोथी Studies In several Literatures' मे Tennyson'क गीतिकाव्यपर विचार करैत लिखैत छथि- गीतिकाव्य कविताक सर्वाधिक सहज प्रकार होयबाक कारणे निश्चित रूपसँ सर्वप्रथम उत्पन्न भेल, आन-आन चेष्टाजन्य रूप निश्चिते एकर बाद आ एहीसँ उत्पन्न भेल ।[4] ध्यान देबाक थिक जे श्री पेक गीतिकाव्यकेँ अन्य काव्यविधा मध्य मात्र प्राचीनतम नहि मानैत छथि अपितु ओकरा सभक उद्गम-स्रोत सेहो कहैत छथि ।

साहित्य रचनाकेँ स्थूल रूपसँ दू-भागमे विभाजित कयल जाइत अछि- गद्य आओर पद्य-**गद्यं पद्यं च तद्विधा** । प्रथम अंग ज्ञानक विस्तारक लेल अनुकूल अछि तथा दोसरमे भावक प्रभावोत्पादक प्रकाशन होइत अछि । इएह पद्य रचना जखन संगीतमय भऽ जाइत अछि तऽ गीतक उत्पति होइत अछि जतय भावक रागमय विकास होइत छैक । अतः गीतिकाव्यकेँ संगीतक चरम सीमा मानल जाइत अछि । गीत, संगीत-प्रधान काव्य थिक जाहिमे कवि अपन रुचिक अनुरूप छन्दक प्रयोग करैत छथि । संगीत छन्दक कारण उत्पन्न होइत अछि । शब्दक चयन तथा संयोजनसँ संगीत विशेष उत्पन्न भऽ जाइत अछि ।[5]

गीतिकाव्यक रागात्मकता ओ लयात्मकताक विषयमे पं. सुमित्रानन्दन पंतक मत छनि-रागक अर्थ आकर्षण थिक । ई ओ शक्ति थिक जकर विद्युत स्पर्शसँ आकर्षित हम शब्दक आत्मा धरि पहुँचैत छी, हमर हृदय ओकर हृदयसँ मिलि कऽ एकभाव भऽ जाइत अछि । जाहि प्रकार शब्द एक दिस व्याकरणक कठिन नियमसँ बद्ध होइत अछि तहिना दोसर दिस रागक आकाशमे चिड़ै जकाँ स्वतंत्रो होइत अछि । जतय रागक उन्मुक्त स्नेहशीलता आओर व्याकरणक नियमवश्यतामे सामञ्जस्य रहैत अछि ओतय शब्दक अंग-विन्यास तथा मनोविकास स्वाभाविक आओर यथेष्ठ रीतिसँ होइत अछि ।[6]

परमानन्द शास्त्री गीतिकाव्यकेँ रेखाचित्रसँ तुलना करैत एकर वैशिष्ट्यक निरूपण कयलनि अछि- गीतिकाव्य एक रेखाचित्र थिक जकर अभिव्यक्तिक माध्यम किछु गनल-चुनल रेखा अछि । गीति-चित्रकार रेखाक सुविधानुसार मनमाना प्रयोग नहि कऽ सकैत अछि । ओकरा सामञ्जस्य आओर संतुलनक लेल पूर्णतया

सजग रहय पड़ैत छैक। एकहुटा रेखाक कमी भेल कि चित्रमे अपूर्णता झलकय लगैत अछि आओर जँ एकहुटा रेखा अधिक भेल तँ चित्रमे विकृति आबि जाइत छैक। मात्र संतुलित संस्पर्शसँ चित्रमे जीवन्तता अबैत अछि। एहिना गीतिकाव्यमे अनुभूतिक अभिव्यक्ति किछुये संकेतसँ करय पड़ैत अछि। इएह कारण थिक जे गीतिकाव्यमे कविक मौलिक अनुभूति धरि पहुँचबामे अधिक व्यवधान नहि होइत अछि आओर पाठकसँ ओकर प्रत्यक्ष सम्पर्क भऽ जाइत छैक।[7]

भारतीय वाङ्मयमे साहित्य आओर संगीतक सम्बन्ध अटूट अछि। पाश्चात्य विद्वान लोकनि सेहो गीतिक लयात्मकताकेँ एकर प्रधान तत्व मानलनि अछि। एडगर पो कविताकेँ सौन्दर्यक संगीतमय सृष्टि कहलनि अछि।[8] वस्तुतः आदिम युगमे संगीत, गीति तथा नृत्यगीतमे भेद नहि छल। मुदा सभ्यताक विकासक क्रममे एकर भेद भेल अछि। डॉ. जयकान्त मिश्र संगीत ओ गीतक सम्बन्धक विषयमे कहने छथि- "भारतीय संगीतक ग्रन्थ सभमे जे गीतिकाव्यक चर्चा देखैत छी से विश्वभरिक गीतिकाव्यहुक विकासमे देखैत छी- की ग्रीसमे, की रोममे, ओ की मिस्र देशमे। सर्वत्र गीतिकाव्यक उदय धार्मिक संगीतहिक संग भेल छैक। उचितो छल जे ईश्वरक भावनाक रूपमे व्यक्त करैत जे संगीतक विकास होइत छैक तकरे फलस्वरूप गीतिकाव्यक जन्म हो। इएह क्रम भारतवर्षोमे भेल से बुझाइछ। जखन कखनो अपन दैनिक व्यावहारिक कार्य वा चेष्टा सभसँ मनुष्य उठैत छल होयत-भाव-विभोर भऽ संगीतक आधार पबैत छल होयत- तँ स्वाभाविक थिक जे ओ गीत बनबैत छल होयत- इएह लोक संगीतक एवं लोकगीतक परम्परा बनबैत छल होयत,...एहीसँ गीतिकाव्यक जन्म भेल होयत।[9]

मानव-सभ्यताक प्रारंभिक अवस्था, जहिया मनुष्यकेँ शब्दक महत्व नहि बूझल छलैक, लय-ताल सम्बन्धी अज्ञानता छलैक, ताहि समयमे कोनो आवेगमय भावात्मक अवस्थामे जखन ओ किछु गाबि उठल होयत, लोकगीतक जन्म ओतहिसँ भेल अछि। लोकगीत विश्वक समस्त शिष्ट-साहित्यक ओ आधार थिक जाहिसँ विलग विश्वक कोनो भाषा-साहित्यक उद्गमक कल्पना नहि कयल जा सकैत अछि। वस्तुतः लोकगीत मानवक काव्यात्मक अभिव्यक्तिक प्रथम सोपान थिक। लोकगीतक निर्माण प्रक्रियामे सर्वप्रथम लोकधुनक निर्माण भेल, पछाति ओहिमे शब्द ओ विचारक महत्व क्रमशः बढ़ैत गेल।

लोकगीतक विकासक अध्ययनसँ ई सिद्ध होइत अछि जे भिन्न-भिन्न भूमि-खण्डमे व्याप्त संस्कृति, धर्म, आस्था, परम्परा आओर क्रिया-कलापक भाव-चित्र रूपमे विशुद्ध जनतांत्रिक हृदयक भावोच्छवाससँ एहि गीत सभक जन्म भेल। ई प्रारम्भिक अवस्थामे लिपिबद्ध नहि, अपितु जनकंठमे प्रवाहित भेल। एहि गीत सभमे जतय प्राचीन संस्कृति आओर जीवन-स्वरूपक दर्शन होइत अछि, ओतहि चिर-नवीन शाश्वत भावधाराक चित्र सेहो भेटैत अछि। इएह जनकाव्य साहित्यिक इतिहासक पहिल पन्ना थिक। एहि गीत सभक सरलता-तरलता एकरा जनकण्ठमे उतारि दैत अछि। निरलंकृत होइतहुँ ई गीत सभ सहज-सुन्दर अछि।[10]

मिथिलाक सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवनमे गीत-संगीतक परंपरा हजारो वर्षसँ अविच्छिन्न रूपेँ प्रवहमान अछि। मैथिली साहित्यक विकासमे गीति-साहित्यक सर्वाधिक योगदान अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे आदिकालसँ आधुनिक काल धरि मैथिली साहित्येतिहास गीतिमय रहल अछि। विविध विषयक अजस्र

मैथिली लोकगीत ओ महाकवि विद्यापति रचित असंख्य पद मैथिली गीति-साहित्यक प्राचीनता ओ समृद्धिक सर्वोत्तम उदाहरण थिक।

विविध प्रकारक मैथिली लोकगीतक अपन विशिष्ट गायन शैली अछि जकरा भास कहल जाइत अछि। गायन पद्धतिक रूपमे भास, रागक समकक्ष मानल जाइत अछि। अर्थात् जहिना राग विशेषक संगीत-संरचनामे स्खलन अस्वीकार्य अछि तहिना भास विशेषक स्वर-संयोजन सेहो निर्धारित होइत अछि आ तकर पालन गायक लोकनिक लेल आवश्यक होइत अछि।

मैथिलीक पारम्परिक गीति-साहित्यमे मिथिलाक ग्राम्य-जीवनक सहज-सरल मनोभावक तीव्र अभिव्यक्ति भेल अछि। मैथिली लोकगीतमे सामाजिक तथा पारिवारिक जीवनक सुख, दुःख, प्रेम, करुणा आदिक मर्मस्पर्शी चित्रण भेल अछि। कन्यादानक पीड़ा, वैधव्यक शोक, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह आदिक उत्पीड़न प्रभृति विषयक समावेश एहि गीत सभमे भेल अछि। रवीन्द्रनाथ ठाकुरक मतानुसार-वस्तुतः मैथिलीमे जे गीत लोकगीतक नामे प्रचलित अछि से प्रगीतक कोटि केर गीत थीक। एहिमे सम्बोधन वैयक्तिकता, मन उमकय तऽ गाबी गीतक परिणामस्वरूप अन्तःस्फूर्त्ति, तन्मयताभावमयता, संगीतात्मकता, गति, प्रवाह सब विद्यमान रहैछ।"[11] विविध संस्कार गीत, देवी-देवताक गीत, ऋतुगीत, व्रत-त्योहार सम्बन्धी गीत, श्रमगीत, शिशुगीत आदि मैथिली लोकगीतक अनेक प्रकार भेटैत अछि। डॉ. जयकान्त मिश्र मैथिलीक एहि पारम्परिक गीतिकाव्यकेँ सात वर्गमे विभाजित कयने छथि-1. भजन 2. देवी-देवताक गीत 3. पावनिक गीत 4. सोहर 5. संस्कार गीत 6. समैया गीत आओर 7. लगनी।[12] डॉ. अणिमा सिंह अपन पोथी 'मैथिली लोकगीत'मे सेहो मैथिलीक पारम्परिक गीतिकाव्यकेँ सात वर्गमे वर्गीकरण कयने छथि- 1. देवी-देवताक गीत 2. व्रत आओर सामयिक उत्सवक गीत 3. संस्कार सम्बन्धी गीत 4. विवाह संस्कार सम्बन्धी गीत 5. ऋतु सम्बन्धी गीत 6. श्रम सम्बन्धी गीत एवं 7. विविध प्रकारक गीत। मुदा हिनक वर्गीकरण कनेक भिन्न अछि। एहि वर्गीकरणमे विवाह-सम्बन्धी गीतकेँ अन्यान्य संस्कार-गीतसँ फराक राखल गेल अछि। तहिना विविध प्रकारक गीतकेँ फुटयबाक प्रयास कयल गेल अछि। डॉ. रामदेवझा अपन ग्रन्थ 'मैथिली लोक साहित्यः स्वरूप ओ सौन्दर्य'मे पारम्परिक मैथिली गीति-साहित्यकेँ छओ प्रकारमे वर्गीकृत कयने छथि- 1. संस्कार गीत 2. उत्सवव्रतोपासनाक गीत 3. भक्तिपरक गीत 4. श्रमापनोदक गीत 5. समैया गीत तथा 6. मनोरंजक गीत।

वैदिक परम्परामे सोलह प्रकारक कहल गेल अछि। एहिमे मनुष्यक जन्मसँ मृत्यु पर्यन्त धरिक संस्कार सन्निविष्ट अछि। प्रत्येक संस्कारक भिन्न-भिन्न विधक हेतु वेद-मन्त्रक पाठक विधान अछि। मुदा, मिथिलाक लोकजीवनमे एहि वैदिक मंत्रक समानान्तर गीत-गायनक परम्परा सेहो अछि। अर्थात् मैथिली संस्कार गीतकेँ वैदिक मन्त्रक मर्यादा प्राप्त छैक। कतहु-कतहु तँ ई लौकिक परम्परा, वैदिक विधानसँ अधिक महत्वपूर्ण भऽ जाइत अछि। मैथिली संस्कार गीतक महत्ताक प्रसंग डॉ. रामदेव झाक कथन सर्वथा उचित छनि- मैथिलीक संस्कार गीतक, विभिन्न संस्कारक विधि-व्यवहारमे वैह स्थान प्राप्त अछि जे स्थान वैदिक, स्मार्त्त आ पौराणिक मन्त्रकेँ प्राप्त अछि। कोनो विधिक सम्पादनमे जाहि प्रकारक मन्त्र पढ़ल जाइत अछि ठीक ओही प्रकारेँ ओहि विधिक हेतु गीतक गायन सेहो आवश्यक होइत अछि।[13]

संस्कार गीतक मुख्यतः प्रभेद थिक- जन्म, मूड़न, उपनयन आ विवाह गीत । चुमाओन गीत, केसकट्टीक गीत, चर्खागीत, कुमड़मक गीत, भीखक गीत, पितरक गीत आदि मूड़न तथा उपनयनक अवसरपर मुख्यतः गाओल जाइबला प्रचलित गीति-प्रकार थिक । मिथिलामे विवाहक अवसरपर अनेक प्रकारक विध-व्यवहार सम्बन्धी गीत उपलब्ध अछि। एहिमे किछु गीत देवी-देवताक विवाहक कथापर आधारति अछि तँ किछु गीतमे वर-कनियाँक आनन्द, अतिथिक सत्कार, हँसी-मजाक आदिक वर्णन सेहो भेटैत अछि। आम-महु विवाह, परिछन, नैना-योगिन, कन्यादान, महुअक, सिन्दुरदान, घोघट, मिनती, गौरी-पूजन प्रभृति अनेक अवसरक अजस्र गीत मिथिलामे प्रचलित अछि। सम्मर, झुम्मरि, कोबर, उदासी आदि सेहो विवाहक अवसरपर गाओल जाइत अछि। द्विरागमनक अवसरपर मुख्यतः समदाउन गाओल जाइत अछि।

सोहर संतानक जन्मोत्सवक गीत थिक। संतान प्राप्तिक उल्लास तथा परिजनक मंगलकामनाक संगहि देव-स्तुति एहि गीतक प्रमुख विषय होइत अछि। मिथिलामे 'सोहर' गीतक अन्तर्गत मुख्यतः गर्भावस्थाक गीत ओ मङ्गलगीत अबैत अछि। सोहर गानक प्रथाक मिथिलामे प्राचीन अछि। एहि विषयमे डॉ. लोकनाथ मिश्रक कथन छनि- सोहर शब्दक व्युत्पत्तिक मूलमे संस्कृतक 'शुभ' धातु अछि जाहिसँ 'शोभन', 'शोभा' आदि तत्सम तथा 'सोहना', 'सोहाओन' आदि तद्भव रूप बनैत अछि। ब्रजमे सूतिकागारकेँ 'सोभर' सेहो कहल जाइत अछि। संस्कृतक 'शोकहर' शब्दसँ सेहो सोहरक व्युत्पत्ति सम्भव अछि।'[14] साहित्यिक सोहर सेहो उपलब्ध अछि जाहिमे कृष्णजन्म वा राम-जन्मक वर्णन भेटैत अछि । सोहर मुख्यतः बेटाक जन्मक अवसरपर, बेटाक उपनयनक अवसरपर, एतय धरि जे पुत्र विवाहोत्सवक अवसर पर सेहो गाओल जाइत अछि । कतहु-कतहु पुत्रीक जन्मोत्सवपर सेहो सोहर गायनक प्रथा देखल जाइत अछि । मैथिली सोहर सभ अत्यन्त हृदयस्पर्शी अछि। अनेक सोहरमे पतिक अनुपस्थितिकेँ अत्यंत कवित्वपूर्ण चित्रण कयल गेल अछि। पमरिया गीत, बक्खो गीत ओ झूला सेहो जन्मोत्सवक गीतक रूपमे प्रचलित अछि ।[15] मिथिलामे सोहरक दू भास प्रचलित अछि - सामान्य सोहर तथा छन्दपरक सोहर। छन्दपरक सोहर, सामान्य सोहरसँ भिन्न शैलीमे गाओल जाइत अछि। एहिमे गेय पदक गायनक पश्चात छन्द-पंक्तिक लयबद्ध पाठ कयल जाइत अछि ।[16] खेलौना गीत, सोहर भासक एक अन्य प्रकार थिक। हास-परिहास तथा उलहन-उपराग एहि गीतक मुख्य विषय अछि। जेना कि नामहिसँ स्पष्ट अछि, ई गीत मनोरंजक होइत अछि।

समदाउनि तथा उदासी- समदाउनि एकप्रकारक विदा गीत थिक । जे विशेषतः कन्याक विदा करबाकाल गाओल जाइत अछि । उदासी सेहो करुण-रस प्रधान गीत थिक । उदासीमे नव-विवाहित वर (जमाय)क विदाकालक विधि-व्यवहार तथा विरह-वेदनाक मुख्यतः चित्रण रहैत अछि।

जोग-उचिति- जोग-उचिति मैथिली गीतिसाहित्यक विशेष निधि थिक । योग विवाहक समय वर-कनियाँक स्नेह-बन्धनक उद्देश्यसँ गाओल जाइत अछि । योगक प्राचीनतम स्वरूप विद्यापतिक पदमे भेटैत अछि। उचिति गीत विशिष्ट अभ्यागतक सत्कारमे गाओल जाइत अछि।

मैथिली गीति-परम्परामे पाबनि-तिहारसँ सम्बन्धित गीतक प्रचुरता अछि । विभिन्न व्रतक अवसरपर गाओल जायबला गीत सभमे छठि गीत, सामा गीत, साँझ गीत, मधुश्रावणी गीत, बरिसातिक गीत, गौरीक गीत आदि प्रमुख अछि।

देवी-देवताक गीतक रूपमे मिथिलामे अनेक प्रकारक आस्थामूलक गीतक प्रचलन अछि। एहि कोटिमे ब्रह्म, भैरव, गोविन्द, हनुमान, बिसहरा, धर्मराज, दाहा ओ अन्यान्य ग्राम्य देवताक निमित्त गाओल जायबला गीत अबैत अछि । प्राती, नचारी, महेशवानी, विष्णुपद, गङ्गागीत, गोसाउनिक गीत आदि भजनक कोटिमे अबैत अछि। एहन गीत सभ धार्मिक ओ सामाजिक उत्सव किंवा पारिवारिक शुभ अवसरपर सामान्यतः गाओल जाइत अछि।

समैया गीत अथवा ऋतु गीतक कथा वस्तु मुख्यतः प्रेम ओ तद्जन्य आकर्षण, वियोग, नैराश्य वा असंतोष रहैत अछि। चौमासा, छओमासा तथा बारहमासा प्रभृति गीतिमे एकाधिक ऋतुक वर्णन होइत अछि। एहिमे प्रत्येक मासक विशेष अनुभूति तथा नायक-नायिकाक परस्पर वियोगक चित्रण रहैत अछि। चैतावर, फागु, पावस, मलार ओ वसन्त अन्य ऋतुगीति-प्रकार थिक जे मुख्यतः प्रेमगीत थिक तथा मास विशेष किंवा ऋतु-विशेषमे गाओल जाइत अछि।

लगनी एक प्रकारक श्रमगीत थीक जे स्त्रिगण द्वारा जाँत पिसैत काल गाओल जाइत अछि। एहि गीतक मुख्य विषय नायक-नायिकाक प्रेम होइत अछि। ई गीत सभ शृंगार रस प्रधान होइत अछि। गोदना गीतमे गोदना गोदबाबए कालक स्त्रिगणक पीड़ाक चित्रण रहैत अछि।

तिरहुति- मैथिली गीति सभक मध्य तिरहुति एक बहुचर्चित गीति-प्रकार थिक। एहिमे मुख्यतः शृंगारिक विषय यथा-संयोग अथवा वियोग होइत अछि । एहि गीति सभक अन्तमे 'ना', 'हो रे' अथवा 'सजनी गे' टेक सामान्यतया पाओल जाइत अछि। गोआलरि तिरहुति एक गोट प्रभेद थिक जाहिमे मुख्यतः गोपी सभक बीच कृष्णक लीलाक वर्णन भेटैत अछि।

मानगीत- मानगीतमे नायक-नायिकाक परस्पर रूसब-मनायब चित्रित रहैत अछि। एहन गीत शृंगार-रस प्रधान होइत अछि। कोनो-कोनो मानगीतमे नायिकाक सखी सभ रूसल नायक अथवा नायिकाक मान-मोचन हेतु अनुनय करैत छथि। मध्ययुगमे विद्यापति सहित अनेक कवि लोकनि मानगीतक रचना कयलनि।

वटगमनी-बटगमनी नायिकाक नायकसँ मिलन करबाक हेतु, अभिसारक हेतु बाट चलबा कालक गीति थिक। एहिमे 'सजनी गे' टेक रहैत अछि। बटगवनी भासक प्रत्येक छन्दमे चारि चरण होइत अछि । किछु बटगवनी भासमे छन्दक प्रथम एवं तृतीय चरणक अन्तमे 'सजनी गे' टेक प्रयुक्त होइत अछि तँ किछु बटगवनीमे छन्दक प्रत्येक चरणक अन्तमे।

मैथिली साहित्येतिहासमे गीतिकाव्यक परम्परा कमसँ कम 1200 वर्ष प्राचीन प्रतीत होइत अछि । प्राकृत तथा प्राकृत-अपभ्रंश एहि परम्पराक आदिम स्रोत थिक तथा एकर प्राचीनतम स्वरूप ‘चर्यापद’, ‘प्राकृत पैंगलम’, ज्योतिरीश्वरक नाटक ‘धूर्तसमागम’ तथा आधुनिक भारतीय भाषाक प्राचीनतम गद्यग्रंथ 'वर्णरत्नाकर'

आदिमे उद्धृत अथवा वर्णित अछि। चर्यापदकेँ मैथिली गीति-साहित्यक प्रारम्भिक रचना मानल जाइत अछि। तेरहम शताब्दीमे ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर'क प्रथम कल्लोल तथा छठम कल्लोलमे गीत-संगीतक विशद वर्णन भेल अछि जाहिमे शास्त्रीय आ लोक संगीत, दूनूक चर्चा कयल गेल अछि। वर्णरत्नाकरमे वर्णित संगीत एवं 'धूर्तसमागम'मे प्रयुक्त गीतसँ मैथिली प्राचीन साहित्यमे गीति-तत्वक महत्ता प्रकट होइत अछि; संगहि मैथिली साहित्यमे गीतिकाव्यक प्राचीनता सिद्ध होइत अछि।

मध्यकालमे लोकभाषामे मुख्यतः गीतेक रचना भेल। एहि युगमे महाकवि विद्यापति तथा हिनक परवर्त्ती कवि लोकनिक विभिन्न भाव-भूमिपर रचित गीत मैथिली साहित्यक अमूल्य धरोहर थिक। विद्यापति 'देसिल वयना'मे जे पदावलीक रचना कयलनि तकर छन्द, भास, धुनि, स्वर तथा शब्द-विन्यास आदि लोकजीवनसँ अनुप्राणित छल। हिनक रचित पदावली वस्तुतः तत्कालीन समाजक दर्पण थिक। विद्यापति रचित गीत समाजक प्रत्येक वर्गमे प्रतिष्ठित भेल तथा परम्परात एवं संस्कृतनिष्ठ साहित्यक प्रति स्थापित लोक-मान्यताकेँ सेहो ध्वस्त कयलक। ई गीत सभ मात्र मिथिले नहि अपितु सम्पूर्ण पूर्वांचलमे करीब छओ सय वर्ष धरि अपन प्रभाव बनओने रहल, जाहिसँ विद्यापतिक अतुलनीय काव्य-प्रतिभाक अनुमान सेहो सहजहिँ लगाओल जा सकैत अछि।

मैथिली गीति-साहित्यक क्षेत्रमे विद्यापतिक प्रभाव बीसम शताब्दीक मध्य धरि स्पष्ट देखल जा सकैत अछि। उनैसम-बीसम शताब्दीमे कवीश्वर चन्दाझा मैथिली साहित्यक आधुनिक कालक प्रणेता भेलाह। हिनकहि द्वारा कयल गेल गीत-रचनाक संग मैथिलीक आधुनिक गीत-परम्पराक आरम्भ होइत अछि। एहि युगमे विभिन्न सामाजिक आन्दोलनक प्रभाव अन्यान्य भाषा-साहित्ये जकाँ मैथिली साहित्यपर सेहो पड़ल आ एहि साहित्यिक नवजागरणक सूत्रधारक रूपमे कवीश्वर चन्दाझा अपन गीत सभमे समाजक यथार्थ आ लोक अनुभूतिक सहज अभिव्यक्तिकेँ समाहित कयलनि। पछाति मैथिलीक आधुनिक गीत-परम्पराकेँ आगाँ बढ़यबामे अनेक गीतकार-कवि लोकनि अपन उल्लेखनीय योगदान देलनि।

प्राचीन ओ मध्यकालीन युगमे जहिना मैथिली गीतिकाव्य अपन चारूकातक समाजकेँ आलोड़ित-आनन्दित करैत रहल तहिना आधुनिको कालमे मैथिली गीति मानवमनकेँ स्पन्दित-आनन्दित कऽ रहल अछि आ ताहि लेल अपन स्वर, स्वरूप ओ त्वरामे सेहो निरंतर परिवर्त्तन-परिवर्द्धन करैत रहल अछि। ज्ञान-विज्ञानक एहि युगमे जखन विश्वमानवता ओ विश्वग्रामक कल्पना कयल जा रहल अछि, मैथिली गीतिकाव्य सेहो जन-सामान्यक जीवन-यथार्थक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यमे अपनाकेँ अनुकुलित करबासँ नहि चुकल अछि। राष्ट्रवाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद ओ यथार्थवाद आदि प्रवृतिकेँ अँगेजि विश्व-समुदायक सुरसँ सुर मिला रहल अछि।

एहि युगमे गीतिकाव्यक माध्यमे समाजक मध्यवित्तक अन्तर्द्वन्द्व ओ संघर्षक कथा कहल जा रहल अछि संगहि विभिन्न सामाजिक-राजनीतिक समस्याक समाधान सेहो तकवाक प्रयास कयल जा रहल अछि जाहिसँ सामान्य जन-जीवनक आशा-अभिलाषा पूर्ण हो।

अतः कहि सकैत छी जे आधुनिक मैथिली गीतिकाव्य मात्र जन-मनोरंजनार्थ नहि अपितु सामाजिक-सांस्कृतिक उन्नयनार्थ सेहो लिखल जा रहल अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे एहि द्रुतगामी ओ ज्ञान-विज्ञानक नवयुगमे एकर प्रयोजन ओ महत्व मानव सभ्यतामे सर्वाधिक भऽ गेल अछि। मैथिली गीत-साहित्यक विकास यात्राक विषयमे डॉ. रमानन्द झा 'रमण' विचार एकदम समीचीन बुझना जाइत अछि जे- मैथिली गीत-साहित्यक विकास यात्राक अवलोकनसँ स्पष्ट होइछ जे वर्तमान शताब्दीक प्रारम्भसँ गीत साहित्यमे विषय वस्तुक विविधता आबय लागल। गीतक अर्थ महेशवाणी, नचारी अथवा सोहर-समदाउन वा तिरहुत-मलार नहि रहल। राष्ट्रीय चेतनाक विकासक अभिव्यक्ति सेहो होअए लागल। गीतक प्रयोजन केवल अवसर विशेषपर गएवे धरि सीमित नहि रहल, सूतल आ भकुआयल लोककेँ जगयबाक साधन सेहो बनि गेल।[17]

साहित्य क्षेत्रमे नवगीतक नामकरण बीसम शताब्दीक साठिक दशकमे भेल। मैथिलीमे सेहो एहिसँ पूर्व एहन नामकरण नहि भेटैत अछि। मधुपजीक गीतमे जे भावगत ओ कलात्मक आधुनिकता ओ अभिनवता समाहित अछि ताहि आधारपर हुनका मैथिली नवगीतक आदिगुरू मानल जाइत छनि। मुदा, ई कहब अतिशयोक्ति नहि होयत जे कवीश्वरेक गीत सभमे मैथिलीमे सभसँ पहिने आधुनिक ओ नवगीतक प्रवृतिक समावेश भेटैत अछि, जे बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध अबैत-अबैत अपन स्वतंत्र स्वरूप स्थापित कयलक। आस्था, आक्रोश, आत्मालोचन, दार्शनिक चिन्तन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आंचलिकता, प्रेम, विरह, प्रकृति-चित्रण समेत जीवनक प्रायः प्रत्येक पक्षकेँ नवगीत अपन स्वर देलक। व्यवस्थाक विसंगति ओ राजनैतिक आ सामाजिक मूल्यहीनताकेँ अपन प्रतिपाद्य विषय बनौलक। नवगीतमे शिल्पगत दृष्टिकोणसँ अनेक अभिनव प्रयोग भेल अछि।

मैथिलीक आधुनिक गीतिकाव्य, मनुष्यक अन्यतम अनुभूतिक सहज अभिव्यक्ति थिक। जतय प्राचीन एवं मध्ययुगमे मैथिली गीतिकाव्य संगीतशास्त्रसँ आबद्ध छल ततय आधुनिक मैथिली गीतिकाव्य संगीत-शास्त्रीय जटिलतासँ मुक्त अछि। वस्तुतः आधुनिक मैथिली गीतिकाव्य कविक तीव्रतम भावाभिव्यक्ति एवं सहज-सरल संगीतात्मकतासँ अनुप्राणित अछि। नवगीतकार लोकनि पारम्परिक छन्दशास्त्र ओ सांगितिक सूत्रसँ फराक मात्र लयात्मकता ओ प्रवाहपूर्ण गेयात्मकताकेँ प्राथमिकता देलनि। एहि युगमे सममात्रिक, विषममात्रिक, तुकान्त, मुक्तक, चतुर्दशपदी आदि अनेक प्रकारक गीतिक रचना भेल अछि।

कहबाक आवश्यकता नहि जे गीतिकाव्य आधुनिक मैथिली साहित्यक एक प्रमुख साहित्यिक विधा थिक। विगत डेढ़ शतकमे आधुनिक मैथिली गीतिकाव्य प्रचूर मात्रामे रचल गेल अछि। आधुनिक मैथिली गीत अपन विषयगत ओ शिल्पगत अभिनवता ओ प्रयोगधर्मिताक कारणेँ युगीन विषयवस्तुकेँ, जीवनक जटिलताकेँ आ व्यवहारगत विसंगतिकेँ सहज ओ लोकप्रिय ढंगसँ सम्प्रेषित करबामे सक्षम भेल अछि। युगबोध, बौद्धिक चैतन्य, सांस्कृतिक निष्ठा, राष्ट्रीय चेतना, समष्टिमूलक आ मूल्यबोधक विशेषता आधुनिक मैथिली गीतकेँ मानवीय संवेदनशीलताक संरक्षक बना देलक अछि। एहि व्यस्त युगकेँ गीतिकाव्यक युग मानल गेल अछि।

आधुनिक कालमे जतय मैथिली गीतिकाव्य रचनाक धारा अविरल रहल अछि ओतहि दोसर दिस एकर साहित्यिक मूल्यांकनक दृष्टिकोणसँ कोनो महत्वपूर्ण काज नहि भेल अछि। जे किछु चिन्तक-समीक्षक लोकनि

एहि काव्यविधाक प्रति अपन समीक्षा-समालोचना प्रस्तुत कयलनि अछि ताहिसँ पछिला डेढ़ सय वर्षक अन्तरालमे रचित मैथिली गीतिकाव्यक सर्वांगीन मूल्यांकन सम्भव नहि भऽ सकल अछि। पचीस-पचास वर्ष पूर्व धरि मैथिली गीतिकाव्यक सन्दर्भमे जे किछु शोधपरक काज भेल अछि सेहो मुख्यतः प्राचीन कालीन ओ मध्यकालीन मैथिली गीतिकाव्य धरि सिमित अछि।

आजुक सन्दर्भमे मैथिली गीतिकाव्यक महत्ताकेँ समकलीन साहित्य जगतमे उचित मूल्यांकन नहि भऽ सकल अछि। इएह कारण थिक जे हमरा ई विषय आकर्षित कयलक आ हम एहि विषयक प्रारम्भिक अनुसंधान करबा लेल प्रेरित भेलहुँ। तत्पश्चात् एहि विषयक गहन अध्ययन-अन्वेषणक आवश्यकता बूझि पड़ल। एहि शोध-कार्यक सर्वप्रधान उद्देश्य इएह थिक जे आधुनिक मैथिली गीतिकाव्य आगामी कालमे मैथिली साहित्यक नवीन पृष्ठभूमि लिखय ताहि लेल आजुक नवीन पीढ़ीकेँ एहि काव्य-विधाक विशेषतासँ अवगत कराय हुनका सभकेँ एहिसँ जोड़ब।

एहनामे महत्वपूर्ण भऽ जाइत अछि जे मैथिलीक आधुनिक गीतिक परम्परा, ओकर उद्भव ओ क्रमागत विकास, ओकर वस्तुगत एवं शिल्पगत विविधता तथा विशेषता एवं एकर चिन्तन-धाराक गहन विवेचन-विश्लेषण कयल जाए जाहिसँ एकदिस जतय समकालीन मैथिली गीतिकाव्यक विकासक आधार तैयार होयत ओतहि दोसर दिस एकर मूल्यांकनसँ भविष्यक दिशा-निर्देश सेहो भेटत।

प्रस्तुत शोध-प्रबंधकेँ पूर्णता देबाक हेतु गीतिकाव्यक उद्भव ओ विकास, भारतीय वाङ्मयमे गीतिकाव्यक विकास, वैदिक युगक गीतिकाव्यक विशेषता आदिपर आगाँ चर्चा कयल जायत। संगहि प्राचीन ओ मध्ययुगक मैथिली गीतिकाव्य-परम्पराक संक्षिप्त ओ परिचयात्मक विश्लेषण ओ विवेचन सेहो एहिमे समाहित करब। पुनः मिथिलाक सामाजिक-राजनैतिक पृष्ठभूमिपर विचार करैत आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यक भाव ओ कलापक्षक विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत कयल जायत जाहिमे मुख्यत: चन्दाझा कालीन गीतिकाव्यसँ लऽ कऽ समकालीन गीतिकाव्यक विषयगत ओ काव्यगत वैशिष्ट्यकेँ रेखांकित- स्थापित कयल जायत।

*****

[1] गीतिकाव्य का विकास, पं. लीलाधर त्रिपाठी 'प्रवासी', हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, पृ.-6।

[2] हिलकोर, ताराकान्त झा, कल्याणी लेजर, कोलकाता, 2015, पृ.-23 मे उद्धृत।

[3] आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य का स्वरूप और विकास, डॉ. आशा किशोर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ.-1-2।

[4] The lyric is the most interesting form of poetry that we have. It affects more human beings than any other kind. It is elemental. It is undoubtedly the first type of poetry that was ever evolved, the type out of which sprang all the others. For what is the lyric when you come to analyse it? It is the simplest and most natural literary expression of unmixed

emotion- usually the emotion of an individual. It may be personal, or religious, or amatory, or patriotic; but in the beginning it must have been removed by only one stage from cries, ejaculations, shouts primitive expressions of pure feeling. Now, just as, all over the world, a cry of passion or of pain is understood by every human being, so is the lyric the nearest literary representative of an inarticulate cry.

Studies in Several Literature, H. T. Peck, Dodd Mead and Company, 1909, P.70 (The Lyrics of Tennyson).

[5] आधुनिक गीतिकाव्य, सच्चिदानंद तिवारी, पृ.-1-2।

[6] उपर्युक्त, पृ.-2।

[7] संस्कृत गीति-काव्य का विकास, डॉ. परमानन्द शास्त्री, प्रकाशन प्रतिष्ठान, मेरठ, पृ.-3।

[8] Music when combined with a pleasurable idea, is Poetry, Music, without the idea, is simply music, the idea, without the music, is prose, from its very definiteness. **An anthology of critical statement**, p.-69. आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य का स्वरूप और विकास, पूर्वोक्त-3, पृ.-4 मे उद्धृत।

[9] पूर्वांचलीय गीति साहित्य, पं. गोविन्द झा (सं.), चेतना समिति, पटना, पृ.-1-2।

[10] आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य का स्वरूप और विकास, पूर्वोक्त-3, पृ.-4।

[11] प्रगीत, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, भूमिका, पृ.- ii.

[12] मिथिलाक लोक साहित्यक भूमिका, डॉ. जयकान्त मिश्र, (मै.अ.-डॉ. रेवती मिश्र), पृ.- 83।

[13] मिथिला-संगीतक भास पद्धति, डॉ. कविता कुमारी, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर, 2013, पृ.-70।

[14] मैथिलीमे व्यवहार गीत, लोकनाथ मिश्र, सिंहवाड़ा, दरभंगा, 1970, पृ.-44।

[15] उपर्युक्त, पृ.- 89-90।

[16] मिथिला-संगीतक भास पद्धति, पूर्वोक्त-13, पृ.-69।

[17] मैथिली साहित्य ओ राजनीति, डॉ. रमानन्द झा 'रमण', अखियासल प्रकाशन लालगंज-1994, पृ.-94।

प्रथम अध्याय: गीतिकाव्यक उद्भव ओ विकास

वर्त्तमान युगमे काव्यक जे अनेक विधा प्रचलित अछि, प्रायः सभक उद्भवक जड़ि मानव सभ्यताक आदिम युग धरि पसरल अछि । तहिना गीतिकाव्यक उद्भवक सूत्र सेहो आजुक सभ्य जातिक आदिकालीन सभ्यतामे भेटैत अछि। विश्वक कोन-कोनमे वास करैत आदिवासी समुदायक संस्कारमे आइयो नृत्य-गीत तथा ताहिसँ सम्बद्ध पारम्परिक संगीतक जे चलनि भेटैत अछि, वास्तवमे से गीतिकाव्यकेँ आदिम युगक प्रथम साहित्यिक विधा-रूपमे पुष्टि करैत अछि । जेना आइ आदिवासी समाजक सामाजिक उत्सवक आनन्द किंवा कोनो विपत्तिक स्थितिमे वा दुःखेक अभिव्यक्तिक क्षणमे जादू-टोना, धार्मिक-अनुष्ठान, नृत्य-गीत आदिक समवेत देखबामे अबैत अछि, तहिना आजुक सभ्य जातिक आदिम समाजमे एहन सन परम्परा रहल होयत, आ एही आदिकालीन सामुहिक नृत्य-गीतक भाषागत अभिव्यंजना कालान्तरमे गीतिकाव्यक रूपमे विकसित होइत गेल अछि।

मानव सभ्यताक आरम्भिक चरणमे नृत्य-गीतक अविछिन्न परम्पराक सम्बन्धमे डेनमार्कक प्रसिद्ध विद्वान 'वोमे'क एक गोट महत्त्वपूर्ण कथन छनि जे- एहि युगमे नृत्यक बिना गीत वा गीतक बिना नृत्य सम्भव नहि छल। गीति-परम्पराक मूल रूप नृत्यमे प्रयुक्त गीते छल।[1]

विकासक क्रममे गीतक संग नृत्यक अनिवार्यता समाप्त होइत गेल । गीत नृत्यसँ मुक्त होइत गेल आ समवेत गायन (कोरस) आ समूहगानक परम्परा विकसित भेल । एहि समूहगानक आरम्भ 'टेक पद्धति'सँ भेल। फर्डिन वोल्डक अनुसार- टेक ओतबे प्राचीन अछि जतेक मानव जातिक कविता। आदिम युगमे तँ मुख्य रूपसँ पूजा, सहभोग, नृत्य, क्रीड़ा या अन्य प्रारम्भिक उत्सवक अवसरपर गीतक भीतर केर "टेक"क माध्यमेसँ समुदाय प्रत्यक्ष रूपसँ गायनमे भाग लैत छल।[2]

"टेक पद्धति"क अन्तर्गत एकटा मुख्य गबैया आगाँ-आगाँ गबैत छथि आ संगतकार लोकनि हुनकर गाओल पद किंवा गीतक स्थायी पदकेँ बीच-बीचमे दोहरबैत अछि । जहिया एहि गान-पद्धतिक अवधारणा भेल होयत, तहिया एकर एकटा व्यावहारिक पक्ष इहो छल होयतैक जे टेककर्त्ता अथवा संगतकार जखन टेक दोहरबैत होयत तखन मुख्य गबैयाकेँ विश्रामक अवसर भेटैत हेतनि।

गीतिकाव्यक एहि आदिकालीन गायन पद्धतिपर प्रकाश दैत डॉ. मियर (Dr.Meyer) कहैत छथि जे- कविताक आदिस्वरूप वा आदिगीत, आदिम मानवक अविवक्षित हो-हल्ला मात्र छल । भय, आनन्द, दुःख

अथवा प्रेमक आवेगात्मक भाव जखन संगीतात्मक ध्वनि कि ध्वनि-समूहक रूपमे अनचोकेमे अनायास अभिव्यक्त भेल तँ से अभिव्यक्ति हो-हल्लाक रूपमे छल । परवर्त्ती युगक धार्मिक काव्यहुमे अवशिष्ट रूपमे वर्तमान छल। अन्तर एतबे छल जे एहि विकसित रूपबला गीतमे विवक्षित शब्दक समावेश भऽ गेल छल।[3]

आरम्भिक लोककाव्य, गीतिकाव्य अथवा गाथाकाव्यक रचना सुविचारित नहि होइत छल, बल्कि आकस्मिक होइत छल। कोनो अवसर विशेषपर, गबैया उपस्थित श्रोता समाजक बीच स्वतःस्फूर्त, तत्काल रचित रचना गबैत छलाह। एहि प्रकार ताहि समयमे कविताक जे विभिन्न मौखिक संस्करण तैयार होइत छल, से सुनियोजित वा सुविचारित नहि। एहि रचना सभक प्रारम्भ तथा समापनक कोनो विधान निश्चित नहि छल। गायक स्वकल्पित किंवा कोनो आन गबैयाक मुँहे सुनल-सिखल रचनाकेँ अपना हिसाबे जोड़ि-तोड़ि कऽ गबैत छलाह आ तेँ एहि काव्य सभमे कोनो विषयगत मौलिकता सेहो नहि रहैत छल।

'टेन ब्रिंक्स' महोदयक अनुसार- ताहि समयमे काव्य निर्माणक नहि, पुनर्निर्माणक वस्तु छल। रचनाक कोनो निश्चित शैली वा संरचना नहि होइत छल। ताहि युगक लोककेँ रचना आ रचनाकारक शाब्दिक अर्थहुक भान नहि छल।[4] कहबाक आवश्यकता नहि जे ताहि समयमे एहन काव्यक हेतु आ प्रयोजन दुनू सामाजिक छल, व्यक्तिगत नहि।

उपर वर्णित 'टेक पद्धति'क गायन प्रारूप आ गीतिकाव्यक रचना ओ गायनक अविचारित परम्परा आइयो विश्वभरिमे विभिन्न रूपमे जीवित अछि। वर्त्तमान समयमे विभिन्न लोकगाथामे गीत, नृत्य आ टेकक समवेत रूपमे गीतिकाव्यक आदिम परम्पराक अवशिष्ट भेटैत अछि। स्केन्डनेवियाक कबीला सभमे स्वरचित काव्यक सार्वजनिक गायन परम्परा अछि। आइसलैण्ड, इटली, नार्वे आदि देशमे तहिना गीत-प्रतिद्वंदिता ओ आशुकवित्वक चलनि अछि। भारतीय परम्परामे कजरी आ बिरहा दंगल एकर जीवंत उदाहरण थिक। एहि दंगल सभमे भाग लेनिहार गायक लोकनिक आशुकवित्व उपस्थित श्रोता समाजकेँ आइयो आश्चर्यचकित करैत अछि।[5]

मैथिली गीति-साहित्यक उद्भव ओ विकासक प्रसंग सेहो डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' अपन विचार व्यक्त करैत कहैत छथि- मैथिली साहित्यक उद्गम ओ विकास लोकसाहित्यहिक रूपमे भेल...मैथिलीक अधिकांश साहित्य गीतमय अछि। कोनहुँ भाषाक लोकसाहित्य गीतमय होइत अछि, जकर कारण थिक मानव जातिएटामे नहि, मानवेत्तर जीवहुमे नृत्य-गीतक सहजात प्रवृत्ति। भाषा सिखबाक पूर्वहिसँ मनुष्य गान ओ अनुकरण करब आरम्भ करैत अछि ओ भाषा सिखबाक पश्चात् गीतक माध्यम भाषा भए जाइछ। सभ्यताक विकास क्रममे गीत परिमार्जित होइत गेल ओ कविताक स्वरूप धारण करैत गेल। कालक्रमे गीत ओ कविता भिन्न-भिन्न वस्तु बुझल जाए लागल...।[6]

गीतिकाव्यक परिभाषा

वैदिक युगसँ अद्यावधि गीतिकाव्यक शिल्पक विकास-यात्रा मात्र प्राचीन भारतीय वाङ्मय नहि अपितु कालान्तरमे विभिन्न भारतीय तथा योरोपीय भाषा-साहित्यसँ प्रभावित भेल अछि। आधुनिक युगमे 'गीति' आ 'गीत' पर्य्याय रूपमे व्यवहृत होइत अछि जे अंग्रेजी भाषाक Lyrics क भाषान्तर थिक।

काव्यक आने-आन विधा जकाँ गीतिकाव्यक सेहो कोनो सुनिश्चित आ सर्वमान्य परिभाषा नहि भेटैत अछि। **'गीतं हन्यते काव्य, काव्यं हन्यते शास्त्रम्'** उक्तिक आधारपर किछु विद्वान लोकनिक इहो मान्यता छनि जे काव्यशास्त्री लोकनि गीतिकाव्यकेँ संगीतक अंग मानि एकर स्वरूप ओ संरचना आदिपर समुचित विचार नहि कयलनि तथा एकरा अवडेरि कऽ 'नाट्यशास्त्र'क अन्तर्गत राखल गेल। मुदा कालान्तरमे, प्राच्य ओ पाश्चात्य जगतक अनेक मनीषी लोकनि गीतिकाव्यकेँ परिभाषित करबाक प्रयास कयलनि अछि।

भारतीय वाङ्मयमे आचार्य लोकनि काव्यकेँ दू भेद कहलनि अछि- दृश्य तथा श्रव्य काव्य। पुनः श्रव्य काव्यकेँ प्रबन्ध आ मुक्तक दू भेद कहल गेल अछि। मुक्तक काव्य रससिद्ध काव्य थिक।[7] आधुनिक कालमे विद्वान लोकनि, मुक्तक काव्यक दू भेद कहलनि अछि- पाठ्य आओर गेय। इएह गेय मुक्तक वस्तुतः गीतिकाव्य थिक। प्राचीन मुक्तक काव्य विशेषतः शृंगारिक तथा वीर रस प्रधान मुक्तकमे अनुभूतिक सघनता ओ तीव्र भावात्मकता आदि गीतिकाव्यक वैशिष्ट्यक समावेश भेटैत अछि। अतः आधुनिक गीतिकाव्य, वस्तुतः प्राचीन मुक्तक-परम्पराक विकसित स्वरूप थिक।

पाश्चात्य साहित्य-जगतमे गीति'क समानार्थी युनानी शब्द 'Lyric' थिक, जकर शाब्दिक अर्थ होइत अछि-'ओ काव्य जे लायर बाजाक संग गाओल जा सकय'। एहि संबंध शिप्ले महोदय लिखैत छथि-"ओहन कविता जकरा लायर बाजाक संग गाओल जा सकय।[8] तहिना ई. गोसे महोदय 'Encyclopidia-Britanika-Vol.16, P.-180-8' मे 'Lyrical Poetry' अर्थात् गीतिकाव्य शीर्षक परिच्छेदमे लिखैत छथि- "गीतिकाव्य सामान्य काव्य हेतु प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द थिक, जे कोनो गीति-वाद्यक संग गाओल जा सकय।"[9]

उपरोक्त दुनू परिभाषामे गीतिकाव्य'क प्रधान तत्व ओकर गेयधर्मिता मानल गेल अछि। मुदा, डॉ. चार्ल्स मिल्स महोदय गीतिकाव्यक वस्तुगत विशिष्टता; मानवीय संवेदना यथा इच्छा, संवेग, भावना आदिक संवाहक रूपमे प्रधानता दैत छथि आ एहन काव्य-तत्वकेँ गीतिक मुख्य वैशिष्ट्य मानबाक संकेत करैत छथि- वस्तुतः गीतिकाव्येकेँ कविता कहल जा सकैत अछि। कोनो कृति विशेषमे काव्यात्मकता जतेक बेसी होइत अछि ओ ताही अनुपातमे गीतात्मक होइत अछि। नाटक जतेक अधिक काव्यात्मक होयत, ओ ओतबे गीति तत्वसँ पूर्ण होयत। महाकाव्य जतबा अधिक काव्यात्मक होयत, ओ ओतबे गीतात्मक होइत अछि।[10]

अंग्रेजी भाषाक प्रसिद्ध समालोचक पालग्रेव महोदय गीतिक गेयधर्मिता ओ ओकर वस्तुपरकताक संगहि लघुता तथा गतिशीलताकेँ अथवा भाव शृंखलामे परिवर्त्तन हेतु आ विषय-वस्तुक प्रभावी सम्प्रेषण हेतु गतिक त्वराकेँ एकर प्रमुख विशिष्टता मानैत लिखैत छथि-गीतिकाव्य कोनो विचार, अनुभूति अथवा मनःस्थितिक चित्रण अछि, जाहिमे संक्षिप्तता, मानवीय भावनाक अलंकृत अभिव्यंजना तथा गतिशीलता होयब आवश्यक अछि।[11]

आदिम युगमे सम्पूर्ण समाज व्यक्तिक समान इकाई छल, मुदा उत्तरोत्तर युगमे व्यक्तिवादक विकास भेल। व्यक्तिगत विचार, संवेग, भावना, आत्मानुभूतिक अभिव्यक्तिक कारणे गीतिकाव्य आत्मपरक होइत गेल। समस्त वस्तु-वर्णन, व्यक्तिनिष्ठ रागात्मकताक संग गीतिकाव्यक मौलिक विशेषता बनि गेल। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान GWF Hegel गीतिकाव्यक तीनटा आवश्यक तत्त्व मानैत छथि- काव्यक अन्तर्वस्तु (Content), एहि

अन्तर्वस्तुक वर्णनक निश्चित प्रारूप (Form) आ जीव-जगतक प्रति व्यक्तिक स्वतःस्फूर्त्त चेतना (Conscious) जाहि माध्यमे व्यक्तिनिष्ठ अनुभूति वा विचार रागात्मक अभिव्यंजनाक रूपमे प्रसारित भऽ सकय। वर्णनात्मक काव्य कि महाकाव्यसँ फराक गीतिकाव्यक विशिष्टता व्यक्त करैत ओ लिखैत छथि- गीतिकाव्यक कवि जगतक समस्त तत्त्वकेँ अपनामे समाहित करैत अछि। अपन वैयक्तिक भावक प्रभावसँ एकरा पूर्णतः आत्मसात करैत अछि आ एहि आत्मपरकताकेँ सुरक्षित राखऽ बला शैलीमे अभिव्यक्त करैत अछि।[12]

हिन्दी भाषाक प्रसिद्ध साहित्यकार महादेवी वर्माक अनुसार- सुख-दुःखक भावावेशमयी अवस्था विशेषक, गनल शब्दमे स्वर-साधनाक उपयुक्त चित्रण कऽ देब गीत थिक।[13] डॉ. उमाकान्त गीतिकाव्यक स्वरूप स्पष्ट करैत लिखैत छथि- काव्यक ओ विधा जाहिमे विषयक अपेक्षा विषयीक प्रमुखता हो, गीतिकाव्यक नामसँ अभिहित कयल जाइत अछि।[14] डॉ. रामखेलावन पाण्डेयक अनुसार- वैयक्तिक अनुभूतिक संवेदनशील संगीतात्मक अभिव्यक्ति गीतिकाव्य थिक।[15]

डॉ. परमानन्द शास्त्री, गीतिकाव्यकेँ परिभाषित करैत लिखैत छथि- गीतिकाव्यक आत्मा थिक सान्द्र अनुभूति तथा कलेवर सहज अभिव्यक्ति। गेय छन्द ओकर उपयुक्त परिधान थिक आओर नादसौन्दर्य प्रसाधन-

गौणवस्तु भवेद् गीतिर्भावाभिव्यञ्जनं कवेः। लघुकलेवरा गेया सैकभावरसाश्रया॥[16]

डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र गीतिकाव्यकेँ काव्याभिव्यक्ति चरम उत्कर्ष मानैत छथि, ओ लिखैत छथि- गीत काव्याभिव्यक्तिक चरम उत्कर्ष थिक। ...नैसर्गिक प्रतिभा, व्यापक अध्ययन, गहन अनुभूति तथा दीर्घकालिक व्यवधान-रहित साधनासँ रचनाकार ओहि अवस्थामे पहुँचैत अछि, जखन शब्द एकटा विराट चेतना-चक्रसँ बहराय अवतरित होइत अछि। छन्दक साँचामे ढालल, परस्पर संपृक्त आओर चिरंतन शक्तिबला शब्द। गीत एही शब्दसँ बनैत अछि। अल्पकाय होयबाक कारणे ई बिम्ब आओर प्रतीकमे गप करैत अछि।...प्रत्येक गीतक नाभिमे एकटा सघन भाव होइत छैक जे प्रथम पंक्तिसँ अंतिम पंक्ति धरि कायम रहैत अछि।[17]

विभिन्न मैथिली विद्वान-साहित्यकार लोकनि सेहो गीतिकाव्यक वैशिष्ट्यकेँ रेखांकित करैत एकरा परिभाषित करबाक प्रयास कयलनि अछि। डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीशक शब्दमे- गीतक तात्पर्य एतबए जे प्रवाह लयात्मकता रहए तथा कविक अन्तर्जगतक वैयक्तिक भावक आवेगपूर्ण अभिव्यक्ति हो।[18]

विषयीगत काव्य ओ गीतिकाव्यक वैशिष्ट्यक तुलना प्रस्तुत करैत डॉ. धीरेन्द्र कहैत छथि- गीतकाव्यमे भाव-तत्वक प्राधान्य होइछ आ कविक व्यक्तित्व स्पष्ट रूपसँ मुखरित होइत अछि। भावक प्रवलता, व्यक्तित्वक स्पष्ट अभिव्यक्ति तथा भाषाक विशदता आदि विषयीगत-काव्यक प्रमुख विशेषता सभ थिक। गीतिकाव्यमे विषयीगत काव्यक प्रमुख विशेषता सभ सम्मिलित होइत अछि। अतः यदि गीति-काव्यहिकेँ विषयीगत-काव्य कहि देल जाय तँ अनुचित नहि होयत।[19]

डॉ. रमाकान्त झाक अनुसार- गीति आत्माक उद्घोष, हृदयक चीत्कार थिक।[20] ई आगाँ कहैत छथि- गीतिकाव्यक विषय आत्मनिष्ठ आओर वस्तुनिष्ठ दुनू भऽ सकैछ, किन्तु वस्तुनिष्ठ वा परानुभूत भावकेँ आत्मनिष्ठ वा आत्मसात् कएलाक उपरान्तहि ग्रहण कएल जाइछ।

डॉ. रामदेव झाक एहि प्रसंग कथन छनि- "प्रत्येक गीत पहिने कविता अछि मुदा प्रत्येक कविता गीत नहि होइछ। गाबियो लेलासँ गीत नहि होयत। छन्द एवं मात्राक नियमन गीत आ कविता दूनूमे छैक, किन्तु गायन-गुण युक्त कविता गीत थिक आ जँ से नहि तँ कविता। गायन-गुणक तात्पर्य भेल स्वरक उतार-चढ़ाव, सुर-तालक संगहि गीतमे मुखड़ा-अंतराक संयोजन होयब।"[21]

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' कविक आत्माभिव्यंजनाक संवेदनशील ओ प्रभावोत्पादक अभिव्यक्तिकेँ गीतिकाव्यक आवश्यक तत्व मानैत छथि। हुनका शब्दमे- गीतमे कविक हृदयक अभिव्यंजना वर्तमान रहैछ। जावत धरि कविक भाव एवं अनुभूति जे काव्यक आत्मा थिक, गहन अभिव्यक्ति नहि होइछ काव्य संवेदनशीलता, प्रभावोत्पादकता एवं मानस प्रक्षालनक अद्भुत क्षमतासँ अतृप्त रहि जाइछ। मधुरक मधुरत्व चीनीक चासनीक पाके पर निर्भर करैछ, ओहिना गीतक महत्व आत्माभिव्यक्ति पर अविलम्बित अछि।[22]

श्री ताराकान्त झा गीतिकाव्यकेँ साहित्यिक भाषाक सर्वश्रेष्ठ नमूना मानि लिखैत छथि- वस्तुतः गीतिकाव्य साहित्यिक भाषाक श्रेष्ठतम नमूना होइछ अर्थात् वाक् जकरा संपूर्ण ध्वन्यात्मक बुनावटमे व्यवस्थित कऽ देल गेल हो।[23]

उपरोक्त परिभाषा सभपर विचार करैत कहल जा सकैत अछि जे- जीवन-जगतसँ प्राप्त अनुभूतिक क्षिप्रतम प्रारूपमे तिव्रतम ओ लयात्मक अभिव्यक्ति गीतिकाव्य थिक। उपर्युक्त परिभाषा सभक आधारपर गीतिकाव्यक मुख्यतः निम्नलिखित विशेषता सोझाँ अबैत अछि जे ओकरा अन्यान्य काव्यविधासँ पृथक करैत अछि:-

गेयधर्मिता- आंतरिक गीतात्मकता अथवा गेयता गीतिकाव्यक निजी विशेषता थिक जे ओकरा अन्य काव्यरूपसँ फराक आओर विशिष्ट बनबैत अछि। गीतिक गेयतासँ तात्पर्य संगीतक सुर-तालसँ नहि अपितु ओकर शब्द-चयन ओ छन्द-योजनासँ अछि जाहि कारणे ओहिमे आंतरिक लयात्मकता वर्त्तमान रहैत अछि। अर्थात् रूप-संगठनक दृष्टिसँ स्वरबद्धता गीतिकाव्यक अनिवार्य तत्व थिक।

संक्षिप्तता- गीतिमे अनुभूतिक सघनताक लेल एकर लघु आकार आवश्यक अछि। लघुता गीतिक प्रभाव ओ आकर्षणमे वृद्धि करैत छैक संगहि एहिमे प्रयुक्त बिम्ब ओ प्रतीकादिकेँ सापेक्ष्य व्यंजना ओ गरिमा प्रदान करैत छैक। अतः संक्षिप्तता गीतिकाव्यक एक गोट अनिवार्य तत्व थिक।

सहज सम्प्रेषणीयता-गीतिकेँ बेसी पाण्डित्यपूर्ण नहि होयबाक चाही आ ने एहिमे काव्यकलाक प्रदर्शनसँ कृत्रिमता उत्पन्न हो। कारण एहिसँ अनुभूतिक स्वाभाविकता समाप्त भऽ जाइत अछि। गीतिक सहज-सरल भाषा-शैलीसँ जनसामान्यक जुड़ाव तत्काल होइत अछि तथा एकर प्रभाव चिरकाल धरि विद्यमान रहैत अछि। उदाहरणक लेल हमरा लोकनिक समक्ष विद्यापतिक पदावली उपलब्ध अछि।

व्यक्तिनिष्ठ रागात्मकता- गीतिकाव्यमे गीतिकारक वास्तविक अनुभूतिक अभिव्यंजना अनायास ओ स्वाभाविक रूपमे होइत अछि जे सहज लोकानुभूतिसँ मेल खाइत अछि। गीतिकाव्यमे वस्तु-वर्णनक प्रधानतोक स्थितिमे व्यक्तिनिष्ठ रागात्मकता प्रच्छन्न रूपमे विद्यमान रहैत अछि।

अनुभूति-प्रवणता-आत्मपरकता जकाँ अनुभूति-प्रवणता सेहो गीतिकाव्यक अनिवार्य तत्व थिक। एक गीतिमे मात्र एक भावना अथवा आत्मानुभूतिक चित्रण होयबाक चाही। गीतिकाव्यमे अभिव्यक्त अनुभूति मौलिक, भावमय, गहन ओ अन्वितिपूर्ण नहि भेने एकर केन्द्रीय भावक तीव्रता कमजोर भऽ जाइत अछि।

प्रभावान्विति- गीतिकाव्यक अभिव्यक्ति सहज, सफल आओर पूर्ण होइत अछि। विषय-वस्तुक बाह्य-वर्णन ओ घटना-विवेचनक अनावश्यक विस्तार एहिमे नहि होइत अछि, जाहि कारणे गीतिकाव्यक प्रभाव सटीक आओर संतुलित होइत अछि।

जेना पूर्वमे चर्च भेल अछि, आदिम युगमे काव्य, नृत्य एवं संगीत अविच्छिन्न छल। मुदा सभ्यताक विकासक संग ई सभ स्वतंत्र विधाक रूपमे स्थापित होइत गेल। कालान्तरमे तहिना वैदिक काव्यक स्तुति साहित्य सेहो प्रबंध काव्य, मुक्तक-काव्य, गीतिकाव्य आदिमे विभक्त भेल। प्राचीन यूनानी विद्वान लोकनि काव्यक तीन भेद कहलनि- गीतिकाव्य, महाकाव्य आ नाट्य-काव्य। एतय गीतिकाव्य काव्यक ओहन विधाकेँ कहल गेल जे संगीतबद्ध गाओल जा सकैत छल। फेर ओ लोकनि एहि गीतिकाव्यकेँ दू वर्गमे बटलनि- वाद्ययंत्रक संग गाओल जायबला गीति आ समवेत (कोरस) गाओल जायबला गीति। डॉ. उमाशंकर तिवारी एहि आरम्भिक गीतिकाव्यकेँ तीन भागमे वर्गीकरण कयने छथि- 1. संगीत 2. गीत आ 3. गाथागीत। संगीतमे वाद्ययंत्रक वा नाद-तत्त्वक प्रधानता रहैत अछि। गीतमे शब्द-योजनाक प्रधानता रहैत अछि। गाथागीतमे गेयताक गुण विद्यमान होइछ संगहि एहिमे कथानक केर विशेष महत्व होइत अछि।[24]

गीतिकाव्यकेँ स्थूल रूपमे दू आधारपर वर्गीकरण कयल जा सकैत अछि-अभिव्यंजनाक आधारपर आ विषयक आधारपर। अभिव्यंजनाक आधारपर गीतक मुख्यतः दू भेद कहल गेल अछि- साहित्यिक गीत आओर लोकगीत। विषयक आधारपर गीतिकाव्यक निम्नलिखित भेद अछिः-

1. भक्ति गीत- भक्ति गीति-रचनाक परम्परा प्राचीन कालहिसँ अछि। वैदिक युग, बौद्ध आओर ब्राह्मण परम्परा तथा पौराणिक कालमे भक्ति गीतक रूपमे स्तोत्र, कीर्तन, भजन आदिक रचना भेल। मध्ययुगमे भक्ति आओर शृंगारक मेलबन्धनसँ भक्ति-गीतक लोकप्रियता शिखरपर पहुँचि गेल। आधुनिक युगमे सेहो अनेक कवि लोकनि भक्ति गीतक रचना कयलनि। एहि गीत सभमे कविक अपन इष्टदेवक प्रति भक्ति निवेदन रहैत अछि। हुनकर गुण-गान कयल जाइत अछि तथा हुनकासँ कल्याणक कामना कयल जाइत अछि।

2. श्रम गीत- श्रम गीत मुख्यतः ग्रामीण परिवेशक गीत थिक, जे श्रमिक वर्ग द्वारा कृषिकार्य अथवा कोनो अन्य प्रकारक उद्यम करैत काल गाओल जाइत अछि। एहन गीत सभमे ग्रामीण जीवनक स्वाभाविक चित्र निरूपित होइत अछि।

3. प्रेम गीत- प्रेम गीतक परम्परा भारतीय वाङ्मयमे अत्यंत प्राचीन अछि। संस्कृत नाटक सभमे प्रेम गीतक प्रयोग भेल अछि। मध्ययुगमे राधा-कृष्णक प्रेम-प्रसंग आधारित अजस्र गीत उपलब्ध अछि। आधुनिक युगमे लौकिक नायक-नायिकाकेँ प्रतिष्ठित कऽ कवि लोकनि प्रेम गीतक रचना कयलनि। प्रेम गीतमे कवि अपन प्रेयसीक रूप-

सौंदर्य अथवा भाव-सौंदर्यक मार्मिक वर्णन करैत छथि। प्रेमजन्य विरह-विषाद आओर आसक्ति-आनन्दक भावना सेहो एहन गीतिमे अभिव्यक्त होइत अछि।

4. व्यंग्य गीत - एहि प्रकारक गीतमे देश-समाजक सामाजिक-राजनैतिक विद्रूपता, विषमताक प्रति कविक अनुभूतिक व्यंगात्मक अभिव्यंजना होइत अछि। व्यंग गीत अपन मनोरंजक भाषा-शैलीक कारणे जनमानस धरि तत्काल पहुँचैत अछि आ लोककेँ अभिष्ट समस्याक प्रति प्रकारान्तरसँ जगयबाक प्रचेष्टा करैत अछि।

5. मंगल गीत - मंगल गीत कोनो मांगलिक अवसरपर गाओल जाइबला गीत थिक। मिथिलाक विविध संस्कार गीत एहि कोटिक गीतक अन्तर्गत राखल जा सकैत अछि। एहि गीत सभमे देवी-देवता, कुलदेवता आ पितरसँ परिवारक मंगलकामना कयल जाइत अछि। पारिवारिक उत्सवक हर्षोल्लासक विभिन्न भंगिमा एहि गीत सभमे चित्रित होइत अछि।

6. शोक गीत- कोनो प्रिय व्यक्तिक निधन अथवा कोनो विपत्तिक कारण उत्पन्न विषाद ओ करुणाक अभिव्यक्ति शोक गीतक माध्यमसँ होइत अछि। एहन प्रकारक गीतिक विषय वैयक्तिक अथवा सामाजिक समस्या केन्द्रित होइत अछि।

7. राष्ट्र गीत - राष्ट्रीय गीतमे राष्ट्रप्रेमक भावना होइत अछि। एहन गीत सभ आधुनिक युगमे खास कऽ भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलनक समय अधिक लिखल गेल। एहि गीत सभमे वीर-रसक प्रधानता पाओल जाइत अछि। राष्ट्रीय गीत राष्ट्रक प्रति कविक गौरवबोधक अभिव्यक्ति साधन बनैत अछि।

8. प्रकृति गीत- ऋतु-चक्रसँ उत्पन्न प्राकृतिक सौन्दर्यक विशिष्टता जाहि गीतमे व्यक्त होइत अछि, ओहन गीत सभकेँ प्रकृति गीत अथवा ऋतुगीतक कोटिमे राखल जाइत अछि। प्रकृति गीतमे प्राकृतिक बिम्ब, प्रतीकादिक प्रयोगसँ कवि जीवनक अनुभूतिकेँ स्वर दैत छथि।

9. दार्शनिक गीत- दार्शनिक गीत मुख्यतः चिन्तन प्रधान होइत अछि। एहन गीत सभमे कवि अपन बौद्धिक तत्व-चिन्तनक आधारपर स्पन्दनशील जीवनसँ दार्शनिक आधार ग्रहण कऽ सत्यान्वेषी भऽ जाइत छथि तथा पुनः ओकरा कल्पनामे बोरि, भावसँ सजाय, सहज-सरल लयात्मक शैलीमे प्रस्तुत करैत छथि।

भारतीय गीतिकाव्यक परम्परा

भारतीय वाङ्मयमे गीतिकाव्यक उदय वैदिक साहित्यसँ मानल जाइत अछि। वैदिक ऋचा भारतीय गीतिकाव्य परम्पराक समृद्ध आ आदिम कोश थिक। गीतिकाव्यक लक्षण, विशेषता ओ प्रभेदक दृष्टिएँ वैदिक काव्य यथा ऋग्वेद, सामवेद आ अथर्ववेदक सूक्त सभ वैदिक युगक गीतिकाव्यक अंतर्गत परिगणित होइत अछि। अनेक पाश्चात्य विद्वान लोकनि ऋग्वेदक कतिपय ऋचा सभक काव्यतत्वक जे उद्घाटन कयलनि अछि ताहि आधारपर एहिमे गीति-तत्वक सहज परिदर्शन सम्भव होइत अछि। हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर, भाग-१मे विण्टरानिट्ज महोदय लिखैत छथि- ऋग्वेदक अनेक सूक्त ने तँ सूर्यदेवकेँ अर्पित कयल गेल अछि, ने अग्निदेवकेँ, ने द्यौकेँ, ने वायू तथा जल देवताकेँ आ ने उषा देवीयेकेँ ई सूक्त सभ समर्पित कयल गेल अछि;

अपितु एहिमे स्वयं प्रकाशमान सूर्य, रात्रिमे गगनमे चमकैत चान, वेदी अथवा चूल्हिसँ उठैत आगिक धधरा वा मेघक विद्युत दीप्ति, दिनक निर्मल आओर रातिक तरेगन भरल अकास, गरजैत बसात, मेघ ओ नदीसँ प्रवाहित होमयबला जल, प्रकाशमयी उषा आओर शस्यश्यामला विस्तृत पृथ्वी, एहि समस्त प्राकृतिक दृश्यक कवित्वपूर्ण वर्णन कयल गेल अछि।[25] स्पष्ट अछि जे एहन सूक्त सभमे देवत्वक स्थानपर प्रकृतिक प्रतिष्ठा कयल गेल अछि। ऋग्वेदक काव्यतत्वक प्रसंग प्रो. हिरियन्ना संस्कृत स्टडीजमे सेहो कहैत छथि जे- प्राचीनतम भारतीय काव्य, जे हमरा लोकनिकेँ उपलब्ध अछि, ऋग्वेदमे संगृहित अछि। ई प्रसिद्ध अछि जे एहिमे धार्मिक गीतक संकलन भेल अछि तथा आधुनिक अध्येताक रुचिक अनुसार एकर महत्व ऐतिहासिक अछि, काव्यात्मक नहि, लेकिन ई सोचब उचित नहि होयत जे एहिमे काव्यतत्वक सर्वथा अभाव अछि। धार्मिक उत्साह सर्वत्र वास्तविक कविताक उद्गम रहल अछि आओर भारतवर्षमे सेहो ई नियम अपवाद नहि अछि। ऋग्वेदक काव्यात्मक पक्ष सेहो अछि तथा कतिपय सूक्तमे वस्तुतः उत्कृष्ट कोटिक काव्य गुणक समावेश भेल अछि।[26] अतः उचिते कहल गेल अछि जे ऋग्वेद प्रकृतिक काव्य थिक। वैदिक ऋषि लोकनिक प्रकृतिक संग घनिष्ठ सम्बन्ध छल। प्रकृति आ मानवक इएह तत्कालीन घनिष्ठता, मानवक भावुक क्षणक अभिव्यक्तिक रूपमे ऋग्वेदक विभिन्न सूक्त सभमे प्रस्फुटित भेल अछि।

पाणिनि वेदकेँ 'छन्द' कहने छथि- **'छन्दः पादौ तु वेदस्य।**[27] शुक्ल यजुर्ववेद संहितामे वेदक प्रमुख छन्द सभक उल्लेख भेटैत अछि।[28] वैदिक ऋचामे उदात्त, अनुदात्त आओर स्वरित उच्चारणक विधान अछि। इहो सम्भव अछि जे वैदिक ऋचा सामूहिक रूपमे वाद्य-यंत्रक संग गाओल जाइत हो। वेदमे अनेक वाद्ययंत्रक वर्णन अछि। बाणभट्ट, हर्ष चरित प्रथमोच्छवासमे, वैदिक ऋचाक उच्चारण, यजुर्मन्त्रक पाठ तथा सामगानक स्पष्ट उल्लेख कयने छथि- **केचिद् ऋचः समुदचारयन् केचि यजुंष्यपठन्...सामय गायन् विस्वरमकरोत्।** सामवेदमे संगीतपूर्ण पाठक लक्षण स्पष्ट अछि। महाभारतक वनपर्वमे सेहो यज्ञादि अवसरपर सामगानक उल्लेख भेल अछि। सामवेद'क रूढ़ अर्थ 'गान' होइत अछि। वृहदारण्यक उपनिषदमे साम शब्दक व्युत्पति देल गेल अछि - **सा च अमश्चेति तत्साम्नः सामत्वम्** (१।३।२२)। अर्थात् सा शब्दक अर्थ थिक ऋक् आओर अम शब्दक अर्थ थिक गान्धार आदि स्वर। अतः साम शब्दक अर्थ भेल ऋक'क संग स्वर-प्रधान गायन- तया सह सम्बद्धो अमो नाम स्वरो यत्र वर्तते तत्साम। ऋग्वेद आओर वेदानुयायी ब्राह्मण तथा सूत्र ग्रंथ सभमे सेहो यज्ञ तथा संस्कारक अवसरपर वीणा-वादन, गायन आदिक विधान अछि। यजुर्ववेद कालमे वेदगायक लोकनिक अस्तित्वक संकेत भेटैत अछि।[29] सर्वदर्शन संग्रहमे ऋककेँ पद्य, यजुकेँ गद्य आओर सामकेँ संगीत कहल गेल अछि।[30] यजुर्वेदक गद्यबद्ध छन्दहुमे लयात्मकता अत्यधिक अछि।

वैदिक साहित्यमे गीतिकाव्यक निम्नलिखित शैलीगत भेद भेटैत अछि-

1. नाट्यगीत 2. सांगीतिक 3. पद-गीत 4. प्रगीत 5. आवृत्ति गीत 6. मुक्तक गीत 7. गाथा गीत 8. समवेत गीत 9. प्रश्नोत्तर गीत 10. गीतिमाला 11. मध्यगीत। एहि गीति-प्रभेद सभमे आदिकालीन नृत्य-गीतक विकसित स्वरूपक निदर्शन भेल अछि।

विषयक आधारपर वैदिक गीतिकाव्यक निम्नलिखित भेद कहल गेल अछि-

1. स्तुति गीत, 2. अभिचार गीत, 3. गोचारण गीत, 4. प्रेम गीत, 5. व्यंग्य गीत, 6. वीर गीत, 7. मंगल गीत, 8. प्रशस्ति गीत, 9. उपालंभ गीत, 10. कीर्तन गीत,11. युद्ध गीत, 12. प्रयाण गीत, 13. राष्ट्र गीत, 14. ऋतु गीत तथा 15. शोक गीत ।[31]

वैदिक युग प्रधानतः यज्ञक युगक छल । ब्राह्मणकालमे कर्मकाण्डक विधान अत्यंत जटिल भऽ गेल । किन्तु पुराण कालमे कर्मकाण्डकेँ गौण मानल जाय लागल । परवर्त्ती कालमे उपनिषदक चिन्तन प्राधान्य होयबाक कारणे गीतिकाव्यक धारा कमजोर पड़ि गेल । वाल्मीकि रामायण, महाभारत तथा अन्य पुराण सभमे गीतात्मक प्रवृत्ति भेटैत अछि । वाल्मीकि रामायणमे मानवीय मनोभाव पहिल बेर काव्यक केन्द्रिय भावक रूपमे स्थापित भेल, जे पश्चात् कालमे काव्याभिव्यंजनाक दृष्टिएँ कविक सफलता-असफलताक मापदण्ड बनि गेल । इएह कारण जे बाल्मीकि आदिकविक पदवी प्राप्त कयलनि ।[32] बाल्मीकिक रचनाक संग संस्कृत काव्यमे वर्णनात्मकताक क्रमशः ह्रास होइत गेल आ गीतितत्वक प्रभाव बढ़ैत गेल ।

पुराण साहित्यक मध्य गीतिकाव्यक दृष्टिसँ श्रीमद्भागवत पुराण अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रन्थ अछि । एहिमे श्रीकृष्णक लीलावर्णन विषयक पद सभ लालित्य ओ माधुर्य भावसँ परिपूर्ण अछि आ एहि पदसभमे गीतात्मकता सहज-स्वाभाविक रूपेँ आबि गेल अछि । एहि ग्रन्थमे विविध लीला-प्रसंगकेँ 'गीत' यथा-वेणु-गीत, गोपी-गीत, युगल-गीत, पिंगला-गीत, भिक्षु-गीत, ऐल-गीत आदि कहल गेल अछि । वेणु गीतमे श्रीकृष्णक वंशीवादन सुनि गोपी सभ भावोन्मादमे कृष्णकेँ कल्पनामे साकार पाबि अनायासे गाबि उठैत छथि । भ्रमर गीतमे गोपी लोकनिक अन्तर्व्यथा फूटि पड़ैत अछि । आत्मविस्मृतिक अवस्थामे ओ लोकनि भौंराकेँ कृष्णक दूत बूझि उलहन देबऽ लगैत छथि । भागवतक सभ गीत संस्कृतक वर्णवृत्त, शिखरणी, रथोद्धता, इन्द्रव्रजा आदिमे रचित अछि ।

प्राचीन संस्कृत नाट्य-साहित्यमे गीति-योजनाक अन्तर्गत गीतिकाव्यक उत्कृष्ट प्रयोग भेल अछि । भारतीय गीतिकाव्यक विकास-परम्परामे एहि गेय पद सभक महत्वपूर्ण स्थान अछि । नाटकमे प्रयुक्त एहन पद सभ मुख्यतः संगीत प्रधान अछि, मुदा एहि पद सभमे अनेक एहन पद अछि जे अनुभूतिक सघनताक कारणे आधुनिक गीतिकाव्यक कोटिमे परिगणित होइत अछि ।

आदिकवि वाल्मीकि मानवीय भावक अभिव्यक्तिक हेतु, प्रकृति संग सामञ्जस्य स्थापित करबाक जे नव काव्य-परिपाटीकेँ जन्म देलनि तकर उत्कर्ष विश्वकवि कालिदासक रचनामे भेटैत अछि । कालिदास बाह्य प्रकृति एवं अन्तः प्रकृतिक सुन्दर समन्वय कयलनि । डॉ. परमानन्द शास्त्रीक शब्दमे- यदि वाल्मीकि संस्कृतक आदि कवि छथि तँ कालिदास आदि गीतिकार । डॉ. शास्त्रीक अनुसार ई कहब असंगत नहि होयत जे वाल्मीकिक अध्ययन कयने बिनु कालिदासक अध्ययन पूर्ण नहि होयत । कालिदासक काव्यमे वाल्मीकिक मनोरम पदावली तथा मञ्जुल भाव भरल अछि ।[33] कालीदासक 'मेघदूत'केँ गीतिकाव्य कहल गेल अछि । मेघदूतक काव्य विरहाकुल हृदयक सहज भावाभिव्यक्ति थिक । वस्तुतः यक्षक माध्यमसँ कवि प्रेमी हृदयक विविध सुख-दुःखानुभूतिक सजीव चित्रण कयलनि अछि । यक्षक वियोगजन्य व्यथा तथा मेघकेँ दूत रूपमे यक्षिणी लग पठयबाक मेघदूतक कल्पना, वाल्मीकिक सीताहरणक पश्चात रामक वियोग ओ हनुमानकेँ दूत बना

कऽ पठयबाक सहज स्मृति दिअबैत अछि। कालिदास वाल्मीकिसँ कतेक प्रभावित छलाह तकर निदर्शन हुनक अपनहि श्लोकमे भेटैत अछि- **इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा** (उत्तरमेघ-37)।

मेघदूतक शैली अत्यंत सरस आओर स्वाभाविक अछि। शब्दक कुशल प्रयोग, भाषाक लालित्य, भावक संप्रेषणीयता तथा छन्द ओ अलंकारक उत्कृष्ट प्रयोग मेघदूतक काव्य-सौन्दर्यकेँ शिखरपर पहुँचा दैत अछि। प्रो. हिरियन्ना मेघदूतकेँ श्रेष्ठतम गीतिकाव्यमेसँ एक मानैत एकर शैली-सौन्दर्यपर मुग्ध होइत लिखैत छथि- “there is nothing that is archatic or abstruse in it, and it is also singularly free from out of the way derivations and ponderous compounds, which may easily disfigure the composition of a poet writing in a learned language like Sanskrit. It shows, by the way, that the highest form of poetry can be fashioned out of the simplest words. The range of the vocabulary again is surprisingly wide, considering the short compass of the poem. To mention only the other striking feature : very few words and phrases are used in the work more than twice, and several only once.” (Forward to Padawali of Meghsandesh by Yatiraj Sampat Kumar Ramanujam.)[34]

कालिदासक पश्चात् अनेक कवि कथावस्तु, भाषा-शैली, छन्द-प्रयोग आदिक दृष्टिसँ हुनक अनुकरण कयलनि। मेघदूतसँ प्रभावित दूतकाव्यक नव परम्पराक सूत्रपात भेल।शृंगार काव्य-परम्परासँ फराक धार्मिक गीति-परम्परामे सेहो गीतिकाव्यक विकास भेल। महाकाव्य युगमे वैदिक युगक इन्द्र, वरुण, उषा आदि देवताक स्थानपर उत्पादक, पालक आओर संहारक शक्तिक रूपमे ब्रह्मा, विष्णु ओ महेशक देवता रूपमे प्रतिष्ठा भेलनि। पौराणिक कालमे भक्ति-भावनाक विकाससँ आराध्य देवक स्तुति-रचना सभ हुअय लागल। पारलौकिक सुख ओ मोक्ष-प्राप्तिक कामना एहन स्तुतिक प्रधान-स्वर बनि गेल। अभिव्यक्तिक सहज मार्मिकताक कारणे एहि श्लोक सभकेँ गीतिकाव्यक कोटिमे राखल जा सकैत अछि।

जयदेवक गीतगोविन्द

नवम शताब्दीमे पालवंशक शासनकालमे बंगाल एकटा सुविस्तृत देश बनि गेल। ताहि समयमे, आजुक उड़ीसासँ बिहार प्रान्त धरिक अधिकांश भू-भाग एहि देशमे अन्तर्भुक्त छल। बारहम शताब्दीक मध्यमे बंगालमे सेनवंशक साम्राज्य स्थापित भेल। एहिवंशक चारिम ओ एकीकृत बंगालक अन्तिम हिन्दू शासक लक्ष्मण सेनक शासनकालमे जयदेव 'गीतगोविन्द'क रचना कयलनि। 'गीतगोविन्द' भारतीय गीतिकाव्येतिहासमे अन्यतम प्रवर्त्तक काव्यग्रन्थ मानल जाइत अछि। जयदेव संस्कृत काव्यधाराक काव्य-रूढ़िकेँ तोड़ि लोक-साहित्य आ लोक-जीवनसँ प्रभाव ग्रहण कयलनि आ संस्कृत गीतिकाव्यकेँ नवीन चेतनासँ सुसम्पन्न कयलनि।

डॉ. सुकुमार सेन लिखैत छथि- गीत गोविन्दक गीतक रचना संस्कृतमे भेल अछि, किन्तु ओकर पदावली, लय आओर अन्त्यानुप्रास लौकिक कविताक अछि। संस्कृत कविताक जड़ताकेँ लोक-प्रचलित संगीतात्मक गीतिक कोमलता तथा मधुरता प्रदान कए जयदेव संस्कृत कविताक पुनरुत्थानक अन्तिम प्रयास

कयलनि । जयदेवक कविता राधा-कृष्णक प्रेमकेँ भारतीय आर्य भाषा सभक गीतिकाव्यक प्रमु विषयक रूपमे प्रतिष्ठित कयलक ।[35]

"गीतगोविन्द"क पद सभक लोकप्रियता भारतीय गीति-साहित्य परम्पराकेँ नवजीवन प्रदान कयलक । एकर पद सभमे जयदेव लोकजीवनमे प्रचलित यात्रा-गीतक शैलीमे श्रीकृष्ण-लीलासँ संबन्धित गीत सभक रचना कयलनि । गीतगोविन्दक पद सभ राग-तालमे निबद्ध अछि । मुदा, तत्कालीन प्राकृत-अपभ्रंशमे प्रचलित गीत-संगीत परम्पराक प्रभावसँ मुक्त नहि अछि । आचार्य रमानाथ झाक अनुसार-"संस्कृतमे राग-ताल-लयाश्रित गीत काव्यक रचना आइसँ सहस्रावधि वर्ष पूर्व जयदेव 'गीतगोविन्द'मे कयल। परन्तु जयदेव एहि गीतक रचनामे देशमे प्रचलित गीत काव्यसँ प्रभावित भेल छलाह, ओकर अनुकरण कए ओ संस्कृतमे गीत रचल । एकर प्रमाण सहजयानक सिद्ध लोकनिक रचना उपलब्ध अछि, जकर प्रकाशन चर्यापद नामसँ भेल अछि । चर्यापदक गीत नेपालमे भेटि गेल, ओ सब नष्ट होयबासँ बचि गेल, मुदा ओहिसँ अनुमान कऽ सकैत छी जे जयदेवसँ पूर्वक युगमे कोन प्रकारक गीत होइत छल, कोन रीतिसँ गीतक रचना होइत छल । 'गीतगोविन्द' भाषासौन्दर्य, भाव-सौन्दर्य एवं गेयधर्मिताक कारणे अत्यन्त महत्वपूर्ण पोथी थीक ।"

डा. सुनीति कुमार चटर्जी गीतगोविन्दकेँ भारतीय साहित्य मध्य नवयुग अर्थात् भाषा युगक प्रवेश गीत कहने छथि। 'लोकजीवन ओ लोकगीतसँ प्रभावित होयबाक कारण पिशेल, लेबी आदि पाश्चात्य विद्वान 'गीतगोविन्द'केँ नाटक आ गीतक बीचक काव्यरूप मानैत छथि । तहिना विलियम जोन्स एकरा गोचारण नाटक (पेस्टोरल ड्रामा) कहलनि अछि । सुनीति कुमार चटर्जीक एहि सम्बन्धमे कहब छनि-"अन्ततः समाख्यान काव्य रहितहुँ गीतगोविन्दमे नाटकीय तत्व अछि। राधा ओ कृष्णक सहचर-सहचरी द्वारा वा दिव्य प्रेमी-प्रेमिका द्वारा गाओल गेल गीत सभ संवाद जकाँ लगैत अछि ।"

गीतगोविन्दमे वर्णित राधा-कृष्ण लीला प्रसंग नितांत मौलिक अछि। 'राधा' नामक उल्लेख सर्वप्रथम किछु कश्मीरी कवि लोकनिक रचनामे भेटैत अछि। जतय 'राधा' एक जातिवाचक संज्ञा 'प्रेयसी' अथवा 'प्रेमिका'क रूपमे प्रयोग भेल अछि । एकर पुलिंग रूप 'राध' (अर्थात् प्रेमी) 'अवेस्ता'मे भेटैत अछि । जयदेवक गीतिक आदिरूप कश्मीरी कवि क्षेमेन्द्रक एक कवितामे भेटैत अछि । ईसाक पहिल सहस्राब्दक उत्तरार्द्धक शताब्दीमे बंगालक कश्मीरसँ निकट सम्बन्ध रहल । तखनहि राधा-कृष्णक शृंगारिक प्रेम-विषयक विकास मिथिला आ बंगालमे भेल । मिथिला आ बंगालक वैष्णव कवितापर जयदेवक प्रभूत प्रभाव पड़ल ।[36] गीत-गोविन्दमे जयदेव राधा-कृष्णक प्रेम, अभिसार आदि लीलाक माध्यमे आशा-निराशा, मान-मिलन, उत्कंठा-आकांक्षा, ईर्ष्या-राग प्रभृति विभिन्न प्रेम-दशाक सजीव चित्रण कयने छथि।

देशक तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक आओर धार्मिक स्थिति अत्यंत अराजक छल । देशमे कोनो केन्द्रिय सत्ताक अभाव छल । धार्मिक कट्टरताक ओ जाति विभेद अपन चरमोत्कर्ष प्राप्त कयने छल । भारतक आर्थिक समृद्धिसँ आकर्षित विदेशी आक्रमणकारी स्थानीय जन-जीवनकेँ आक्रान्त कऽ चुकल छल । कुल मिलाकऽ राजनैतिक आओर सांस्कृतिक दृष्टिसँ ई संघर्षकाल छल । अतः तन्त्रवादक नामपर नारी-भोग, सुरापान, धार्मिक क्षेत्रमे आयल नैतिक स्खलन आदिकेँ दूर करबाक तथा लोककेँ पुनः भगवद्-विषयक रति दिस

उन्मुख करबाक आवश्यकता विद्वत समाज मध्य अनुभव कयल जा रहल छल। एहन समयमे जयदेव भगवद्-भक्तिक अभिनव विचार ओ शैलीक प्रवर्त्तन कयलनि जाहिसँ जनताकेँ रतिभावक नव आवलम्बन प्राप्त भेल। अपन रचनाक उद्देश्य ओ महत्वकेँ रेखांकित करैत जयदेव लिखलनि-

यदि हरिस्मरणे सरसं मनो यदि विलासकलासु कुतूहलम्।
मधुरकोमलकान्तपदावली शृणु तदा जयदेवसरस्वतीम्॥

यदि हरि-स्मरणमे मन अछि तथा यदि विलास-कथाक प्रति कौतूहल अछि तँ जयदेवक कोमलकान्त पदावली सुनू। स्पष्ट अछि जे गीतगोविन्दक भक्ति आओर शृंगारक गठजोड़ बेस सुविचारित छल।

'शुकशुभोदय' नामक ग्रन्थमे लिखल अछि जे जयदेवक स्त्री पद्मावती कुशल गायिका छलीह आओर ओ अपन पतिक संग बंगालक बाहर (प्रायः मिथिलाक) एकटा प्रसिद्ध संगीतज्ञ संग प्रतिस्पर्द्धामे भाग लेलनि। भक्तमालक टीकामे वर्णित अछि जे जयदेवक ससुर अपन पुत्री पद्मावतीकेँ पुरीक जगन्नाथ मंदिरमे देव नर्तकी बनवय चाहैत छलाह। एहिसँ एतबा स्पष्ट अछि जे पद्मावती जयदेवक प्रेरणा छलीह आ तेँ कवि स्वयंकेँ "पद्मावती-चरण-चारण-चक्रवर्ती" कहलनि अछि[37]-

वाग्देवताचरितचित्रितचित्रसद्या
पद्मावतीचरणचारणचक्रवर्ती
श्रीवासुदेवरतिकेलिकथासमेत-
मेतंकरोति जयदेव कविः प्रबन्धम्।

गीतगोविन्दक पदसभमे गेयता, संक्षिप्तता, आत्माभिव्यंजकता, अन्त्यानुप्रासिकता आओर अनुभूतिक सघनता विद्यमान अछि। जयदेव प्रवर्तित पदगीतक शैलीक अनुसरण मध्यकालमे भक्तकवि लोकनि यथा विद्यापति, सूरदास, तुलसीदास, चंडीदास, आदि कयलनि।

पालि तथा प्राकृत गीतिकाव्य

परवर्त्ती युगमे संस्कृतक काव्यधारा क्लिष्ट होइत गेल फलतः सामान्यजनकेँ एहन काव्यसँ मोहभंग होअय लागल। कवि-साहित्यकार लोकनि प्रबन्ध ओ मुक्तक काव्य-रचना दिस प्रवृत्त भेलाह आ गीतिकाव्य संगीतज्ञ लोकनि संसर्गमे मार्गी संगीत (शास्त्रीय संगीत)क रूपमे बदलि गेल आ क्रमशः आमजनजीवनमे संस्कृत गीतिकाव्य अप्रचलित भऽ गेल। बौद्धकालमे सहज धर्म ओ स्वाभाविक भाषाक प्रचार-प्रसार भेलासँ संस्कृतक स्थानपर लोकभाषा आ लोकसाहित्यक उदय होअय लागल। एवं प्रकारेँ कालान्तरमे पालि, प्राकृत ओ प्राकृत-अपभ्रंश भाषा-साहित्यक विकास भेल। संस्कृत गीतिकाव्य जखन अप्रचलित भेल तखन ओकर स्थानपर एहि भाषा सबहिक गीतिकाव्य मौखिक परम्परामे जन्म लेलक आ भारतीय वाङ्मयमे नवयुगक सूत्रपात भेल।

बौद्ध तथा जैन साहित्यमे विलक्षण गीति सभ भेटैत अछि। ई गीति सभ पालि तथा प्राकृत भाषामे अछि। पालि भाषाक प्राचीनतम साहित्य 'त्रिपिटक'मे धम्मपद, थेरी गाथा आ थेरगाथामे भगवान बुद्धक उपदेश

सभ संकलित छनि । एहि उपदेश गाथामे अधिकांश अनुष्टुप छन्दबद्ध अछि । एकर काव्यरूप वैदिक गीतिसँ प्रभावित अछि । थेर (भिक्षु) आओर थेरी (भिक्षुनी) गाथा बौद्ध भिक्षुक वचनक संग्रह थिक । एहिमे संकलित उक्तिमे काव्यात्मकता आ गीतात्मकता विद्यमान अछि । कवि-कवयित्री अपन जागतिक अनुभूति आ संसारक नश्वरताक प्रति अपन भावना एहि गाथा सभमे व्यक्त कयलनि अछि जाहिसँ एहिमे अभिव्यंजकता ओ रागात्मकताक गुण आबि गेल अछि ।

धार्मिक तथा साम्प्रदायिक काव्य होयबाक कारणे पालि साहित्यमे लौकिकताक अभाव भेटैत अछि । मुदा एकर विपरीत प्राकृत भाषामे लौकिक काव्य सेहो प्रचूर मात्रामे भेटैत अछि । एहि लौकिक साहित्यमे सामान्य जन-जीवनक रागात्मक अभिव्यक्ति भेटैत अछि । प्राकृत गीतिकाव्य मुख्यतः 'गाहा' वा 'गाथा' छन्दमे निबद्ध अछि ।

निष्कर्षतः कहल जा सकैत अछि जे सामान्यतः गीतिवाद्यक संग गाओल जायबला काव्य गीतिकाव्यक कोटिमे परिगणित होइत अछि किन्तु एकर संगहि मानवीय भावान्भूतिक क्षिप्रतम ओ तीव्रतम अभिव्यक्ति गीतिकाव्यक आवश्यक तत्व थिक । गेयता यदि गीतिकाव्यक प्राणतत्व थिक तँ अनुभूतिक सघनता ओ सहज सम्प्रेषणीयता एकर आत्मा थिक । वैदिक युगसँ आइधरि भारतीय वाङ्मयमे गीतिकाव्यक परम्परा अविछिन्न रूपेँ पल्लवित-पुष्पित होइत रहल अछि । पुराण साहित्य ओ संस्कृत महाकाव्यमे गीति-तत्वक प्रचूरता अछि । संस्कृत नाटक सभमे नाट्यशास्त्रक अनुरूप गीत-योजनाक अन्तर्गत गीतिकाव्यक परम्पराक विकास भेल । जयदेवक गीतगोविन्दमे भक्तिरस आओर शृंगाररसक अद्भुत समायोजन अछि । जयदेवक भक्ति-सिद्धान्तसँ प्रेरणा पाबि एकदिस जतय कृष्ण-भक्तिक धारा प्रबल भेल ओतहि हुनक राधा-कृष्ण सामान्य नायक-नायिकाक रूपमे काव्यजगतमे अवतीर्ण भेलाह ।

*****

---

[1] "No dance without singing and no song without a dance, songs for the dance were the earliest of all songs and melodies for the dance, the oldest music for every race" (quoted from 'A Handbook of Poetics' by B. Gummere, GINN AND COMPANY, 1988, P-75)

[2] "The refrain is as old as any poetry of the people and occurs chiefly there in, arising from direct participation folk songs at worship, feast, dance, games or whatever other primitive ceremonies." (quoted from 'A Handbook of Poetics' by B. Gummere, GINN AND COMPANY, 1988, P-83)

[3] "This was simply inarticulate cry of the Privative man, the sudden sense of tear, delight, wonder, grief or love expressed in a melodious sound or series of songs, the earliest form of poetry, this sound or series of sound is preserved by the piety of a later age in its

original and now meaningless form imbedded among the articulate words of a developed song." (आधुनिक गीतिकाव्य, उमाशंकर तिवारी, पृ.29 सँ उद्धृत)

[4] उपर्युक्त, पृ.29 सँ उद्धृत

[5] उपर्युक्त, पृ.29 सँ उद्धृत ।

[6] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पृ.-37 ।

[7] तत्र मुक्तेषु रसबन्धाभिनिवेशिनः कवेस्तदाश्रयमौचित्यम् ।
तत्र मुक्तेषु प्रबन्धोक्ति रसबन्धभिनिवेशिनः कवयो दृश्यन्ते ।। - ध्वन्यालोक, तृतीय उद्योत ।

[8] "A Poem to be sung to the Lyre". (Shiplay's Dictionary of world literary terms.)

[9] Lyric is a general term for all Poetry in which it is or can be supposed to be susceptible of being sung to the accompaniment of a musical instrument." (मैथिली गीतिकाव्यक उद्भव ओ विकास, डॉ. नन्दकिशोर मिश्रा, पृ.-....सँ उद्धृत ।)

[10] "In Other words pure poetry is that which has the essentially Poetic quality is lyric Poetry. Every composition becomes in cravingly lyrical as it become more poetic, the more poetical a drama is, the more lyrical it is; The more poetic an epic, the more lyrical it must be."- Methods and Materials of Literary Criticism by Dr. Charles Mills Gayley, GINN AND COMPANY, 1919, P-7.

[11] "Lyrical has been here held essentially to imply that each Poem shall turn on some single thought, feeling, or situation. In accordance with this, narrative, descriptive, and didactic poems,- unless accompanied by rapidity of movement, brevity, and the colouring of human passion-have been excluded." (The Golden Treasury of the best Songs and Lyrical Poems, Macmillan and Co., London, 1861, Preface)

[12] "In the Lyric, on the contrary, it is converse need which finds its satisfaction in self-expression and the coming to a knowledge of the soul in this expression of itself."
("Philosophy of Fine Arts" by GWF Hegel, P-196.)

[13] महादेवी का विवेचनात्मक गद्य, पृ.-141 ।

[14] मैथिलीशरण गुप्तः कवि और भारतीय संस्कृति कैँ व्याख्याता, पृ.-117 ।

[15] गीतिकाव्य, डॉ. रामखेलावन पाण्डेय, पृ.-36 ।

[16] संस्कृत-गीतिक-काव्य का विकास, डॉ. परमानन्द शास्त्री, प्रकाशन प्रतिष्ठान, पृ.-36 ।

[17] शिखरणी, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, पृ.-6।

[18] साहित्य विमर्श, डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीश, पृ.-64।

[19] काव्यशास्त्रक रूपरेखा, डॉ. धीरेन्द्र, जेनरल बुक एजेन्सी, पटना, पृ. 49।

[20] पूर्वांचलीय गीति साहित्य, , गोविन्द झा (सं.), चेतना समिति, पटना, पृ.- 42।

[21] डॉ. रामदेवझाक फेसबुक पेजसँ उद्धृत।

[22] नवीन मैथिली कविता, डॉ. रमानन्द झा 'रमण', अखियासल प्रकाशन, पृ.-142।

[23] हिलकोर, ताराकान्त झा, 2015, पृ.-21।

[24] आधुनिक गीतिकाव्य, उमाशंकर तिवारी, पृ.-33।

[25] संस्कृत-गीतिक-काव्य का विकास, पूर्वोक्त-16, पृ.-39 मे उद्धृत।

[26] उपर्युक्त, पृ. 39 मे उद्धृत।

[27] पाणिनीय शिक्षा, श्लोक-4।

[28] गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यानुष्टुप्पङ्क्त्या सह।

वृहत्युष्णिहा ककुप्सूचिभिः शम्यन्तु त्वा॥

द्विपदा याश्चतुष्पदास्त्रिपदायाश्च षट्पदाः।

विच्छन्दायाश्च सच्छन्दः सूचिभिः शम्यन्तु त्वा॥

[29] गीतिकाव्य, पूर्वोक्त-13, पृ.-18।

[30] वैदिकाश्च द्विविधा प्रगीता अप्रगीताश्च। तत्र प्रगीताः सामानि अप्रगीताश्च द्विविधाः। छन्दवद्धास्तद्विलक्षणाश्च। तत्र प्रथमा ऋचः। द्वितीया यजूर्षि।

[31] आधुनिक गीतिकाव्य, पूर्वोक्त-24, पृ.- 35-56।

[32] For the first time, so far as our knowledge goes, emotion was deliberately adopted as the subject-matter of poetry. Prof. Hiriynna, Sanskrit Studies, pg. 5 (संस्कृत-गीति-काव्य का विकास, पृ.- 67 सँ उद्धृत।)

[33] संस्कृत-गीतिक-काव्य का विकास, पूर्वोक्त-16, पृ.-189।

[34] उपर्युक्त, पृ.-211।

[35] बाङ्ला साहित्य का इतिहास, डॉ. सुकुमार सेन, पृ.-26।

[36] उपर्युक्त, पृ.-26।

[37] हिलकोर, पूर्वोक्त-18, पृ.-51

द्वितीय अध्याय: मैथिली गीतिकाव्यक परम्परा

मिथिला क्षेत्रमे गीत-संगीतक परम्पराक प्रारम्भ कहिया आ कोना भेल, ताहि सम्बन्धमे कोनो निजगुत जनतब उपलब्ध नहि अछि। मुदा, कालीदासक संस्कृत नाटकमे प्राकृत भाषाक गीत सभक समावेशसँ संकेत भेटैत अछि जे छठम शताब्दीसँ पूर्वहि एहि क्षेत्रमे लोकभाषामे गीतादिक प्रचलन छल। ई परम्परा परवर्तीकालमे प्राकृत-अपभ्रंश ओ अवहट्टक गीति-परम्पराक रूपमे आर सुदृढ़ भेल जकर प्रमाण एतुका प्राचीनतम उपलब्ध ग्रन्थ सभमे भेटैत अछि। डॉ. जयकान्त मिश्रक अनुसार- लगभग 900 ई.मे आबि मैथिली भाषा मागधी प्राकृत वा प्राकृत अपभ्रंशसँ पृथक् स्वरूप ग्रहण कऽ चुकल छल।[1] एहि आधारपर मैथिली गीतिकाव्यक परम्परा लगभग 1200 वर्ष प्राचीन प्रतीत होइत अछि।

इतिहासकार लोकनिक अनुसार, एगारहम शताब्दीक अंतमे कर्णाटवंशीय शासन व्यवस्था कायम भेला उत्तर मिथिलामे राजनैतिक स्थिरता आयल आ मिथिलाक सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहासमे नवयुगक सूत्रपात भेल। 1097 ई. मे नान्यदेवक नेतृत्वमे मिथिलामे कर्णाटवंशीय शासन व्यवस्था कायम भेल जे 1324 ई. धरि अर्थात् हरसिंह देवक शासनकाल धरि चलल। ई 227 वर्षक अवधि मिथिलाक इतिहासमे स्वर्ण युग कहल जाइत अछि। नान्यदेव स्वयं प्रतिभाशाली संगीतज्ञ ओ कलाप्रेमी छलाह। हिनक शासनकालमे मिथिलाक राजदरबारमे विद्वान ओ कलाप्रेमी लोकनिकेँ राज्याश्रय भेटलनि आ मिथिला एकबेर पुनः विद्याक केन्द्र रूपमे समादृत भेल। नान्देवकृत 'सरस्वती हृदयालंकार (1096 ई.) ताहि अवधिक मैथिली गीत-संगीत परम्परा ओ नान्यदेवक संगीत-शास्त्रज्ञ होयबाक सबूत थिक।

चर्यापद

सातमसँ तेरहम शताब्दीक मध्य बौद्ध धर्मक 'वज्रयानी भिक्षु' अथवा तांत्रिक आचार्य लोकनिक कार्यक्षेत्र पश्चिममे गोरखपुरसँ पूब दिस असम धरि पसरल छल। ई तांत्रिक लोकनि अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न छलाह तथा अपन करतबसँ आमजनकेँ चमत्कृत ओ आतंकित कयने रहैत छलाह। नालंदा ओ विक्रमशिला हिनकर सभक केन्द्र छल तथा पालवंशीय राजा लोकनिक हिनका सभकेँ संरक्षण प्राप्त छल। इतिहाससँ ज्ञात होइत अछि जे राजा धर्मपाल (770 ई.) विक्रमशिला विश्वविद्यालयक स्थापना कयने छलाह। ई तंत्रसाधक लोकनि अपन साधनाक जे अनुभूति ताहि समयमे लिखलनि तकरा 'सिद्ध साहित्य' अथवा 'चर्यापद' कहल जाइत अछि। वर्णरत्नाकरमे कुल चौरासी गोट सिद्ध लोकनिक चर्चा भेल अछि। सरहपा (769-809 ई.), शबरपा (769-

809 ई.), लुइपा (769-809 ई.), गुण्डरीपा (809 ई),दारिकपा (809 ई.), डोम्बीपा (809 ई.), कुकुरीपा (809-849 ई.), भुसुकपा (809-849 ई.), कण्हपा (809- 849 ई.), शान्तिपा (974-1026 ई.), आदि प्रमुख सिद्ध साहित्य रचनाकार लोकनि छथि। सरहपा सबसँ प्राचीन तथा प्रतिष्ठित सिद्ध भेलाह।

1916 ई. मे म.म. हरप्रसाद शास्त्री बंगीय साहित्य परिषदसँ 'बौद्धगान ओ दोहा' नामक पोथीमे मैथिली सिद्ध साहित्यकेँ प्राचीन बंगलाक उदाहरण कहि प्रकाशित करौलनि। किछु विद्वान लोकनि एकरा प्राचीन असमिया ओ प्राचीन ओड़िया सेहो कहलनि। मुदा, राहुल सांकृत्यायन, के.पी. जायसवाल, म.म. उमेश मिश्र, डॉ. सुभद्र झा, श्री नरेन्द्रनाथ दास, शिवनन्दन ठाकुर प्रभृति विद्वान लोकनि एकरा प्राचीन मैथिलीक निदर्श मानलनि। एहि प्रसंग डॉ. सुभद्र झाक कथन छनि- The Language of Charyas, Suwanand, Prakrit-Paingalam, Kirtilata and Kirtipataka represent Maithili of the oldest period in as which as it preserves some of the apbhransa Charactaristic.[2]

तहिना डॉ. राधाकृष्ण चौधरीक अनुसार- The Charya songs are believed to be the earliest specimen of Maithili. They are in *matravritta* (based on the matra or weight of the syllable) metre. It means the varios modes in which the songs are meant to be sung….the joining of metre with melodies (Ragas and Raginis) is found in the Charyapads. The absence of Payar (fourteen syllables) in these songs, a peculiarity of the Bengali or eastern Magadhi metre, is an important proof of the fact that these songs are in Maithili.[3]

“बौद्धगाण आ दोहा”मे तीन प्रकारक सिद्धसाहित्यक रचना संकलित अछि- चर्याचर्य-विनिश्चय वा चर्यापद, दोहाकोश आ डाकार्णव। चर्चापद प्राचीन मैथिली साहित्यक अनमोल निधि थिक जाहिमे मिथिलाक तात्कालिक सामाजिक, सांस्कृतिक आ राजनीतिक परिवेशक स्वाभाविक चित्रण भेटैत अछि। एहि पद सभमे प्रयुक्त गोपजीवन संबंधी कल्पना, एतुका कृषक तथा पशुपालक समाजक तत्कालीन जीवन परिचय दैत अछि। एहि पद सभमे मैथिली लोकोक्तिक प्रचुरतासँ प्रयोग भेल अछि तथा मिथिलाक सांस्कृतिक वैशिष्टयक वर्णन भेटैत अछि। मिथिलाक तंत्रोपासना परम्पराक प्रभाव चर्यापदपर स्पष्टतः देखल जा सकैत अछि। एहि पद सभमे दर्शन ओ धर्म तत्वक प्रधानता अछि।

मैथिली गीतिकाव्यक परम्परामे चर्यापदक विशेष महत्व अछि। एहि प्रसंग डॉ. जयकान्त मिश्र लिखैत छथि- मैथिली साहित्यक इतिहासमे चर्यापदक विशेष महत्त्व अछि कारण जे ई संस्कृत उद्भट श्लोक तथा अपभ्रंश वा देसिल वयनाक ओहि 'पद' बनयबाक परम्पराक बीच शृंखला जोड़ैत अछि जे लगभग दस पंक्ति तथा एक भनिताक छोट सन कविता होइत अछि आ जकर राग उल्लिखित रहैत अछि।[4]

तहिना डॉ. राधाकृष्ण चौधरीक सेहो कहब छनि- The Charya Poems constitute an important link in the history of Maithili literature between the Sanskrit Udbhata poetry and the Apabhramsa vernacular Pada writing.[5]

प्राकृत पैंगलम

प्राकृत पैंगलम छन्दशास्त्र थिक जाहिमे कतिपय छन्दक उदाहरण स्पष्ट करबाक हेतु प्राचीन मैथिली भाषाक पद सभक प्रयोग कयल गेल अछि। ई पद सभ प्राचीन मैथिली साहित्यक निधि थिक, जकर भाषाक विश्लेषणसँ तत्कालीन मैथिली-साहित्यक दशा-दिशा अनुमानित कयल जा सकैत अछि। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी प्राकृत पैंगलममे सन्निविष्ठ रचना सभक काल 900 ई.सँ 1400 ई. धरि मानैत छथि। रविकर एहिमे सम्मिलित अपभ्रंश भाषाक पदकेँ अवहट्ट कहने छथि। एहि पद सभमे मिथिलाक जीवनक्रम, रीति-नीति आदिक जीवन्त चित्र भेटैत अछि।

धूर्तसमागम आ वर्णरत्नाकर

धूर्तसमागम आ वर्णरत्नाकर कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर दू गोट महत्वपूर्ण कृति थिक। धूर्तसमागमक प्रस्तावना वाक्य-*"रामेश्वरस्य पौत्रेण तत्रभवतः पवित्र कीर्तिधीरेश्वरस्यात्मजेन महाशासन श्रेणिशिखरभ्रामत्पल्ली जन्मभूमिना कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरेण निज कुतूहलविरचितं धूर्तसमागम नाम प्रहसनः...।*" ज्योतिरीश्वरक प्रमाणिक परिचयक, हुनक पिता तथा पितामहक नाम, गामादिक विषयमे जनतबक एकमात्र स्रोत अछि। आचार्य रमानाथ झा उपरोक्त प्रस्तावना आ सबल तर्कक आधारपर मिथिलाक पाँजि प्रस्तुत करैत कविशेखराचार्यक जीवनकाल तथा वंशावलीक विषयमे विशद जानकारी प्रकाशमे अनलनि तथा हिनकर जन्मकाल 1288 ई. मानल गेल। धूर्तसमागममे कर्णाटवंशीय शासक हरिसिंह देवक उल्लेखसँ प्रमाणित होइत अछि जे एकर रचना हुनकहि शासनकालमे अर्थात 1324 ई.सँ पूर्वहि भेल होयत तथा वर्णरत्नाकर तकर बाद लिखल गेल होयत।

धूर्तसमागम एक गोट संस्कृत भाषामे लिखित प्रहसन थिक जाहिमे मैथिली पद्यक प्रयोग भेल अछि। धूर्तसमागममे कुल बीस गोट मैथिली पद शामिल अछि जाहिमे मात्र बारह गोट पद उपलब्ध अछि। एहि प्रहसनमे मिथिलाक तत्कालीन समाजक, जाति व्यवस्था ओ भोजनक, आचार-व्यवहारक मनोरंजक चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहिमे सन्निविष्ट मैथिली पदक भनितामे "ज्योति" शब्द प्रयुक्त भेल अछि।

वर्णरत्नाकर मैथिलीए नहि अपितु समस्त आधुनिक भारतीय भाषाक पहिल गद्यग्रन्थ थिक। एहिग्रन्थक भाषा-शैलीकेँ देखि सहजहिँ अनुमान लगाओल जा सकैत अछि जे एहिसँ पूर्व प्रचूर मात्रामे पद्य तथा गद्यो लिखल गेल होयत मुदा, एहिसँ पूर्वक कोनोटा गद्य रचना एखन धरि नहि भेटल अछि आ तेँ जाधरि एहन कोनो प्रामाणिक ग्रन्थ प्रकाशमे नहि आओत वर्णरत्नाकरे प्राचीनतम् गद्यग्रन्थक रूपमे प्रतिष्ठित रहत।

वर्णरत्नाकर एक काव्योपयोगी ग्रन्थ थिक। किछु विद्वान लोकनि एकरा कोशक कोटिमे सेहो रखैत छथि किन्तु सम्पुर्ण वर्णरत्नाकरकेँ देखलाक बाद प्रमाणित होइत अछि जे ई मूलतः एक काव्योपयोगी गद्यग्रन्थ थिक जाहिमे किंचित कोश-तत्व सेहो सन्निविष्ट अछि। एहि ग्रन्थक काव्योपयोगिताक प्रमाण एहिसँ भेटैत अछि जे ज्योतिरीश्वरक परवर्ती कवि लोकनि आ खास कऽ महाकवि विद्यापतिक अनेक पद एहि ग्रन्थसँ निर्देशित बुझना जाइत अछि। म.म हरप्रसाद शास्त्री सेहो कहैत छथि जे-"एहिमे कविसमय (काव्यपरिपाटी) वर्णित

अछि....कतहु-कतहु काव्यपरिपाटी बड़ रोचक अछि...लगैत अछि जेना विद्यापतिक प्रतिभा एहि ग्रन्थसँ आलोकित भेल हो।"[6]

वर्णरत्नाकरक उपलब्ध 78 पात अथवा 156 पृष्ठक हस्तलेख कुल आठ अध्याय वा कल्लोल (तरंग) मे विभक्त अछि। पहिल कल्लोलमे नगर वर्णन अछि जाहिमे नगरक निम्न जाति-श्रेणी, रत्न, वस्त्र, मलमल, तम्बू, द्युतगृह, वैद्य, ज्योतिर्विद, किला, नगर कोलाहल आदि वर्णित अछि। दोसर कल्लोल नायक-वर्णनामे शृंगारक सकल अंगोपांगक वर्णन अछि। एहिमे नायकक गुण, नायिकाक नख-सिख शृंगार, ओकर सौन्दर्य, ओकर सखी आदिक वर्णन अछि। तेसर कल्लोल स्थान वर्णनाक अन्तर्गत राजदरबार, राजमहल, अंगमर्दन गृह, स्नानगृह, व्यापारस्थल, पूजागृह आदिक वर्णन अछि। चारिम कल्लोल, ऋतु वर्णनामे बरख भरिक विभिन्न ऋतु, चौसठि कलाक नाम, षोडश महादान, अठारह प्रकारक रत्न, बत्तीस प्रकारक उपमणि, तीस प्रकार वस्त्र, कामावस्था आदिक वर्णन अछि। प्रयाण वर्णना नामक पाँचम कल्लोलमे राजाक सपरिजन शिकार, युद्ध, वनक सघनता एवं रमणीयता, सैनिक प्रस्थानोपरान्त धूरा भरल मार्ग, पर्वत, ऋषिक आश्रम, आदि वर्णित अछि। छठम कल्लोल भट्टादि वर्णनामे कविता, संगीत, एवं नृत्यकलाक वर्णन अछि। सातम कल्लोलमे श्मशानक वर्णन, भैरव, शक्ति, योगिनी, बेताल, कापालिक आदिक वर्णन भेटैत अछि। आठम तथा अन्तिम कल्लोलमे राजपुत्रकुल वर्णनाक अन्तर्गत छत्तीस प्रकारक, शस्त्र-अस्त्र आदिक प्रसंगक वर्णन अबैत अछि।

वर्णरत्नाकरक अध्ययनसँ तत्कालीन मैथिली साहित्य-परम्पराक चित्र भेटैत अछि एवं मिथिलाक समृद्ध साहित्यिक परम्पराक परिचय भेटैत अछि। एहि ग्रन्थसँ ज्ञात होइत अछि जे जे ताहि समय, मिथिलाक लोकभाषाक साहित्य गीतमय छल। वर्णरत्नाकरमे नृत्य, गीत ओ संगीतक विस्तृत वर्णन भेल अछि। एहिमे विद्यावन्त अथवा किरतनिञा, डफिला, लोरि, लोरिक, विरहा, चाँचरि, चउपइ, लगनी आदि नृत्य-गीतादिक उल्लेख भेटैत अछि। तहिना एहिग्रन्थमे कवीशेखर अनेक राग-रागिणीक नामोल्लेख सेहो कयने छथि।

एवंप्रकारे प्रतीत होइत अछि जे प्राचीनकालमे मैथिली गीतिकाव्यक अत्यंत समृद्ध परम्परा छल तथा गीतिकाव्यक विशिष्टतासँ भरल छल। प्राचीन मैथिली गीतिकाव्यक विशेषतापर प्रकाश दैत डॉ. जयकान्त मिश्र लिखैत छथि- "एहिमे अत्यधिक गेयता होइछ। ई सद्यः हृदयग्राही ओ अद्वितीय स्वाभाविकतासँ सम्पन्न रहैछ, ई मात्र एकहि गोट भाव अथवा अनुभव धरि सीमित आकारक होइछ, एकर रूप अगणित ओ विविध होइछ, एकर प्रमुख प्रेरणा स्रोत दैनन्दिन जीवनक अनुभव सभ होइछ, तथा ई संस्कृत कथा साहित्य ओ पौराणिक परम्परा एवं साहित्य-शास्त्रपर आधारित रंगविरंगक प्रतीकसँ सर्वथा अनुप्राणित रहैछ। मैथिलीक प्राचीन गीतिक एकगोट इहो विशेषता अछि जे ओहिमे भनिता देल रहैछ।[7]

विद्यापति पदावली

“कवि विद्यापति एकगोट सार्वभौम कवि छथि। हिनक वाग्वैभव केवल मैथिली साहित्यक लेल नहि, अपितु समग्र भारतवर्षक साहित्यक लेल वरदान स्वरूप थीक। एहि अमित प्रकाशपिण्डक आविर्भाव साहित्याकाशमे एहन समयमे भेल, जखन भारतीय साहित्यमे सामाजिक चेतनाक अभिव्यक्ति नहि होइत छल। कविगण प्राचीन परम्पराक अन्धानुसरण करैत छलाह, हुनक सभक विषय ओ भाषा शैली प्राचीन छल।

तात्कालिक जीवनक स्पन्दन साहित्यमे उपलब्ध नहि छल। जीवनोचित उष्णता ओ गतिक नितान्त अभाव छल। मुदा विद्यापति तिमिर संहारक तरणि छलाह। हिनक संस्पर्शसँ भारतीय साहित्यचिन्तनकेँ नवीन दिशा-निर्देश प्राप्त भेल। कारण हिनक वाणीमे युगकेँ वाणी भेटल। अपन युग-भाषाकेँ विद्यापति लोकप्रिय बनौलन्हि।"[8]

विद्यापतिक जीवनकाल 1350 ई.सँ 1450 ई. मध्य मानल जाइत अछि। विद्यापति प्रकाण्ड नैयायिक पक्षधर मिश्रक सहपाठी छलाह। पहिने ई महाराज कीर्तिसिंहक दरबारी भेलाह आ हुनकहि प्रशंसामे कीर्तिलता नामक ग्रन्थक रचना कयलनि। तदुत्तर महराज भवसिंह, हुनकर पुत्र देवसिंह आ पौत्र शिवसिंहक राजदरबारी बनलाह। महाकवि विद्यापति निर्विवाद रूपेँ मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कवि छथि। आधुनिक भारतीय भाषाक मध्य सर्वप्रथम इएह पारम्परिक संस्कृत भाषा ओ साहित्यक एकाधिकारकेँ तोड़बाक साहस कयलनि आ लोकभाषा मैथिलीमे रचना कयलनि। विद्यापतिक एहि लोकभाषा प्रेमसँ मिथिला समेत समूचा भारतवर्षमे परवर्ती साहित्यकार लोकनि प्रेरणा ग्रहण कयलनि आ हिनकहि आदर्शक अनुसरण करैत पश्चात कबीर (1399 ई.), चण्डीदास (1418 ई.), सूरदास (1435 ई.) शंकरदेव (1449 ई.), मीराबाई (1497 ई.), तुलसीदास (1540 ई.), रामानन्द राय (पन्द्रहम शताब्दी) आदि अपन भावाभिव्यक्तिक माध्यम स्थानीय लोकभाषाकेँ बनौलनि।

जखन मुसलमानी आक्रमणसँ पीड़ित भारतीय समाज, अपन संस्कृतिक सुरक्षाक हेतु संघर्षरत छल; मिथिलावासी अपन सांस्कृतिक परिचितिकेँ सुरक्षित रखबाक हेतु अन्तर्मुखी भऽ गेल छलाह तथा अपन सांस्कृतिक संघटनकेँ सुदृढ़ करयमे जुटल छलाह। एहि क्रममे परम्परागत धर्म ओ सभ्यता-संस्कृति आधारित आचार-विचारक पुनर्निर्धारण भेल। एहि सामाजिक पुनर्संघटनमे विद्यापतिक पूर्वज लोकनि तथा महाकवि स्वयं उल्लेखनीय योगदान कयलनि । भू-परिक्रमा, पुरुषपरीक्षा, शैवसर्वस्वर, गंगावाक्यावली, विभागसार, दानवाक्यावली, दुर्गाभक्तितरंगिणी, वर्षकृत्य, गयापत्तलक आदि मिथिला तथा भारतवर्षक सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्गठनक हेतु महाकवि द्वारा लिखित प्रमुख संस्कृत ग्रन्थ थिक । संस्कृत भाषामे लिखित 'मणिमञ्जरी' नाटिकामे राजा चन्द्रसेन ओ मणिमंजरीक कथा उल्लिखित अछि। लिखनावली महाकवि रचित एक अन्य महत्वपूर्ण संस्कृति थिक जाहिमे कुल चौबीस गोट पत्र अछि, जाहिसँ तत्कालीन सामाजिक ओ सांस्कृतिक जीवनक परिचय भेटैत अछि।

कीर्तिलता तथा कीर्तिपताका विद्यापतिक दू-गोट अत्यन्त महत्वपूर्ण अवहट्ट कृति थिक। कीर्तिलतामे महाराज कीर्तिसिंहक यशोगान अछि। चारि पल्लवमे निबद्ध एहि चरित काव्यक मुख्य कथानक अछि जे **असलान** नामक यवन द्वारा महाराज कीर्तिसिंहक पिता गणेश्वरक कोना निर्मम हत्या कयल गेल। आ राज्यक अपहरण भेलाक पश्चात कीर्ति सिंह अपन जेठ भाइ वीर सिंहक संग जौनपुरक सुलतानक सहायतासँ असलानकेँ युद्धमे पराजित कऽ पुनः कोन प्रकारेँ राज्य प्राप्त कयलनि। विद्यापतिक दोसर अवहट्ट कृति 'कीर्तिपताका'क एक खण्डित प्रति नेपालक दरबार पुस्तकालयमे सुरक्षित अछि। एहि ग्रन्थक 22 गोट पत्र हेरायल अछि। उपलब्ध अंशमे मुख्यतः महाराज शिवसिंह आ हुनक पितियौत अर्जुनसिंहक यशोगान अछि। एहिमे तत्कालीन युद्धक परिपाटी, अस्त्र-शस्त्र, आ वस्त्राभूषणक परिचय भेटैत अछि।

मुदा, महाकवि विद्यापतिकेँ भारतीय वाङ्मयमे जे कृति अमरत्व प्रदान कयलक से थिक हुनक मैथिली कृति सभ । म.म. डॉ.उमेश मिश्र एवं डॉ. जयकान्त मिश्रक संयुक्त सम्पादकत्वयमे, अखिलभारतीय मैथिली साहित्य समिति, प्रयागसँ प्रकाशित, गोरक्षविजय नाटक विद्यापति कृत प्रसिद्ध मैथिली नाटक थिक जकर कथावस्तु सिद्धलोकनिक जीवनसँ सम्बन्धित अछि । डॉ. जयकान्त मिश्रक अनुसार-"गोरक्षविजय ओहि आदिकालक 'नियमित' मैथिली नाटकक शैलीमे लिखल गेल अछि, जे पछाति मिथिलाक प्रसिद्ध किरतनिञा नाटकक रूपमे विकसित भेल ।[9] एहि नाटकमे कुल पच्चीसटा मैथिली गीत सन्निविष्ट अछि, जाहिमे चौदहम गीत कोनो कृष्णपति कविक रचना थिक। एकदिस जतय ई नाटक मैथिली नाटकक विकासक सूत्र बतबैत अछि ओतहि दोसर दिस एहिमे वर्णित सांसारिक भोगमार्ग आओर आध्यात्मिक संयम-मार्गक द्वन्द रचनाकारक साहित्यिक रचनात्मकता आ परिपक्वताकेँ रेखांकित करैत अछि।

विद्यापतिक साहित्यिक जीवनक जे सभसँ लोकप्रिय कृति अछि से थिक हिनक मैथिली पदावली । इएह असंख्य गीत कविकोकिल विद्यापतिकेँ मिथिला तथा मिथिलासँ बाहर आश्चर्यजनक रूपसँ प्रतिष्ठित कयलक। विद्यापति कतेक पद लिखलनि तथा ओकर मूलपाठ की छल तकर अनुमान लगायब कठिन अछि। डॉ. दुर्गानाथा झा 'श्रीश'क अनुसार गेयधर्मिता, निर्दोष आवेगात्मक भावाभिव्यक्ति, संक्षिप्तता, भावक विविधता, पौराणिक आख्यान तथा संस्कृत रीतिक प्रयोग एवं भनिताक प्रयोग विद्यापति पदावलीक प्रमुख वैशिष्ट्य थिक ।[10] विद्यापति पदावलीपर विचार करैत डॉ. विद्यापति झा लिखैत छथि-मैथिली भाषा-साहित्यमे विद्यापति गीति-काव्यक जनक रूपमे सुविख्यात भेलाह। गीतिकाव्यक लक्षण अछि व्यक्तिगत विचार, मनोन्माद, संगहि आशा-निराशाक धाराक अबाध रूपमे प्रवाह। विद्यापतिक गीतिकाव्यमे व्यक्तिगत विचार तँ अछिए मुदा हुनकर भावोन्मादक उग्र रूप बाढ़िक पानि जकाँ आनन्दसँ तर-बतर कऽ दैत अछि । नायिका (राधाक) वयः सन्धि, अभिसार, विरह, मिलन आदिक भावनासँ पूर्णतया सम्बद्ध भऽ गेल अछि।[11]

एखन जे विद्यापतिक रचना कहि गीत सभ उपलब्ध अछि ताहिमे किछु पाण्डुलिपि, किछु प्राचीन पदक संग्रह आ किछु लोककंठसँ प्राप्त अछि । आइ धरि जे विद्यापतिक पदक मुख्य स्रोत अछि ताहिमे- नेपालक पदावली, रामभद्रपुरक पदावली, तरौनीक पदावली, भाषागीतसंग्रह, नानारागगीतम्, लोचन कृत रागतरंगिणी, मिथिला गीत संग्रह, वैष्णव पदावली, आ विभिन्न अनुसंधाता लोकनि द्वारा लोककंठसँ संग्रहित पद, प्रमुख अछि । एहि पद सभमे अधिकांश शृंगार, भक्ति,व्यवहार गीत, आ किछु अन्यान्य विषयक गीति अछि । शृंगार गीतमे मैथिली गीति-परम्पराक अनुसार गीत सभ अछि; यथा-तिरहुति, बटगमनी, मान, गोआलरी, मलार, आदि प्रायः सभ प्रकारक गीत भेटैत अछि । हिनक शृंगार गीतक मुख्य नायक-नायिका कृष्ण आ राधा छथि जाहि कारणे ई पदसभ वैष्णव समाजमे अत्यन्त लोकप्रिय भेल। कहल जाइछ जे चैतन्य महाप्रभु हिनक शृंगारिक गीत गबैत काल भावविभोर भऽ जाइत छलाह । गौड़ीय वैष्णव लोकनिक तऽ एतय धरि कहब छनि जे विद्यापतिक जन्मे एहि हेतु भेल छल जे ओ चैतन्य महाप्रभुक अवतारक पूर्व एहि पृथ्वीपर आबिकऽ राधा-कृष्णक प्रेम-भक्तिक गान लिखथि, जकरा महाप्रभु कीर्त्तनमे गओताह । 'चैतन्य चरितावली'मे कृष्णदास लिखने छथि जे चैतन्यमहाप्रभु विद्यापतिक गीतकेँ बड़ प्रेमसँ सुनैत छलाह- "कर्णामृत विद्यापति श्री गीतगोविन्द दुहें श्लोक गीते प्रभुर कराय आनन्द[12]

हिनक भक्ति विषयक पदमे मिथिलाक पंचदेवोपासनाक परम्परानुरूप शिव, पार्वती, दुर्गा, गणेश, गंगा, कृष्ण ओ राधा सम्बन्धी गीत अछि। विद्यापति पदक राधाक हुनक सम्पूर्ण मानस-सौन्दर्यसँ निर्मित मुरूत थिक जकरा संग कवि अपन सम्पूर्ण निजत्व ओ मनोभाव साझी करैत छथि। तहिना एहि पदसभमे वर्णित कृष्ण सेहो सामान्य जन-जीवनक नायकक रूपमे प्रतिष्ठापित छथि।

लोकाचारसँ सम्बन्धित हिनक व्यवहारिक पदमे महाकवि मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनक अनुरूप अनेक अवसरपर गाओल जाएबला यथा- मुण्डन, उपनयन, विवाह आदिसँ सम्बन्धित गीतक रचना कयलनि। हिनकर रचित विविध पदक अन्तर्गत ऐतिहासिक कविता, शिवसिंहक युद्ध-वर्णन, प्रकृति-वर्णन, स्वप्न-वर्णन, महाप्रयाण वर्णन, कूटपद आदिकेँ राखल जाइत अछि। विशिष्ट कवित्वक कारणे महाकवि विद्यापतिकेँ अनेक उपनामसँ विभूषित कयल गेलनि जाहिमे, अभिनव जयदेव, सुकवि कंठहार, सरसकवि, कविकण्ठहार, कविवर, सुकवि, अभिनव जयदेव, आदि किछु प्रमुख उपनाम थिक जे विभिन्न पद सभमे उल्लिखित भेटैत अछि।

विद्यापति मध्यकालमे समस्त पूर्वी भारतक सर्वप्रथम गायक छलाह जे एक लोकभाषाकेँ साहित्यिक भाषाक स्तरधरि पहुँचा देलन्हि। हिनक मैथिली रचना अपन गांभीर्य, अनुभूति, संगीतात्मकता आ भाषाक सरलताक कारणे चिरकाल धरि राजासँ रंक धरिक मध्य समादृत होइत रहल आ कविकोकिल विद्यापतिकेँ अमरत्व प्रदान करैत रहल अछि। बंगला, ओड़िया, असमिया, नेपाली प्रभृत्त भाषा-साहित्यक अलावे विद्यापति गीति-परम्पराक प्रभाव परवर्ती कालमे अवधी ओ ब्रजभाषाक साहित्यपर सेहो देखल जा सकैए। विद्यापति एवं सूरदासक कतिपय एहन पद सभ उपलब्ध अछि जे एक-दोसरक बिम्ब-प्रतिबिम्ब जकाँ लगैत अछि।

एहि प्रकार महाकवि विद्यापतिक प्रतिभा, काव्यचेतना, लोकभाषाक प्रति अनुराग ओ सामान्य जीवनक साहित्यिक क्षेत्रमे नवीन रीतिएँ महत्त्व रेखांकनसँ, एहि प्राचीन मैथिली गीतिकाव्य धारामे एक नवयुगक सूत्रपात भेल, एकटा नवीन गीतिकाव्य परम्पराक उन्मोचन भेल, जे मध्यकालमे उनैसम शताब्दी धरि अविरल प्रवहमान रहल। एहि प्रसंग आचार्य रमानाथ झा सेहो लिखैत छथि- विद्यापतिक अनुकरणक ई परम्परा एतेक दृढ़ भए गेल जे हुनक परवर्ती कविलोकनिक रचनामे भनिताक पद मात्र द्योतित करैत अछि जे ई गीत अमुकक रचल थिक, भनिता जँ हटाए दिऐक तऽ ई कहब बहुधा असम्भव भए जायत जे कोन गीत ककर थिक।[13]

विद्यापतिक समकालीन निम्नलिखित किछु प्रमुख कविगण छथि जिनकर अत्यल्प गीति उपलब्ध अछि –

1. अमृतकर (1400-1482) - अमृतकर महाराज शिवसिंहक मंत्री छलाह। महाकवि विद्यापति अपन एकटा पदमे हिनक प्रशंसा कयने छथि-

कायस्थ माँह सुप्रसिद्ध भउ, चन्द्र तुलाइव शशिधर।
कवि कण्ठहार कल उच्चरइ अमिअ वरस्सइ अमिअकर॥[14]

पुरूष-परीक्षाक मैथिली अनुवादक परिशिष्टमे चन्दाझा सेहो हिनक उल्लेख कयने छथि। हिनक सात गोट मैथिलीपद उपलब्ध अछि। उपलब्ध पद सभक काव्य वैशिष्ट्यक आधारपर हिनक उच्चकोटिक कवित्व-शक्तिक परिचय प्राप्त होइत अछि। 'रागतरंगिणी'मे संकलित हिनक एकगोट शृंगारिक पद तकर उत्तम दृष्टान्त थिक-

आनन विकल सरोरुह रे देखि अइसन हो भान।
नागर लोचन भमर वर रे भमि-भमि कर मधुपान॥

हिनक पद सभ अमिअकर ओ अमृतकर दुनू कवि-नामसँ उपलब्ध भेल अछि।

2. हरपति - हरपति ठाकुर विद्यापतिक पुत्र छलाह। हिनक पाँच गोट मैथिली पद उपलब्ध अछि। हिनक उपलब्ध पद सभ शृंगारिक अछि जाहिमे परकीया, मानिनी एवं प्रोषितपतिकाक मनोभाव मधुर, सरस, सजीव ओ स्वाभाविक रूपेँ अभिव्यक्त भेल अछि। ई पदसभ नायिकाक मनोभावक रागात्मक अभिव्यक्तिक लेल बड़ महत्वपूर्ण अछि। यथा-

हे कान्हु, हासेँ हेतु हम पूछू हे,
सहसहुँ शपथेँ न बाजल किछु हे।
हे कान्हु, तुअ गुण सुनलक जबे हे,
अवनत कए मुख बिहुँसलि तबे हे॥[15]

3. विष्णुपुरी (1425-1500)- 'भक्ति रत्नावली' नामक ग्रन्थक विख्तात लेखक विष्णुपुरीक मूल नाम रमापति छलनि। पूर्वमे ई शिवभक्त छलाह मुदा, पश्चात् सन्यास ग्रहन कयलनि आ विष्णुपुरी नामसँ ख्यात् भेलाह। हिनक रचित पाँच गोट भक्ति पद उपलब्ध अछि, जाहिमे मुख्यतः शृंगारिकताक आवलंबन भेल अछि। ई पद सभ शिव, कृष्ण, विष्णु ओ राम विषयक अछि। यथा-

भमि-भमि पुछे गौरी देहे उपदेशे। माइ हे
कि देव मनाओव रूसल महेशे॥
खाट वुरैया सेज दुनिन सोहावए॥
जतहु कतहु बाघछाल ओछाबए॥
क्षीर कपूर पान हुनि न सोहाव॥
आक धतुर फुल ताहिभल भाव॥
विष्णुपुरी कहहित उपदेश॥[16]

4. दशावधान ठाकुर (- सँ १५०० ई.):- दशावधान ठाकुरक पाँच गोट मैथिली पद उपलब्ध अछि। ई पद सभ शृंगार रसक रूपवर्णन थिक। आचार्य रमानाथ झा द्वारा संपादित 'मैथिली भाषा गीत संग्रह'मे संगृहित हिनक तीन गोट पद सम्भुक्ताक वर्णन थिक एवं एक गोट पद अभिनव रीतिएँ पसाहिनक वर्णन थिक। हिनक उपलब्ध पद सभक गीतिकाव्यीय दृष्टिसँ विलक्षणताक आधारपर ई शृंगार रसक सिद्ध कवि प्रतीत होइत छथि। यथा-

1. पसाहनिक वर्णनः-

ए राहि बनलि पसाहनि तोहि रे, हेरितहिँ जुवक हृदय जा मोहि रे।
सिन्दुर सीम सिरँ चान्दन बिन्दु रे, कच तम रुधिर धार बिच इन्दु रे।

अंजने रंजित लोचन तोरा रे, भमर सुतल जनि कमल कोराँ रे।

2. विरहिणीक वर्णनः-

देखलि तोहरि धनि अनुदिने अड़िषिनि
जनि दिन ऊगलि तारा।
तिलाओ न देहरि तेज तुअ पथ हेरि
नयन बारिस जलधारा।[17]

5. कंसनारायणः- ओइनिवार राजवंशक अन्तिम शासक लक्ष्मीनाथ कंसनारायण मैथिली भाषा-साहित्यानुरागी छलाह। हिनकर आश्रयमे गोविन्द, काशीनाथ, रामनाथ, श्रीधर प्रभृत्त कवि लोकनि मैथिली गीतिकाव्यक विकासमे उल्लेखनीय योगदान कयलनि। 'रागतरंगिणी'मे स्वयं कंसनारायणक पद उल्लिखित अछि जाहिमे विद्यापतिक काव्य-परम्पराक मनोरम अनुसरण भेल अछि-

तन सुकुमार पयोधर गोरा, कनकलता जनि सिरिफल जोरा।
देखलि कमलमुखि बरनि न जाइ, मन मोर हरलक मदन जगाइ।
भौंहा धनुष धएल तसु आगू, तीष कटाष मदन शर लागू।
सबतरु सुनिय एहन बेवहारा, मरिअ नागर उवर गमारा।
कंसनारायण कौतुक गाबए, पुनफल पुनमत गुनमति पाबए।[18]

कंसनारायणक राज्याश्रित 'गोविन्द'क बारह गोट मैथिली पद 'भाषागीत संग्रह'मे संगृहित अछि। हिनक रचित पदसभ मूलतः शृंगारिक अछि तथा भक्तिकाव्य अत्यंत हृदयग्राही अछि। हिनक उपलब्ध एकगोट उचिती अतीव सरल, सहज ओ रमणीय भावसँ सज्जित अछि-

सुनु पहु सुपुरुष नाह, माधव, करिअ वचन निरवाह।
पुरुष पेम पहचानि , माधव, अएलहुँ तुअ गुण जानि।
किदहुँ पड़ल अपराधे, माधव, केलि करिअ किअ बाधे।
अविनय छेमिअ मोर दोस, माधव, रजनि रहल अछि रोस।
गोविन्द कह अबधारि, माधव, सुपुरुष जन दुइ धारि।[19]

चन्द्रकला, भानु, यशोधर, गजसिंह, कविराज, जीवनाथ, काशीनाथ, रामनाथ, श्रीधर, भीष्मकवि आदि विद्यापतिक समकालीन अन्य महत्वपूर्ण कवि लोकनि भेलाह जनिक कतिपय उपलब्ध अछि आ ई पद सभ निर्विविाद रूपेँ मैथिली गीतिकाव्यक विकासयात्रामे महत्वपूर्ण अछि।

विद्यापति युगक परवर्तीकालमे जखन मिथिलामे ओइनिवार वंशक शासन व्यवस्थाक पतन भेल आ तकर तीन दशक पश्चात् खण्डवला कुलक शासन व्यवस्था स्थापित भेल, एतुका साहित्यिक-सांस्कृतिक वातावरण पुनर्स्थापित भेल। खण्डवला वंशक शासक लोकनि साहित्य, कला प्रेमी ओ विद्यानुरागी भेलाह। एहि राजवंशक संस्थापक म.म. महेश ठाकुर उद्भट विद्वान छलाह। म.म. महेश ठाकुर चारिटा मैथिली पद चेतनाथा झा द्वारा

संपादित 'पारिजात हरण'क भूमिकामे उद्धृत अछि तथा चारिटा पद म.म. मुकुन्द झा 'बक्शी' द्वारा संपादित 'मिथिलाभाषामय इतिहास'मे सेहो संगृहित अछि ।[20] हिनक उपलब्ध मैथिली पदसभ अपन अभिव्यक्ति सरलता ओ भाव सघनताक कारणे विशिष्ट अछि-

उधारिय अधम जन जानि ।
हम बनिजार पाप वटमार, सुकृत बेसाहल सुरसरि धार ।
जेहि खन देखल धवल जलधार, जीवन जन्म सुफल संसार ।
सिकर निकर परस यदि भेले, मन अनुताप पाप दुरि गेले ।
जे सब उधारल से मोर आधे, कहु मोर सुरसरि की अपराधे ।
भनथि महेश मनित कए शीश, तोहेँ करुणा निधि हम निरदिश ।[21]

हरिदास, चतुरचतुर्भुज, भगीरथ कवि, शंकर, महिनाथ ठाकुर, लोचन आदि विद्यापतिक परवर्ती युगक अन्य महत्वपूर्ण कवि छथि । हरिदासक एक मात्र पद लोचनकृत रागतरंगिणीमे उद्धृत नचारी थिक । हिनक नाम ब्रजबुलि साहित्यमे बेस प्रचलित अछि ।

चतुरचतुर्भुजक रागतरंगिणीमे एकटा पद तथा ग्रियर्सन द्वारा बंगाल रॉयल एशियाटिक सोसाइटीक जर्नल (1884 ई.)मे संकलित अछि । एकर अतिरिक्त रमानाथ झा द्वारा संपादित भाषागीत संग्रहमे हिनक एगारह गोट गीत संग्रहित अछि तथा जगज्ज्योतिर्मल्ल रचित हरगौरीविवाह नाटकमे एक गोट पद उपलब्ध अछि । डॉ. शैलेन्द्रमोहन झाक 'गीत शप्तदशी'मे हिनक तीन गोट नवान्वेषित गीत संकलित अछि । हिनक एक गोट बंगला पद सेहो उपलब्ध होइत अछि । हिनक एकटा पदक किछु अंश द्रष्टव्य अछि-

आधे वदन तनु आधे ओ आध पयोधर रे ।
आँचर वसने झँपाइए गाव मधुर सर रे ।
पिसए बैसलि धनि कौतुके समुचित सखि संग रे ।
दगध मनोज पिआबए अनुखन तनु भंग रे ।[22]

लोचन मैथिली साहित्यमे एक नवीन युगक अग्रदूत भेलाह । ई एक संगीत विशेषज्ञ रहथि । हिनकर कृति 'रागतरंगिणी' मिथिलाक संगीत परम्परामे अत्यन्त महत्वपुर्ण कृति थिक । एहि ग्रन्थमे मिथिलाक संगीत परम्पराक विशद विवरण भेटैत अछि । हिनक उपलब्ध पदसँ सिद्ध होइत अछि जे ई विद्यापतिक परवर्ति कविगणमे विद्यापति परम्पराक सिद्धहस्त कवि छलाह । रागतरंगिणीमे विद्यापति समेत अनेक आदिकालीन ओ मध्ययुगक कविलोकनिक मैथिली पद उद्धृत अछि तथा एहि पद सभक राग-रागिणीक संगीत शास्त्रीय विवेचन प्रस्तुत कयल गेल अछि । एहि ग्रन्थक महत्त्वकेँ रेखांकित करैत डॉ. जयकान्त मिश्र लिखैत छथि- "मैथिल संगीतमे रागरङिगणीक की स्थान अछि से विवेचन करब एतय अनावश्यक होयत । एतए एतबे कहब पर्याप्त होएत जे आन कोनहु स्रोतसँ अज्ञात वा अल्पज्ञात अनेकानेक कविलोकनिक कृतिकेँ सुरक्षित रखबामे तथा हुनकालोकनिक कालादिक परिचय प्राप्त करबामे ई ग्रन्थ परम मूल्यवान सिद्ध भेल अछि । ततबे नहि, ई अपना समयक व्यापक साहित्यिक गतिविधिक मानू कीर्तिस्तम्भ थिक । एहिमे संगीत शास्त्रमे लोचनक प्रगाढ़

पाण्डित्यक सेहो परिचय भेटैत अछि। ई सूक्ष्मतापूर्वक मैथिल परम्पराक विविध राग-रागिनीक विवरण देलन्हि अछि। सम्भवतः ई पहिल व्यक्ति छलाह जे मैथिल राग आओर रागिनीक लक्षण छन्दक आधारपर कयलन्हि। अतः ई ग्रन्थ मैथिली गीतकाव्यक रचना-विधान एवं छन्द विधानमे सेहो हिनक असाधारण योगदानक प्रतीक थिक।" [23]

एहि ग्रन्थमे चालीसटा कविलोकनिक रचना समाविष्ट अछि। 45 गोट विद्यापतिक पद अछि। एहिमे स्वयं लोचनक नओटा पद समाविष्ट अछि जाहि आधारपर प्रतीत होइत अछि जे ई मैथिली भाषाक निष्णात कवि छलाह। हिनक रचित एक गोट शृंगारिक पद द्रष्टव्य थिक-

मलिन वसन विसमादलि रे, देखलि धनि खीनि।
नयन-नीरे परिपूलि रे, चित चिन्ता-लीनि॥
पावस बइस कत पूछलि रे, सत भाँति बुझाए।
तइयो रहलि तेहि भाँतिहि रे, मरमसि शिर नाए॥
सुमुखि न सुख न सँभापन रे, मुख नहि परगास।
अनुखने विखिन सोहागिनि रे, तेज दीप निसास॥
कमल वदनि मनि मानिक रे, हरि ऐसनि जाति।
लोचन भन मन जानक रे, मधुमति देवि कन्त।
बुझ महिनाथ महीपति रे, विरहिनि मन-मन्त॥[24]

गोविन्ददास (1570-1640) विद्यापतिक बाद मध्ययुगक सभसँ ख्यातिलब्ध रचनाकार भेलाह। ज्योतीरीश्वर ओ विद्यापतिक मैथिली रचनासँ प्रेरित भए ई "नल चरित" तथा "कृष्ण चरित" नामक दू ग्रन्थक रचना कयलनि। एकर अलावे हिनक अनेक मैथिली पद "श्रृंगार भजन" नामसँ डॉ. अमरनाथ झा संपादित कऽ "मैथिली साहित्य-पत्र"मे प्रकाशित कयलनि। गोविन्ददास विद्यापतिकेँ अपन काव्य गुरू मानलनि अछि-**"कवि-पति विद्यापति मतिमान। जागगीत जगचीत चोराओल, गोविन्द गौरी सरस रस गान।"** मुदा, हुनक अन्धानुकरण नहि कऽ मैथिली गीत साहित्यमे नवीनता अनलनि। 'शृंगार भजनावली' (स.-डॉ. अमरनाथ झा), 'गोविन्द गीतांजलि' (सं.- आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'), 'गोविन्ददास भजनावली' (सं. पं. गोविन्द झा) आदि हिनक पद सभक प्रमुख संकलन थिक। हिनक करीब आठ सय पद उपलब्ध होइत अछि जे मुख्यतः राधा-कृष्ण विषयक वैष्णव ओ गौड़ीय सम्प्रदायक गीति सभक रूपमे ख्यात अछि।

हिनक पद सभक शब्दविन्यास, रस, छन्द ओ अलंकार योजना उच्चकोटिक अछि जाहि कारणे हिनकर पद सभकेँ कतिपय आलोचक दुरूह सेहो कहैत छथि। एहि सम्बन्धमे डॉ. सुकुमार सेनक विचार महत्वपूर्ण अछि- " गोविन्ददास लोक भाषा संस्कृत भाषाक गीतिकाव्यकेँ स्रोत मानि उतारबाक चेष्टा कयलनि। जतेक सरल ओ जटिल अलंकार सभ संस्कृत अलंकार शास्त्रमे वर्णित अछि, सबहिक प्रयोग अपना काव्यमे कयलनि...किन्तु सबसँ बढ़ि छन्दक कुशलतापूर्वक प्रयोग करब हिनक उत्कर्षक कारण भेल आ ताहि संगे श्रुति-मधुर लय ओ धुनिक सर्जन करब हिनक वैशिष्ट्य। एहि हेतु कवि अनुप्रासक आश्रय लेलन्हि जे अन्य हिनकासँ लघुतर कविक हाथेँ हिनक पदसभक सुन्दरताकेँ अवश्य दूरि कऽ दितन्हि। अुनप्रास एवं ध्वनि-सामञ्जस्यक

फेरीमे पड़ि कतहु कतहु हिनक काव्यरस वा भाव दबि तँ अवश्य गेल अछि। तैँ ई कहब जे ई अलंकार सभ उपरका सौन्दर्य बेस अनैत छनि से ठीक। तैओ एतबा तँ मानहि पड़त जे शृंगार रसक वर्णन तथा मधुर कल्पना करबामे कवि प्रवीण छथि। ...तत्सम शब्द ओ रूपमे सजाओल हिनक भाषामे जे लय-माधुरी तथा पद-लालित्य अछि से आओर सभ त्रुटिक प्रतिपूर्ति कऽ दैत अछि।...ई राधा आओर कृष्णक प्रणय-लीलाक प्रत्येक विषयक आ प्रत्येक मनोदशाक वर्णन कएने छथि। लयात्मक पदविन्यास तँ हिनक विशेष कौशल थिकन्हि, तथापि मिलनक आतुरता आ विरहक व्याकुलताक चित्रणमे वास्तवमे हिनक तुलना कऽ सकनिहार कमे कवि छथि।...ई वात्सल्य भाव आओर सख्य भावक वर्णन नहि कयलन्हि अछि।...गोविन्ददासक गीत जखन शुद्ध कीर्त्तनक शैलीमे गाओल जाइत अछि तखन एकर रमणीयता शिखरपर पहुँचि जाइत अछि। गोविन्ददासक गीत "रसना-रोचन श्रवण-विलास" ठीके कहल गेल अछि।"[25]

विद्यापतिक काव्य-परम्पराक अनुशरण करितहुँ गोविन्ददासक गीत सभ विद्यापति कृत पदसँ विभिन्न स्तरपर भिन्नता रखैत अछि। एहि सम्बन्धमे डॉ. जयकान्त मिश्र लिखैत छथि- " जतए विद्यापतिक गीत परम परिष्कृत अछि, आओर ई उपमापर उपमा दैत मानव जीवनक हर्ष एवं अवसादक सामन्ती वातावरणक सृष्टि करैत छथि, आओर सरल एवं प्रत्यक्षवेधी कामोत्तेजक बिम्बसभक सृष्टि करैत सर्वसाधारण नर ओ नारीक हृदयकेँ छूबि लैत छथि, ततय गोविन्ददास अपना पदक भावना ओ कल्पनासँ बेसी शब्दविन्यास दिसि दत्तचित्त छलाह।" [26]

डॉ. मायानन्द मिश्रक अनुसार- " गोविन्ददासक काव्य व्यक्तित्व (विद्यापति जकाँ) व्यापक नहि अछि किन्तु शृंगारक गाम्भीर्य ओ सूक्ष्मताकेँ जाहि समग्रता ओ विलक्षणताक संग ई व्यक्त कयने छथि, जकर प्रमाण थिक हुनक पद समूह से विद्यापतियोमे विरल अछि। अर्थगाम्भीर्य, ध्वनिक सूक्ष्मता तथा व्यंग्य-चमत्कारमे हिनक पद अद्वितीय अछि।[27]

कविशेखर भंजन, चक्रपाणि, निधि, साहेब रामदास, वेणीदत्त, करणश्याम, लक्ष्मीनाथ गोसाञि आदि गोविन्ददासक पश्चात् अनेक महत्वपूर्ण कवि भेलाह।

कविशेखर भंजन (1704-1740) अठारहम शताब्दीमे महाराज रागवसिंहक राज्यकालमे भेलाह। इतिहासमे भेटैत अछि जे हिनका 'रसमयकवि'क उपाधि भेटल छलनि। हिनक रचित पद मुख्यतः शृंगारिक अछि जाहिमे विरहवर्णन मनोरम अछि। नायिकाक मनोदशाक वर्णन-चित्रण हिनकर पद सभक वैशिष्ट्य अछि। हिनक शिवविषयक गीति यथा-महेशवाणी, तथा योगगीत सेहो उपलब्ध होइत अछि। यथाः-

महेशवानी-

देखह मनाइनि आई, अपरूपहर समुदाई सुखदाई लो।
डमरु खटंग शुलधारी, वर बड़ बूढ़ भिखारी गौरीवारी लो॥

योगगीत-

जगत विदित हमे मोहिनी, मेदनि उदित शशि रोहिनी।

रविहुक रथ अटिकाबिअ तेँ जग योगिनि कहाबिअ।
कह कविशेखर भंजन, दोसर न एहि जग हर सन।[28]

चक्रपाणि म. राघवसिंहक समकालीन छलाह कवि छलाह। हिनक पद ग्रियर्सनक "Vaishnava Hymns" तथा रमानाथ झाक प्राचीन गीत संग्रहमे संग्रहित भेल अछि। हिनक उपलब्ध पदावली सभ शृंगार विषयक अछि।

निधि अठारहम शताब्दीक एक अन्य महत्वपूर्ण कवि छथि। हिनक उपलब्ध शृंगार विषयक मानगीत हिनक विलक्षण काव्य-प्रतिभाक परिचायक थिक। एहि पदक भाव-कोमलता ओ कमनीयता तथा पदलालित्य तथा शब्द विन्यास विशेष महत्वक अछि।

साहेबरामदास (1746 ई.) मध्यकालमे मैथिली सन्त काव्य-परम्पराक अग्रगण्य कवि भेलाह। ई विष्णुक उपासक भक्तकवि छलाह आ हिनक अनेक नेक राम ओ कृष्ण विषयक भक्तिगीत उपलब्ध अछि। कवीश्वर चन्दाझा हिनक पदावलीक संकलन कएने छथि। एहिमे अनेक प्रकारक पद यथा- विष्णुपद, रास, शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य, आ मधुर भावक पद संकलित अछि। हिनक पद सभमे कृष्ण जन्म, रामजन्म, रासलीला, विवाहपंचमी आदि विषयक वर्णन विलक्षण रीतिएँ भेल अछि। यथा-

कमलनयन मनमोहन रे कहि गेलाह अनेके।
कतेक दिवस मञे राखब रे हुनि वचनक टेके॥
के पतिआ लय जायत रे जहँ बसु नन्दलाल।
लोचन हमर सतओलनि रे छतिया दय साल॥
जहँ जहँ हरिक सिंहासन रे आसन जेहि ठाम।
तहँ तहँ मुरुछि मुरुछि खसु रे लय लय हरि नाम॥
जँ यदुपति नहि आओत रे यमुना केर तीर।
हमहु मरब हरि हरि कय रे मेटि जायत पीर॥
'साहेब' दास सुनह सखि रे दुख मेटत तोर।
रास करब वृन्दावन रे लय नन्दकिशोर॥

संत लक्ष्मीनाथ गोसाञि (1787-1872)क मैथिली सन्त काव्य-परम्पराक महान् ओ अति प्रसिद्ध कवि छथि। बाल्यकालहिसँ धार्मिक प्रवृत्तिक संत लक्ष्मीनाथ विवाहोपरान्त सन्यास ग्रहण कयलनि आ अनेक स्थानपर कुटी बनाय वास कयलनि। बनगाममे हिनक कुटी आइयो विद्यमान अछि तथा सिद्धपुरुषक रूपमे मिथिलामे ई पूज्य छथि। हिनक उपलब्ध अनेकाने पद मूलतः भजन थिक। एहि पद सभक गीतिकाव्यक दृष्टिकोणसँ बड़ महत्व अछि। हिनक पद सभक भनिता 'लक्ष्मीपति' नाम भेटैत अछि। चौमासा, तिरहुति, पराती, विष्णुपद आ महेशवाणी-नाना प्रकारक हिनक भक्तिपद भक्ति-भावनासँ ओतप्रोत अछि। प्रातीमे मुख्यतः गंगाक वन्दना अछि। विष्णुपद सभ शृंगारिक रचना अछि। डॉ. मायानन्द मिश्रक शब्दमे -"भावक निर्मलता ओ सरलता, भक्तिक प्रवणता ओ तन्मयता तथा अभिव्यक्तिक सहजता आ ठेठ शब्दावलीक प्रयोग हिनका सहजहि

अधिकाधिक पाठक-श्रोता दऽ दैत अछि । आ तैं विभिन्न संतकविमे, जकर संख्या अत्यल्प अछि, गोस्वामी सर्वाधिक लोकप्रिय ओ बहुप्रचारित रहलाह । हिनक भक्त जान साहेब इसाइयो छलाह, हिनक भक्त मुसलमानो छहाल । एहि प्रकारें हिनक काव्य मैथिलीक मध्यकालीन काव्यमे एकटा उदाहरण थिक ।" [29] निम्नलिखित पद हिनक कवित्व शक्तिक विलक्षण निदर्श थिक जाहिमे एकहि संग हिनक काव्यचेतना, प्रगतिकामना ओ भक्तिभावनाक दर्शन होइत अछि –

आजु रे ललना-गति कहलो ने जाइ ।
ई दुख ककरा कहब गे माइ ।।
दिन भरि आयल छथि निकहिँ खेलाइ ।
साँझ पड़ैत देल कननी लगाइ ।।
कोर नहि सूतथि सेज ने सोहाइ ।
कोन पापिन देल कननी लगाइ ।।
लय सूतलि छलौँ हृदय लगाइ ।
कानि उठल छथि चौँकि लगाइ ।।
नन्द महरसँ कहु गे बुझाइ ।
कतहु सँ अनता तेल पढ़ाइ ।।
तेलक नाम सुनि हँसि मुसकाइ ।
हम लेब चान खेलौना गे माइ ।।
सुनि हर्षित भेल यशोदा माइ ।
दर्पण मे देल चान देखाइ ।।
लक्ष्मीपति चरणन बलि जाइ ।
भक्त हेतु कत रूप देखाइ ।।

रामस्वरूपदास, हरिकिंकरदास, परमानन्ददास, जयदेव स्वामी प्रभृति अनेक संतकविक मैथिली गीतकाव्यक विकासयात्रामे अन्यतम योगदान छनि ।

मैथिली गीतिकाव्यक विकासमे मध्यकालीन नाटकक योगदान

जेना कि पूर्वहिमे चर्चा भेल अछि जे प्रायः छठम-सातम शताब्दीसँ संस्कृत भाषा-साहित्यक समाजमे प्रचलन घटय लागल छल आ प्राकृत आदि लोकभाषाक भारतीय वाङमयमे उदय होमय लागल छल । एहि क्रममे संस्कृत नाटकक लोकप्रियताक संकट सेहो आबि गेल आ परवर्ती कालमे, से प्रायः कालीदासेक समयसँ संस्कृत नाटककेँ जनप्रिय बनयवाक हेतु एहिमे लोकभाषाक पदक व्यवहार होमय लागल । तेरहम शताब्दीमे रचित कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरकृत धूर्तसमागममे सन्निविष्ट प्राचीन मैथिलीक अनेक पद तथा पश्चात् विद्यापतिक 'गोरक्षविजय'मे प्रयुक्त मैथिली पद सभ तकर प्रमाण थिक ।

मुसलमानी आक्रमणसँ आक्रान्त क्षेत्र सभमे मध्ययुगमे मातृभूमिक सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाकेँ बचायव दिनानुदिन कठिन होइत जा रहल छल। एतदर्थ साहित्य-संस्कृतिक सुरक्षाक प्रति आमजनमे चेतना जगायव अपरिहार्य भऽ गेल छल। एहनामे एहि युगमे नाना-विषयक नव-नव शैलीक नाटकक रचना भेल, जाहिमे मैथिली पदक आवलम्बन धए तत्कालीन सामाजिक चिन्तक लोकनि जन-गणक सन्निकट पहुँचैत गेलाह। कालक्रममे विभिन्न क्षेत्रमे विभिन्न नामकरणक संग, यथा- बंगालमे 'यात्रा', आसाममे 'अंकिया', मिथिलामे 'किरतनिञा' तथा नेपालमे 'नाट्य-गीत', ई नाट्य-परम्परा विकसित होइत गेल आ ख्याति पओलक।

एहि नाटक सभमे नाटककार लोकनि पौराणिक कथा, धार्मिक पात्र-पात्री सबहिक माध्यमे सामाजिक रीति-कुरीति विषयक अपन चिन्तनक प्रसार करैत छलाह। एहि नाटक सभक विशिष्टता अछि एहिमे प्रयुक्त गीतिक प्रचूरता। अपन नाटकमे मैथिली पदक प्रयोग कयनिहारमे उमापति, चक्रपाणि, रामदास, रमापति, लालकवि, नन्दीपति, रत्नपाणि, म.म. हर्षनाथझा आदि प्रमुख नाटककार कवि छथि। हिनका सभक रचित नाटकसँ भिन्न स्फुट गीतिकाव्य सेहो उपलब्ध अछि।

उमापति गोविन्ददासक परवर्ती युगक श्रेष्ठ कवि-नाटककार रूपमे परिगणित होइत छथि। हिनक 'पारिजातहरण' नाटक, हिनक उच्चकोटिक कवित्व ओ विद्वताक परिचायक थिक। 'पारिजातहरण' एकांकी थिक जकर नाट्यशिल्प ओ कथनभंगिमा आकर्षक अछि। ई नाटक त्रिभाषिक अछि। एकर कथोपकथन संस्कृत एवं प्राकृत भाषामे अछि तथा गीत मैथिली भाषामे अछि। एहि गीत सभमे कल्पनाक विशिष्टता, भावक सुन्दरता ओ लयात्मकताक अद्भुत समायोजना अछि।

पारिजातहरणमे संकलित उमापतिक लगभग दू-दर्जन पदसँ पृथक डॉ. रामदेवझा लिखित 'उमापति' पोथीमे चौदह गोट नवान्वेषित स्फुटगीतक संकलन भेल भेल अछि। हिनक समस्त उपलब्ध पद मैथिली गीतिकाव्यक अमूल्य निधि थिक। हिनक काव्य वैशिष्ट्यकेँ रेखांकित करैत डॉ. रामदेवझा लिखैत छथि-"यदि उमापतिक काव्यक सूक्ष्म पर्यालोचन कयल जाय तँ स्पष्ट भऽ जायत जे उमापतिक काव्य सर्जन सर्वथा विद्यापति-परम्परानुसारी नहि अछि। छन्द ओ भास अवश्ये विद्यापतिक अनुसरण कयलनि परन्तु भाव, भाषा ओ अभिव्यक्ति-पद्धतिमे उमापति स्वतंत्रताक परिचय देलनि अछि। भावक दृष्टिएँ पारिजातहरण'क कतोक गीतकेँ राखल जा सकैत अछि। शिव ओ पार्वतीक विवाहक वर्णन बहुतो कवि कयने छथि परन्तु, पारिजातहरणक प्रस्तावनाक मंगलमे प्रयुक्त शिव-पार्वती-विवाह-विषयक गीतक जे भाव-सम्प्रति अछि से बड़ कम कविक एहि विषयक गीतमे देखल जाइत अछि।"[30]

चक्रपाणि (1704-1720) महाराज राघवसिंहक समकालीन छलाह। हिनक 'उषाहरण' नाटिका मैथिली गीतिकाव्यक इतिहासमे महत्वपूर्ण कृति थिक। एहि नाटिकामे प्रयुक्त मैथिली पद उत्तम कोटिक साहित्यिक निदर्श अछि। हिनक किछु पद 'नानागीतम्'मे सेहो संकलित भेल अछि। हिनकर गीतक वर्ण्य विषय अत्यंत सरस अछि। हिनक पदमे पदलालित्य, शब्दविन्यास, अलंकारयोजना आदि विशिष्ट अछि। उदाहरणस्वरूप अभिसारिका नायिकाक चित्रण द्रष्टव्य थिकः-

अलक विरंचि ललाट शशिमुख देल सिन्दुर विन्दु रे।

भान हो जनि राहुतर रवि ताहितर वसु इन्दु रे।
चललि मद गजराज गामिनी साजि पहुक समीप रे।
पहिल मास तटास दुर कए संग मदन महीप रे।[31]

आनन्दविजय' नाटकक रचयिता रामदास महाराज सुन्दर ठाकुरक समकालीन छलाह तथा गोविन्ददासक अनुज छलाह। हिनक गीत विद्यापति गीति-परम्परानुसार शृंगारिकतासँ परिपूर्ण अछि। नाटकमे सन्निविष्ट मैथिली गीतक अतिरिक्त हिनक कतिपय पद पदलब्ध अछि।

किरतनिञा नाट्य-परम्परान्तर्गत प्रसूत रमापति झाक 'रूक्मिणीपरिणय' एकर महत्वपूर्ण कृति थिक। रामदास महाराज नरेन्द्रसिंहक समकालीन छलाह। एहि नाटकमे मिथिला गीति परम्परानुरूप चुमाओन, कोबर, बटगमनी आदि गीतिक प्रयोग भेल अछि। रामदासक उपलब्ध पद सभ भक्ति-भावनासँ अनुप्राणित अछि। यथा-

माधव सुनिअ निवेदन वानी।
सुमुखि मिलल तोहेँ गुनमय जानी॥
तेँ परि प्रेम धरब सखि ठामे।
दिने-दिने होअ अधिक अभिरामे॥[32]

'गौरीस्वयंवर' नाटकक प्रणेता लालकवि महाराज नरेन्द्र सिंहक समकालीन छलाह। हिनक नाटकमे प्रयुक्त पदसभ भक्तिभाव प्रधान अछि। एहि नाटकक शिव-विषयक पद सभमे कविक सहज भक्तिक अभिव्यक्ति भेल अछि। यथाः-

'पहिरन पीत पटम्बर, कनकलता सन देह।
चम्पेँ केहलि जनि झाँपलि, अनुपम दामिनि रेह॥
स्वामि सोहाग सोहाउनि, चउदिशि गुरुजन साथ।
हरखि चललि नवि नागरि, देबए ओर झोर हाथ॥"[33]

नन्दीपति मैथिली गीतिकाव्य एक प्रख्यात कवि छथि। ई महाराज माधवसिंहक समकालीन भेलाह। हिनक 'कृष्ण केलिमाला' नाटक उपलब्ध होइत अछि। एहि नाटकमे प्रयुक्त मैथिली पद सभमे गहन भावात्मकता अछि। हिनक किछु स्वतंत्र गीति सेहो उपलब्ध होइत अछि।

"उषाहरण"नाटकक प्रणेता रत्नपाणि एक अन्य महत्वपूर्ण कवि भेलाह। एहि नाटकमे प्रयुक्त गीतक अतिरिक्त हिनक 21 गोट मैथिली पद 'मैथिली भक्त प्रकाश'मे रचित मैथिली पद सभ संकलित भेल अछि। एहि पद सभक भाव तथा कलापक्ष आकर्षक अछि। हिनक किछु पद सभ संस्कृत शब्द-बाहुल्यक कारणे थोड़ेक क्लिष्ट भऽ गेल अछि मुदा, परम्परागत शैलीमे रचित हिनक गीत सहज, सुबोध ओ चित्ताकर्षक अछि। यथा हिनक ई क्षिन्नमस्ता स्तुतिः-

जय जय ज्योति जगतपति दायिनी चिकुर चारू रूचि भाले।
परम असंभव संभव तुअवस पीन पयोधर वाले।

कमल लोप रवि मण्डलता विच विविध त्रिकोण रेखा।
ता विचरित विपरीत मनोभव सुषमा सरित विशेषा॥

आ पुनः ई सरल सुबोध लगनी देखू-

सरस मास निशि साओन ननदी वालमु हमर विदेश।
कओन परि होएत समागम ननदी कत दिन रहत कलेश॥
उमड़ि घुमड़ि गन वरिसए ननदी दामिनि दमक हुताश।
दछिन पवन निशि दिन वह ननदी जीव मोर जाइछ हताश॥[34]

म.म. हर्षनाथ झा (1847-1898) विद्यापति सम्प्रदायक मैथिली साहित्यक मध्य तथा आधुनिक युगक सन्धिस्थलपर, एक महत्वपूर्ण कवि छथि। उमापति अपन पदसभमे जाहि पाण्डित्यपूर्ण भाषाक प्रयोग कयलनि, हर्षनाथ झाक रचनामे से चरमपर पहुँचि गेल फलतः हिनक रचना मात्र पण्डित समाजमे समादृत भेल आ लोकसाहित्य बनबासँ वंचित रहि गेल। हिनक "उषाहरण' ओ "माधवानन्द" नाटिका डॉ. अमरनाथ झाक संपादनमे "हर्षनाथ ग्रन्थावली"क नामसँ प्रकाशित भेल। कविक रूपमे हिनक स्फुट पद, सोहर, तिरहुत, उचिती, आदि प्रसिद्ध भेल। आचार्य रमानाथ झा हिनका सम्बन्धमे लिखैत छथि-" विद्यापति सम्प्रदायक ई अन्तिम महाकवि भेलाह। हिनक भाषा संस्कृत बहुल अछि। उमापतिसँ जे भाषा पाण्डित्यपूर्ण होअए लागल से हिनका रचनामे आबि चरमपर पहुँचि गेल। संस्कृत साहित्यक सरणिक अनुसरण करैत ई सभटा रचना कयल ओ तेँ पण्डितवर्ग ओ रसिक मण्डलीमे हिनक पूर्ण समादर भेल, परन्तु लोक साहित्यसँ हिनक रचना बहुत दूर भए गेल। विषयोमे ई पूर्वक कवि लोकनि छाया लए रचना कयल परन्तु भाषाक सौष्ठव, अलंकारक बाहुल्य, कल्पनाक प्रौढ़ता, भावक वैशद्य, सद्काव्यक समस्त गुण हिनक रचनामे प्रचुरतया भेटैत अछि।"[35]

प्राचीन ओ मध्ययुगमे मैथिली नाटक मिथिलेत्तर क्षेत्र धरि खास क' असम बंगाल ओ नेपालमे विशेष प्रसिद्ध भेल। प्राचीन ओ मध्ययुगीन मैथिली नाट्य-परम्परा तथा साहित्य समस्त पूर्वी भारतक लेल ऐतिहासिक दृष्टिकोणसँ अत्यधिक महत्वपूर्ण अछि। नेपाल, बंगाल, असम, ओड़िसा समेत समस्त पूर्वांचलीय कवि लोकनि विद्यापति काव्य-परम्पराक अनुसरण कयलनि। मुसलमानी आक्रमणक फलस्वरूप विविध कारणेँ एहि क्षेत्रक विद्वान-पण्डित लोकनिक एक-दोसरा क्षेत्रमे अबरजात बढ़ल आ ताहि संग भाषा-साहित्यक अनुसरणक प्रवृति सेहो बढ़ल।

नेपालमे विकसित गीतिनाट्यक कथावस्तु किर्तनिञे नाटक सदृश पौराणिक कथावस्तु आधारित रहैत छल तथा एहिमे गीतक बाहुल्यता भेटैत अछि। कर्णाटवंशक पतनक पश्चात् तथा हरिसिंहदेवक नेपाल पलायनक बाद मिथिलाक पण्डित सभ मुसलमानी आक्रमणसँ आक्रान्त भए नेपालीय क्षेत्रमे मल्लराजवंशक शरणमे रहय लगलाह। मल्लराजवंशी शासक लोकनि साहित्य-कला प्रवीण ओ पारखी छलाह। जगज्जयोतिर्मल्ल, सिद्धिनरसिंहमल्ल, योगनरेन्द्रमल्ल, जगत्प्रकाशमल्ल, जितामित्र, जगतचन्द्र, भूपतिन्द्रमल्ल, रणजितमल्ल, प्रतापमल्ल आदि एहि कालक प्रसिद्ध कवि लोकनि भेलाह। सोलहम शताब्दीमे रचित 'विद्याविलाप' नाटक

नेपालमे रचित प्रथम नाटक थिक। एहिमे प्रयुक्त गीत जयदेव ओ विद्यापतिक काव्य कलासँ स्पष्टतः प्रभावित अछि।

भक्तपुरक राजा जगज्योतिर्मल्ल (1613-1633) काव्य ओ संगीतक महान पोषक छलाह। स्वयं अनेक नाटकादिक रचना कयलनि। मुदितकुवलाश्व, हरगौरी विवाह, कुंजविहार आदि हिनक प्रसिद्ध कृति थिकनि। डॉ. श्रीशक शब्दमे-" जगज्योतिर्मल्ल उत्कृष्ट कोटिक कवि छलाह। हिनक भाषा सरस, मधर ओ प्राञ्जल तथा पद-विन्यास सुसंघटित ओ सुनियोजित अछि एवं कतहु निम्न कोटिक कवित्वक दर्शन नहि होइत अछि।"[36]

सिद्धि नरसिंहमल्ल (1622-57) ललितपुर (पाटनक) प्रथम मैथिली कवि ओ साहित्यानुरागी भेलाह। डॉ. शैलेन्द्रमोहन झा हिनका विषयमे लिखैत छथि- "ओ राजा रहितहुँ राजर्षि छलाह, शासक रहितहुँ सन्यासी छलाह तथा राजोचित कार्यसँ विमुख हुनक जीवनक अधिकांश समय धर्मकार्य दिस उन्मुख रहल...कृष्ण मन्दिरक शिलालेखक राज-प्रशस्तिमे कहल गेल अछि जे ओ युधिष्ठिरोसँ बढ़ि कऽ यशस्वी छलाह जनिक निष्ठा वशिष्ठोसँ महान छल, पराक्रममे ओ अर्जुनक समकक्ष छलाह तथा दानशीलतामे कर्णेटा हुनक समता कऽ सकैत छलाह।"[37] ई कृष्णभक्त कवि छलाह तथा हिनक पद सभ बेस लोकप्रिय भेल। हिनक पद सभ भाषागीत संग्रह, रागतरंगिणी, कंसनारायण पदावली, आदिमे संकलित अछि।

जगत्प्रकाशमल्ल (1637-1672)क सात गोट नाट्यकृति उपलब्ध अछि- उषाहरण, नलीयनाटकम्, पारिजातहरणम्, प्रभावतीहरणम्, मलयगंधिनी, माधव-मालति तथा मूलशशिदेवोपाख्यानम्। हिनक मैथिली पदसभ पद्य समुच्चय, नानारंगगीतसंग्रह वा गीतपंचक, नानार्थ देवदेवीगीतसंग्रह आदिमे समाविष्ट अछि। हिनक शिव-विषयक पदसभमे भक्ति-भावक उत्कृष्ट अभिव्यक्ति भेल अछि।

भूपतिन्द्रमल्ल (1695-1722) रचित प्रमुख नाटक थिक- माधवानल, गौरीविवाह, उषाहरण, विद्याविलाप तथा महाभारत। हिनक 91 गोट पद 'भाषागीत संग्रह'मे संकलित अछि। हिनक पद एहि बातक परिचायक अछि जे ई एक उत्कृष्ट कवि छलाह। हिनक किछु नाटकमे बांगलाक सेहो प्रयोग भेल अछि। हिनक पद सभ मुख्यतः भक्तिकाव्य थिक जाहिमे शिव, गौरी, हरि आओर शक्तिक स्तुति अछि।

प्रतापमल्ल (1639-89) कान्तिपुरक सर्वश्रष्ठ कवि भेलाह। डॉ. रामदेवझा हिनक अनेक स्फुट गीत संग्रहक उल्लेख कयने छथि, यथा- गीत प्रतापमल्लीयम, गीतगोविन्दं प्रतापमल्लस्य तथा प्रतापमल्लवीरोचितगीतम्। हिनक देवीवन्दना विषयक नओटा मैथिली गीत तुलजा भवानीक मन्दिरमे शिलालेख मध्य उत्कीर्ण अछि। हिनक पदमे विनय ओ भक्ति-भावक प्रचुरता अछि।

वस्तुतः मैथिली गीति-साहित्यक विकासमे नेपालमे रचित मैथिली गीति-साहित्यक विशेष महत्व अछि। संगहि एहि गीत सभक अध्ययनसँ विद्यापतिक विराट कवित्व ओ व्यक्तित्वक प्रामाणिकता झलकैत अछि। ई पद सभ विद्यापति काव्य-परम्पराक समृद्धिमे महत्वपूर्ण अवदान देलक। स्पष्टतः नेपालमे राजालोकनि उदारता ओ भाषाक अनुरागक कारणेँ मैथिली गीति-साहित्यक प्रभूत विकास भेल।

पूर्वांचलीय गीतिकाव्य

सोलहम शताब्दीमे समस्त पूर्वांचलमे एकमात्र मिथिलेटा एहन देश छल छल जतय तुर्क-शासनक प्रभाव नहि छल । एतय संस्कृतक पठन-पाठनक व्यवस्था कायम छल । ओहि समयमे बंगालक छात्रगण अध्ययन करबाक हेतु मिथिला जाइत छलाह । ओतय मिथिलाक भाषा-साहित्य ओ संस्कृतिक परिचय पबैत छलाह । आ जखन ओ सभ अध्ययन समाप्त कय स्वदेश घुमैत छलाह तँ हुनकहि लोकनिक कण्ठ ओ स्मृतिमे विद्यापति, हुनक पूर्ववर्ती ओ परवर्ती कवि लोकनिक पदावली सेहो बंगालक धरतीपर पहुँचैत छल । एहि तरहेँ ताहि समयमे बंगला आ मैथिली समाजक मेलबंधन होइत छल । विद्यापतिक पदकेँ बंगालमे अत्यधिक प्रतिष्ठा प्राप्त भेल । बंगालक वैष्णव-समुदाय विद्यापतिक राधा-कृष्ण विषयक शृंगारिक पद गाबि परमानन्दक अनुभूति करैत छलाह । कृष्णदास कविराज "चैतन्य चरितामृत" (2-10)मे लिखैत छथि जे- चैतन्य महाप्रभु विद्यापति, चण्डीदास आ जयदेवक गीत गबैत आनन्द विभोर भऽ जाइत छलाह । चैतन्यक पश्चात हुनक शिष्य लोकनि सेहो एहि गीत सभक प्रचार कयलनि । एहि प्रकार बंगालमे विद्यापतिक पद सभक गयबाक आ तकरहि अनुसरण कय वैष्णव पद-रचनाक परिपाटी चलि पड़ल ।

विद्यापतिक गीत बंगालमे कोन रूपमे लोकप्रिय छल, तकर अनुमान ग्रिअर्सनक निम्न मतसँ कयल जा सकैत अछिः- "आओर ततःपर एक अद्भुत स्थिति उत्पन्न भेल, जेहन हमरा जनैत साहित्यक इतिहासमे अन्यत्र कतहु नहि देख गेल अछि ।...हिनक गीत सभकेँ तोड़ि-मड़ोरि, झीकि-तीरि कऽ बङला भाषा आ छन्दक सिकस्त कंचुकीमे कोँचि-कोँचि एक एहन संकर भाषा बनाओल गेल जे ने मैथिली रहल ने बङले । एतबे नहि बहुतो कवि विद्यापतिक नकल करबामे लागि गेलाह । एहिमे जेसोर जिलाक वसन्त राय विशेष उल्लेखनीय छथि । ई एहि संकर भाषामे विद्यापतिक नाम दए गीतसभ लिखए लगलाह जकर बहिरंग तँ विद्यापतिक वास्तविक गीत सभक विषत-वस्तुसँ खूब मिलैत अछि किन्तु ओहि सभमे महाकविक प्रसाद एवं सौन्दर्यक सर्वथा अभाव अछि ।"[38]

एवं प्रकारे बंगाल, असम और ओड़िसामे मैथिली वैष्णव-साहित्यक अनिवार्य भाषा बनि गेल । मुदा पदकर्ता लोकनिकेँ मैथिली भाषाक समुचित ज्ञान नहि रहनि । परिणामस्वरूप बंगालमे बंगला, ओड़िसामे ओड़िया आ असम मे असमिया मिश्रित मैथिली पद सभक रचनाक एक नव परिपाटीक जन्म भेल । एही नवीन आ कृत्रिम काव्यभाषाकेँ कालान्तरमे ब्रजबुलि कहल गेल । डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी सेहो एहि विषयमे लिखलनि अछि जे - बंगालक वैष्णव गीतिकाव्यकेँ विद्यापति बड़ प्रभावित कयलनि । हुनक पद बंगालमे प्रचलित भेल, बंगाली समाज द्वारा प्रशंसित भेल, ग्रहण कयल गेल तथा तेरहम शताब्दीसँ तकर प्रभाव निरन्तर वर्तमान अछि । बंगालमे जे एक नव काव्य भाषा बनल से मैथिली, बंगला एवं पश्चिमी हिन्दीक मिलित रूप थिक...एहि मिश्रित भाषाक नाम थिक- ब्रजबुलि ।[39] अतः स्पष्ट अछि जे ब्रजबुलि एक मिश्रित भाषा थिक जकर आत्मा मैथिली अछि ।

वैष्णव पदक वर्ण्य-विषयमे कृष्णक जन्मोत्सव, बाल लीला, गोष्ठ लीला, गोवर्द्धन धारण, दानलीला आदि विषयक वर्णन तँ अछिये मुदा राधा-कृष्णक एकान्तलीला एकर सर्वोत्तम उपलब्धि थिक । राधाक अपरुप सौन्दर्य एवं तिल-तिल नूतन अनुरागक आगाँ सहवर्ती साहित्यक समस्त प्रेमिका गौण भऽ जाइत छथि । राधाक

माध्यमसँ लौकिक प्रेम अलौकिक रस-माधुर्यसँ पूरित भऽ छलकि उठैत अछि। राधाक अनुतापक मार्मिकता प्रत्येक सहृद्यकेँ निज-व्यथा प्रतीत होइत छनि। गोप-गोपी, गाय-मयूर अथवा अन्यान्य समस्त परम्परागत उपमानकेँ पदकर्तालोकनि एहि पदसभमे जीवन्त एवं वास्तविक बना देने छथि।[40]

वैष्णव-पदावलीक आध्यात्मिक पृष्ठाधार तँ अवश्य अछि, एकर प्रवर्तने वैष्णव-साधनाक अंगरूपमे भेल मुदा एहिमे निहित संकेत सामान्य जनक जीवनयात्रासँ विच्छिन्न कोनो शुष्क वैराग्य चर्चा नहि थिक। जे स्नेह-सम्पर्क मनुष्यकेँ जीवनमे पथ-निर्देश करैत अछि, तकरे कृष्णलीलाक रूपक द्वारा, जीवनमरनातीत नित्य-सम्पर्कक रूपमे एतय उपस्थित कयल गेल अछि। यैह कारण अछि जे धार्मिक साहित्य रूपमे उद्भूत भेनहु ई साम्प्रदायिक नहि अछि। एकर श्रेय वैष्णव कवि लोकनिक आन्तरिकताकेँ दैत प्रियरंजन सेन, बंगला साहित्येर खसड़ा, पृ.-62 मे लिखैत छथि- " वैष्णव कवि लोकनि जे साहित्य रचना कयलनि से साहित्यक दृष्टिएँ नहि, साधनाक दृष्टिएँ, धर्मक दृष्टिएँ, प्राणाभिव्यक्तिक दृष्टिएँ अर्थात् एहि साहित्यपर कोनो प्रकारक बाह्य आवरण कि जीवनक बहिर्भूत कोनो भावक छाह नहि पड़ल...हिनका लोकनिक लेल साहित्य जीवन छल वा जीवनक जे अभिव्यक्ति भेल सएह साहित्य छल। अतः वैष्णव पदक आन्तरिकताक सम्बन्धमे कोनो तरहक प्रश्न वा संदेह करबाक गुंजाइश नहि अछि।[41]

ब्रजबोली भाषाक पद-रचनाक परम्परा लगभग चारि सय वर्ष धरि चलल। कहबाक आवश्यकता नहि जे सैकड़ो कवि लोकनि असंख्य पद-रचना कयलनि। विभिन्न वैष्णव-पद-संग्रहमे हजारो गीतक संकलन आइयो उपलब्ध अछि जाहिमे पदसमुद्र क्षणदागीतचिन्तामणि, पदामृत-समुद्र, पदकल्पतरु, संकीर्त्तनामृत, पदरससार, पदरत्नाकर, पदकल्पलतिका, गङगापदतरङ्गिणी, अप्रकाशित पद-रत्नावली आदि प्रमुख अछि। एहि संकलन सभमे सैकड़ो एहन गीत संकलित अछि जे विशुद्ध रूपेँ मैथिली भाषामे लिखल गेल अछि। अर्थात् ई पद सभ मध्यकालीन मैथिली गीतिकाव्यक धरोहर थिक। यशोराज खाँ, मुरारि गुप्त, नरहरि सरकार, माधव घोष, रामानन्द बसु, वंशीवदन, नयनानन्द, वृन्दावन दास, देवकीनन्दन दास, यदुनन्दन दास, माधवदास, द्विज हरिदास, पुरुषोत्तम दास, परमानन्द सेन, लोचनदास, अनन्त दास, ज्ञानदास,तरुणीरमण, बलरामदास, रायवसन्त, जगन्नाथ दास, कानुरामदास, नरोत्तम दास, कविरंजन, बल्लभ दास, वासुदेव दास, हरिबल्लभ, राधामोहन ठाकुर, नरहरि चक्रवर्ती, वैष्णवदास, दीनवन्धुदास, शशिशेखर आदि प्रमुख पद-रचयिता भेलाह। किछु प्रमुख बंगाली कवि, जनिक ब्रजबोली काव्यमे मैथिलीक प्रभाव सुस्पष्ट देखना जाइत अछि, तनिक संक्षिप्त उल्लेख एतय प्रस्तुत अछि-

1. **यशोराज खाँ**- उपलब्ध सामग्रीक आधारपर यशोराज खाँ ब्रजबोली परम्पराक प्रथम बंगाली कवि प्रतीत होइत छथि। यशोराज खाँ गौड़ सुलतान हुसेनशाहक आश्रित छलाह। हुसेनशाह बंगालमे वैष्णव-साहित्यक महान संपोषक भेलाह। यशोराज खाँ अपन आश्रयदाताक उल्लेख अपन पदमे 'जगतभूषण', 'पंचगौड़ेश्वर' एवं 'भोगपुरन्दर' कहि कयलनि अछि तथा हुनक कीर्तिक सम्वर्द्धना कयलनि अछि। यशोराज खाँ रचित 'कृष्णमंगल काव्य' अनुपलब्ध अछि। हिनक एकगोट पद पीताम्बर दासक 'पदमंजरी'मे संकलित अछि जाहिमे सखी मिलनक हेतु विकल राधाक भाव-चेष्टाक वर्णन कृष्णसँ करैत छथि। एहि पदक किछु पाँति एतय उद्धृत अछि-

एक पयोधर चन्दन लेपित आरे सहजइ गोर।
हिय धराधर कनक भूधर कोले मिलल जोर॥
माधव तुय दरसन काजे।

हिनक एकगोट आर खण्डित पद उक्त रसमंजरीमे उद्धृत भेल अछि जकर मात्र चारि पाँति उपलब्ध अछि। एहि पाँतिमे रासक अवसरपर कृष्णक मुरलीक स्वरसँ विमुग्ध गोपीक व्याकुलताक वर्णन भेल अछि-

शुनि वेणु अपरुप-ध्वनि
छुटल कुंजरगति बरज-रमनी।
पदे हार परे केह करेते नपुर
केह आध सीमन्ते लेइ ना सिन्दूर।

2. **मुरारि गुप्त**- चैतन्य महाकविक समकालीन कविमे मुरारिगुप्त सर्वप्रमुख भेलाह। ई महाप्रभुक सहपाठी छलाह। ई संस्कृत महाकाव्य पद्धतिक अनुसरण कऽ 'चैतन्य चरितामृत' लिखलनि जाहिमे महाप्रभुक प्रारम्भिक जीवनक प्रामाणिक विवरण भेटैत अछि। मुरारि गुप्तक अधिक पद उपलब्ध नहि अछि तथापि जतेक उपलब्ध अछि तकर विलक्षणता हिनक काव्य-कौशलक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि। हिनक पदमे बंगला शब्दक बाहुल्य भेटैत अछि तथापि मैथिली शब्द-विन्यास हिनक रचनाक मुख्य आकर्षण थिक तथा हिनक पद मैथिली गीतिकाव्यक धरोहर थिक। उदाहरणस्वरूप निम्नलिखित पाँति द्रष्टव्य थिक-

हरषित अन्तर चलु वर नागर
हेरइते रंगिनी राधा।
सुन्दरी पाश यव सुन्दर मिलल
पूरल सब मन साधा॥
दोहे दोहो हेरि विभोर।
दुँहु जन बयाने बात नहि फुरइ
ढरकइ नअल किशोर।
बैठलि सुवदनि नोरे महि पूरल
कान बैठल तसु पाश।
धरइते करहि करे धनि बारइ
लाजे कहत नाहि भाष॥
पिबइते चकोर सुधा रस माधुरी
मेघे झाँपलि जनु चन्द।
भनये मुरारी प्राणपात संगिनी
दिने दिने भाँगव धन्द॥

3.रमानन्द बसु- चैतन्य महाप्रभुक समकालीन कवि रामानन्द बसु हुनक अनन्य भक्त छलाह। वैष्णवभक्ति एवं काव्यप्रतिभा हिनक कुलक्रमागत छल। हिनक पिता मालाधर वसु श्रीकृष्ण विजय नामक

ग्रन्थक रचना कयलनि जे महाप्रभु चैतन्यकेँ अतिशय प्रभावित कयलकनि। रामानन्द बसु रचित पद सभ अनेक वैष्णव-पद-संग्रह ग्रन्थमे संकलित अछि। हिनक अधिकांश उपलब्ध पद चैतन्य विषयक अछि।

4. यदुनन्दन दास- यदुनन्दन दासक मूल नाम यदुनन्दन चक्रवर्ती छलनि। ई गदाधारी दासक शिष्य छलाह। हिनक पदसभमे हिनक गुरुक नामोल्लेख अबैत अछि। यदुनन्दन दास अपन पदक भणितामे यदुनन्दन, यदु, यदुनाथ तथा यदुनाथ दासक प्रयोग करैत छलाह। हिनक एकटा पद एतय द्रष्टव्य अछि-

चलल सुनागर अन्तर गरगर
झर झर लोचने पानि
आगे करि दोति जोड़ करि हाथहि
बोलत गदगद बानि॥
ए सखि धनि कि करब परसाद।
एह निज दास दास करि लेयब
पूरब मझू मनसाध।
एत कहि कूंज समीपहि आओल
दोतिक संगहि संगे।
कानूक अंगगंधे वन सुवासल
राइ कहत किये वास।
आयब जानि फेर धनि बैठल
कह यदुनन्दन दास॥

5. ज्ञानदास- ब्रजबोली पदकर्ता लोकनिक मध्य ज्ञानदासक स्थान अतिविशिष्ट अछि। ई नित्यानन्द प्रभुक पत्नीक शिष्य छलाह। हिनक शताधिक पद उपलब्ध अछि। हिनक पदमे कलापक्ष एवं भावपक्षक विलक्षण संयोग हिनक काव्य-प्रतिभाक परिचायक अछि। हिनक पदक भाषा सरस अछि। डॉ. सुकुमार सेनक अनुसार- अनुरागक व्याकुलता जाहि प्रकार ज्ञानदासक पदावलीमे सरलभावसँ प्रकाशित भेल अछि ताहि प्रकार पदावली-साहित्यमे अनतह कतहु नहि। उदाहरणस्वरूप एतय हिनक एकगोट पद उल्लिखित अछि-

पन्थ नेहारिते नयन अन्धायल
दिवस लिखिते नख गेल
दिवस दिवस करि मास बरिख गेओ
बरिख बरिख कत भेल॥
माधव कैसन वचन तोहार।
आजि कालि करि दिवस गोडाइते
जीवन भेल अति भार।
आओब करि करि कत परबोधब
अब जिउ धरइ ना पार॥

जीवन मरन अचेतन चेतन
निति निति भेल तनु भार।
चपल चरित तुया चपल वचने आर
कोइ क करब विसबास।
ऐसे विरहे यव जनम गोरायब
तब कि करब ज्ञानदास।

6. बलरामदास- डॉ. सुकुमार सेन बलरामदास नामक तीन गोट कविक चर्चा कयलनि अछि। तथापि हुनकर मतानुसार बलरामदास नामसँ उपलब्ध अधिकांश पद कोनो एकहि कविक रचना थिक। प्रतीत होइत अछि जे नित्यानन्द प्रभुक शिष्य बलरामदास सम्भवतः एक महान कवि छलाह। कारण देवकीनन्दन दासन अपन "वैष्णव वन्दना"मे हिनक उल्लेख कयलनि अछि- संगीत कारक बन्दों बलरामदास। नित्यानन्द चन्द्र यार अधिक विश्वास।' तहिना चैतन्य चरितामृतमे सेहो हिनक उल्लेख भेटैत अछि- 'बलरामदास कृष्ण प्रेम रसवादी। नित्यानन्द नामे हय अधिक उन्मादी।'

बलरामदास एक प्रतिभासम्पन्न कवि छलाह। पदकल्पतरुमे हिनक अस्सीसँ अधिक ब्रजबोली पद संग्रहित अछि। बलराम दासक जे पद उपलब्ध होइत अछि ताहिमे 'बलरामदास' ओ 'द्विज बलरामदास' भनिताक प्रयोग भेल अछि। हिनक काव्य-कौशलक परिचयस्वरूप निम्नलिखित पाँति देखल जा सकैत अछि-

शुनइते कानहि आनहि शुनत
बुझइते बूझइ आन।
पुछइते गदगद उत्तर ना निकसइ
कहइते सजल नयान।।
सखि हे कि भेल ए वरनारी।
करहु कपोल थकित रहु झामरि
जनु धनहारि जुआरि।।

7. नरोत्तम दास- नरोत्तम दासक जीवनी, नित्यानन्द दास रचित 'नरोत्तम विलास' तथा नरहरिदासक 'भक्ति रत्नाकर' मे उल्लिखित अछि। ई गोपालपुर परगनाक राजा कृष्णानन्द दत्तक पुत्र छलाह। वैभवशाली पारिवारिक पृष्ठभूमि रहलाक बादो नरोत्तम दास बाल्यावस्थहिसँ सात्विक जीवन व्यतीत कयलनि। ओ आजीवन अविवाहित रहलाह तथा वैष्णव धर्मप्रचारमे जीवन व्यतीत कयलनि। हिनक गणना एक उत्तम कोटिक कविक रूपमे कयल जाइत अछि। बंगला साहित्य मध्य हिनक भक्ति-पद अत्यन्त सम्मानित ओ लोकप्रिय अछि। हिनक पदक सरलता, स्पष्टवादिता ओ वैयक्तिक अनुभूति सहजहिँ पाठककेँ आकर्षित करैत अछि। उदाहरणस्वरूप एकटा पद प्रस्तुत अछि-

दुहुँ मुख दरसने दुहुँ बेल भोर।
दुहुँक नयने बहे आनन्द लोर।।

दुहुँ तनु पुलकित गद गद भास।
इषद वलोकने लहु लहु हास ।।
अपरुप राधा-माधव-रङ्ग ।
मान विरामे भेल एक सङ्ग ।।
ललिता विशाखा आदि जत सखिगण ।
आनन्दे मगन भेल देखि दुहुँजन ।
निकुञ्जेर माझे दुहुँ केलि विलास ।
दूरहिँ दूरे रहुँ नरोत्तमदास ।।

बंगालमे ब्रजबुलि काव्य-परिपाटीक अन्तिम पदकर्ताक रूपमे कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर स्वयं अपना ऊपर विद्यापतिक प्रभावकेँ गछैत छथि-" हमर यौवनकालक कल्पनाकेँ जे सभसँ पहिने जगओलक से छल विद्यापतिक पद ओ गीतक आनन्द, आओर एक गीतकेँ तँ संगीत-लयबद्ध सेहो कयल ।" भानुसिंहेर पदावली तकर प्रमाण थिक जाहिमे मैथिली भाषाक अनेक गीत संकलित अछि तथा विद्यापतिक काव्य-परम्पराक अनुसरण भेल अछि। भानुसिंह कविक क्षद्मनाम छलनि।

ओड़िसा प्रदेशमे वैष्णव धर्मक प्रचार-प्रसार, चैतन्य महाप्रभुक एहि अंचलमे आगमनसँ लगभग दू-शतक पहिनहि भेल। बारहम शताब्दीमे रामानुज पुरी अयलाह आ ओड़िया जनमानसकेँ अपन भक्ति-परम्परासँ परिचय करौलनि। तेरहम शताब्दीमे जयदेवक गीत-गोविन्दक प्रभाव सेहो एतय वैष्णव-धर्म प्रचारक साधन बनल। कहबाक प्रयोजन नहि जे वैष्णव धर्मक प्रचारक संगहि एतद्विषयक साहित्यक रचना सेहो एतय एही समयावधिमे आरम्भ भेल। तेरहम शताब्दीक मध्यमे मार्कण्डेय दास रचित केशव-कोइलि नामक भक्ति रसालुप्त काव्यक परिचय भेटैत अछि जाहिमे कृष्णक मथुरा गमनक पश्चात यशोदाक वेदनाक चित्रण अछि। चैतन्य महाप्रभुक ओड़िसा आगमनक समय ओतय पाँच गोट वैष्णव सन्त- बलरामदास, जगन्नाथदास, अनन्तदास, यशोवन्तदास एवं अच्युतदास- धर्म एवं साहित्य क्षेत्रमे पूर्ण प्रतिष्ठित छलाह। हिनका पाँचोकेँ 'पंचसखा' सेहो कहल जाइत छलनि। हिनका लोकनिक विमल-भक्तिसँ सिक्त वाणीमे धार्मिक साहित्यक जे रूप प्रकट भेल से आइयो विशाल जनमानसकेँ रस-समुद्रमे निमग्न करबामे सक्षम अछि। एहन साहित्यमे बलरामदासक ओड़िया रामायण एवं भावसमुद्र तथा अनन्तदासक 'भागवत' विशेष उल्लेखनीय अछि।[42]

उड़ीसामे मैथिली भाषा-साहित्यक प्रभाव सोलहम शताब्दीसँ भेटैत अछि। रायरमानन्द, चम्पति राय, महाराज प्रताप रूद्र, माधवी दासी, कानुराम दास, रायदामोदर दास, यदुपतिदास, चान्दकवि आदि प्राचीन ओड़िया कवि विद्यापति काव्य परम्परासँ अनुप्राणित छथि आ हिनका लोकनिक रचल पद सभ पूर्वांचलमे मैथिली गीतिकाव्य-परम्पराक विस्तार ओ विकासक जनतबक महत्वपूर्ण स्रोत थिक।

राय रामानन्द ओड़िया वैष्णव-समाजमे सर्वाधिक प्रतिष्ठित कवि ओ कृष्ण-तत्व-मर्मज्ञक रुपमे ख्यात भेलाह। हिनका रचित पद समस्त ब्रजबोली काव्यमे प्राचीनतम मानल जाइत अछि। राय रमानान्दक पद सभक अनुशीलनसँ विद्वान लोकनि निष्कर्षपर पहुँचल छथि जे हिनका विद्यापतिक पदक गम्भीर परिचय रहनि। हिनक भाव, भाषा एवं वर्णन भंगिमा विद्यापतिक पदसँ निश्चित रूपेँ प्रभावित प्रतीत होइत अछि। चैतन्य

चरितामृतमे वर्णित अछि जे चैतन्य महाप्रभुसँ प्रथम मिलनक अवसरपर राय रामानन्द हुनका एकगोट स्व-रचित पद सुनौलनि। महाप्रभुक रायक मुखसँ प्रेम विला विवर्तनक एहि पदकेँ सुनि भाव-विभोर भऽ गेलाह। पद एहि प्रकार अछि-

पहिलहि राग नयन रंग भेल।
अनुदिन बाढ़ल अवधि ना गेल॥
न सो रमण ना हाम रमणी।
दुहुँ मन मनोभव पेशल जनि॥
ए सखि, सो सब प्रेम काहिनी।
कानु ठामे कहबि बिछुरह जानि॥
ना खोजलुँ दूती ना खोजलुँ आन।
दुहुँ केरि मिलने मधत पाँचवाण॥
अब सोइ विराग तुहुँ भेलि दूती।
सुपुरुष-प्रेमक ऐछन रीति॥
वर्द्धन रुद्र नराधिप मान।
रामानन्द राय कवि भान॥

चम्पति राय (1449-1532) राय रामानन्दक बाद दोसर महत्वपूर्ण पदकर्ता भेलाह। हिनक परिचय पदामृत समुद्रमे उपलब्ध अछि। जाहिसँ प्रतीत होइत अछि जे ई महाराज प्रतापरुद्रक महामात्य छलाह। सम्भव थिक जे 'चमूपति' हिनक पदनाम हो जकर अपभ्रंश रूप कालान्तरमे 'चम्पति' रूपमे ख्यात भेल। महाराज प्रतापरुद्रदेव (1504-1532), कानुरामदास तथा माधवीदास सोलहम शताब्दीक अन्य महत्वपूर्ण वैष्णव कवि छथि। सतरहम शतकमे रायदामोदर दास, चाँदकवि एवं यदुपतिदा एहिक्रममे सेहो उल्लेखनीय छथि। निष्कर्षतः ओड़िया-मिश्रित मैथिली (ब्रजबोली)मे सेहो मध्यकालमे वैष्णव-पदावली रचनाक सुदीर्घ ओ समृद्ध परम्परा छल जकर प्रेरणास्रोत विद्यापति छलाह।

बंगाल तथा ओड़िसा जकाँ असममे सेहो असमिया ओ मैथिली मिश्रित ब्रजबोली साहित्यक आत्मा मैथिली छल आ महाकवि विद्यापतियेसँ प्रभाव ग्रहण कऽ असमक ब्रजबोलि पदकर्ता लोकनि रचना कयलनि। पन्द्रहम-सोलहम शताब्दीमे असममे विद्यापति वैष्णव गायकक रूपमे ख्यात भेलाह। महान असमिया वैष्णव संत शंकरदेव (1449-1568) मैथिली भाषाक वैष्णव पदावलीसँ विशेष प्रभावित भेलाह। शंकरदेव अपन वैष्णव सिद्धान्तक प्रचार हेतु विद्यापतिक पदशैलीक अनुकरण कयलनि आ असममे ब्रजबोलिक प्रथम पदकर्ता भेलाह।

विद्यापतिसँ प्रेरित प्राचीन असमिया गीतकेँ दू भेद अछि-वरगीत आ अंकीयानाटमे प्रयुक्त गीत। वरगीत एक प्रकारक भगवद्विषयक संगीत थिक जाहिमे श्रीकृष्ण ओ हुनक लीलाक वर्णन रहैत अछि। असमक आध्यात्मिक जीवनमे वरगीतक अतिविशिष्ट महत्व अछि। एहि प्रसंग डॉ. वाणीकान्त काकती, 'पुराणि असमिया साहित्य' मे लिखैत छथि - " जाहि प्रकार प्रचण्डवात्या वनमे लागल दावाग्निकेँ प्रज्वलित करबामे सहायक होइत अछि, ताही प्रकार साहित्य जातीय एवं महाजातीय आन्दोलनकेँ उत्साहित एवं प्रेरित करैत अछि।

नाटक, गीत एवं पद ई तीनू शंकरदेवक वैष्णव आन्दोलनकेँ एहि शाक्त प्रदेशमे एतेक व्यापक आ लोकप्रिय बना देलक। जाहि तरहे मरुभूमिक ऊँट पानिक गंधसूत्र पकड़ि जलाशयक अण्वेषणमे चलि दैत अछि तहिना तृषित जनता वरगीतक सौरभसँ आकृष्ट भऽ शंकर-माधवक शरणापन्न भेल छल।" एहि प्रकार वरगीत असमिया वैष्णव साहित्यक भक्तिपूर्ण आवेश थिक।[43]

वरगीत ओ अंकिया नाट दुनूक रचना मैथिली-पदावली तथा मध्यकालीन मैथिली नाटकसँ प्रेरित अछि। 'अंकिया नाट'क प्रवर्तक शंकरदेव मिथिलाक नाट्य परम्पराक अनुसरण कयलनि। जहिना मैथिली नाटक त्रैभाषिक होइत छल तथा ओहिमे मैथिली पदक प्रयोग होइत छलैक तहिना अंकिया नाटमे संस्कृत, असमिया आ मैथिली भाषाक प्रयोग भेल अछि।

एहि गीत सभमे विद्यापतिएक गीतक सरणिपर रागभास, भनिता आदिक प्रयोग भेल अछि। अंकीया नाट्यमे प्रयुक्त पद सभमे वरगीतक अपेक्षा अधिक शुद्ध मैथिली प्रयोग भेल अछि। इतिहासकार लोकनि मानब छनि जे कामरूप-कामख्याक लोकक मैथिल सम्पर्कक कारणेँ अंकियानाटमे मिथिलाक किर्तनिञा नाट्य परम्पराक अनुसरण भेल। शंकरदेवक अतिरिक्त माधवदेव, गोपालदेव, लक्ष्मीदेव, रामचरण ठाकुर आदि प्रमुख नाटककार-कविलोकनि असममे भेलाह जिनकर मैथिलीगीतिकाव्यक विकासमे महत्वपूर्ण योगदान कहल जायत।

शंकरदेव असमिया ब्रजबोली पदकर्ता ओ अंकिया नाटक प्रवर्तक रूपमे शिखरपुरूष छथि। असमियामे अनूदित एवं अवतरित अनेक ग्रन्थक संगहि वैष्णव सिद्धान्त निरूपक संस्कृत ग्रन्थ 'भक्ति रत्नाकर' हिनक वैदुष्यक प्रतिमान थिक। नामधर्मक प्रचारक रूपमे ओ कहलनि जे भक्तिपूर्वक परब्रह्मक नाम-जापहि व्यावहारिक साधना थिक। हुनका विचारे भगवानक चरणारविन्दक सेवाक अतिरिक्त साधक केर आन कोनो कर्तव्य नहि अछि। शंकर करीब तीस गोट धर्मग्रन्थक रचना कयलनि। असमिया एवं संस्कृत रचनाक अतिरिक्त हुनक ब्रजबोली पदावली हुनकर भक्ति-विह्वलता एवं कवित्व-प्रतिभाक प्रमाण थिक। उदाहरणस्वरूप हुनक रुक्मिणी हरण नाट'क एकगोट पद द्रष्टव्य अछि-

ईषत हसित मुख चाँद उजोर।
दशन मोतिम यैचे नयन चकरो॥
मणिक मुकुट कुण्डल गण्ड डोले।
कनक पुतली तनु नील निचोले॥
कर कंकण केयूर झनकार।
माणिक काञ्चि रचित हेमहार॥
चलाइते चरण मञ्जीर करु रोल।
रूपे भुवन भुले शङ्कर बोल॥

माधवदेव - शंकरदेवक पश्चात असाममे वैष्णव आन्दोलनक नेतृत्वकर्ताक रूपमे माधवदेव आगू अयलाह। पूर्वमे ओ शाक्त मतावलम्वी छलाह मुदा शंकरदेवक प्रेरणासँ ई परम वैष्णव भऽ गेलाह। माधवदेव

असममे सत्र संस्थाक वास्तविक संस्थापक मानल जाइत छथि। हिनक काव्यक अन्तर्धारा तीव्र भक्तिभावनासँ संपुष्ट अछि। शास्त्री विद्यामे निष्णात माधवदेव उच्चकोटिक संगीतज्ञ सेहो छलाह। मानव जीवन हुनका लेल आध्यात्मिक उन्मेषक साधन छल। माधवदेवक अधिकांश वरगीत बालकृष्णकेँ समर्पित अछि जाहिमे वृन्दावनक ग्राम्यजीवन सजीव चित्रण भेल अछि -

साजे रे सखि नन्दकु बाला।
नवघन जिनि शोहे तनु काला॥
अधर सुधारस पूरित वेणु।
अंग विभूषित गो पद रेणु॥
झलमल मयूर पुच्छ शोहे माथे।
कोटि मदन जिनि गोपिनि नाथे॥
निन्दि इन्दु कोटि हरि साजे।
झलकित किंकिणी मंजीर बाजे॥
कण्ठे केलि कदम्बुक माला।
कहत माधव गति बाल गोपाला॥

एवंप्रकारेँ बंगाल, असम तथा ओड़िसामे मध्ययुगमे प्रचलित ब्रजबोली क्रमशः बंगाली, असमी तथा ओड़िया भाषा-भाषी द्वारा प्रयुक्त मैथिली भाषा थिक। हलाँकि ब्रजबोली काव्यमे मैथिलीक व्याकरणिक नियमक क्षरण भेल अछि तथापि वैष्णवपदावलीमे प्रयुक्त क्रियापद, विभक्ति-प्रत्यय, शब्दाबली एवं वाक्यविन्यास सभ किछु मैथिली भाषानुरूप अछि।

उपर्युक्त विवेचनसँ मैथिली गीतिकाव्यक अत्यंत प्राचीन ओ समृद्धशाली-परम्पराक दर्शन होइत अछि। विद्यापति युग एकर चरमोत्कर्ष थिक। कहब अतिशयोक्ति नहि होयत जे विद्यापति अपन पदावलीक माध्यमे मात्र देसिलवयनाक साहित्ये सृजन नहि कयलनि अपितु मिथिलाक संस्कारक संरक्षण, संवर्द्धन ओ प्रसारक माध्यम सृजन कयलनि।

*****

[1] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. जयकान्त मिश्र, साहित्य अकादेमी, *1988,* पृ.-48.

[2] मैथिली गीत साहित्यक विकास आ परम्परा, प्रो. वीणा ठाकुर, मैथिली अकादमी, पटना, 2012, पृ-37 सँ उद्धृत.

[3] A Survey of Maithili Literature, Dr. Radhakrishna Chaudhary, Shruti Publication, Delhi, 2010, Page-25.

[4] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. जयकान्त मिश्र, पूर्वोक्त-1, पृ.-56.

[5] A Survey of Maithili Literature- पूर्वोक्त-3, Page-26.

[6] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. जयकान्त मिश्र, पूर्वोक्त-1, पृ.-63 सँ उद्धृत.

[7] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. जयकान्त मिश्र, पूर्वोक्त-1, पृ.-36.

[8] मिथिला-समाद, दैनिक, सं-ताराकान्त झा, 01-08-10 मे प्रकाशित डॉ. मुनीश्वर झाक आलेखसँ उद्धृत.

[9] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. जयकान्त मिश्र, पूर्वोक्त-1, पृ.-92.

[10] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991, पृ.- 98.

[11] मिथिला समाद, दैनिक, सं-ताराकान्त झा, 22-10-2010 मे प्रकाशित आलेखसँ उद्धृत.

[12] विद्यापति,डॉ. शिवप्रसाद सिंह, पृ.-78.

[13] प्राचीन गीत-सं. रमानाथ झा, पृ.-72, मैथिली गीतिकाव्यक उद्भव ओ विकास, डॉ. नन्दकिशोर मिश्रा, इन्दु प्रकाशन, भुसकौल, दरभंगा, 1990 पृ.-58 सँ उद्धृत.

[14] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पूर्वोक्त-10, पृ.-119 सँ उद्धृत.

[15] उपर्युक्त, पृ.-121 सँ उद्धृत.

[16] मैथिली गीत साहित्यक विकास आ परम्परा, डॉ. वीणा ठाकुर, पूर्वोक्त-2, पृ.-51.

[17] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पूर्वोक्त-10, पृ.-124 सँ उद्धृत.

[18] उपर्युक्त, पृ.-127. सँ उद्धृत.

[19] उपर्युक्त,पृ.-129. सँ उद्धृत.

[20] उपर्युक्त, पृ.-130. सँ उद्धृत.

[21] मैथिली गीत साहित्यक विकास आ परम्परा, प्रो. वीणा ठाकुर, पूर्वोक्त-2,पृ.-54 सँ उद्धृत.

[22] मैथिली साहित्यक इतिहास, डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पूर्वोक्त-10, पृ.-132 सँ उद्धृत.

[23] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. जयकान्त मिश्र, पूर्वोक्त-1, पृ.-131.

[24] मैथिली गीत साहित्यक विकास आ परम्परा, प्रो. वीणा ठाकुर, पूर्वोक्त-2, पृ.- 56.

[25] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. जयकान्त मिश्र, पूर्वोक्त-1, पृ-133.

[26] उपर्युक्त,पृ.-133

[27] मैथिली साहित्यक इतिहास, प्रो. मायानन्द मिश्र. किशुन संकल्प लोक, सुपौल, पृ.-135.

[28] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पूर्वोक्त-10, पृ.-152 सँ उद्धृत.

[29] मैथिली साहित्यक इतिहास, प्रो. मायानन्द मिश्र, पूर्वोक्त-27, पृ.-145.

[30] उमापति, डॉ. रामदेवझा, मैथिली अकादमी पटना, पृ.-65.

[31] मैथिली गीत साहित्यक विकास ओ परम्परा, प्रो. वीणा ठाकुर, पूर्वोक्त-2, पृ.-62 सँ उद्धृत.

[32] मैथिली गीतिकाव्यक उद्भव ओ विकास, डॉ. नन्दकिशोर मिश्रा, पूर्वोक्त-13, पृ.-69 सँ उद्धृत.

[33] मैथिली गीत रत्नावली, सं- बदरीनाथझा, पृ.-57.

[34] मैथिली गीत साहित्यक विकास ओ परम्परा, प्रो.वीणा ठाकुर, पूर्वोक्त-2, पृ.-65 सँ उद्धृत.

[35] कविता-कुसुम, पृ.-23.

[36] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पूर्वोक्त-10, पृ.-174.

[37] कवि सिद्धनरसिंहमल्ल-डॉ. शैलेन्द्रमोहन झा, पृ.-7, मैथिली गीतिकाव्यक उद्भव ओ विकास, डॉ. नन्दकिशोर मिश्रा, पूर्वोक्त-13, पृ.-79 सँ उद्धृत.

[38] Maithili Chrestomathy- G A Grierson, Aisatic Society, Kolkata, 1881, पृ-34.

[39] The Origin & Development of the Bengali Language, Pt-I, Dr. SunIti Kumar Chatterji, Calcutta University Press, 1926. Pg-103.

[40] ब्रजबोली साहित्य, डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1974, पृ.- 71.

[41] उपर्युक्त, पृ.- 71.

[42] उपर्युक्त, पृ.- 245-246.

[43] उपर्युक्त, पृ.- 270.

तृतीय अध्याय : आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यक विकास

पृष्ठभूमि

मैथिली साहित्यक आधुनिक कालक आरम्भ उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धसँ मानल जाइत अछि । उनैसम शताब्दी मात्र भारते नहि अपितु विश्व-इतिहासमे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण शताब्दी मानल जाइत अछि । एहि शताब्दीमे भारत ओ अन्यान्य देशमे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक, साँस्कृतिक आदि जीवनक हरेक क्षेत्रमे नूतन विकास ओ नव-परिवर्तनक सूत्रपात भेल । पाश्चात्य विचारधारासँ सम्पर्कित भेला पर भारत समेत एशियाक समाजकेँ बौद्धिक विकासक नव दृष्टि ओ गति भेटलैक । विभिन्न देशक वैज्ञानिक लोकनि प्रकृतिक गहन अध्ययन-अनुशीलन कयलनि आ मानव जीवनोपयोगी कतेको नव-नव भौतिक साधनक आविष्कार कयलनि । नवीन सोच आ बौद्धिकतासँ समाजमे व्याप्त रूढ़िवादी विचारधारा निष्प्रभावी होमय लागल । वैज्ञानिक विकास औद्योगिक क्रान्तिक बीजारोपण कयलक । वैज्ञानिक आविष्कारसँ अनेक क्रान्तिकारी रहस्योद्घाटन भेल जाहिसँ मनुष्यकेँ सूक्ष्मातिसूक्ष्म वस्तुकेँ देखबाक साधनेटा नहि प्राप्त भेल अपितु, प्राचीन मान्यतापर शंको करवाक दृष्टि प्राप्त भेल । साहित्यकारकेँ रूढ़ि आ आदर्शसँ पृथक सामाजिक यथार्थकेँ देखबाक-परखबाक साहस प्रदान कयलक, दैवीय शक्ति-सम्पन्न महावीरक स्थानपर सामान्यजन नायकक रूपमे ठाढ़ कयल गेलाह ।

औरंगजेबक मृत्योपरान्तहिसँ देशक राजनीतिक एकता बिखण्डित हुअय लागल छल । हुनक उत्तराधिकारी मोगल बादशाह लोकनि देशक शान्ति-सुव्यवस्था कायम नहि राखि सकलाह । देशमे अनुशासनक भाव शिथिल भऽ गेल छल । बिभिन्न तरहक अपराध बढ़ि गेल छल । क्षेत्रिय शासक आ नवाब लोकनि या तँ भोग-बिलासमे डूबल छलाह अथवा अपन राज-सत्ताक रक्षा करबामे बेहाल छलाह । किओ प्रजावर्गक हित-अहितक ध्यान रखबा लेल चिन्तित नहि छलाह । एहन अशान्तिपूर्ण वातावरणमे प्रजाक देसी शासक लोकनिक प्रति मोहभंग स्वाभाविके छल । ओ लोकनि अंग्रेजी शासन व्यवस्थाक स्वागत करबा लेल मजबूर भऽ गेल छलाह । अंग्रेजक प्रभुत्व स्थापित भेने अपराध घटल । शासन-प्रशासनक स्थितिमे सुधार आयल ।

भारतीय आओर पाश्चात्य संस्कृतिक मेलबंधनसँ देशमे पुनरुत्थानक वृतिक उदय हुअय लागल । मैकाले अंग्रेजीकेँ शिक्षाक माध्यम घोषित कयलनि । सर चार्ल्स वुड गाम-गाममे अंग्रेजी स्कूल आओर उच्च तथा आधुनिक शिक्षाक लेल विश्वविद्यालय सभक स्थापनाक योजना बनौलनि । तत्कालीन मध्यमवर्गीय समाज

एहिसँ सर्वाधिक लाभान्वित भेल। पाश्चात्य शिक्षा प्रणालीसँ शिक्षित कतिपय विद्वान एहनो भेलाह जिनका लेल स्वदेशक प्राचीन परम्परा त्याज्य बनि गेल तँ बहुत रास एहि विद्वान भेलाह जे स्वदेश गौरवसँ मण्डित छलाह। हिनका लोकनिक प्रयासे समाजमे नवीन शक्तिक संचार भेल। बंगाल सर्वप्रथम पाश्चात्य विचारधारासँ प्रभावित भेल। कलकत्ता अंग्रजी शासनक प्रथम राजधानी भेल आ एहि तरहेँ बंगला साहित्य युरोपीय साहित्यक प्रत्यक्षतः सम्पर्कमे आयल।

शनैः शनैः यूरोप आओर भारतवर्षक मध्य सामाजिक-सांस्कृतिक तथा साहित्यिक घनिष्ठता बढ़य लागल। समुद्र-यात्रा तथा विदेश-गमन परसँ सामाजिक-धार्मिक प्रतिबन्ध समाप्त हुअय लागल। भारतवासी विदेश जाय ओतुका जीवन आओर परम्पराकेँ निकटसँ देखय लगलाह। पाश्चात्य चिन्तक, दार्शनिक तथा राजनीतिक विचारक लोकनिक विचारक अध्ययन करय लगलाह। ओतुका सामाजिक स्वतंत्रता, समाजमे व्यक्तिक स्थान, तथा ओकर विचारक महत्व प्रवासी भारतीयकेँ आकर्षित कयलक। फलतः ओ सभ एकरा शीघ्रतासँ ग्रहण कयलनि।[1]

भारतीय संस्कृतिक गौरव-बोध मात्र भारतवासी धरि सीमित नहि रहल, अपितु अनेक विदेशी विद्वान सेहो एकरा सहर्ष स्वीकार कयलनि। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान 'मैक्समूलर' वेदक सम्पादन कयलनि। डॉ. 'थी वो' वेदान्त-सूत्र पर लिखलनि आ डॉ. ग्रिफिथ वाल्मीकि रामायणक अनुवाद कयलनि। अनेक विद्वान संस्कृत-साहित्यक अध्ययन कयलनि तथा ओकर इतिहास लिखलनि। एहि समयमे अनेक पुरातात्विक खोज भेल जाहिसँ भारतक गौरवमयी अतीतसँ विश्व परिचित भेल।[2] एहि शताब्दीक उत्तरार्द्धमे जार्ज ग्रियर्सन, अंग्रेज जातिक एकटा पदाधिकारी मिथिलाक भाषा-साहित्य ओ संस्कृतिपर विमुग्ध भऽ एकरा विश्व पटलपर प्रतिष्ठित करबामे स्वयंकेँ एक प्रकारे अर्पित कऽ देलनि।[3]

भारतीय दर्शन आओर पाश्चात्य दर्शनक अध्ययन दिस विद्वान लोकनि सेहो प्रवृत भेलाह। भारतक अनेक मनीषि लोकनि जे समय-समयपर अपन दार्शनिक विचार अभिव्यक्त कयने छलाह, मुदा तकर हस्तलिखित पोथी एखनधरि सर्वसुलभ नहि छल; आधुनिक युगमे मुद्रण-यंत्रक व्यवस्था भेने आब ओ जनसाधारण धरि पहुँचय लागल। ज्ञात हो जे कलकत्ताक पार्श्वर्ती श्रीरामपुरमे बपतिस्त मिशन (Baptist Mission)क स्थापना विलियम केरे कयलनि जे पूर्वी भारतमे प्रेसक स्थापनाक एहि समय मे सूत्रधार बनल। भारतीय दर्शनसँ प्रभावित विश्व परमात्मतत्वक महत्ताकेँ स्वीकार कयलक। विद्वान लोकनि उपनिषद, बौद्ध-दर्शन, शंकराचार्यक दार्शनिक सिद्धान्त आदिक अध्ययन मनन कयलनि। पछाति छायावादी गीतिकार लोकनि एहि दार्शनिकताकेँ अपन गीति-तत्व रूपमे प्रयोग कयलनि।

अंगरेजी शासनक प्रति सम्भ्रम-भावनाक संग-संग ओकरा प्रति विरोधि भावना सेहो एहि कालमे सुनगय लागल। जाहि राजा ओ नवाब लोकनिक परम्परागत सत्ता अंगरेज द्वारा हथिआए लेल गेल छल, से लोकनि तथा तनिक लागि-भागिमे रहनिहार लोकसब अंगरेजी सत्ताक विरोधी भऽ गेल छल।[4]

अंगरेजक राज्य-विस्तार तँ भेल मुदा ओकर शासन-व्यवस्थासँ असंतुष्ट लोकक संख्यामे सेहो निरन्तर वृद्धि हुअय लागल। भारतीय सैनिककेँ हुनक वीरताक लेल अंग्रेजी अधिकारी उचित सम्मान नहि दैत छल।

शासनक दुर्नीतिक कारण घरेलू उद्योग-व्यापार नष्ट प्राय छल । कृषक लोकनिक दशा चिन्ताजनक छल । भारतीय मुसलमान, मुगल शासनकेँ समाप्त करबा लेल अंग्रेजक विरुद्ध छल । एहि प्रकार विदेशी शासकक प्रतिकूल विरोधक आगि 1857 मे सिपाही विद्रोहक रूपमे प्रज्ज्वलित भऽ गेल । ई मात्र सिपाही सभक विद्रोह नहि छल अपितु ई वास्तविक रूपमे जनताक अग्रेजी शासनक प्रति असंतोष-अविश्वासक प्रस्फुटन छल ।

सिपाही विद्रोह मिथिलामे यद्यपि देखार भऽ नहि पसरल छल, किन्तु गुप्त रूपेँ ओकर समर्थन कयनिहारक अभाव नहि छल । दरभंगा महाराज महेश्वर सिंह पर अंगरेज शासककेँ पूर्ण सन्देह छल जे ओ विद्रोही महाराज कुँवर सिंह तथा अमर सिंहकेँ गुप्त रूपेँ सहायता पठओने रहथि ।[5]

यद्यपि सिपाही विद्रोहक असफलता ओ तत्पश्चात् अंग्रेजी शासनक क्रूरता लोकमनकेँ भयभीत कयने छल तथापि देशवासीक मनमे स्वतंत्रताक कामना व्याप्त छल । फलतः जनमनमे राष्ट्रिय भावनाक विकास हुअय लागल आ लोक सम्मिलित रूपेँ देश-दशामे सुधार अनबाक लेल तत्पर होइत गेलाह । अंग्रेजक सैन्यशक्तिसँ लड़बाक लेल सामाजिक अभ्युत्थानक अभिलाषा भारतवासीक सभसँ पैघ अस्त्र छल । फलतः 1885 ई. मे 'इन्डियन नेशनल कांग्रेस'क स्थापना भेल , जे देशभक्त लोकनिक प्राण-प्रिय संस्था बनि गेल तथा भारतीय स्वाधीनता आन्दोलनक सभसँ पैघ मंच बनि गेल ।

उनैसम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे ब्रिटिश कम्पनी सरकार भारतमे व्यावहारिक शिक्षा आयोजन करवाक आदेश देलक । 1817 ई.मे कलकत्तामे हिन्दू कॉलेजक स्थापना भेल जे पश्चात् बंगलाक तरुण लेखक सभसँ पैघ मंच साबित भेल । राजाराममोहन राय 'ब्रह्मसमाज'क स्थापना कयलनि । ईश्वरचन्द्र विद्यासागरक सत्प्रयाससँ विधवा विवाहक कानून बनल । सम्पूर्ण बंगालमे आधुनिकता प्रसार भऽ रहल छल । नव पिढी सुधारवादी आन्दोलनमे प्रवृत छलाह । मुदा, एहि नवजागरणक कोनो विशेष असरि मिथिलाक सामाजिक-राजनैतिक व्यवस्थापर नहि पड़ल । कारण तावत एहि क्षेत्रमे आधुनिक शिक्षापद्धति विशेष प्रचलित नहि छल । मिथिलावासीक मनमे मध्ययुगमे जे प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराक संरक्षणक प्रति कट्टरता जन्म लेने छल से एखनहु व्याप्त छल ।

1860 ई.मे "तिरहुतक महाराज" महेश्वरसिंह स्वर्गवासी भऽ गेलाह । तहिया हुनक पुत्र-द्वय लक्ष्मीश्वर सिंह तथा रमेश्वर सिंह नाबालिग रहथिन्ह । फलतः एहि समयावधिमे मिथिलाक शासन "कोर्ट ऑफ वार्ड्स"क अधीन चलि गेल । "कोर्ट ऑफ वार्ड्स" मैथिली भाषा तथा तिरहुता लिपिकेँ उर्दू तथा फारसीसँ स्थानापन्न कऽ देलक । पुनः जखन लक्ष्मीश्वर सिंह (1858-1918) मिथिलाक सत्तापर आसीन भेलाह तँ एहि क्षेत्रक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भाषा-साहित्यक क्षेत्रमे नवजीवनक संचार भेल मुदा, ओहो मैथिलीकेँ पूर्वक स्थान नहि दऽ सकलाह आ उर्दू-फारसीक स्थानपर हिन्दीक प्रयोगक आदेश देलनि । एतहिसँ हिन्दी दरभंगा राजक राज-काजक भाषा बनि गेल आ मैथिलीक विकास ठमकि गेल ।

"कोर्ट ऑफ वार्ड्स"क शासनावधिमे 1873-74 ईस्वीक अकालक बाद अंगरेज सरकारक प्रजाक जीवन-रक्षाक प्रति तत्परतासँ प्रजा प्रभावित भेल । फतूर कवि, चन्दा झा आ परमेश्वर झा एकर सुव्यवस्थित वर्णन कयने छथि । अंगरेजी शासनक एहि तत्परताक वर्णन करैत महामहोपाध्याय परमेश्वर झा लिखैत छथि-

जखन देश भरिमे अन्न-पानि बिना लोक मरय लागल ओ बहुत लोक कल्लरभय गाम गाम भीखि माँगय लागल तखन गवर्नमेंटक दिशसँ अतिशीघ्र तेहन प्रबंध भेल जे ककरहु दुर्भिक्षजन्य क्लेश नहि भेलैक । देशभरिमे कल्लरखाना जारी भय गेल जाहिमे कल्लर सभकेँ रान्हले अन्न भोजनार्थ भेटैक, ठामठाम अन्नक गोला बनाओल गेल । जे व्यक्ति कल्लरखानामे नहि खाथि, अपन जाति धर्मक किछु विचार राखथि ताहि सभकेँ खैराती अन्न भेटैन्ह, अपना घरमे भोज करथि और जे लोक खैरात नहि लैथि तनिका अन्न वा टाका सरकार सँ ऋण भेटैन्ह ।...ठाम ठामपर आवश्यकतानुसार इनार पोखरि, बान्ह, पुल इत्यादिक निर्माण भेल ।[6]

ओतहि व्यतिरेक रूपमे राजपुतानामे पड़ल अकाल ओ तदुत्तर बदहालीक चित्रण करैत लिखैत छथि- "राजपूतानामे संवत् 1925 मे दुर्भिक्ष भेल । ताहूसँ भारी संवत् 1934 मे (1877 ई. मे) भेल । ओ दुर्भिक्ष हमहुँ देखल । ओहि समय झालरापाटन छावनी (झालावाड़ स्टेट) मे छलहुँ । मृगशिरा नक्षत्रमे जल भए सम्पूर्ण चातुर्मास्य बीति गेल, एको वर्षा नहि भेल । अन्ततोगत्वा सभलोक घरद्वार छोड़ि मालवाकेँ पड़ाय लागल, देश जनशून्य भय गेल, बाट-घाट पर मुर्दाक ढेर लागि गेल, कतहु-कतहु पैघ सेठि सभ एक-दुइ मुट्ठी बूट कल्लरकेँ बाँटथि । ताहिसँ कतेक रक्षा होइत । ओ की हमर सरकार अंगरेजक अमलदारी थीकि जे घर-घर सभक पुछारी होएत ।[7]

उपरोक्त दृष्टान्तसँ स्पष्ट अछि जे कमसँ कम प्रजावर्गक एकटा समूह बीच अंगरेजी सम्पर्कक प्रति स्वागत भावना ओ अंगरेजी शासन-व्यवस्थाक प्रति सहानुभूति **भावना उत्पन्न भेल** । क्रमशः अंग्रेजीक शिक्षाक प्रति मिथिलावासीमे आसक्ति सेहो बढ़य लागल । मिथिलामे कतिपय अंग्रेजी स्कूलक स्थापना भेल । 1879 ई.मे राज स्कूलक स्थापना भेल आ मिथिलामे अंग्रेजी शिक्षाव्यवस्था ओ योरोपीय आधुनिकताक सिहकी बहल ।

मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनिक सेहो मान्यता छनि जे मैथिली साहित्यमे आधुनिकताक प्रसार योरोपीय सम्पर्केसँ आयल । एहि प्रसंग डॉ. जयकान्त मिश्र लिखैत छथि- “Like all modern Indian literatures, fresh impetus came to Maithili with the impact of the West. The spirit of freedom, of inquiry and scientific search for truth, and of progress (especially material progress) were the gifts of the New Influence.”[8] पश्चात् विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनक उद्भव, मैथिली पत्रकारिताक विकास तथा विभिन्न विश्वविद्यालयमे मैथिली अध्यापनक व्यवस्था आधुनिक मैथिली साहित्यकेँ नव दिशा प्रदान कयलक ।

आधुनिक गीतिकाव्यक उन्मेष

आधुनिक कालक गीतिकाव्य पूर्ववर्ती गीतिकाव्यक मूलधारासँ सम्पृक्त तँ अछि मुदा, बाह्यरूप ओ शिल्पक दृष्टिएँ एकदम भिन्न अछि । मध्ययुगमे विद्यापति जाहि गीति-परिपाटीकेँ चरमोत्कर्षपर पहुँचओने रहथि, चन्दाझाक युगमे ताहिमे आन्तरिक तत्त्व ओ बाह्य स्वरूपमे परिवर्तन होमय लागल । विद्यापति कालमे सेहो

वैदिक कि चर्यापदकालीन गीति-परम्परामे सर्वांगिण परिवर्तन भेल छल। प्राचीन आओर मध्यकालीन गीति सभ संगीतबद्ध रहैत छल। गीतिकारकेँ संगीतज्ञ होयब आवश्यक छल। प्रत्येक गीतिकेँ राग-तालमे निबद्ध होयब आवश्यक छलैक। मुदा आधुनिक मैथिली गीतिकाव्य एहिसँ मुक्त छल। आब गीतिकेँ राग-रागिनीक अनुरूपेँ संगीतबद्ध होयब आवश्यक नहि रहि गेल।[9] एहि आधारपर कहल जा सकैत अछि जे काव्यक स्वर ओ स्वरूपक ई परिवर्तन बदलैत समयक सामाजिक तथा सांस्कृतिक विचारधारा आ परिस्थितिपर निर्भर करैत अछि।

उनैसम शताब्दीक मध्यमे भारतीय राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रमे उथल-पुथल मचल छल। एकदिस जतय आधुनिक प्रवृत्तिक प्रसार भऽ रहल छल ओतहि दोसर दिस पूर्ववर्ती प्रवृत्ति ओ परम्परा पूर्णतः समाप्त नहि भेल छल। मिथिला सेहो एहि सन्क्रान्ति युगसँ गुजरि रहल छल। एतय तँ आधुनिकताक धारा अत्यंत क्षीण छल आ प्राचीनता सर्वत्र एखनहुँ अधिक सबल छल। संस्कृत भाषा-साहित्यक प्रभाव साहित्य जगतमे एखनहु निर्णायक छल। एहि युगक मैथिली गीतिकाव्यपर एहि संक्रान्ति युगक प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित होइत अछि।

जहिना मिथिलामे आधुनिकताक उदय सामान्यतः अंग्रेजी शासन एवं शिक्षा व्यवस्थाक प्रत्यक्ष प्रभावसँ भेल तहिना मैथिली साहित्यमे आधुनिकताक आरम्भ चन्दा झासँ मानल जाइत अछि। उनैसम शताब्दीमे कवीश्वर चन्दाझा मैथिली साहित्यक आधुनिक कालक प्रणेता भेलाह। कवीश्वर नवीन दृष्टिसँ निष्पन्न युगसन्धिक नवयुग स्रष्टा कवि छलाह। ओ एकदिस यदि भनितायुक्त संगीताश्रित, परम्परागत गीतमुक्तक शैलीक अनुसरण करैत अनेक भक्तिपदक ओ शृंगाररसक रचना कयलनि तँ दोसर दिस देश-दशा-विषयक सामाजिक ओ आर्थिक अधोगतिक चित्रण करैत गीतिक सेहो रचना कयलनि। हुनक भक्तिविषयक गीति-काव्यहुमे संवेदनशील युग-चेतना व्यंजित भेल। नवीनोन्मुख ओ समसामयिकताक चित्रण हिनक प्रायः सभ पदमे भेटैत अछि। एहि युगमे विभिन्न सामाजिक आन्दोलनक प्रभाव अन्यान्य भाषा-साहित्ये जकाँ मैथिली साहित्यपर सेहो पड़ल आ एहि साहित्यिक नवजागरणक सूत्रधारक रूपमे कवीश्वर चन्दाझा अपन गीत सभमे समाजक यथार्थ आ लोक अनुभूतिक सहज अभिव्यक्तिकेँ समाहित कएलनि। एकदिस जतय अनेक कविगण पारम्पतिक रीतिक साहित्य सृजनमे तल्लीन रहलाह ओतहि चन्दाझा, जीवनझा, मुंशी रघुनन्दन दास, जनसीदन आदि मैथिली कवि-साहित्यकार लोकनि आधुनिकताक एहि क्षीण धाराकेँ द्युतिमान करबा दिस प्रवृत्त भेलाह।

मैथिली गीतिकाव्यमे एहि युगसन्धिपर नवीनताक प्रणेता भेलाह चन्दाझा। ओ मैथिली गीतिक शिल्प ओ कथ्य दुहूमे नवीतनाक संचार कयलनि। कवीश्वर चन्दा झा अपन पूर्वक काव्य परम्पराक पालन करैत रहबाक संग-संग एकटा नवीन परम्पराक जे सूत्रपात कयने रहथि से मूलरूपमे मिथिलाक पुनर्जागरण भावसँ अनुप्राणित छल, आओर हुनक समकालिक वा अनुवर्ती साहित्यकार लोकनि सेहो अधिकांशतः ताही भावसँ अनुप्राणित छलाह।[10]

युगप्रवर्त्तक कवीश्वर चन्दाझा

महाकवि विद्यापतिक बाद मैथिली साहित्यमे सभसँ विराट आ विलक्षण नक्षत्र जे भेलाह ओ छलाह कवीश्वर चंदाझा। कवीश्वरकेँ मैथिली साहित्यक आधुनिक युगक प्रवर्तक मानल जाइत छनि। हिनक जन्म 21 जनवरी 1831 ई.मे भेल एवं मृत्यु 14 दिसंबर 1907 ई.मे। कवीश्वरक पिता म.म.भोला झा यशश्वी विद्वान छलाह। व्याकरण, साहित्य, दर्शन आ योग विद्यामे कवीश्वरकेँ महारत प्राप्त छलनि। हिनक विद्वत-प्रतिभासँ प्रभावित राजालोकनिक हिनका राज्याश्रय प्राप्त छलनि। दरभंगामे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक दरबारमे ई साहित्य विभागक अध्यक्ष बनलाह। डॉ. अमरनाथ झाक अनुसारेँ कवीश्वर उच्चकोटिक कवि होयबाक संगहि शास्त्रीय अन्वेषण आ ऐतिहासिक वृतान्तक संकलन मे सदति दत्त-चित्त रहैत छलाह। एहि बातकेँ प्रमाणित करैत ओ आगाँ कहैत छथि जे – "महामहोपाध्याय परमेश्वर झाक मिथिलातत्वविमर्शक बहुत अंश चन्दा झाक एकत्रित सामग्रीक आधारपर लिखल गेल छल। गोविन्ददासक पदावली चन्दाझा अपनहि हाथेँ लिखने छलाह। विद्यापतिक पदावली संकलन आ प्रकाशनमे नगेन्द्रनाथ गुप्तकेँ कवीश्वरक अत्यंत महत्वपूर्ण सहयोग रहल छल। अमरनाथ झा कवीश्वरकेँ आधुनिक मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कवि मानैत छलाह।[11]

प्रो.आनंद मिश्र कवीश्वरक कविताक विषयमे कहैत छथि जे "कविताक क्षेत्रमे हिनक जे योगदान रहल अछि से मैथिली साहित्यक इतिहासमे स्वर्णाक्षरमे अंकित अछि। डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क अनुसारेँ बीसम शताब्दीमे समुन्नत प्रगतिवाद तथा प्रयोगवादी काव्य प्रवृत्तिक बीज चंदाझाक रचनामे उपलब्ध होइछ।[12] ओ लिखैत छथि-" आगाँ मैथिली कवितामे नवीन गीतकाव्यक अतिरिक्त प्रगतिवाद-प्रयोगवादक रचनाक परिपाटी चलल तकरहु बीज हमरा लोकनिकेँ चन्दाझाक रचनामे भेटैत अछि। 'उपायहीन लोककेँ सुखाय गेल भोट' लिखि विपन्न जनताक जे चित्र ओ खीचल से तत्कालीन वातावरणकेँ ध्यानमे रखैत कतेको प्रगतिशील छल से कोनो अध्येताक हेतु सहजहि संवेद्य होयत।"[13]

सीताक जन्मभूमि रहितहुँ मिथिलाक महिमा मण्डित भमिपर रामकाव्यक रचना-परम्परा प्राचीन ओ मध्ययुगमे नहिये जकाँ छल। ई आश्चर्यक विषय तँ थिक मुदा विद्यापतिकालमे राधा-कृष्ण विषयक पद सभक लोकप्रियता एहि अभावक मूल कारण कहल जा सकैत अछि। प्राचीन एवं मध्ययुगमे मैथिली साहित्य मध्य भक्ति काव्य रूपमे शैव साहित्य ओ शृंगारिक काव्य रूपमे कृष्ण काव्यक प्रचलन, रामकाव्यक विकासक बाट अवरुद्ध कऽ देलक। कवीश्वर "मिथिला भाषा रामायण" लिखि मैथिलीमे राम काव्य युगक प्रवर्तन कयलनि।

मिथिला भाषा रामायण सुसम्बद्ध एवं सुगठित कथानकक चारूताक संग जीवन्त चरित्र-चित्रण, विशद् वर्णन वैभव, विशिष्ट सम्वाद, धर्मक विजयक आध्यात्मिक विश्वासक प्रकटीकरण, उपयुक्त उपलक्षण एवं अलंकार, मैथिली रागरागिणी, सुमधुर लय तथा भाषा शैलीक माधुर्य आदि साहित्यिक गुण सम्पन्न आकर्षक मैथिली महाकाव्य अछि जे प्रकाशित होइतहि जनसाधारणक ध्यान आकर्षित कऽ लेलक तथा शिक्षितसँ लऽ अशिक्षित समाज पर्यन्तमे लोकप्रिय भऽ गेल।

मिथिला भाषा रामायणक माध्यमसँ कवीश्वर चन्दा झाक मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक प्रति गहन अनुराग भाव प्रगट होइत अछि। मिथिलाक सभ्यता एवं संस्कृति, मैथिल संस्कार, मिथिलाक आचार-विचार एवं लोक-व्यवहार आदिक सम्यक चित्रण द्वारा चन्दा झा रामायणक वातावरणकेँ पूर्णतः मैथिल, धर्म-प्राण मिथिलाक आदर्शक अनुकूल बनओने छथि।[14]

मिथिला भाषा रामायणक काव्य-वैशिष्ट्य ओ मातृभाषाक सम्मोहकताक चर्च करैत डॉ. उमेश मिश्र लिखने छथि- एहिमे बहुत अंश संस्कृत छन्दमे लिखल गेल अछि, किन्तु गीतसभ मिथिला संगीतक अनुरूप छन्दक नियमानुसार रचल गेल अछि। वाल्मीकि रामायणक श्लोक जकाँ एकर पंक्तिसभ सस्वर पढ़लापर परम मधुर लगैत अछि।[15] रामक वन-गमनक समय सेवकगणक प्रति हिनकालोकनिक स्नेह-प्रदर्शनक वर्णन, गंगापार करबा काल सीता द्वारा गंगाकेँ छागर ओ मदिरा चढ़यबाक कबुला करबाक वर्णन, सीताक निक्षेपित वस्त्राभूषण सुग्रीव द्वारा देखाओल गेलापर रामक विह्वलताक वर्णन, हनुमान द्वारा प्रदत्त रामनामांकित मुद्रिकाक प्रति सीताक उपालम्भक वर्णन, राम-रावण युद्ध मध्य देवता लोकनि द्वारा महाकालीक स्तुतिक वर्णन आदि कवीश्वरक रामायणक मौलिकताकेँ सिद्ध करैत अछि। मिथिला-भाषा रामायणमे कवीश्वर द्वारा अनेक जगह मिथिला-मैथिली प्रसंग जे वर्णन भेल अछि से एहि ग्रन्थक मौलिकता तँ सिद्ध करबे करैत अछि संगहि हिनक मातृभूमि ओ निजभाषाक प्रति अनुरागक निदर्श सेहो करैत अछि।

पूर्ववर्ती युगमे मैथिली काव्य मुख्यतः गीतिमय छल। तकर प्रभाव कवीश्वरक 'मिथिला भाषा रामायण'मे सेहो दृष्टिगोचर होइत अछि। एहिमे प्रयुक्त गीतिसभ एक दिस जतय महाकाव्यक कथानककेँ आगाँ बढ़बैत अछि ओतहि दोसर दिस एकर अपन स्वतंत्र महत्व छैक। जँ महाकाव्यसँ फराक एकरा पढ़ल जाय तँ एहिमे गीतिकाव्यक सभ तत्व भेटैत अछि। छन्द-विन्यासक दृष्टिएँ कवीश्वरक रामायण एक विशिष्ट कृति थिक जाहिमे वार्णिक ओ मात्रिक दूनू प्रकारक छन्दक प्रयोग भेल अछि। संगीतात्मकताक दृष्टिएँ सेहो एहि महाकाव्यक गीति सभक विशिष्ट अछि। मिथिला भाषा रामायणमे उनैस गोट राग नामक छन्द ओ पैंतालिस गोट रागक नामयुक्त छन्दक प्रयोग भेल अछि।मिथिला भाषा रामायणमे छन्द प्रयोगक प्रसंग पं.चंद्रनाथ मिश्र अमर कहैत छथि जे- 'विभिन्न छन्दक प्रयोग कवीश्वरक रामायणमे जाहि मात्रामे भेटैत अछि तकर तुलनामे रामचरित मानस सेहो नहि अबैछ।" कवीश्वरक रामायण मे कुल 62 गोट अध्याय अछि आ ई आठ काण्डमे विभक्त अछि।

महाकवि विद्यापति लिखित पुरुषपरीक्षाक महत्व बुझैत कवीश्वर एकर मैथिली अनुवाद कएलनि। मैथिली पत्र-पत्रिकाक आवश्यकता बुझैत ओ मैथिलीक पहिल पत्रिका 'मैथिल हित साधन'क प्रकाशनमे सेहो उपयोगी सुझाव देलनि। कवीश्वरक रचना सभमे तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक आ आर्थिक दशाक निदर्श भेटैत अछि। चंदाझा विद्यापतिक बाद सभसँ महत्वपूर्ण कवि भेलाह जे जनताकेँ चिन्हलनि, लोककेँ काव्यसँ जोड़लनि आ साहित्यक परिधिकेँ व्यापक बनौलनि। आचार्य रमानाथ झाक शब्दमे-" मैथिलीमे जे रचना संस्कृतबहुल होइत चरमपर पहुँचि गेल छल ओ तेँ ई साहित्य जे लोकसाहित्यसँ दूर होइत होइत वर्गीय भए गेल छल तकरा ई तोड़ल ओ लोकरचना कए मैथिलीकेँ पुनः लोक साहित्य बनाओल" (कविता कुसुम)।[16]

कवीश्वर चन्दा झाक व्यक्तित्व बहुआयामी छलनि । कवीश्वरकेँ मिथिलाक राजनीतिक सांस्कृतिक, सामाजिक ओ साहित्यिक परिवेशक पूर्ण अभिज्ञान छलनि आ संभवतः तेँ जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन सेहो कवीश्वरक विद्वताक विषय अपन उद्गारमे कहैत छथि ..Pandit Chandra (Chanda) Jha whome I know to be one of the most learned men in that part of India. चंदाझा जमीन्दारक आश्रयमे रहितो ओकर विरूद्ध मुखर भऽ लिखलनि । ओ साहित्यमे आम जनक कथा-व्यथाक प्राथमिकतासँ उद्धृत करैत रहलाह । मैथिली-मिथिलाक इतिहास लेखन लऽ ओ कतेक सजग रहथि से 'मैथिल हित साधन"केँ अपन रचनात्मक सहयोग वचन दैत हुनकहि दू पाँतिसँ पता चलैत अछि—

लिखल जाय मिथिला इतिहास, नहि हो तहि मे शिथिल प्रयास,
विषय विशेष हमहु लिखिदेव, स्वपनहु एक टका नहि लेब ॥

कहबाक प्रयोजन नहि जे आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यहुक प्रणेता कवीश्वर चन्दा झा भेलाह । हिनक गीतिकाव्यमे भाषा ओ भावगत नवीनता आयल । हलाँकि हिनकर रचित गीतिकाव्य भनितायुक्त, संगीताश्रित ओ भक्तिविषयक अधिक अछि आ तेँ ताहि हिसाबे प्राचीन रीतिक गीतिकाव्य मानल जाइत अछि मुदा, अपन प्राचीन काव्य-परम्परोमे हिनक वैचारिक नवोन्मुखताक दर्शन होइत अछि । वस्तुतः हिनक गीतशिल्प जँ प्राचीनोन्मुख अछि तँ ओकर भाव-बोध नवीन छैक । कवीश्वरक गीतिकाव्यकमे नवीन युगबोध ओ देशदशाक चित्रणमे यथार्थवादी प्रवृतिक अनुपालन भेल अछि जे हिनक भक्ति-विषयक पदसभसँ सेहो स्वाभाविक रूपेँ झलकैत अछि । यथाः-

फिरलहुँ देश-विदेश हे शिव ।
दुख धन्धा मध सभजन व्याकुल, केओ नहि रहित कलेश ।
जठरानल कारण जन हलचल,देखल नाना वेष ।
साधु-असाधु हृदय भरि पूरल, केवल लोभ प्रवेश ।

एतय कवि शिवचरणमे अपन भक्ति निवेदन नहि करैत छथि बल्कि भुखसँ व्याकुल समाज आ सामाजिक विपन्नतोक स्थितिमे असाधु प्रवृतिक मनुष्यक बोलबालाक प्रतिकारक आकांक्षा करैत छथि । परोक्षतः सामाजिक विद्रूपताक सजीव चित्रण करैत छथि । तहिना अकालजन्य परिस्थितिक चित्रण करैत लिखैत छथिः-

समय केहन भेल घोर हे शिव
कन्द मूल फल सेहो अब दुरलभ अन्न गेल देशक ओर

समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार, दुराचार, झूठ-फरेब, अन्यायपर व्यंग्य करैत हुनक निम्नलिखित पद सभ द्रष्टव्य थिकः-

सुखी देखैछि दूइ गोट चोर ओ भिखारि।
बहुत खर्च बाढ़ि बन्धु बन्धु बीच मारि।
नवीन व्याधि आधिसौँ समस्त स्वास्थ्य टारि।
अनर्थ दैव सृष्टि देखु दृष्टिकेँ उघारि॥

०००

भारत दशा एहन वितयित अछि साधु कहावथि चोर
उत्तम अधम अधम गति उत्तम एहन काल अछि घोर

०००

न्याय भवन कचहरी नाम। सभ अन्याय भरल तेहि ठाम।
सत्य वचन विरले जन भाष। सभ मन धनक हरण अभिलास।

एहि प्रकार कवीश्वर अपन गीति सभमे आगामी कालक प्रगतिवादक नेओ दैत छथि। हिनक पदक भाषाक सरलता, स्वच्छता ओ सहजता, तथा अभिव्यक्तिक अभिव्यंजना अभिनव अछि। हिनक काव्य-प्रतिभासँ प्रभावित भए परवर्त्ती कविगण जे हिनक अनुसरण कयलनि ताहि हेतु 1880 सँ 1930 धरिक अवधिकेँ डॉ. श्रीश चन्दाझायुग मानैत छथि- "वस्तुतः आबहु आधुनिक काव्य-धाराक तरुवर हिनकहि कविप्रतिभा ओ व्यक्तित्वक उर्वर भूमि पर अवलम्बित भए नव-नव प्रवृतिक शाखा-प्रशाखा धारण कए रहल अछि। 1880 सँ लए 1925-30 ई. धरि, की भाववृत्तिमे आ की भाषा ओ अभिव्यक्ति-रीतिमे, मैथिली काव्यरचना चन्दाझाक एकान्त अनुसरणमे भेल अछि, अतः एहि अवधिकेँ 'चन्दाझायुग' कही तँ अतिशयोक्ति नहि होएत।[17]

*****

[1] आधुनिक हिन्दी कविता में गीति-तत्त्व, डॉ. सच्चिदानन्द तिवारी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ.-97.

[2] उपर्युक्त, पृ.-98.

[3] बहुवचन, तारानन्द वियोगी, किशुन संकल्प लोक, 2015, पृ.-44.

[4] आधुनिक मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमि, डॉ. अमरनाथ झा, अमृत प्रकाशन, दरभंगा, 1994, पृ.-31.

[5] उपर्युक्त, पृ.-31.

[6] मिथिला तत्वविमर्श, म.म. परमेश्वर झा, मैथिली अकादमी पटना, पृ.- 34.

[7] उपर्युक्त, पृ.-34.

[8] History of Maithili Literature, Part-II, Dr. Jaykant Mishra, Page-1.

[9] "Early and medieval Maithili lyric was invariable connected with music. All lyrical poets were supposed to be experts in music. All lyrics had to be necessarily tuned to some Ragas or Raginis. The modern Maithili lyric, influenced by the English lyric, freed itself from this bondage. It was no longer necessary to sing a lyric tuned to some musical

Raga or Ragini. It had a music of its own, independent of the laws of music. Lyrics were not merely to be sung and enjoyed henceforth, but the could be read and recited as Kavya of the classics." History of Maithili Literature, Part-II, Dr. Jaykant Mishra, Page...

[10] आधुनिक मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमि, डॉ. अमरनाथ झा, पूर्वोक्त-4, 1994, पृ.-78.

[11] युग प्रवर्तक कवीश्वर चन्दा झा, सं.- रामलोचन ठाकुर, अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, 2007, पृ.-165.

[12] उपर्युक्त, पृ.-168-169।

[13] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991, पृ-215.

[14] मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. दिनेश कुमार झा, मैथिली अकादमी पटना, 1979, पृ.-153.

[15] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. जयकान्त मिश्र, साहित्य अकादेमी,1988, पृ. 271.

[16] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पूर्वोक्त-13, पृ.-192.

[17] उपर्युक्त, पृ.-192.

चतुर्थ अध्याय: बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्धक मैथिली गीतिकाव्य

मध्ययुगमे मैथिली गीतिकाव्यक प्रचूर विकास भेल। यद्यपि उत्तरमध्ययुगमे अनेक कवि एहि परम्पराकेँ आर आगाँ लऽ जयबामे सफल नहि भऽ सकलाह, तथापि धार्मिक अवलंबन धयने गीति-परम्परा जीवित रहल; मुदा उनैसम शताब्दी अबैत-अबैत एकर स्वर-स्वरूपमे मौलिक परिवर्तनक आवश्यकता प्रतीत हुअय लागल। कवीश्वर चन्दाझा एहि संकेतकेँ बुझलनि आ गीति-रचनाक स्थापित परम्पराकेँ तोड़ैत नवीन प्रयोग कयलनि। एवंप्रकार कवीश्वरक मार्गदर्शनमे मैथिली गीति आधुनिक युगक द्वारि धरि पहुँचल तथा बीसम शताब्दीक आरम्भक मैथिली गीतिकाव्य चन्दाझाक काव्य-परम्परासँ अनुप्राणित भेल।

बीसम शताब्दीक प्रथम दशकमे मैथिली गीति पूर्ववर्ती गीति-परम्परासँ संपृक्त रहितहुँ बाह्यरूप-शिल्पक दृष्टिएँ बहुत परिवर्तित प्रतीत होइत अछि। मैथिली गीतिकाव्यपर पाश्चात्य शिक्षा-व्यवस्था आओर सभ्यताक प्रभाव पड़य लागल। बदलैत देश-दशाक प्रभावे एकर आंतरिक काव्य-तत्वमे सेहो परिवर्तन भेलैक।

भारतमे अंग्रेजक पूर्ण आधिपत्य भेलाक बाद एतुका शिक्षा-पद्धति सेहो अंग्रेजक नीतिक अनुरूप निर्धारित भेल। मेकालेक सुझावपर अंग्रजी शासन द्वारा भारतीय विद्यालयमे अंग्रेजीकेँ शिक्षाक माध्यम बनाओल गेल। भारतीय जेना-जेना पश्चिमी साहित्यसँ परिचित भेलाह, भारतीय साहित्यमे तहिना-तहिना नव-नव रूप सभ सेहो आबय लागल। गीतिकाव्यहुक अंतर्गत बैलेड, सॉनेट, ओड प्रभृति पाश्चात्य गीति-प्रकारक आमद भेल। फारसी-उर्दूक प्रभावे गजलक प्रवेश सेहो भेल।

छापाखानाक स्थापनाक संगहि पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल। 1905मे जयपुरसँ मैथिल हित साधन ओ काशीसँ मिथिला मोदक प्रकाशन शुरू भेल। पश्चात मिथिला मिहिर (1909), मैथिलप्रभा, मैथिल प्रभाकर, श्रीमैथिली, मिथिला आ मिथिला मित्र प्रभृति पत्रिकाक प्रकाशनसँ एकटा पैघ लेखक-दल तैयार भेल। मैथिली पत्रकारिताक आरम्भ मैथिली साहित्यमे नव-युग प्रवर्तन कारक सिद्ध भेल। रचनाकार लोकनिक रचना-प्रकाशन सुलभ होइत गेल। फलतः साहित्य रचना आओर तकर प्रचार-प्रसार सेहो तेज भऽ गेल। एवं प्रकार नवीन गीति-रूपक लोकप्रियता सेहो क्रमशः बढ़य लागल। बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे मैथिली गीतिकाव्य-परम्पराकेँ नव रूप, नव स्वर देनिहार प्रमुख गीतकारमे जीवनझा, पुलकित लालदास मधुर, छेदी झा, यदुनाथझा 'यदुवर', कविवर सीतारामझा, भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', श्यामानन्द झा, ईशनाथझा, कवीचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' वैद्यनाथ मिश्र यात्री, आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' आदि प्रमुख भेलाह।

जीवनझा आशा-निराशाक सन्धि-स्थलपर ठाढ़ जनमानसकेँ आशाक दीप देखौलनि। युगीन परम्पराकेँ चिन्हित कय युगानुभूतिकेँ अभिव्यक्त कयलनि। संस्कृतक पण्डित रहितहुँ जीवन झा आधुनिक विचारधाराक संपोषक छलाह। हिनक नाटक तत्कालीन सामाजिक विद्रूपताकेँ उघारि कऽ राखि देलक। गीतिकाव्यक क्षेत्रमे सेहो हिनक प्रयोगधर्मिता सभक सोझाँ आयल जखन ई अरबी-फारसीसँ आयातिक विधा, गजलकेँ मैथिली काव्य-जगतमे सर्वप्रथम अनलनि। हिनक एक गोट गजल एतय प्रस्तुत अछि-

अहाँ सों भेंट जहिया भेल तेखन सों विकल हम छी
उठैत अन्धार होइए काज सब करबामे अक्षम छी

अहाँ काँ छाड़ि कै पृथ्वीमे दोसर हम ने देखै छी
कोना काढ़ू हम अपना मूँहसँ अहाँ सभसँ उत्तम छी

कथू लै फूसि नै बाजब शपथ खा खा कहै हम छी
अहीं प्राणेश्वरी छी एकटा सर्वस्व प्रीतम छी

पिनाकी पूजि क्यो राजा होऔ गोविन्द क्यो पूजौ
सम्हारू वा विगाड़ू विश्वमे एकटा अहीं दम छी

-कविवर जीवन झा रचनावली, पृ.-109

एहि अवधिमे नव शिल्प, नव कथ्य ओ नवीन रीतिएँ देश-दशाक यथार्थक चित्रणमे कविगण प्रवृत भेलाह। गीतिकाव्यक नव-नव शैलीक जन्म भेल। एक दिस संस्कृतक मात्रिक छंदकेँ कने-मने जोड़ि-तोड़ि कऽ गीतिकाव्य-रचनाकेँ आगाँ बढ़ाओल गेल तँ दोसर दिस लोकधुन आ अरबी बहर सेहो अपनाओल गेल। शिल्पगत वैशिष्ट्यक आधारपर प्रतीत होइत अछि जे विगत शताब्दीक प्रथमार्द्धक मैथिली गीतिकाव्य मुख्यतः **पूर्ववर्ती भारतीय परम्परा, मिथिला गीति-परम्परा, उर्दू-फारसी गीति परम्परा** तथा **पाश्चात्य गीति परम्परासँ** अपन विकासक साधन प्राप्त कयलक।

मध्ययुगमे प्रचलित राग-रागिनी निबद्ध गीति-रचनाक परम्परा बीसम शताब्दीक प्रथमार्द्धमे सेहो एक सीमा धरि प्रचलित रहल मुदा क्रमशः क्षीण होइत गेल। जीवन झा, यदुनाथ झा यदुवर प्रभृति रचनाकारक रचनामे राग-निर्देश भेटैत अछि। मुदा ई परम्परा बहुत दिन धरि चलि नहि सकल। कारण पाश्चात्य ओ लोक गीति परम्पराक प्रभावसँ गीत, संगीतसँ अलग होइत गेल। एहन सांगीतिक गीत मुख्यतः संस्कारवादी अथवा भक्ति विषयक छल मुदा सुधारवादी आंदोलनक प्रभावसँ साहित्यसँ सामाजिक यथार्थक जखन जुड़ाव हुअय लागल, तखन एहन गीति-परम्पराक त्याग स्वाभाविके छल। गीत-रचनामे संगीतक अनिवार्यता समाप्त होयबाक एकटा आर कारण छल जे नव पीढ़ीक रचनाकार संगीतज्ञ नहि छलाह। एतय उल्लेखनीय अछि जे यदुवरजीक

सांगीतिक गीतमे सेहो देशोत्थानक भावना उद्भासित भेल अछि , एहने एकटा संगीतबद्ध रचना एतय द्रष्टव्य अछि, जे राग 'विलावल'मे निबद्ध अछि-

मंगल मूरति श्री रघुनन्दन
सन्त सुहृद मुनिजन उर चन्दन
सकल सिद्धिदायक दुख भंजन
भवतारण कारण जन रंजन
निज जनपालक दुष्ट निकन्दन
सकल चराचरसँ जग वन्दन
देशक हित कारण करु सबजन
'यदुवर' तनिक चरणरज सुमिरन ।[1]

एहि अवधिमे मिथिला गीति-परम्पराक अनेक रूप, यथा- चैतावरि, बटगमनी, महेशवानी, लगनी आदिक लोक भासपर गीतिक रचना भेल । तहिना अंग्रेजी साहित्यसँ प्रभावित भऽ चतुर्दशपदी तथा उर्दूक प्रभावसँ गजलक रचना सेहो प्रचूर मात्रामे भेल । भक्ति, प्रेम, संस्कार, शृंगारक अलावे राष्ट्रिय भावना ओ सामाजिक जागरण एहि गीत सभक मुख्य स्वर बनल ।

साहित्यिक प्रवृतिक आधारपर मैथिली गीतिकाव्यक काल-निर्धारण अत्यंत कठिन काज अछि। इतिहासकार लोकनि सेहो एहि विषयमे एकमत नहि छथि । संगहि मैथिली रचनाकार लोकनि अधिकांशतः कोनो वाद अथवा प्रवृति विशेषपर अधिक दिन धरि टिकल नहि रहलाह तथा देश-दशाक बेगरता अनुरूप रचनारत रहलाह। तथापि कहल जा सकैत अछि जे राष्ट्रवादी चेतना (1906 ई. पश्चात्), छायावाद ओ रहस्वादी तत्व (1925 ई. पश्चात्), तथा प्रगतिवादी प्रवृत्ति (1940 ई. पश्चात्) एहि कालखण्डक मैथिली गीतिकाव्यक प्रमुक विशेषता थिक ।

मैथिली गीतिकाव्यक राष्ट्रवादी स्वर

उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध ओ बीसम शताब्दीक आरम्भमे भारतक सामाजिक, राजनीतिक ओ आर्थिक क्षेत्रमे अतीव द्रुत गतिएँ परिवर्त्तन भऽ रहल छल । 1896 ई.मे स्वेज नहरक बाट खुजलासँ योरोपीय देशमे भारतीय कच्चामालक निर्यात हुअय लागल । लोहा, जूट तथा वस्त्र उद्योगक विस्तार भऽ रहल छल । देश भरिमे रेलमार्गक विस्तार कयल जा रहल छल । मुदा, एहि सभ प्रगतिकार्यक सकारात्मक प्रभावसँ भारतीय समाज वंचित छल । कम्पनी सरकार द्वारा तैयार मालक आयातकर ओ स्वदेशी वस्त्र उद्योगपर कराधान कऽ भारतीय नागरिकक शोषण कयल जा रहल छल । देशमे लार्ड कर्जनक कठोर नीतिक विरूद्ध राष्ट्रीय चेतनामे विद्रोहक-स्वर मुखरित हुअय लागल । जापान, इटलीक स्वतंत्रता आन्दोलनक प्रगति, आयरलैण्डक होमरूल आन्दोलन, फ्रांसिसी राज्यक्रान्ति भारतीय जनमानसमे स्वतंत्रताप्रातिक हेतु संघर्षक आत्मविश्वास संचारित

कयलक। फलतः मध्यवर्ग ओ युवा समुदाय उग्र आन्दोलनमे शामिल भऽ गेलाह। स्वदेशी आन्दोलनक क्रममे विदेशी वस्तुक बहिष्कार आरम्भ भेल।

एहि प्रकार भारतीय स्वाधीनता आन्दोलनमे एक नवीन प्रखरता आयल आ अंग्रेजकेँ आतंकित करय लागल। भारतीय राजनीतिक क्षेत्रमे महात्मा गाँधीक स्वाधीनता आन्दोलनक सूत्रधार रूपमे उदय भेलनि। गाँधी जी चम्पारणकेँ अपन कार्यक्षेत्र चुनलनि जाहिसँ समूचा मिथिला प्रभावित भेल। अंग्रेजी शिक्षा-व्यवस्थाक स्थापना आ देशक स्वतंत्रता आन्दोलनक नवधारसँ मिथिलाक सामान्यजन तथा बुद्धिजीवि वर्गक अन्मनस्कता ओ अंतर्मुखी भावनाक अन्त हुअय लागल। दरभंगा राजक कॉन्ग्रेसी नेता लोकनिक प्रति सहयोग ओ सहानुभूतिसँ दरभंगा स्वाधीनता आन्दोलनमे शामिल नेतृत्वकर्ता लोकनिक अबरजातक केन्द्र बनल। मुझ्फ्फरपुरमे खुदीराम बोसकेँ फाँसी देल गेलनि जाहिसँ मिथिलामे अंग्रेजक विरुद्ध भावना हिलकोर मारय लागल।

जहाँधरि मैथिली गीतिकाव्यमे राष्ट्रीय चेतनाक प्रश्न अछि तँ कहल जा सकैत अछि जे कवीश्वर चन्दाझाक पद सभमे ई पहिले पहिल परिलक्षित होइत अछि। धर्म-अधर्मक आवलम्बन धए कवीश्वर अपन गीति सभमे देश-दशाक जे मार्मिक चित्रण कयलनि ताहिसँ मैथिलजनकेँ परतंत्रताक दुःख-दर्दक आभास भेलनि आ हीनता ओ आत्मग्लानिक बोध भेलनि। कवीश्वरक पद कोन रूपेँ तत्कालीन परिस्थितिमे राष्ट्रीय चेतना सपन्न छल तकर स्थापना निम्न पदहिक व्याख्यासँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि। कवीश्वर लिखैत छथि-

‘न्याय भवन कचहरी नाम। सभ अन्याय भरल तेहि ठाम।
सत्य वचन विरले जन भाष। सभ मन धनक हरण अभिलास।[2]

चन्दाझा उपर्युक्त पदक माध्यमे शासन-व्यवस्थामे व्यापत अव्यवस्था, कुशासन, भ्रष्टाचार, अन्याय ओ शोषणक प्रवृत्ति दिस तँ संकेत करिते छथि संगहि लोकमे सत्य-निष्ठाक अभावक सेहो निन्दा करैत छथि। वस्तुतः इएह सभ कारण राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलनक आधार छल। कवीश्वरक चिन्ता मात्र मिथिलाक स्थानीय समस्याधरि सीमित नहि छलनि अपितु ओ सम्पूर्ण भारतक समस्यासँ चिन्तित छलाह-

भारत आरत भेल धरम बिनु।
गैया जगतक मैया हे, कटय कसैयाक हाथ।
हाकिम भेल निर्दैया हे भोला, कतय नमायब माथ।[3]

उपर्युक्त पदमे जाहि अधर्मक प्रति रोष व्यक्त कयल अछि, जाहिसँ भारतभूमि आर्त्त भेल देखैत छथि जे थिक राजधर्मसँ शासककेँ च्युत भेनाइ। नौकरशाहीक निर्दयता। चन्दाझाक एहि युगीन चेतनासँ प्रेरित भऽ मैथिली साहित्यकार लोकनि मातृभूमि ओ राष्ट्रभूमिक उत्थान हेतु संकल्प व्यक्त करय लगलाह। डॉ. रमानन्दझा 'रमण'क शब्दमे-"जेना जेना देशक राजनीतिक चेतना स्वातन्त्र्योन्मुखी होइत गेल, ओकर प्रभावक

अभिव्यक्ति साहित्यमे होअए लागल। एहि सभक साक्ष्य ओहि समयक भारतक सभ भाषाक पत्र पत्रिकामे पर्याप्त अछि। अपवाद ने मैथिलीक साहित्यकार छथि आ ने मैथिलीक पत्र पत्रिका अछि।"[4]

एहि समयमे राष्ट्रीय चेतना सम्पन्न दू-गोट मूर्धन्य साहित्यकार मैथिली साहित्य जगतमे अयलाह- यदुनाथ झा 'यदुवर' आ श्यामानन्द झा। युदवर जी द्वारा सम्पादित 'मैथिली गीताञ्जली' एव श्यामानन्द झा द्वारा सम्पादित "मैथिली सन्देश" मैथिली स्वातंत्र्य स्वरसँ सम्पन्न दू गोट महत्वपूर्ण गीतिसंग्रह प्रकाशित भेल। यदुवरजी 'मैथिली गीताञ्जली'क भूमिकाक माध्यमसँ तत्कालीन मैथिली साहित्य समाजकेँ निम्नलिखत शब्दमे उद्वेलित करवाक प्रयास कयलनि-

"संसार परिवर्तनशील अछि। एके वस्तु वा विषयक सर्वदा स्थिरता नहि रहैछ। जे आइ से काल्हि नहि और जे काल्हि से आइ नहि। एहि प्रकारेँ सब विषयक संग मनुष्यक रूचिओ बदलल जाइत अछि। जाहि वस्तुपर एक दिन सभक विशेष रूचि छल, जकरा प्रचारक हेतु लोक विशेष यत्नवान छलाह, जाहि भावमध्य तन-मनसँ यत्नशील छलाह ताहि वस्तुसँ आइ सभक चित्त हटल देखैत छी, ओ लोकनि ओहि वस्तुकेँ आब बहुत अल्प चर्चा करैत छथि। अथवा ई कहि सकैत छी जे ओही वस्तुकेँ आब दोसर रूप दै रहल छथि, दोसर तरहेँ देखैत छथि ओ व्यवहृत करैत छथि। साहित्यहुक यैह दशा अछि, भक्ति, ज्ञान ओ वैराग्य एवं शृंगार विषयक कविता दिशि आब लोक-रूचि कम देखना जाइछ। सभक सभ राष्ट्रीय धूनमे मस्त छथि, देशकेँ अथवा समाजकेँ ऊपर उठैबाक प्रयत्न सब कै रहल छथि, भारतवर्षक ब्राह्मण सँ लै कै अस्पृश्य एवं मुसलमान पर्यन्त एहि रंगमे रंगि गेल छथि। राष्ट्रीय भावसँ सभक हृदय भरल अछि, जे किछु करैत छथि से केवल राष्ट्रीय उद्वेश्यसँ। यैह दशा कविता आ गानहुक देखना जाइत अछि। अथवा ई कहू जे भक्ति, ज्ञान शृंगारादि सम्बन्धिनी कविता पराकाष्ठा धरि पहुँचि गेल अछि। आब राष्ट्रीय विवेकक कविताक प्रकाश होएब परम आवश्यक अछि। कहबाक तात्पर्य जे अन्यान्य विषयक काव्यरसमे हमर भारतवर्ष पूर्ण अवगाहित भै चुकल, शृंगार, ज्ञान, भक्ति इत्यादि सम्बन्धिनी कविताक रसास्वादन ई देश नीक जकाँ कै चुकल, किन्तु आब ओ समय नहि रहल, विलासादिक समय गेल, आब विकट मार्मिक समय उपस्थित भेल अछि। अतः भारत वर्षक अन्यान्य प्रान्त वा जाति जकाँ हमरहु कोमल शृंगारसँ रहित भै नायिकाजनक अर्थ स्तुति ओ प्रशंसाकेँ त्यागि वीर वेषमे माता (मिथिला)क भक्तिपूर्ण गानमे तन-नमष्क होमक चाही।

क्यो कवि कहने छथि- सद्यः प्रीतिकरोरागः। अर्थात् गान द्वारा मनुष्यक चित्तपर स्वभावतः अधिक प्रभाव पड़ैत अछि। एकरा प्रायः सब विज्ञलोकनि समर्थन करैत छथि। प्रायः पाश्चात्यकोनो सभ्य जाति वा देश एहन नहि भेटत जतै एहि तरहक गानक विशेष प्रचान नहि अछि। वर्तमानकालमे सबठाम प्रायः एकरे अधिक चर्चा अछि, एतद्विषयक अनेको पत्र, पुस्तक प्रकाशित भै जनता द्वारा आदृत भै रहल अछि। जाहिसँ ताहि ताहि देश वा जातिमे पूर्णजागृति प्रदर्शित होइछ। भारतवर्षक प्रायः सब उच्च भाषामे एहि तरहक पुस्तक अछि और राष्ट्रीय गान संगहि, तथा राष्ट्रीयवीणा, राष्ट्रीय झंकार, राष्ट्रीय तरंग, राष्ट्रीय तान तथा भारतीय गान, स्वराज्य गान प्रभृति एहि विषयक पुस्तकक पूर्ण आदर अछि। कतौक पुस्तक प्रकाशकलोकनि एहन एहन पुस्तक

प्रकाशित कै यशक संग संग पूर्ण धन ओ ख्याति प्राप्त कैने छथि तथा कै रहल छथि। एतदतिरिक्त सम्प्रति देशमे औरो देशानुराग सम्बन्धिनी कविता ओ संगीत सुधाक फुहारा सर्वत्र पड़ि रहल अछि ओ एहि प्रकारक कविताक समादर प्रायः सबठाम दृष्टिगोचर होइछ। गमारसँ गमार व्यक्ति एहि तरहक गीत ओ कविता गाबि-गाबि आनन्द मनबैत अछि ओ मस्त रहैत अछि। हिन्दी, बंगला, महाराष्ट्री, गुजराती, उर्दू प्रभृति भाषाक कवि किंवा लेखक लोकनि स्वदेशानुरागपूर्ण लेख पुस्तक तथा गीत कवितादि लिखि अपन अपन लेखनीकेँ पवित्र कै रहल छथि। एहना सुअवसरकेँ पाबि हमर मैथिलो कवि लोकनि मौन बैसल नहि छथि।

हँऽ एतबाधरि अवश्य स्वीकार करबे जे अधिकांश मैथिलक हृदय राष्ट्रीय भावक प्रकाशसँ प्रकाशित नहि भेल अछि, किन्तु हँऽ हम मुक्त कण्ठसँ कहि सकैत छी जे मैथिल कविलोकनिक हृदय ओहि प्रकाशसँ वंचितो नहि अछि, जकर सद्यः प्रमाण यैह पुस्तक अछि।

कविलोकनिनक हृदय स्वतन्त्रता ओ उच्चभावसँ परिपूर्ण रहैत अछि अतः अनुमान होइछ जे परमात्मा एहि स्वतन्त्रजीवकेँ प्रसुप्त देश तथा जातिकेँ जगैबहिक निमित्त पठौने छथि।

उक्त विचारसूत्रहिक प्रेरणासँ हम ई मिथिला गीतांजलि नामक पुस्तक सम्पादित कैल अछि। जकर अत्यन्त अभाव हमरा मिथिलाभाषा-भाषी समाजमे छल। एहिमे देशानुराग, देश ओ समाज सुधार कुरीति-सुधार सम्बन्धिनी, उत्साहवर्धिनी मैथिली कविता विशेषतः गानक संग्रह भेल अछि।

एहन एहन गीत सभकेँ पुस्तकाकार प्रकाशित करबाक हमरा ई अभिप्राय अछि जे-मैथिल युगकगण एहि पुस्तककेँ ध्यानपूर्वक पढ़ि ओ गाबि विवेचना करथि तथा देश किंवा समाज-सुधारमे सर्वथा तत्पर रहि अपन-अपन जीवनकेँ आदर्श बनाबथि कारण जे-

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायत।"[6]

मिथिला गीतांजलिक उपरोल्लिखित भूमिकासँ मैथिली साहित्यमे वर्त्तमान तत्कालीन राष्ट्रीय चेतनाक चित्र स्पष्ट होइत अछि। मैथिली गीतिकाव्यक ई राष्ट्रीय चेनता राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन तथा स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक सुधारात्मक प्रवृतिसँ अनुप्राणित छल। एहि प्रसंग पं चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' लिखैत छथि-"अपन अपन भूखण्डममे अखण्ड भारतमाताक स्वरूपक दर्शन कयनिहार लोकनि यथा-बंकिमचन्द्र चटर्जी अपन मातृभूमि बंगालक तथा लक्ष्मीनाथ वेजबरूवा अपन मातृभूमि आसामक वर्णन करैत ओहीमे सम्पूर्ण भारतक आत्माक दर्शन कयलनि तहिना मिथिलाक्षेत्रक कवि लोकनिकेँ-'लघुप्रतिमा भारतक ई विधिशिल्पी कर-कौशलेँ, दर्शनीयरूपेँ रचल, जनक-पदक छबि छलेँ...बूझि मिथिलेमे सम्पूर्ण भारतक प्रतिबिम्ब देखलनि तँ कोनो आस्वाभाविक विषय नहि मानल जायत।"[6]

चन्दाझा, मुंशीरघुनन्दनदास, यदुनाथझा 'यदुवर', पं.छेदीझा 'मधुप', कविवर सीतारामझा, राजपण्डित बलदेवमिश्र, जगदीश मिश्र 'मैथिल', रघुनन्दन लाल, बाबू भोलालाल दास, जयनारायणझा 'विनीत', पुलकित लालदास 'मधुर', महावीर झा 'वीर', कविचूड़ामणि 'मधुप', आनन्द झा 'न्यायाचार्य', डॉ. कांचीनाथ झा 'किरण', भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', श्री गोविन्द चौधरी, प्रो. ईशनाथ झा, आचार्य 'सुमन', यात्री, आरसीप्रसाद सिंह, उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' आदि राष्ट्रवादी चेतना-सम्पन्न प्रमुख कवि भेलाह।

सूत्र वाक्य थिक- जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'। एहि भावनासँ अनुप्राणित अनेक रचनाकार मातृभूमि वन्दना लिखलनि, एखनो लिखैत छथि। मुदा, ताहि समयक मातृभूमिक महिमागान अप्रत्यक्षतः सम्पूर्ण राष्ट्रसँ सम्बन्धित ओ सम्बोध्य छल। यदुनाथ झा 'यदुवर' मातृभूमिक महत्त्वक प्रसंग लिखैत छथि-

जय जय जन्मभूमि शुचि धाम।
जय स्वर्गहुँ सँ परम रम्य छवि अति प्रिय सुखद ललाम
मन मोहिनि मन मोद प्रदायिनि मंगलमयि अभिराम।[7]

तहिना पुलकित लाल दास 'मधुर' मातृभूमिक गुणगान निम्नलिखित शब्दमे करैत छथि-

जयति जयति मातृभूमि जयति जय सुभूमि
जय जय जय स्वर्गभूमि सम शुचि मम जन्म भूमि।[8]

छेदी झा 'मधुप' चिड़ै-चुनमुनीक गानहुमे मातृवन्दनाक स्वर अकानैत छथि-

चढ़ि लता तरु कुंज पल्लव मुदित खगकुल करथि कलरव,
गाबि भारत कीर्ति अभिनव देथि सुख सन्देश।[9]

अखण्ड भारतक सुषमा ओ ताहूमे रम्यतम मिथिला प्रदेशक जयघोष करैत यदुवर जी लिखैत छथि-

स्वर्ग समान सुखद सुषमाकर, जय जय मिथिला मातृधरा,
भरत खण्ड बिच सभसँ सुन्दर, अतिशय पावन पूज्यवरा।[10]

हीरालाल झा हेम' भारतक अंकवासिनी मिथिला भूमिक सेवामे अपन जीवन अर्पण करय चाहैत छथि-

सकल सुरगण मोक्ष कारिणि विज्ञ जन मानस विहारिणि
सकल जीवन हेम तव सेवक जननि मिथिले।[11]

स्वाधीनता आन्दोलनक समय निरपेक्ष भावसँ बैसल भारतीयपर कटाक्ष करैत, हुनका मनमे जोश भरवाक प्रयास करैत श्यामानन्द झा लिखलनि-

घसमोड़ि की पड़ल छी माताक दुःख दिनमे
घरमे घसकि रही तँ पैघे कहाय की हो।

देश सेवा बेरिमे तँ सोम होथि छदाम लै,
बन्हकी गहना रखै छथि पान जरदा चाय पर ।[12]

सरसकवि ईशनाथ झा गर्जना करैत छथि-

की केहरि शिशु केहनो निर्बल, नहि कूदि पड़य जगवर सिरपर ?
निज जन्मसिद्ध अधिकार हेतु, यदि लड़ब मरब नहि बनब अमर ।[13]

उपेन्द्र ठाकुर मोहन युवादलसँ निज देशोत्थान हेतु आह्वान करैत छथि-

सहगामी बन्धु, उठू बढ़ाउ उत्थान कार्य नव युग प्रभात
रे पाँक फँसल गायक समान हारल उठान की धयल कात ?
देशक अभिलाषाक हमहि केन्द्र, करबाक पड़ल अछि कतेक काज
साहित्य विपद् ग्रस्त हन्त आइ, पतनोन्मुख अछि दुर्गत समाज
रे जन्मभूमि जननीक नोर पोछत के हमरा बिना वीर
हम अमर शक्ति छी अमर वीर ।[14]

कविवर सीतारामझा देशक स्वाधीनताकेँ अक्षुण्ण रखबाक हेतु नारी शक्तिसँ सहभागिता हेतु आह्वान करैत छथि-

कदाच क्यो पड़ाउ तँ धए न छोड़ गय,
उखाड़ि फेँक चीन पाक वृत्त सोर-पोर गय ।
प्रविष्ट हो न दुष्ट तेँ सचेष्ट भए अगोर गय,
स्वदेशकेँ स्वतंत्र राख बात मान मोर गय ।।[15]

एहि प्रकार देखैत छी भारतीय काव्यधारामे जे राष्ट्रीय चेतना व्याप्त अछि से देशक समस्त भाषा, संस्कृति, जाति, धर्म ओ क्षेत्र सभक भौगोलिक सुषमाक प्रति आदर भाव प्रकट करैत अछि । संगहि अखण्ड राष्ट्रक गौरवानुभूतिक संग क्षेत्रिय अस्मिताक गौरवबोधसँ सेहो अनुप्राणित अछि । स्वतंत्रता प्राप्तिए नहि अपित तद्-रक्षार्थ सेहो सचेतन अछि ।

मैथिली गीतिकाव्यमे छायावाद

भारतक तत्कालीन राजनीतिक-सामाजिक स्थितिमे तीव्र गतिसँ परिवर्तन भऽ रहल छल । उच्च आओर निम्न वर्गक माँझ एकटा मध्यवर्गक उदय भऽ रहल छल, संगहि विकसित भऽ रहल छल व्यक्ति-स्वातंत्र्यक भावना । इएह भावना रूढ़िभंजक रूपमे ख्यात हुअय लागल । बीसम शताब्दीक दोसर दशक अबैत-अबैत ई व्यक्तिगत-स्वातंत्र्यभाव छायावादक रूपमे प्रतिष्ठित भेल ।

अंग्रेजी साहित्यक 'रोमांटिसिज़्म' (romanticism) भारतीय वाङ्मयमे 'छायावाद' नामसँ चर्चित भेल। रवीन्द्रनाथ टैगोरक प्रसिद्ध कृति 'गीतांजलि'मे सर्वप्रथम छायावादी प्रवृति प्रतिष्ठित भेल। सन 1913 इस्वीमे कवीन्द्र रवीन्द्रकेँ गीतांजलिक लेल प्रसिद्ध नोबेल पुरस्कार भेटलनि। एकर प्रभाव बंगलाक निकटवर्ती भाषा-साहित्यपर पड़ब स्वाभाविके छल। अतः मैथिली गीतिकाव्यमे सेहो छायावादी प्रवृतिक प्रवेश भेल। छायावाद भाववादी दृष्टिसँ जीवन–जगत पर दृष्टिपात कयलक। विशेष किंवा व्यक्ति-समूह विशेषक स्थानपर मनुष्य मात्रकेँ प्रधानता देल गेल।

अंग्रेजी, बांगला और उर्दूक गीतिकाव्यक प्रभावसँ छायावादी गीतिकाव्यक वस्तु ओ शिल्पगत, अनेक भाव-भूमि तैयार भेल तथा गीतिकाव्यकेँ अपूर्व व्यापकता प्राप्त भेल। छायावादी गीतिकाव्यमे प्रेम, प्रकृति, शौर्य, रहस्यानुभूति, राष्ट्रप्रेम, दार्शनिक बोध, शोकानुभूति, भक्ति आदि विषयक प्रधानता अछि। छायावादी गीतिकाव्यक अवधारणा प्राचीन ओ मध्ययुगीन सांगीतिक गीति ओ राग-रागिनी निबद्ध गीतसँ भिन्न छल। एहि युगक गीत शास्त्रीय संगीतक नियमानुकूल नहि अपितु मात्र गेयात्मकताक आधारपर लिखल गेल जाहिमे लोकसंगीतक प्रभाव सेहो आयल।

वैयक्तिकताक अभिव्यक्ति छायावादी काव्यक प्रमुख विशेषता थिक। छायावादी कविगण अपन व्यक्तिगत जीवनक अभिव्यक्ति कविताक माध्यमस कयलनि। ई लोकनि बाह्य-जगतसँ विषय वस्तुक नहि प्राप्त कऽ अपन मनसँ संवाद स्थापित कयलनि आ तकरा विभिन्न प्राकृतिक बिम्ब-प्रतीकादिक माध्यमे समाजक सोझाँ अनलनि। कल्पना तत्व छायावादक मौलिक विशेषता थिक। छायावादी कवि लोकनिक कल्पनामे स्वाधीनताक परिकल्पना अंतर्निहित छल। छायावादी गीत देशमे स्वातंत्र्य स्वर ओ सांस्कृतिक जागरणक चेतनाक विकासमे अत्यधिक सहायक सिद्ध भेल।

छायावादक स्वच्छंदतावादी प्रवृति पुनरुत्थानक मार्ग धयलक, रूढ़िक प्रति विद्रोहात्मक भाव लेने, प्रकारान्तरसँ देशक उत्थानक उद्देश्यक संग। तेँ एहि युगक रचनामे विद्रोहक भाव तँ प्रमुखतः छल मुदा से विध्वंसकारी नहि, समन्वयात्मक। एहि युगक गीतमे भारतीय संस्कृतिक परम्परागत जीवन-मूल्यक संरक्षणक संग आधुनिक जीवन-मूल्यक सामंजस्य स्थापित करबाक बाट ताकल जाय लागल। छायावादी कवि लोकनि मध्ययुगीन, अप्रचलित-प्राय काव्यधाराक रूढ़ि मान्याताक विरुद्ध, आधुनिक जीवन-परिवेशमे अपन स्वतंत्र तथा सर्वथा नवीन बाटक निर्माण कयलनि आओर कविताकेँ कदाचित् विद्यापति युगीन उत्कर्षक समानान्तर पहुँचा देलनि। निजी सुख-दुःखक अभिव्यंजना, राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विद्रोह चेतना एवं पुनरुत्थानक भावना एहि युगक गीतिकाव्यक प्रमुख विषयगत वैशिष्ट्य थिक।

मैथिली गीतिकाव्य परम्पराक अन्तर्गत ओना तँ भुवनजीक आषाढ़सँ उपेन्द्र ठाकुर मोहन'क 'बाजि उठल मुरली' धरि मैथिली गीतिकाव्यपर प्रमुखतः छायावादक प्रभाव स्पष्टतः देखल जा सकैत अछि। मुदा,परवर्ती कविगण सेहो एहिसँ पूर्णतः मुक्त नहि भऽ सकलाह।[16] ईशनाथझा, श्यामानन्द झा, काशीकान्तमिश्र 'मधुप', जयनारायण मल्लिक, वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री, सुरेन्द्र जा सुमन, आरसी प्रसाद सिंह, उपेन्द्र ठाकुर मोहन, मायानन्द मिश्र, चन्द्रभानु सिंह, आदि गीतकारक रचनामे छायावादी तत्वक प्रचूरता पाओल जाइत अछि।

भुवन जीक 'आषाढ', ईशनाथ झा'क 'माला', मधुप जीक शतदल तथा उपेन्द्र ठाकुर मोहनक ' फुलडाली ओ बाजि उठल मुरली' आदि किछु प्रतिनिधि छायावादी गीति-संग्रह थिक।

प्रकृति वर्णन पूर्वहु होइत छल। मुदा छायावादी काव्यमे प्रकृति-वर्णनमे आत्मनिष्ठता आयल। आब कविक दृष्टिमे प्रकति चेतन सत्ताक रूपमे प्रतिष्ठित भेलीह। प्रकृति-वर्णनक एहि अभिनव कौशलकेँ भुवन जीक आषाढ़ कवितामे देखल जा सकैछ-

आएल अषाढ़, आएल अषाढ़
भए गेल तिरोहित ग्रीष्म गाढ़
झर-झर-झर-झर झहरए फुहार
खुलि गेल प्रकृति-मंदिर-दुआर[17] (आषाढ़)

भारतीय साहित्य प्राचीन कालहिसँ रहस्यवादी भावनासँ भरल रहल अछि। वैदिक युगमे प्राकृतिक शक्तिकेँ देवी-देवताक रूपमे पूजल जाइत छल। कण-कणमे देवताक वास मानल गेल छल। वेदक अनेक सूत्रमे प्रकृति-शक्तिक जे वन्दना कयल गेल अछि, इएह रहस्यवादी गीतिकाव्यक आदि-स्वरूप सेहो थिक। परवर्ती युगमे रहस्यवादी साधना विविध मार्ग पर चलैत अनेक रूप धयलक। आधुनिक युगमे सेहो रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद आदि महात्माक आध्यात्मिकतासँ प्रभावित भऽ रहस्यवादी गीतिकाव्यक नव रूपमे विकास भेल। दोसर शब्दमे कहि सकैत छी जे छायावादक घनीभूत आत्माभिव्यंजना क्रमशः रहस्यवादी स्वरूप धारण करय लागल। मैथिली कवि मध्य जयनारायण मल्लिक एहि भावसँ प्रेरित अनेक रचना कयलनि। उदाहरणतः हुनकर निम्नलिखित पाँति द्रष्टव्य थिक-

"जीर्ण तरणी जा रहल अज्ञात सापर पार।
हैत प्राणेश्वर मिलन सखि, स्वर्ण-मंदिर द्वार।।"[18]

स्वानुभूतिक मार्मिक अभिव्यक्ति हेतु आरसी प्रसाद सिंह एहि परम्पराक विशिष्ट गीतकार छथि। हिनक माटिक दीपमे संकलिक 'शेफालिका' एक उत्कृष्ट छायावादी गीतक उदाहरण थिक। एहि गीतमे कवि कहैत छथि-

साँझसँ कय भोर दइ छी
वेदना पुनरपि चिरन्तन।[19]

तहिना मानवीय संवेदना ओ संघर्षकेँ, मधुर प्राकृतिक सौंदर्यसँ सजा कऽ परसयमे सरसकवि ईशनाथ झा विलक्षण गीतकार भेलाह। उदाहरणस्वरूप हिनक रचना 'हलधर'सँ किछु पाँति द्रष्टव्य अछि जाहिमे श्रमक महत्वकेँ प्रतिष्ठित कयलनि –

ऊपर रवि-किरणक ताप प्रखर

सस्वेद वदन, नहि भरल उदर
कुशसँ कृश तन, कौपीन वसन
अति-दुखद-विपादिक-दीर्ण-चरण
अहँ परम धन्य, भव-भरण-जन्य
भीषण तपमे तत्पर हलधर।

xxxxx

के दय सकइत अछि श्रमक मूल्य?
नहि रजत, स्वर्ण, मणि एकर तुल्य
अपने अनशन कय, दी भोजन
अछि, अहह, केहन, सुन्दर जीवन
नहि मोह, लोभ, नहि क्रोध, क्षोभ
कय लेल सभक साधन, हलधर ।।

xxxxx

नहि रहत दम्भ पाखण्ड कपट
फुटि जायत सभ आडम्बर घट
करु जनु चिन्ता, उर धरु दृढ़ता
सीतासँ समुदित भय सीता
करतीह सकल मन-काम सफल
नृप आसन पर बैसब, हलधर ।।

पूर्वमे मुख्यतः गीतक रचना पद-शैलीमे होइत छल, जाहिमे 'टेक'कैं प्रत्येक चरणक बाद दोहराओल जाइत छल। प्रकृति, घटना विशेषक वर्णन वा विवेचना सेहो एहि पद सभक विषय वस्तु नहि छल। मुदा, छायावादी युगमे (अथवा बीसम शदीक आरम्भहिसँ) विविध सामाजिक-राजनीतिक क्रियाकलाप, देश-समाजक स्थिति, ओ प्रकृतिक सुन्दरतम स्वरूप वर्णनात्मक गीतिक रचना हुअय लागल। संगहि एहि रचना सभक शीर्षक देबाक नवीन परिपाटी विकसित भेल। श्यामानन्द झा रचित एकगोट एहने पद एतय उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत अछि जाहिमे ओ मानव ओ प्रकृतिक बदलैत चरित्रक “अन्त आबि अनन्त देखल ” शीर्षक रचनामे विलक्षण व्याख्या कयलनि अछि-

शून्य छल संसार सम्प्रति
मिलल रजनी दिवस दम्पति
कए प्रतीक्षा हम अपन जीवन प्रभातक दृश्य देखल
नव प्रकाश तकैत तिमिरक विश्व भरि साम्राज्य देखल
हत अतीतक रूप देखल।
भेल नहि निद्राविमोचन

खिन्नतम अछि कमल लोचन
कामवेदी पर मनोहर आयुमर्मक रूप देखल
आह ! भयसँ व्यग्र भ' मानव स्वाभावक नृत्य देखल
मति विमुख अनुभूति देखल
नीर-क्षीर जकाँ जड़ित छल
शैत्य ओ सन्ताप प्रतिफल
जागृतिक मापक समयमे एक अद्भुत स्वप्न देखल।
विर-प्रवृत्तिक मधुर प्रांगणमे निवृत्तिक रूप देखल
आइ गति अनुरूप देखल।
हासमे उपहास छवि छल
अस्त क्षणमे उदित रवि छल
निकट मित्रक मण्डलीमे वैरि वर्गक कृत्य देखल
कामना-मधु पद्मिनीकेँ हन्त ! विदलित प्राण देखल।
अन्त आबि अनन्त देखल।

मैथिली गीतिकाव्यमे प्रगतिवाद आ प्रयोगवाद

बीसम शताब्दीक दोसर-तेसर दशकमे देशक आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोणमे युगान्तकारी परिवर्तन आयल। छायावाद-युगक समन्वयवादी विद्रोह आब आर अधिक मुखर भऽ चुकल छल। साम्राज्यवाद आओर सामंतवादक विरुद्ध एकसंग लड़बाक लेल बौद्धिक समाज फाँड़ बान्हि चुकल छलाह। पूर्वक राष्ट्रीयता तथा सामाजिक रूढ़िक विरुद्ध जे विद्रोह-भाव छल से तेसर दशक अबैत-अबैत प्रगतिवाद रूपमे विकसित भेल। तहिना चारिम दशक अबैत-अबैत विचारक लोकनि अनुभव कयलनि जे कोनो वाद-विशेषमे साहित्यकेँ बहुत दिनधरि राखल नहि जा सकैत अछि। अतः विषय-वस्तु ओ शिल्पक स्तरपर नित्य-नवीन प्रयोग हुअय लागल, जाहिसँ नव-नव विचार ओ विचारधारा सेहो अबैत गेल। अस्तु प्रयोगवादी परम्पराक जन्म भेल।

'प्रगतिशील साहित्य' अंग्रेजीक प्रोग्रेसिव लिटरेचरक अनुवाद थिक। अंग्रेजी साहित्यमे एहि शब्दक प्रचार सन 1935 ई.क आस-पास विशेष रूपसँ भेल जखन ई. एम. फार्स्टरक सभापतित्वमे पेरिसमे 'प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन' नामक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाक प्रथम अधिवेशन भेल। हिन्दुस्तानमे तकर अगिले साल डॉ. मुल्कराज आनन्द तथा सज्जाद जहीरक उद्योगसँ ओहि संस्थाक शाखा स्थापित भेल आओर हिन्दीक प्रसिद्ध लेखक मुंशी प्रेमचंदक अध्यक्षतामे ओकर प्रथम अधिवेशन लखनऊमे आयोजित भेल। एतहिसँ 'प्रोग्रेसिव लिटरेचर' अथवा प्रगतिशील साहित्यक एहि देशमे प्रचार भेल जे प्रकारान्तरसँ प्रगतिवादक द्योतक अछि।[20]

भारतीय साहित्यमे प्रगतिवाद उदय कोनो अन्धानुकरण नहि छल अपितु छायावादक स्वाभाविक विकास छल। सामान्यतः मार्क्सवादकेँ प्रगतिवादक पर्याय अथवा केन्द्रिय विचारधारा मानल जाइत अछि मुदा, वस्तुतः ई पूर्ववर्ती साहित्य-परम्पराक सामाजिक चेतना-तत्वक विकसित रूप थिक जाहिमे मध्यम ओ सीमान्त वर्गक आस्था, विद्रोह, समस्या, संत्रास, विभव ओ अभावक यथार्थ चित्रण कयल जा सकल। प्रगतिवाद सामाजिकताक उच्चतम मानदण्ड ओ उच्च-वैचारिक विकासक इतिहास थिक, जकर मूलमे राजनीतिक कारण अवश्य छल मुदा एकर विस्तार जीवनक व्यापक समस्या ओ सरोकार धरि भेलैक। आदर्शवादक विरुद्ध उपजल विचारधारा सामाजिक नग्न-यथार्थकेँ उद्घाटिक करैत क्रमशः सामाजिक यथार्थवाद दिस डेग बढेलक। साहित्य समाजक दर्पण रूपमे ओकर कलुषित अंगकेँ निधोख भऽ देखबय लागल। ब्रह्मसँ उपर लोक प्रतिष्ठित भेल।

मैथिली साहित्य-जगतमे बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' आ श्री काञ्चीनाथ झा 'किरण' प्रगतिवादक ध्वजवाहक भेलाह। यात्रीक चित्रा एक उत्कृष्ट प्रगतिवादी काव्यकृति थिक। एहि संग्रहक एकटा रचना 'कविक स्वप्न' हिनक प्रगतिवादी दृष्टि-संपन्नताक पर्याप्त द्योतक अछि, जाहिमे कवि 'चिर उपेक्षित जनक गौरव गान' करैत छथि। किछु पाँति द्रष्टव्य अछि-

'हमर वीणाध्वनि कने पहुँचैत जे
सटल-पाँजर बोनिहारक कान मे।
सफल होइत तखन ई स्वर-साधना
चिर-उपेक्षित जनक गौरव गान मे॥ (चित्रा)

तहिना किरण जी अपन 'माटिक महादेव' शीर्षक रचनामे 'सवार उपर मानुष'केँ प्रतिष्ठापित करैत छथि-

बलवान मानवक हाथक बलसँ
बैसल छह तो सराइ पर।

कवि चूड़ामणि 'मधुप' एहि युगक शीर्षस्थ गीतकार भेलाह। आधुनिक दृष्टिबोध-सम्पन्न मधुप शिल्पक स्तरपर कतिपय नवीन प्रयोग कयलनि आ एकबेर पुनः मैथिली गीतिकाव्यकेँ कदाचित् तहिना लोकप्रिय बनौलनि जहिना कहिओ विद्यापति-युगमे छल। राधाकृष्ण चौधरी मधुप जीकेँ प्रगतिवादक जनक कवि मानैत छथि।[21] हिनकर अनेक गीतिकेँ प्रगतिवादी गीतिकाव्यक अंतर्गत राखल जा सकैत अछि। यथा-

कोकिल, न सुना कमनीय कूक

जठरानल-ज्वाला जारि रहल
जीमूत जकाँ युगनयन बनल
जीवनक ज्योति जनु भेल शान्त

यौवनक यवनिका टूक टूक

कामना-कुञ्जकेँ कर कुठार
क्यो कुटिल काटिकेँ कैल पार
कातर-कुररीक कुमार तुल्य-
कानबे कर्ममे कर्म मूक

क्रन्दन करैत लखि करह गान
करुणाक कनेको कन न भान
कलपाय कहह की फल ज्वरमे
क्यो कृती करत उपचार चूक[22]

कालान्तरमे पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', मणिपद्म, रामकृष्ण झा 'किसुन', मायानन्द मिश्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सोमदेव, रामदेवझा, शान्ति सुमन, गंगेश गुंजन, रमानन्द रेणु आदि गीतकार लोकनि एहि परम्पराकेँ स्वातंत्र्योत्तर कालमे आगाँ बढ़ौलनि।

प्रगतिवादी काव्य-धारामे गीतिकाव्यक पर्याप्त मात्रामे रचना भेल। विषयक दृष्टिसँ एहि गीतसभकेँ मुख्यतः मानवतावादी गीति, वर्ग-संघर्ष मूलक गीति, जागरण-गीति, श्रम-प्रशस्ति गीति, प्रकृति गीत तथा सामाजिक गीतिक कोटिमे वर्गीकृत कयल जा सकैत अछि। एहि धाराक प्रकृति गीतिमे ग्राम्य-जीवनक सजीव चित्रण भेल अछि तहिना सामाजिक गीति सभमे गरीबी, शोषण, स्त्रीक दुर्दशा आदि सामाजिक कुरीति सभक चित्रण भेल अछि।

प्रयोगवाद वस्तुतः कोनो विशेष प्रकारक विचारधाराक प्रतिनिधित्व नहि करैत अछि, अपितु ई वाद-समूहक द्योतक थिक। प्रगतिवाद विद्रोहात्मक-भावना जखन आर मुखर भेल तँ बौद्धिक-वर्गकेँ लगलनि जेना कोनो वाद' विशेषमे संपूर्ण समाजकेँ बान्हब ने तँ उचित थिक आ ने संभव। प्रयोगशील साहित्यकार लोकनिक मान्यता छनि जे 'वाद' विशेष बन्धनसँ व्यक्तिगत एवं वैचारिक स्वतंत्रता प्रभावित होइत अछि। वस्तुतः ई एक एहन वैज्ञानिक जीवन-दृष्टि थिक जाहिमे मनुष्य अपन प्रत्येक असफलतासँ सीखैत अछि आ सफलताक लेल आर सुनियोजित प्रयास करैत अछि, जाहिमे एकटा सफलताक पश्चात दोसरक अण्वेषण शुरू होइत अछि।

रामजी तिवारीक शब्दमे- 'प्रयोगवादी आन्दोलन सभ स्थापित मूल्यक निषेध करयबला, ह्रासशील मध्यवर्गक यथार्थ ओ ओकर संप्रेषणक अभिनव माध्यमक अन्वेषण करयबला काव्यांदोलन थिक। स्थापित सिद्धान्त, आदर्श, नैतिक मूल्यकेँ निरर्थक मानिक मध्यवर्गीय व्यक्तिक भोगल यथार्थसँ उद्भूत गहन संवेदनाकेँ सामाजिक संदर्भसँ निर्लिप्त रहि, नित्यनूतन अभिव्यंजक उपकरणसँ रूपायित करब प्रयोगवादक मूल पवृति थिक। प्रयोगवादी कवि व्यक्ति जीवनक जड़ता, कुंठा, पराजय, निराशा, अनास्था, मानसिक संघर्षक व्यथा, दमित वासनाक यथार्थ अभिव्यक्ति बौद्धिक धरातल पर कयलनि। एहि आन्दोलनसँ जीवनक बहुविध

पारिवेशिक जटिलताक बीच यथार्थ मानवकेँ चिन्हबाक प्रयास भेल। प्रयोगवाद सत्य संधान तथा प्राप्त सत्यकेँ संप्रेषित करबाक साधना थिक।[23]

प्रयोगवादक अंतर्गत एकदिस जतय काव्य आर धरगर भेल, ओतहि अपन-अपन विचारधाराक प्रतिष्ठित करबाक लेल रचनाकार लोकनि शिल्पक स्तरपर नित-नव प्रयोग करय लगलाह। एहि प्रसंग डॉ. उमाशंकर तिवारी लिखैत छथि- प्रयोगवादक मुख्य लक्ष्य विलक्षण प्रयोग, उक्ति आ बिम्ब द्वारा अद्भुत तथा अस्वाभाविक उपमानक प्रयोग द्वारा पाठककेँ चमत्कृत करब तथा मानसिक रूपसँ झकझोरब छल। प्रयोगवादी कवि मात्र वस्तु-योजना आओर अभिव्यंजना संबंधी चमत्कारे धरि अपनाकेँ सिमित नहि करैछ, ओ छन्द-विधान, शब्द-निर्माण, वाक्य-संघटन, वर्ण-विन्यास, शब्द-विन्यास, पंक्ति-रचना आदिमे सेहो नवीनता आनि परम्परागत नियमकेँ तोड़ि आ एहि तरहेँ अपन साहस प्रदर्शित कऽ सुख अर्जित करैत अछि।[24]

मध्यवर्गीय हीनता, गरीबी, अनास्था, ईर्ष्या-द्वेष, मानवीय मूल्यहीनता, भ्रष्टाचार, अंतर्मुखता, पलायन आदिक मार्मिक चित्रण प्रयोगवादी गीतिकाव्यमे भेल अछि। मैथिली गीतिकाव्यमे फ्रायडक अवचेतनावाद, तथा जर्मन अभिव्यंजनावाद एहियुगक प्रमुख स्वर बनि गेल। मैथिली नव-कविता आ नवगीतक जन्म भेल।

एहि प्रकार स्पष्ट होइत अछि जे बीसम शताब्दीक प्रथमार्द्ध मैथिली गीतिकाव्यक विकासक दृष्टिकोणसँ अत्यधिक महत्वपूर्ण काल थिक। मात्र चारि दशक केर अंतरालमे मैथिली गीतिक स्वर ओ स्वरूपमे संपूर्ण परिवर्तन भऽ गेल। राष्ट्रवादी चेतना वैश्विक दृष्टि-संपन्नता ग्रहण कऽ लेलक। प्रगतिवाद तथा प्रयोगवादक जे नमोन्मेष एहि कालखण्डक तेसर-चारिम दशकमे भेल तकर पूर्ण विकास स्वातंत्र्योत्तर कालमे भऽ सकल जकर विस्तृत चर्च अगिला अध्यायमे होयत।

*****

[1] यदुवर रचनावली, भूमिका, सं.- डॉ. रमानन्द झा रमण, मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी, असम, पृ.-4.

[2] चन्द्र-रचनावली, सं-डॉ. विश्वेश्वर मिश्र, मैथिली अकादमी, पटना, पृ.-315.

[3], उपर्युक्त, पृ.- 319.

[4] यदुवर रचनावली, भूमिका, सं.- डॉ. रमानन्द झा रमण, मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी, असम, पृ.-V.

[5] स्वातन्त्र्यस्वर, सं- पं. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', भूमिका, साहित्य अकादेमी, दिल्ली, पृ. 13 सँ उद्धृत.

[6] उपर्युक्त, पृ.-15.

[7] यदुवर रचनावली, पूर्वोक्त-3, पृ.-9.

[8] उपर्युक्त,पृ.-VI.

[9] उपर्युक्त,पृ.-VI.

[10] उपर्युक्त,पृ.-VI.

[11] उपर्युक्त,पृ.-VI.

[12] उपर्युक्त,पृ.-VIII.

[13] उपर्युक्त,पृ.-IX.

[14] उपर्युक्त,पृ.-IX.

[15] उपर्युक्त,पृ.-XI.

[16] आधुनिक मैथिली कविता, डॉ. हरिमोहन झा, मैथिली अकादेमी पटना, पृ.- 53.

[17] उपर्युक्त, पृ.- 59.

[18] उपर्युक्त, पृ.- 63.

[19] उपर्युक्त, पृ.- 54.

[20] आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ, नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.- 60.

[21] A Survey of Maithili Literature, Radhakrishna Chaudhary, Shruti Publication, Pg-156.

[22] मधुपक बीछल बेरायल कविता, साहित्य अकादेमी, सं- फूलचन्द्रझा 'प्रवीण', पृ.-78.

[23] बीसवीं सदी का हिन्दी साहित्य, सं.- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, भारतीय ज्ञानपीठ, पृ.- 50

[24] आधुनिक गीतिकाव्य, डॉ. उमाशंकर तिवारी, वाणी प्रकाशन, पृ.- 312.

पंचम अध्याय : बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्धक मैथिली गीतिकाव्य

विगत शताब्दीक प्रथमार्द्धमे वैज्ञानिक उपलब्धिक प्रतापेँ आजुक विश्वमानवक जन्मक पृष्ठभूमि तैयार हुअय लागल छल। देशक भौगोलिक सीमा भनहि अपरिवर्तित रहल हो, मुदा देशवासीक वैचारिक विचरण विश्वक कोन-कोनधरि हुअय लागल। विश्व-वन्धुत्व ओ वसुधैव कुटुम्बकम्'क धारणा नवीन रीतिएँ परिभाषित भऽ रहल छल; जाहि अन्तर्गत दू सम्प्रभु राष्ट्रक मध्य मात्र कुटनीतिक मैत्रीए धरि सम्बन्ध सीमित नहि रहल अपितु ओकर नागरिकक सरोकार-अधिकारक प्रति चिन्ता-चिन्तन सेहो अन्तरराष्ट्रीय, द्विपक्षीय ओ बहुपक्षीय सम्बन्धकेँ प्रभावित करयवला कारक तत्त्व रूपमे उभरय लागल। मित्रे नहि गैर-मित्र राष्ट्रक देशवासीक प्रति सेहो देशवासीक मनमे संवेदना जागृत भेल। अपना देशक घटनासँ लोक जहिना प्रभावित होइत छलाह तहिना विदेशी धरतीक सुख-दुःख, आचार-अनचार, अत्याचार आदिक प्रति सेहो लोकक मनमे आस्था-आक्रोश जनमल।

भारत अंग्रेजी शासनसँ स्वतंत्र भेल। देशक सत्ता लोकतांत्रिक व्यवस्थाक अन्तर्गत जनता द्वारा निर्वाचित शासन व्यवस्थाक हाथमे गेल। मुदा, स्वतंत्रताक पश्चात् देश-दशामे जाहि सुधारक कल्पना, देशवासीक मनमे बसल छल, तकर मूर्त्त रूपमे प्रकट होयब दिनानुदिन असंभव सन प्रतीत हुअय लागल। स्वाधीनतासँ, स्वदेशी सत्तासँ भारतीय नागरिक जे देशोत्थानक आशा लगौने छलाह, जाहि कुव्यवस्था-कुशासनक शोषणसँ मुक्तिक आकांक्षा रखने छलाह से हुनका देशक स्वाधीनता प्राप्तिक बादहु दूरहि रहल। सत्ताधारी बनल रहबाक, राजनेता आ राजनीतिक दलक लालसा समाजमे अनेक विकृति घोरि देल। जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रीयता आ परिवारवादक नव चलनिक विस्तार हुअय लागल। मतदान केन्द्रपर धनबल-जनबलसँ बलशाली लोकक कब्जा भऽ गेल। सामान्यजन पहिनहि जकाँ उपेक्षित रहलाह। नेताक लगुआ-भगुआ सभ हुनका सभक शोषण करैत रहल। कुल मिला कऽ एकर नव सामन्तवादी-उपनिवेशवादी व्यवस्थाक उदय हुअय लागल जाहिमे स्वदेशीक दमन स्वदेशीयेक हाथहि भेल।

स्वदेशी शासन व्यवस्थाक स्थापनाक बादहु देशमे जे कुव्यवस्था ओ अन्याय पसरल छल, तकर विरुद्ध लोकमनमे अनास्था-अविश्वासक भावनाक संचरण भेल। तकर संकेत करैत डॉ. रमानन्द झा 'रमण' लिखैत छथि-

"स्वतंत्र भारतमे समानताक अधिकारक अछैतो विशेष ओहदाक पात्र एक वर्ग बनले रहल । एहि विसंगतिक बोध क्रमशः लोककेँ होइत गेलैक । समानताक आधारपर जीवाक आस्थामे एहि विसंगतिक दरारि फाटि गेलैक। सामाजिक जीवनमे विश्वास घटल। अविश्वास बढ़ल। अनास्था बढ़ल।[1]

उपर्युक्त सामाजिक-राजनीतिक विसंगति ओ तदजन्य विकृतिसँ तत्कालीन साहित्य ओ साहित्यकारकेँ प्रभावित होयव निश्चिते छल। साहित्यकार वर्गक उद्वेलन रमानन्द रेणुक निम्नलिखित वाक्यसँ स्पष्टतः सोझाँ अबैत अछि- लिखैत छथि- " राजनीति तऽ आर हमर मूल उत्सकेँ एकटा अन्हार कोन खण्डक दिस मोड़ि देलक अछि। अनावश्यक मोह, दुश्मनी, बइमानी, घूसखोरी, सत्ताक लोभ, नीतिक परिवर्तन आदि कतिपय वस्तु तेना भए कए उथल-पुथल मचा देलक जे हमरा ककरो पर विश्वास नहि रहि गेल।" (अंततः,1969)[2]

मिथिलाक अर्थव्यवस्था सभदिन खेतीपर निर्भर रहल अछि। बाढ़ि-रौदीक समस्या आइयो मिथिलाक अर्थव्यवस्थाकेँ सर्वाधिक प्रभावित करैत अछि। सरकारी पंचवर्षीय योजना मिथिलामे नहिएँ कोनो वैकल्पिक अर्थोपार्जनक स्रोत उपलब्ध करा सकल आ ने एतुका कृषि केन्द्रित अर्थतंत्रक ढ़ाँचाकेँ सुदृढ़ कऽ सकल। उनटे, सिंचाइ, समुन्नत कृषि तकनीक, खाद-बीजक अभावमे आ निरन्तर बढ़ैत जनसंख्याक बोझसँ एहि क्षेत्रमे अन्नसंकटक स्थिति उत्पन्न हुअय लागल। भुखमरीक समस्या मुँह बाबि ठाढ़ भऽ गेल। काला-बाजारी, मुनाफाखोरी, जमाखोरीक प्रवृत्ति गामक हाट-बजार धरि पैसि गेल। शिक्षा, स्वास्थ्य आदि सामाजिक कल्याणक क्षेत्रमे अव्यवस्था आ अभाव लोककेँ खटकल। फलतः श्रमिकक पलायन आरम्भ भऽ गेल।

मिथिलाक ग्रामीण सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था चौपट भऽ गेल। लोक गाम-घर छोड़ि कऽ रोजी रोजगारक खोजमे निकटवर्ती ओ सुदूर नगर-महानगर दिस पड़ाय लागल। ओतय ओकरा दोयम दर्जाक जीवन शैली जीबाक लेल बाध्य हुअय पड़लैक, परदेशी होयबाक अपमान पीबय पड़लैक। शहरमे तँ वर्ग-विभेद आरो व्यापक छल। परिणामस्वरूप ओकरा मनमे असंतोष ओ संघर्षक भाव उत्पन्न भेलैक। समाज अभिजात्य आ सर्वहारा, दू-भागमे बँटि गेल। तत्कालीन सामाजिक-आर्थिक असमानता ओ विद्रूपतापर विचार करैत डॉ. रमानन्द झा 'रमण' लिखैत छथि-

"गामक कृषि योग्य भूमिपर किछु परिवारक अधिकार दैवी दयापर खेती-बाड़ी, ग्रामीण क्षेत्रमे उद्योग-धन्धाक अभाव आदिसँ लोक शहर दिस जीविकाक तलाशमे पड़ेबा लेल विवश भेल। शहरक छोट-छोट कल-कारखानामे ओकरा कोनहुना पेट पोसबा योग्य नोकरी भेटलैक। साँझसँ भोर धरि मशीन जकाँ खटैत रहल। मुदा, ओकर परिश्रमक फल पबैत रहलैक ओकर मालिक आ मालिकक सर-कुटुम्ब...महगीक अनुपातमे श्रमिकक दरमाहामे अपेक्षित वृद्धि नहि भेल। एहिसँ लोकक जीवन-यापन प्रभावित भेलैक...मालिकक लाभ-भोगी मनोवृतिसँ (श्रमिक) परिचय पौलक। श्रमिक वर्गमे असंतोष बढ़ैत गेलैक...सुरसाक मुँह जकाँ महगी लोकक अस्तित्वकेँ गीरबा लेल मुँह बओने रहल।"[3] अभावक आगिमे झरकल गामक समक्ष भ्रष्टाचारक भूत आबि कऽ सेहो ठाढ़ भऽ गेल छलैक।

मिथिला क्षेत्रक उद्योग-धंधाक मृयमान दशाक उल्लेख करैत जटाशंकर दास लिखने छथि-"एहि क्षेत्रक एकमात्र उद्योग चीनी मिल छल। किसान कुसियार उपजा कए किछु टाका अर्जित कए लैत छलाह। जाहिसँ

विवाह-दान, कपड़ा-लत्ता, दवाइ-दारू, माल-गुजारी आदिक अपन खर्च निकालैत छलाह। आब इहो उद्योग दम तोड़ि रहल अछि। (चेतना समिति, पटना स्मारिका-1979)"[4]

वस्तुतः साहित्यकारक परम कर्त्तव्य थिक अपन युग-जीवनकेँ चीन्हब, ओकर जटिलताकेँ सोझरयवाक चेष्टा करब आ भविष्यक बाट प्रशस्त करब। संपूर्ण देश तथा विशेषतः मिथिलामे स्वातंत्र्योत्तर कालमे एहि सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक ओ धार्मिक हलचलसँ कवि-साहित्यकार लोकनि अनभिज्ञ नहि छलाह। मुदा, तत्कालीन प्रचलित साहित्यिक विधा सभ एहि सभ परिवर्त्तनकेँ अँगेजबामे पूर्णतः सक्षम नहि छल। तकर संकेत आचार्य रमानाथझा निम्नलिखित उक्तिमे भेटैत अछि-" जहाँ धरि मानवताक मूल भावनाक स्रोतक प्रश्न अछि, विद्यापतिक गीत सब दिन नूतन रहत, कारण ओ मौलिक सत्य थिक, सब दिन सुन्दर रहत। परन्तु, बीसम शताब्दीक जे अस्त-व्यस्त जीवन अछि तकर प्रतिबिम्बन केवल ओहि माध्यमसँ कोना संभव अछि।"[5] सामान्य जनक आशा-आकांक्षा ओ सरोकारकेँ आब कोनो एक विचारधाराक अंतर्गत परिभाषित अथवा अभिव्यक्त करब असंभव हुअय लागल छल।

एहि असंभवक संभाव्यता तकैत डॉ. रमानन्द झा रमण कहैत छथि-" कविक परिवेश जखन बदलि रहल हो, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्रमे भेल परिवर्तनसँ लोकक जीवन-मूल्य प्रभावित होइत हो, तँ साहित्यमे केवल विगतकालक जीवनमूल्यक अभिव्यक्तिक आएब गतिहीनताक द्योतकक अतिरिक्त आर की भए सकैछ ? ई गतिहीनता पाठकोकेँ प्रभावित करैत अछि। ओ किछु नव तकैत अछि। पढ़बाक इच्छा करैत अछि। नव वस्तु पढ़लापर तृप्ति होइत छैक। अनुभूतिक क्षेत्रक विस्तार होइत छैक आ जखने किछु नव नहि भेटैत छैक, पुरने वस्तु पढ़ि-पढ़ि तृप्ति नहि भेटैत छैक। ओहि रीतिक रचनासँ विमुख भए जाइत अछि। जे रचना ओकर अनुभूति-क्षेत्रक विस्तार नहि करैत छैक, तकरा पढ़ब छोड़ि ओ अपन समय आन काजमे लगा दैत अछि। सर्जनात्मक प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार पाठकक एहि मनोदशाक परिचय रखैत छथि आ साहित्यक नवीनीकरणक प्रयोजन बूझि नव रचना करैत छथि।"[6] प्रयोगवादी प्रवृति साहित्यक एही प्रयोजनीयताक परिणाम थिक।

कहबाक प्रयोजन नहि जे नवकविताक उद्भवक जड़िमे कविताक भावबोधक इएह नवीनीकरण छल। परम्परागत भावबोध ओ शिल्पसँ पाठक उबियाय लागल छलाह। स्वाधीनताक बादक कालखण्डमे यांत्रिक युगक स्वीकृति, विकृति, विसंगति, विडम्बना आ अन्यान्य कारक जाहिसँ तत्कालीन विचारधारा प्रभावित भेल, सभकेँ समेटब पुरान शिल्प, परम्परागत शैलीक कवितामे असम्भव सन प्रतीत हुअय लागल छल। फलतः मैथिली कवि लोकनि नवीन शिल्प, नव शैलीमे, युगानुरूप भावबोध, बिम्ब, प्रतीक ओ अन्यान्य काव्य उपादानक प्रयोग दिस प्रवृत भेलाह। एहि प्रसंग रामकृष्ण झा 'किसुन' लिखने छथि-

"साहित्यिक मैदानमे जे बहुत दिनसँ सामियाना तानल अछि, तकर आब डोर सब सड़ि गेलै अछि। माटिमे गड़ल ओकर खुट्टी आ तानएवला बांस सब कोकनि गेल अछि। घुनलग्गू भए गेल अछि, ओहिमे लाग झाड़-फानूस सब झरि-झखरि गेल अछि (मैथिली नवीन कविता)।' अर्थात् आब एहि विकृति सभकेँ दूर करबाक समय आबि गेल छल।

मैथिली नव कविता आ नवगीतक विकासक पृष्ठभूमि

पूर्ववर्ती काव्यधाराक विकृति ओ सीमाकेँ दूर करबाक निमित्त विगत शताब्दीक पाँचम-छठम दशकमे कविता लिखबाक एकटा नव परिपाटी चलल, जाहिमे नवीन प्रतीक, नव उपमान ओ चमत्कारपूर्ण अभिव्यक्ति संगहि जीवन-सम्पृक्ति ओ वैयक्तिक अनुभूति नवीन रीतिएँ उपस्थित भेल। काव्यक ई नवीन परिपाटी अंग्रेजीक 'न्यू पोएट्री' जकाँ नव-कविताक रूपमे प्रचलित भेल। मैथिली साहित्यमे यात्रीक 'चित्रा'क समयमे एहि काव्य परिपाटीक उन्मेष भेल आ 'स्वरगंधा' धरि अबैत-अबैत ई अपन स्वतंत्र अस्तित्व कायम कऽ लेलक।

नवीन कथ्यक अनुरूप नवीन शिल्पमे जे नव कविता लिखल गेल अर्थात् मैथिलीक नवकविता जे उद्भव भेल ताहि सम्बन्धमे विद्वान लोकनि दू प्रकारक मत छनि। किछु विद्वान मानैत छथि जे ई परिपाटी अन्य भाषा साहित्यक प्रभावसँ जनमल अछि तँ किछु विचारकक मंतव्य छनि जे ई मैथिली काव्य परम्पराक स्वतः विकसित प्रारूप थिक। एहि प्रसंग आचार्य रमानाथ झाक जे विचार छनि ताहिमे ओ एहि नवीन काव्य-परिपाटीकेँ आयातित तँ मानैत छथि मुदा बदलल युग-जीवनक अनुसार स्वागत सेहो करैत छथि-" एम्हर किछु दिनसँ नव कविताक रचना बड़ व्यापक रूपेँ आरम्भ भेल अछि। थिक ई हिन्दीक प्रभाव ओ हिन्दी समेत ई देशान्तरसँ आएल अछि। जहाँधरि नव विशेषण नव उपमा, नव उक्ति भंगिमाक प्रश्न अछि ई प्रवृत्ति सर्वथा श्लाघ्य अछि।

तहिना "सुधांशु शेखर चौधरी सेहो रमानाथ बाबूक विचारकेँ आगाँ बढ़बैत कहैत छथि-- "मैथिली नव लेखन अपन भूमिसँ नहि उपजल अछि। आन भाषाक देखाउससँ आएल अछि, तेँ एकर कोनो स्वतंत्र अस्तित्व नहि छैक। आ तेँ मैथिली नव लेखनक प्रसंग एखन धरि जतेक परिभाषा निरूपित कएल गेल अछि, से ओकर अपन नहि थिकैक। आन-आन भाषासँ पैँच लेल छैक। तात्पर्य इएह जे नव लेखनक स्थापनाक प्रवृत्ति विदेशसँ भारतमे आएल अछि। एक भाषाक देखाउसमे दोसर भाषामे ई संक्रामक रोग जकाँ प्रविष्ट भेल अछि। साम्प्रतिक स्थिति इएह अछि जे नव लेखनक स्वर सार्वभौम स्वर थिक आ नवीन पीढ़ी एही स्वरक संग साहित्यमे प्रवेश कए रहल अछि। एहि अर्थमे ई मानय पड़त जे परम्पराक साहित्य सर्जनक प्रभाव नष्ट प्रायः भए चुकल अछि। आ प्रायः तेँ नव प्रवेशोकेँ प्राचीन साहित्यक भंडार किंवा परम्परावादी रचना प्रक्रिया कोनो प्रेरणा नहि दए पबैत अछि (अग्नि मित्र-1973)।"

रामकृष्ण झा 'किसुन' मैथिली नवलेखनपर फ्रायड जुंग, मार्क्स, सार्त्र, काफका, कीर्केगार्द, गिन्सवर्ग आदिक चिन्तनक प्रभाव स्वीकारैत छथि। तहिना मायानन्द मिश्र सेहो एकरा पाश्चात्य प्रेरणासँ प्रेरित मानैत छथि। नवकविताक पृष्ठभूमि प्रसंग मायानन्द मिश्र लिखैत छथि- मैथिलीमे इलियटसँ लऽ कऽ एग्रीजेनेरेशन धरिक काव्य प्रवृतिक प्रभाव एक्के समय 1960 ई. क आसपास आयल।[7]

मुदा, कीर्तिनारायण मिश्रक विचार एहिसँ भिन्न छनि। ओ सीमान्तक भूमिकामे एहि प्रसंग लिखैत छथि-"मैथिली नवकविता हिन्दी अथवा अंग्रेजीक नव कवितासँ सर्वथा भिन्न सन्दर्भ रखैत अछि। ई कोनो प्रतिक्रिया विशेषक उपज विरोधक परिणाम अथवा विदेशी अनुकरण नहि थिक। ई वर्त्तमान जीवनक विद्रूपता,

घुटन, उत्पीड़न, असंतोष, विक्षोभ, संत्रास एवं अभावक स्वस्थ्य चित्रण करयवला सामाजिकता एवं गंभीर जीवनक संस्पर्शसँ युक्त एकटा विशिष्ट गुणक कारण परम्परासँ कटल, रूढ़िग्रस्त चेतनासँ मुक्त, स्वातंत्र्य सजग, विकासशील एवं वैचारिक संघर्षक रचना थिक ।"[8] स्पष्ट अछि जे कीर्तिनारायण मिश्र एकरा पूर्ववर्ती काव्य परम्पराक स्वाभाविक विकास मानय छथि, जे कि देश-काल-परिस्थितिक परिवर्तनक कोखिसँ उपजल अछि।

मैथिली नव कविताक जन्मक संदर्भमे राजकमल चौधरीक उक्ति छनि- "देशमे स्वाधीनता आएल 1947 ई. किन्तु आब 1960 मे आबि कए हम सभ बुझैत छी आ निर्णय करैत छी जे स्वाधीनता हमरा सभक लेल नहि, सत्ताधारी वणिक सम्प्रदाय आ राजनीतिज्ञक लेल आएल अछि। सभ किछु रहितो किछुओ टा नहि अछि हमरा सभक अपन। कोसिकाक बान्ह बन्हाएल, मुदा हमर गामक धरती एखनो मलेरिया आ भाङक अतिरिक्त आर किछु नहि जन्म दैत अछि। अर्थ संकट बनि गेल अछि, समाज जीवनक एक मात्र धर्म संकट आ हमरा सभक प्राण जा रहल अछि। बरौनी कारखानासँ ककरा लाभ होएत। जे जनसमुदाय पेटक शोध करबामे प्राण दए रहल अछि, से किरासन तेलक शोध की करत? लोक गामसँ पड़ा कए शहर बाजार अबैत अछि, मुदा बाजारसँ पड़ा कए कतय जाएत ? चारू कात प्रपंच आ मंत्र पसरल अछि। लोकनाथ मरि गेलाह, तँ गामक लोक आब हुनक युवती विधवाकेँ फूटल हाँड़ी बना देत, मुइल बिलाड़ि बना देत। मानव जीवनक सभसँ पैघ सफलता थिक मिनिस्टरी दलक एम.एल.ए बनि जाएब ? कविता आ साहित्य थिक जीवनक सभसँ पैघ असफलता आ मृत्यु। एहने विचार आर परिवेशमे हमरा सभक कविताक जन्म भेल अछि- नव कविताक जन्म। (मि.मि.29-08-1965)"

राजकमल चौधरीक उपरोल्लेखित विचार स्वाधीनताक पश्चात् कालमे सामाजिक-राजनीतिक परिवेशमे आयल परिवर्तन आ ताहीसँ उद्भूत वस्तुतः मैथिली नवकविताक उद्भवक संक्षिप्त इतिवृति थिक। नव कवितामे आधुनिक भावबोध आर घनीभूत भेल। आन्तरिक द्वन्द्व, यांत्रिक सभ्यताक विसंगतिक प्रति आक्रोश, व्यक्ति स्वातंत्र्यक आग्रह तथा नवीन जीवन मूल्यक अण्वेषणाकत्म अकुलाहट नव कविताक प्रमुख स्वर थिक।

नवगीतक उद्भव ओ विकास

प्रगतिवादी आओर प्रयोगवादी काव्यधाराक अन्तर्गत मान्य गीतिकाव्यक विषय-वस्तु आओर शिल्पक सम्बन्धमे विचार करैत काल पाओल अछि जे ई काव्य-प्रवृति छायावादी काव्य-प्रवृतिक विरुद्ध प्रतिक्रिया-स्वरूप अस्तित्वमे आयल। मुदा, प्रतिक्रियामूलक रचना स्थायी नहि होइत अछि। एहन काव्यक दीर्घावधिमे महत्व समाप्त भऽ जाइत छैक। अतः बदलैत देश-दशा ओ सामाजिक परिस्थितिक कारणे छठम दशक अबैत-अबैत एहि दुनू काव्यधाराक चमत्कार समाप्त भऽ गेल; आ एकटा एहन काव्यधारा प्रवाहित भेल जाहिमे प्रगतिवादक यथार्थ ओ छायावादक कल्पनाशीलताक अभिनव सामंजस्य छल मायानन्द मिश्र एकरा अभिव्यजनावादी काव्य कहलनि अछि। नव कविताक युगमे छन्द-विधान ओ लयात्मकताक दृष्टिसँ दू धाराक रचनाकार भेलाह। एकटा धारा जे प्रयोगवादक गद्यात्मकताक आग्रही छलाह तँ दोसर धारा जे छन्द-लय-युक्त गेय काव्यक पक्षधर भेलाह ; जे नव-कविताक समानान्तर नवगीतक परिकल्पना कयलनि आ कदाचित् अतिशय गद्यात्मक होयबाक कारणे अलोकप्रिय होइत काव्यकेँ लोकप्रियताक नवजीवन देलनि।

नवगीतकार लोकनि प्रगतिवादी तथा प्रयोगवादी काव्य धाराक मध्य सामञ्जस्य बनबैत कोन तरहे नवगीतक मार्ग प्रशस्त कयलनि तकर आभास प्रो. मायानन्द मिश्रक उक्तिमे होइत अछि- अभिव्यंजनावादी काव्ययुगमे रोमांटिक भावधाराक गीत तथा लोकचेतनाक गीत दुनू प्रकारक लीखल गेल । लोकवादी गीतक जन्म मैथिली गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर 'सामाक गीत'सँ भेल अछि जे प्रथम-प्रथम 1960 ई. अभिव्यंजनामे छपल अछि ।....एहि युगक दोसर गीतिधारा थिक साहित्यिक गीतक जे अपेक्षाकृत अधिक कलात्मक ओ महत्वपूर्ण अछि आ जे अपन कल्पना ओ अभिव्यंजनामे सर्वथा नवीन अछि ।'[9]

नवगीत अपन पूर्ववर्ती गीति-परम्परासँ कोन प्रकार भिन्न अछि तकरा डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र अत्यंत सरल शब्दमे फरिछौलनि अछि- गीत आ नवगीतमे ओतबे अंतर छैक, जते आमक पुरना पात आ नव-पल्लवमे । पुरना पात चिर विकासक प्रतीक होइछ, पल्लव नवत्वक । एकटा होइछ हरियर तँ दोसर ताम बरन । नवगीत आधुनिक समयक जटिल जीवनकेँ अभिव्यक्त करवाक आ लोकशक्ति तक संप्रेषित करवाक विशेष सामर्थ्य रखैत अछि ।[10] अर्थात् नवगीत, पूर्ववर्ती गीतिक एक रूपांतरण मात्र थिक जे आधुनिक भावबोधकेँ नवकविताक समानान्तर अभिव्यक्त करबाक क्षमता-संपन्न अछि । प्रकारान्तरसँ एतय इहो स्पष्ट होइत अछि जे नवगीतमे भावबोधक नवीनता प्रमुख अछि, मात्र शिल्पक नवीनता नहि । एवं प्रकार कहि सकैत छी जे नवगीत, गीतक बौद्धिक विकास थिक ।

मैथिली नवगीतक उद्भवक सम्बन्धमे डॉ. रमानन्द झा 'रमण'क विचार छनि जे-"नवगीत आ नव कविता एकहि युगक उपजा थिक । केवल जेठ छोटक अन्तर अछि । जाहि यांत्रिक आ औद्योगिक युग-जीवनक परिणति नव कविता थिक ओही विसंगति आ विडम्बनासँ आप्लावित युग जीवनक अभिव्यक्ति थिक नव गीत ।[11]

नवगीतक नामकरणक प्रसंग डॉ. उमाशंकर तिवारी कहैत छथि-"नवगीत' एक सापेक्ष शब्द थिक । नवगीतक नवीनता युग सापेक्ष्य होइत अछि । कोनो युगमे नवगीतक रचना भऽ सकैत अछि । गीति-रचनाक परम्परागत पद्धति आ भावबोधकेँ छोड़िकऽ नवीन पद्धति आओर विचारक नवीन आयाम तथा नवीन भाव-सरणिकेँ अभिव्यक्त करयबला गीत जहिया आ जाहि कोनो युगमे लिखल जायत, 'नवगीत' कहाओत ।" [12]

वस्तुतः संस्कृत गीतिसँ फराक जहिया लोकभाषामे चर्यापदक रचना भेल, विद्यापति जहिया 'देसिलवयना सभजन मिठ्ठा'क उद्घोष करैत पदावली लिखलनि, चन्दाझा जहिया समकालीन युगबोधकेँ अपन गीतिमे सन्निविष्ट कय नवीन गीतिक परिपाटी चलौलनि किंवा भुवन, यात्री, मधुप, किरण प्रभृति कवि जहिया नव-नव बिम्बक अपन गीतिमे सर्जना कयलनि, वस्तुतः तहिया-तहिया मैथिली नवगीतक रचना सेहो भेल छल जे कालान्तरमे अर्वाचीन कि प्राचीन होइत गेल ।

साहित्य क्षेत्रमे नवगीतक नामकरण बीसम शताब्दीक साठिक दशकमे भेल । मैथिलीमे सेहो एहिसँ पूर्व एहन नामकरण नहि भेटैत अछि । ओना तँ ई कहब अतिशयोक्ति नहि होयत जे कवीश्वरेक गीतसभमे मैथिलीमे सभसँ पहिने आधुनिक ओ नवगीतक प्रवृतिक समावेश भेटैत अछि जे बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध अबैत-अबैत अपन स्वतंत्र स्वरूप स्थापित कयलक । मुदा, मधुपजीकेँ मैथिली नवगीतक आदि गीतकार मानल जा सकैत

अछि । कारण, चारिमे-पाँचम दशकमे जन-सामान्य ठोरपर मैथिली गीतकेँ पहुँचयबाक निमित्त कविचूड़ामणि परम्परागत छन्दानुशासन भंग कऽ फिल्मी तर्जपर गीत लिखलनि जाहिमे शृंगारिकताक अलावे सामाजिक कुप्रथा ओ राजनीतिक स्वार्थपरतापर आक्षेप सेहो कयलनि। अपूर्व रसगुल्ला (1941), टटका जिलेबी (1945) आ पचमेर (1949) मे एहन गीत सभ संग्रहित अछि। 'चौंकि-चुप्पे' (1966) नामक हिनक गीत-संग्रह अत्यधिक लोकप्रिय भेल जाहिमे सेहो एहन गीत सभक संकलन भेल अछि । उदाहरण स्वरूप स्वातंत्र्योत्तर कालक शासकक विफलता ओ शोषितक जिजीवषाक चित्रांकन करैत लिखने छथि-

बद्ध-छाग अनन्त युग-युगसँ उपासल
किन्तु ककरो शक्तिसँ दिन-राति शासल
आइ बन्धन-मुक्त ओ सब घूमि-घूमि कऽ
अछि सतृष्ण तकैत एमहरइ झूमि-झूमि कऽ
चित्त बाड़ीमे गेन्हारी, तदपि चतरल जा रहल अछि[13]

मायानन्द मिश्र, सोमदेव, विद्यानाथ झा 'विदित', रवीन्द्रनाथ ठाकुर, गंगेश गुंजन, डॉ. धीरेन्द्र मार्कण्डेय प्रवासी, रमानन्द रेणु, शांति सुमन, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, डॉ. महेन्द्र, सियाराम झा सरस, बिभूति आनन्द, तारानन्द वियोगी, जगदीशचन्द्र ठाकुर अनिल, विजयनाथ झा, चन्द्रमणि, अरविन्द अक्कु, रामचैतन्य धीरज, फूलचन्द्रझा 'प्रवीण' आदि मैथिली नवगीतक प्रतिनिधि रचनाकार छथि।

आस्था, आक्रोश, आत्मालोचन, दार्शनिक चिन्तन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आंचलिकता, प्रेम, विरह, प्रकृति-चित्रण समेत जीवनक प्रायः प्रत्येक पक्षकेँ नवगीत अपन स्वर देलक । व्यवस्थाक विसंगति ओ राजनैतिक आ सामाजिक मूल्यहीनताकेँ अपन प्रतिपाद्य विषय बनेलक। नवगीतमे शिल्पगत दृष्टिकोणसँ अनेक अभिनव प्रयोग भेल अछि । नवगीतकार लोकनि पारपंरिक छन्दशास्त्र ओ सांगितिक सूत्रसँ फराक मात्र लयात्मकता ओ प्रवाहपूर्ण गेयात्मकताकेँ प्राथमिकता देलनि।

नवकविता ओ नवगीतमे अंतर

वस्तुतः नवगीत आ नवकवितामे कोनो तात्विक अन्तर नहि होइत अछि । जहिना नव कविता रहस्यवादी, प्रयोगवादी आ प्रगतिवादी भावबोधसँ भिन्न आधुनिक भाव-बोधक कविता थिक तहिना नवगीत आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यक एकगोट नव्यतम रूप थिक जे आधुनिक ओ वैज्ञानिक भावबोधसँ युक्त अछि। अर्थात् जहिना आधुनिक मैथिली कवितामे पछिला सय बरखमे अनेक धाराक जन्म भेल अछि आ सभटा समग्रतामे मात्र मैथिली कविता थिक तहिना नवगीत सेहो आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यक एकटा नव संबोधन मात्र थिक। नवगीतमे नवकविताक सभटा लक्षण विद्यमान रहैत अछि। नवगीत भाषागत विशिष्टता, भावगत अभिनवता ओ छन्द-योजनाक नवीनताक कारण पूर्ववर्त्ती रोमानी गीतिकाव्यसँ भिन्न अछि। डॉ. रमानन्द झा रमण लिखैत छथि- “नव कविता आ नवगीत अपन-अपन परम्पराक अग्रिम सोपान थिक। पारम्परिक विषय

वस्तु तथा शिल्पसँ दुनू प्रयाण कएलक अछि। नव-नव भावबोधकेँ स्वर देबा लेल दुनू नव-नव बिम्ब, प्रतीकक आ शब्दावली प्रयोग करैत अछि।"[14]

यद्यपि नवगीत आ नव कविताक एकहि युगमे उद्भव ओ एकहि संग विकास भेल तथा दुनूमे अनेक प्रकारक समानता अछि तथापि भाव तथा शिल्प दुहूक स्तरपर एहि दुनू मध्य अनेकशः भिन्नता सेहो अछि। डॉ. रमानन्द झा 'रमण'क शब्दमे-" नव गीत आ नव कविता दुनूमे यद्यपि बौद्धिका अछि, परंच दूनूक बौद्धिकतामे डिग्रीक अन्तर अछि। नवगीतक बौद्धिकता रागात्मकतासँ संयमित अछि तँ नव कविता बौद्धिकताक कारणे गद्यात्मक भए जाइत अछि। नवगीत लेल रागात्मकता अनिवार्य अछि, मुदा नव कविता लेल नहि। वैयक्तिक बिम्व आ प्रतीकक प्रयोगसँ नव कवितामे दूरूहता आबि जाइत अछि, जखन कि नवगीतमे सम्प्रेषणीयताक विशेष ध्यान राखल जाइछ। नवगीतक गेयधर्मिता सम्प्रेषणीयतामे साधक होइत अछि। आकारख लघुताक कारणे नवगीतमे प्रभावक क्षिप्रता रहैछ। नवगीतमे आत्मानुभूतिक तीब्र तथा सहज अभिव्यंजना रहैछ तँ नवकवितामे बौद्धितकताक अतिरेकक कारणे बौद्धिक धरातले पर सहजताक अनुभव कएल जा सकैछ। नवगीतमे अन्तः स्फुरण, आवेग तथा दीप्तिकेँ प्राथमिकता देल जाइछ, मुदा नवकवितामे कोनो सामान्य क्षणक आवेश तथा अन्वितिक प्रति निरपेक्षता रहैछ। नवगीतमे गीतात्मकता अथवा लयात्मकताक संस्थिति अनिवार्य अछि। नव कविताके अनुभव ओएह कए सकैछ जकर मानसिक धरातल कवित रचनात्मक धरातलक अनुरूप अथवा समकक्ष हो। तेँ नव कविता वर्गीय अछि। किन्तु नवगीत गेयधर्मितासँ सामान्यो पाठक-श्रोता अविभूत भए जाइत अछि। नवकविताक पाठक आ श्रोता जकाँ नव गीतक पाठक आ श्रोता कोढ़िला जकाँ पानिपर दहाइत नहि रहि जाइत अछि। नवगीतमे नग्न यथार्थ प्रायः नहि भेटत जखन कि नव कवितामे नग्न यथार्थक असंयत रूपो भेटब अस्वाभाविक नहि अछि। नवगीत भारतीय गीत परम्पराक स्वाभाविक विकास थिक। तेँ एहिमे परम्पराक प्रति सम्मान अछि किन्तु नव कविता भारतीय काव्य परम्पराक विकास नहि, विदेशी साहित्यक प्रभावेँ विकसित भेल अछि। तेँ नव कवितामे परम्पराक जड़ताकेँ तोड़बाक मानसिकता अछि। परम्परापर आक्रोश आ अनास्था अछि।"[15]

प्रसिद्ध नवगीतकार मार्कण्डेय प्रवासी मैथिली नवकविता आ नवगीतमे अन्तर स्थापित करैत निम्नलिखित बिन्दुकेँ रेखांकित कयने छथि-

1. भंगिमा किंवा क्षिप्रतामे साम्य रहितो शिल्पमे वैषम्य अछि,

2. नव कवितामे भाषणबाजी संभव अछि मुदा नवगीतमे व्यंजनाक पूर्ण संवेगात्मक सघनता होइछ,

3. नवगीत गेय होइछ मुदा नवकविता अगेय,

4. नवकविताक आक्रामक मुद्रा नवगीतमे साकार होइछ मुदा नवगीतक संक्षिप्तता मधुरता एवं श्लिष्टता नव कवितामे सम्भव नहि अछि,

5. नवगीतमे कतहु ने कतहु तुक आ प्रायः सर्वत्र, गति, यति, लयक अनिवार्यता होइछ, मुदा नव कविता एहि अर्थमे सर्वतंत्र स्वतंत्र अछि,

6. नव कवितामे लोक जीवनक शब्द आ चित्रटा प्रस्तुत भए सकैछ, मुदा नवगीत एहि दुनू तत्त्वक अतिरिक्त लोकधुन आ लोक संगीत पर्यन्तकेँ आत्मसात कए सकैछ,

7. अधिकतर नव कविता आक्रोश, संत्रास, घृणा, कुंठा, अभाव आ संघर्षकेँ अभिव्यक्त कएलक अछि, मुदा नवगीतमे एहि सभ भावनाक अतिरिक्त जीवनक कोमल पक्ष सेहो अभिव्यक्त भेल अछि.

8. नवगीत प्राचीनो संस्कारक व्यक्तिकेँ आकृष्ट कए सकैछ, मुदा नव कवितामे चुम्बकीय शक्तिक अपेक्षाकृत अभाव छैक

9. नवगीत कविताक संग कथ्यक स्तर पर प्रतियोगिता भाव रखितो अन्ततः कला तत्त्व एवं सौन्दर्य बोधपर निर्भर करैछ। मुदा नव कविता आन्दोलनक जन्म एहि दुनू विशेषताकेँ नकारवाक उद्देश्यसँ भेल अछि।

10. नव कविताकेँ मार्क्सवादी संस्कार दूरि कएलक अछि मुदा नवगीत प्रगतिशीलताक पक्षधर रहितो राजनीतिक वाद-विवादक जंगलसँ कदाचित मुक्त अछि

11. नव कविताक सामान्य पाठकक मनमे वितृष्णा अछि, नवगीत लोकक मनमे कविताक प्रति पुनः आस्था जगएबाक उद्योगमे अछि।

12. आधुनिक गद्यक कोनो पाँतीकेँ तोड़ि मरोड़ि नव कविता घोषित कएल जा सकैछ, मुदा नव गीत नहि।"[16]

उपर्युक्त विवेचनाक आधारपर कहल जा सकैछ अछि जे नवगीत नवकविताक अपेक्षा अधिक सम्प्रेषणीय, अधिक सक्षम ओ अधिक स्वीकार्य काव्य विधा थिक।

शिल्पक दृष्टिएँ विगत शताब्दीक द्वितीयार्द्धमे मुख्यतः जे गीति-रचना भेल अछि तकरा 1. प्रगीत, 2. मुक्तक, 3. पदगीत, 4. लोकगीत, 5. गीतल ओ 6. गजल वर्गमे बाँटल जा सकैत अछि।

नवगीतक विषयगत वर्गीकरण

विषय-वस्तुक दृष्टिकोणसँ नवगीत ओ नवकवितामे कोनो विशेष अन्तर नहि अछि, जेना कि पूर्वमे उल्लेख भेल अछि। नवगीतकेँ विषयवस्तुक आधारपर निम्नलिखित वर्गमे बाँटल जा सकैत अछि-

1. नवीन मूल्यबोधक प्रति आस्था ओ जिजीविषा- नवगीत प्रतिक्रियावाद-कालीन अनास्था भावक त्याग कऽ आस्था ओ जिजीविषा तथा सत्यक प्रति आग्रही भेल जकर मूलमे मानवतावादी जीवन-मूल्यक अवधारणा ओ मानवक उज्ज्वल भविष्यक कामना वर्तमान छल । उदाहरणस्वरूप मार्कण्डेय प्रवासी जीक गीतक किछु पाँति प्रस्तुत अछि-

जहिया जहिया हृदयहीनता
खटकत मोनक बाटपर,
हम भेटब-
इतिहास नदीकेर-
चिक्कन-चुनमुन घाटपर
XXXXX
जहिया-जहिया मैथिलत्व-

हारल, धकिआओल-सन लागत,
हम भेटब-
तिलकोर जकाँ-
चतरल साहित्यक टाटपर, (हम भेटब)

तहिना 'शेष अछि आशा-किरण'मे लिखैत छथि-

शेष अछि आशा-किरण
कटतै कुहेसक जाल
बेस सिन्दूरित लगै अछि
पूर्व-क्षितिजक भाल
तालमे जगलै कमल-पक्षीक शत-शत पाँखि
देखि रहलै अछि गगनकेँ मूक फूजल आँखि

2. युयुत्सा ओ आक्रोश-बोध- जीवनक प्रति युयुत्सा ओ तदर्थ संघर्षक स्वर नवगीतक एक अन्य प्रधान स्वर रहल अछि। सियाराम झा 'सरस' जीक ई गीतांश उदाहरणस्वरूप देखल जा सकैत अछि-

टूटल-फाटल टाट के मड़ैया रे मड़ैया
तै मे लाले इलची सनके मोन
लावन पर जरैए एगो नान्हिएँटा डिबिया
दौड़ी भरि उजास कोने-कोन।

xxxxx

कियो अबै कियो जाइक अटना कि पटना
देतै ने छटाको भरि नोन
काल्हि नवकबेरिए उठौतैग' कोदारियो
छील देतै सब अकाबोन॥

- आखर-आकर गीत, पृ.-102.

3. आत्मान्वेषण- समाजक ध्वंसात्मक प्रवृतिक मध्य व्यक्ति जखन अपन मौलिकता, उत्कृष्टता ओ विशिष्टताक खोजमे लगैत अछि आ अपन सर्जनाक माध्यमे किछु लोकोपयोगी ओकरा हाथ लगैत छैक तँ ओ आत्मोपलब्धि थिक। एहन उपलब्धिक हेतु कयल प्रयास आत्मान्वेषण कहबैत अछि। नवगीतकार लोकनि सेहो सामाजिक संदर्भमे अपन निजत्वकेँ तकबाक प्रयास कयलनि अछि। ई निजत्व कविक निज संस्कारसँ अपन सामाजिक-सांस्कृतिक वैशिष्ट्यक अण्वेषणात्मक प्रयास धरि विस्तृत भेल अछि। आरसी प्रसाद सिंहक एक गोट रचनामे ई भाव बड़ नीक जकाँ चित्रित भेल अछि-

असीमक कल्पनामे हम
अपन सीमा भुलायल छी।

अशाश्वत रूप पर मोहित
क्षणित सुख पर लुभायल छी।
असंतोषक हुताशनमे जरइ
छी, शान्ति लायब की ?
जगतसँ ऊबिकऽ जायब कतऽ
पुनि हम पड़ायब की ?

-सूर्यमुखी, पृ.-68.

4. प्रेमानुभूति- प्रेम काव्यक शाश्वत विषय थिक। प्रत्येक युगमे समकालीन संदर्भक अनुरूप प्रेमानुभूति कवितामे अभिव्यंजित होइत रहल अछि। प्रेममे असफलता ओ विरहक व्यथा मैथिली नवगीतमे बेस भावुक रूपे प्रस्तुत भेल अछि। प्रणयभावक एक अभिनव छटा मायानन्द मिश्रक गीतमे देखल जाय-

अहाँ छी हमर महाजन।
आँखिक मुसुकानक गाहक हम
बदला मे ई जीवन।

राति हम बन्हकी लागल अछि
दिन अछि हमर उधारी,
साँझ अपन हम बेचि रहल छी
भोरुक कोन पुछारी,
जै साँझक नहि भोर बनल अछि
ओहि रातुक छी चानन।

- दिशान्तर, पृ.-40

5. भय आशंका आओर संत्रास- अपन चारूकात पसरल अन्याय, अभाव ओ अनाचारसँ पीड़ित मानवताकेँ देखि कविक आत्मक्रन्दन स्वाभाविक अछि। एहने स्थितिमे ओ काल्पनिक भय, आशंका ओ संत्रासक बोध करैत अछि। नवगीतमे एहन आतंकक भाव ओ बीभत्स छायाभास ठाम-ठाम अभिव्यक्त भेल अछि। मार्खण्डेय प्रवासी लिखैत छथि-

मेघ-वनमे अछि पसाही,
आगि लागल खेतमे,
हम मयूरक नाच करबामे
बहुत असमर्थ छी।
XXXXX

माहुरे बहुमतक रुचि अछि,
अमृत फेकल जा रहल,
मोढ़कैँ बुझनुक बनयबामे
बहुत असमर्थ छी।

- हम भेटब, पृ-26.

6. सामाजिक-राजनीतिक विसंगति-बिडम्बना- आधुनिक जीवनक दैन्य, दुःख, अन्याय, अत्याचार ओ असत्यक उद्घाटन नवकवितामे सर्वाधिक भेल अछि। एहि सामाजिक विसंगतिमे फँसल मनुष्य एकाकी, विवश ओ असहाय बनि गेल अछि। नवगीतमे एहन सामाजिक विसंगतिक विशेष चित्रण भेल अछि। राजनैतिक प्रपंच ओ अनाचारक प्रति आक्रोश भावकैँ अभिव्यक्त करबामे नवगीत विशेष सफलता प्राप्त कयलक अछि। जुग-जीवनक विसंगति ओ बिडम्बनाकैँ गंगेश गुंजन निम्नलिखित पाँतिमे चित्रित कयलनि अछि-

आँखि ई भरि समुद्रक बाट पसरल
कोन-गामक कातमे ओ हाट पसरल
सभ दुःखक जड़ि एहिना रहत जरिते
सभ फुनगी सभ पता डारि पजरल
मोनमे पाथर भरल संसार ठहरल
कहत कैँ ककरा कोनो आब बात पुरना
दूभि केर पेंपीपर बड़क गाछ चतरल।

- मिथिला मिहिर, 04-03-1973

7. एकाकीपन- आधुनिक युगमे मानव-जीवन यंत्रवत भऽ गेल अछि। जनारण्यक बीच रहितहुँ लोक लग अपना समाज ओ परिवार लेल समय नहि छैक। पारिवारिक विखंडन ओ व्यक्तित्वक विघटन ओकरा असंवेदनशील बना देलकै परिणामस्वरूप ओ समाजमे मात्र भीड़ बनि कऽ रहि गेल अछि। एहनामे जखन ओकर संवेदना जगैत छैक तँ ओ भीड़मे स्वयंकैँ सभसँ एकातमे पबैत अछि। मनुष्यक एहन एकाकीपनक अनुभूतिकैँ नवगीत अपन अभिव्यक्ति देलक।बुद्धिनाथ मिश्र एहि अनुभूतिकैँ विलक्षण रूपेँ अभिव्यक्त कयलनि अछि-

चारू कात बसैए विषधर
पोरे-पोर डसल छी
एहि बिखाह जंगलमे हमही
चानन गाछ बनल छी।

XXXXX

ओलतीकैँ चिनबार न सोहबइ
दूनू मे न पटै अछि
फूटल बास रेसनिहार
क्यो नहि एहि गाम भेटै अछि

हम तँ युगक भालसँ
सिनुरक ठोपे जकाँ पोछल छी।

- क्यो नहि दै अछि आगि, पृ.- 77

8. जनसामान्यक प्रतिष्ठा- नवगीतमे जाति, वर्ग ओ सम्प्रदायक महत्वकेँ नकारैत जनसामान्यकेँ प्रतिष्ठित कयल गेल अछि। ओकर आशा-आकांक्षा ओ वेदनाकेँ स्वर देल गेल अछि। वस्तुतः नवगीत समाजक सीमान्त व्यक्ति-समूकेँ सभसँ अधिक महत्व देलक। व्यवस्थाक भ्रष्ट रूप ओ ताहिसँ पीड़ित सामान्यजनक पीड़ाकेँ बुद्धिनाथ मिश्र मार्मिक रूपेँ अभिव्यक्त कयलनि अछि-

दुग्गी-तिग्गी गौआँ सभकेँ बाँटिकेँ
एक्का सभटा
राखि लेलनि परधान।

- क्यो नहि दै अछि आगि, पृ.- 48.

9. दार्शनिक दृष्टिकोण- ऊपर कहल जा चुकल अछि जे नवगीत छायावादी काव्य-परंपराक कतिपय गुणकेँ अंगीकार कयने छल। अतः छायावादी गीतिकाव्ये जकाँ नवगीतहुमे दार्शनिक विचारक गहन अभिव्यक्ति भेल अछि। ई दार्शनिक अवस्था कतहु आत्मविश्लेषणात्मक तँ कतहु रहस्यमय सेहो भऽ जाइत अछि। अनेक ठाम जीवनक निर्थकता ओ 'जगन्मिथ्या'क भाव प्रतिपादित भेल अछि। उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क रचनामे एहन दार्शनिक भाव सहज रूपेँ भेटैत अछि-

माटिक पुतड़ा छी मन्द, माटि-ममता नहि छूटय
'आत्माक ज्योति थिक शाश्वत' - ऊहि कहाँ से फूटय ?
मायाक सृष्टि-सपनाक खेल दिस दौड़ी अनुखन
की भेटि सकल विश्राम छाह ? बौअलहुँ रन-बन

- बाजि उठल मुरली, पृ.-97

10. आंचलिकता ओ नवीन प्रकृति-बोध- प्रगतिवाद ओ प्रयोगवादी गीति सभमे ग्राम्य जीवनक यथार्थक चित्रण हुअय लागल छल। ग्राम्य परिवेशक भौगोलिक विशिष्टता, सभ्यता-संस्कृति, लोकाचार, समभाव, सुख-दुख, जीवन-रीति ओ लोक-परंपरासँ एहि युगक काव्य प्रभावित हुअय लागल छल। नवगीतकार सेहो लोकनि एहि ग्रामीण परिवेश तथा आँचलिक विशिष्टताकेँ अपनओलनि। प्रवासी जीक गीत सभमे एहन चित्र बेस उभरल अछि-

पोखरिमे
लालशरक जोड़ी
रक्त-कमलसँ किछु पुछै' अछि

सितुएमे
बन्न भेल मोती
जल, थल, गगनक मुँह दूसै' अछि
आतुर क्षण भेल अछि सिनूर
चुटकी धरि सिउँथकेँ अनैछ

-हम भेटब, पृ-42.

मैथिली गजल

बीसम शताब्दीक प्रारंभहिमे पं.जीवन झा अपन “सुन्दर संयोग” (“रचना”मे छपल डॉ. रामदेवझा'क आलेख "मैथिलीमे गजल"क अनुसार 1904 ई. मे) नाटकमे मैथिली गजल'क इतिहासक श्रीगणेश कएलनि। तदुत्तर मुंशी रघुनंदन दास, यदुनाथझा 'यदुवर', कविवर सीताराम झा, कविचूडामणि “मधुप” , आदि एहि परंपराकेँ आगाँ बढौलनि। एहि प्रारंभिक गजल सभमे जे सभसँ विशिष्ट तत्व अछि से थिक जे प्रायः अधिकांश आरंभिक गजल बहर, काफिया आ रदीफ संबंधी नियमक अनुपालनमे अरबी बहर (छंद)–विधानक अत्यंत लगीच बुझना जाइत अछि। खासकऽ हिनकर सभक गजल केर प्रत्यके चरणमे (शेरमे) अनुप्रास-योजना (काफिया आ रदीफ) केर विलक्षण प्रयोग भेटैत अछि। उदाहरणस्वरूप 1932मे मैथिली साहित्य समिति, द्वारा काशीसँ प्रकाशित "मैथिली-संदेश"मे मधुप जीक गजल देखल जा सकैए :-

मिथिलाक पूर्व गौरव नहि ध्यान टा धरै छी
सुनि मैथिली सुभाषा बिनु आगियें जड़ै छी

सूगो जहाँक दर्शन-सुनबैत छल तहीँ ठाँ
हा आइ "आइ गो" टा पढ़ि उच्चता करै छी

हम कालिदास विद्या-पति-नामछाड़ि मुँहमे
बाड़ीक तीत पटुआ सभ बंकिमे धरै छी

भाषा तथा विभूषा अछि ठीक अन्यदेशी
देशीक गेल ठेसी की पाँकमे पड़ै छी?

औ यत्र-तत्र देखू अछि पत्र सैकड़ो टा
अछि पत्र मैथिलीमे एको न तैं डरै छी

कहबाक प्रयोजन नहि जे मैथिली गजल अपन बाल्यकालमे बेस सुरेबगर ओ आकर्षक छल। तकर एकटा इहो कारण भऽ सकैत अछि जे मैथिली गजलक जखन बाल्यावस्था छलैक तखन मिथिलामे फारसी एकटा महत्पूर्ण ओ रोजगारपरक भाषा छल आ संभवतः तकरे प्रभावसँ मैथिलीमे गजलक उत्पति भेल। फारसी कचहरीक दस्ताबेजक भाषा, हिसाब-किताबक भाषाक रूपमे प्रचलित छल। महाकवि लालदास आ उपन्यासकार जीवछ मिश्र फारसी'क शिक्षा ग्रहण कएने रहथि। एहिना मिथिलाक एकटा नमहर वर्ग फारसी पढ़ैत-लिखैत होयत ताहिमे कोनो दू-मत नहि होयबाक चाही। तखन पं. जीवन झा कि कविवर सीताराम झा वा मधुप जी आ'कि आन-आन विद्वान लोकनि जे गजल लिखबाक प्रयोग कयलनि, फारसीसँ विधिवत शिक्षित छलाह वा नहि से नहि जानि मुदा, जँ नहियो शिक्षित हेताह तैयो विद्वानक बिच रहैत-रहैत एहि भाषा'क शिल्प ओ विधानसँ परिचित भेल होयताह, तकर प्रयोग अपन-अपन गजलमे कएने हेताह, तकरा अस्वभाविको नहि मानल जा सकैछ। एहि संबंधमे प्रायः जुन 1984 ई.मे "रचना"मे छपल डॉ. रामदेवझा अपन आलेख "मैथिलीमे गजल"मे लिखैत छथि-

"गजलक मार्मिकता ओ लयात्मकता कवि हृदयकेँ सहजे आकृष्ट करैत अछि। मैथिलीयो कवि लोकनि गजल दिश आकृष्ट भेलाह.....अठारहम ओ उनैसम शताब्दीमे गजलक रचना ओ गानक केन्द्र लखनउ,बनारस, इलाहाबाद, दिल्ली, इत्यादि बनि गेल छल। उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध ओ बीसम शताब्दीक प्रारम्भिक चरणमे पारसी थियेटरक जे प्रवाह चलल, ओही संग गजल सेहो सामान्य लोककेँ श्रुतिगोचर भेल। एहन मैथिली कवि जे कोनहु रूपमे फारसी उर्दूसँ संपृक्त छलाह अथवा उपर्युक्त परिगणित केन्द्रमे प्रवासमे रहबाक अवसर प्राप्त एलनि, से सब मैथिलीमे गजल-रचनाक प्रयोग करबाक चेष्टा कयलनि।"

किंतु, मैथिली गजलक बाल्यकाल केर शब्द, शिल्प ओ स्वरूप'क मर्यादासँ बान्हल सुसंस्कारी स्वभाव एकर किशोरावस्था अबैत-अबैत जेना अल्हड़पनमे बदलि गेल। जतय एकर भाषायी ओ व्याकरणक स्वरुपक निर्धारण हेबाक चाही छलैक ततय घोषित भेल जे मैथिलीमे गजल कहब (लिखब) संभवे नहि। वैकल्पिक रूपेँ गीतल कहि एकटा नव काव्य संरचना प्रतिपादित कएल गेल। एह प्रसंग मायानन्द मिश्र लिखैत छथि-

"गीतल परम्परागत गीत नहि थिक, एहिमे एकटा सुर गजल केर सेहो लगैत अछि। गीतल गजल केर बंधन (सर्त) केँ स्वीकार नञि करैत अछि। कइयो नञि सकैत अछि। भाषाक अपन-अपन विशेषता होइत अछि जे ओकर संस्कृतिक अनुरूपे निर्मित होइत अछि। हमर उद्देश्य अछि मिश्रणसँ एकटा नवीन प्रयोग। तैं गीतल ने गीते थिक, ने गजले थिक; गीतो थिक आ गजलो थिक। किन्तु गीतितत्वक प्रधानता अभीष्ट तेँ गीतल।"[17]

मायाबाबू एक दिस जतय मैथिली भाषाकेँ गजलक हेतु उपयुक्त नहि मानलनि। ओ गजल आ गीतक समिश्रणसँ नव गीति शैली अपनलओनि जाहिमे गजलक छन्द-बन्धन ओ अन्य व्याकरण-सिद्धान्तक अनुपालन आवश्यक नहि अछि। 'अवान्तर'मे हिनक पच्चीस गोट गीतल संग्रहित भेल अछि जे अपन उत्कृष्ट भावबोध ओ लयात्मकताक हेतु मैथिली गीतिकाव्यक निधि थिक। उदाहरणस्वरूप एकटा गीतलक किछु पाँति एतय प्रस्तुत अछि-

सुनैत छी, नगर अहाँक बहुत सनकल अछि

कते बबूर मे, कतेक ऊँट लटकल अछि।

सुनल नगर मे जंगलो बनैछ लोके केर
हँसीक रंग धरि सियाह सुनल, खटकल अछि।

-अवान्तर, पृ.-14

मुदा हिनक ई प्रयोग बहुत स्वीकार्य नहि भेल। एहि मान्यताक विरुद्ध सेहो किछु प्रगतिशील साहित्यकार लोकनि ठाढ़ भेलाह। मुदा, इहो लोकनि अरबी बहर-विधान आ मैथिलीक पारंपरिक छंदशास्त्रक अनुशीलन कए एहि दुनूक मध्य कोनो तरहक सामंजस्य स्थापित नहि कए सकलाह। फलतः मैथिली गजल व्याकरणहीन रहल आ हिनकर सभक गजल काफिया मिलानी धरि सीमित भऽ गेल। एहि संबंधमे उक्त आलेखमे डॉ. रामदेव झाक उक्ति देखू-

"हालक विगत किछु वर्षमे गजल**-**रचनाक प्रवृतिक पुनर्जन्म भेल अछि आ से एकटा प्रवाह अथवा फैसनक रूपमे परिवर्तित भऽ गेल अछि। एहि क्षेत्रमे किछु प्रौढ़ ओ विशेषतः युवा पीढ़ीक कवि गजल रचना करैत जा रहल छथि**.....**हिनका लोकनि गजलमेसँ किछुमे अवश्ये गजलत्व अछि। परन्तु अधिकांश कँ गजल**-**शैलीमे रचित गीत**-**मात्र कहल जाय तँ अनुपयुक्त नहि होयत।**"**

उत्तम भावाभिव्यक्तिक अछैतो ई गजल सभ वर्तमान गजलशास्त्रक आधारपर ठाढ़ नहि भऽ पबैत अछि। ओना एहिमे किछु गजलकार एहनो छथि जे स्वयं स्वीकार करैत छथि जे उचित छंदशास्त्रक अभावमे हुनकर सभक रचनामे एहन त्रुटि रहि गेल। मुदा, किछु एहनो व्यक्ति छथि जे एखनो गजलक नव-विधानकेँ स्वीकार करबा लेल तैयार नहि छथि। एहिठाम एहि पिढ़ी'क गजलकार'क कृतित्वक समालोचककेँ इहो ध्यान रखबाक चाही जे एहि समयमे मैथिलीमे गजल संबंधित व्याकरण उपलब्ध नहि छल। संभव जे किछु साहित्यकार वर्ग जीवन झा, सीताराम झा आदिक गजलकेँ प्रेरक स्रोततऽ मानैत रहलाह मुदा, अरबी बहरक प्रयोगसँ मात्र एहि हेतु परहेज कएने रहलाह जे ओ सिद्धांत आन भाषासँ आयातित होयत।

कारण जे कोनो होउ मुदा परिणाम एतबे अछि जे उत्कृष्ट विषय-वस्तुक अछैतो मैथिली गजल विश्वक आन-आन भाषा'क गजलक समकक्षी नहि बनि सकल। एक सय बरखक इतिहासक अछैतो मैथिली'क अंगनामे अपरिचिते जकाँ जिबैत रहल। एकर मुख्य कारण अछि जे पहिने गजलक प्रति दुराग्रह भाव ओ पश्चात एकर आग्रही रचनाकार लोकनि सेहो एकर आत्माकेँ नहि पढ़ि सकलाह। तखन एहि पूर्ववर्ती (गजलक पक्षधर) सभक एतबा योगदान त' नहि नकारल जा सकैत अछि जे ई सभ मैथिली-गजलकेँ जियौने रहलाह। मैथिलीमे गजलक संभावना बचल रहल आ तकरे प्रतिफल थिक जे विगत किछु दशकमे मैथिली गजलक विकासक प्रति गजलकार लोकनि तत्पर भेलाह अछि आ समकालीन युगबोधसँ परिपूर्ण असंख्य गजलक रचना भेल अछि, अनेक गजल संग्रह प्रकाशित भेल अछि।

विगत शताब्दीमे, स्वातंत्र्योत्तर कालमे मैथिली गजलक विकास हेतु रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सियारामझा 'सरस', तारानन्द वियोगी, योगानन्द हीरा, बाब बैद्यनाथ, कलानन्द भट्ट, रमेश, देवशंकर नवीन, विजयनाथ झा, बिभूति आनन्द आदिक प्रयास सराहनीय रहल अछि। एकैसम शताब्दीमे मैथिली गजल अपन नव स्वर, नव कलेवरक संग सोझाँ आयल अछि , जकर विस्तृत चर्च अगिला अध्यायमे होयत।

आधुनिक भक्ति-गीति

मैथिली साहित्यमे भक्ति गीति रचनाक परम्परा अत्यंत प्राचीन ओ समृद्ध रहल अछि। सिद्ध साहित्यसँ लऽ कऽ उनैसम शताब्दीक अंत धरि मैथिली भक्ति-गीतिक अविरल धारा बहैत रहल जाहिमे कवि अपन इष्टदेवक प्रति श्रद्धावनत होइत रहलाह, हुनक शृंगारिक ओ विविध लीला विषयक रचनाक माध्यमे परमानन्द प्राप्त करैत रहलाह। विद्यापति युगमे आबि कृष्णकाव्य रचनाक युगान्तकारी परम्परा आरम्भ भेल जे सैकड़ो वर्ष धरि अक्षुण्ण रहल। मुदा बीसम शताब्दीमे ई धारा क्षीण क्रमशः क्षीण हुअय लागल। आब कवितामे लौकिक विषयक वर्णन हुअय लागल। तथापि कवीश्वर चन्दाझा ओ लालदास रामकाव्य रचनाकेँ नवजीवन प्रदान कयलनि। मिथिलाक रामाश्रयी सम्प्रदायक सन्त ओ भक्त लोकनि सीताराम विषयक गीति रचना कयलनि। स्नेहलता, मोदलता एहि धाराक अग्रणी गीतकार भेलाह। पारम्परिक धुन ओ संस्कार गीतिक शैलीमे सेहो प्रचूर रचना भेल। अन्यान्य देवी-देवताकेँ समर्पित गीत सेहो खूब लिखल गेल।

एहि अवधिमे मुख्यतः वन्दना, भजन,झूला, रास, प्राती, सोहर, महेशवाणी आदि पारम्परिक गीति समेत समसामयिक ओ समाजसापेक्ष मुक्तक गीतिक रचना भेल। उदाहरणतः श्रीमति चन्द्रप्रिया श्यामा बहुआसिनी रचित एकगोट प्रातीक किछु पंक्ति द्रष्टव्य अछि-

वंशीनाद करत मनमोहन
मन थिर रहलो ने जाय।
खगमृग मीन अधीन भयल सुनि
अपनो गति विसराय।
सुनि वंशी व्रजवनिता घायल
लोक लाज कुल त्यागि
'श्यामा' निश दिन आश करथि हरि
प्रेम भक्ति रस लागि।

आधुनिक युगमे भक्तिकाव्य रचयिता कविमे चन्दाझा, जीवन झा, यदुनाथ झा यदुवर,काशीकान्त मिश्र 'मधुप',सुरेन्द्र झा सुमन श्रीप्रभुनारायण प्रदीप', नन्दिनी देवी, श्रीमति चन्द्रप्रिया श्यामा बहुआसिनी अग्रणि रचनाकार छथि। परवर्ती पीढ़ीमे रवीन्द्रानाथ ठाकुर डॉ. कृष्णचन्द्रझा मयंक, डॉ. चन्द्रमणि आदि प्रचूर मात्रामे भक्ति काव्य लिखलनि।

मधुप जी फिल्मी तर्जपर भक्ति गीतक रचना कयलनि जे खूब लोकप्रिय भेल । तहिना प्रभुनारायन प्रदीप'क अनेक गीत लोकक ठोढ़पर अद्यावधि राज कय रहल अछि । हिन जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर, एक घाट तीन वाट, एवं गीतक फुलवारीमे संग्रह प्रकाशित अछि जाहिमे भक्ति गीत संग्रहित अछि।

एवंप्रकार स्पष्ट होइत अछि जे बीसम शताब्दी मैथिली गीतिकाव्यक विकासक दृष्टिकोणसँ अत्यंत महत्वपूर्ण कालखण्ड थिक जाहिमे एकर आधुनिक स्वरूपक निर्माण भेल । एहि शतकमे मैथिली गीति-धारामे अनेक परिवर्तन आयल । उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे गीतिकाव्य रचनामे नवीनता अनबाक जे सूत्रपात कवीश्वर चन्दाझा कयलनि से एहि शताब्दीक अंततक पूर्णतः नवीन कलेवरक संग उपस्थित भेल । बीसम शताब्दीमे मैथिली गीतिक विकासमे जे गीतकार अपन योगदान देलनि तथा जे गीतसंग्रह सभ प्रकाशित भेल अछि ताहिपर आगाँ विस्तृत विचार कयल जायत।

*****

[1] मैथिली नऽव कविता, डॉ. रमानन्द झा 'रमण', शेखर प्रकाशन, पटना, पृ.-14.

[2] मैथिली नऽव कविता, उपर्युक्त, पृ.-14.

[3] उपर्युक्त, पृ.-16.

[4] उपर्युक्त, पृ.-17.

[5] उपर्युक्त, पृ.-21.

[6] उपर्युक्त, पृ.-21.

[7] नवीन मैथिली कविता, डॉ. रमानन्द झा 'रमण, मैथिली अकादमी पटना, पृ.-53 सँ उद्धृत

[8] सीमान्त, कीर्तीनारायण मिश्र, पृ.-5

[9] मैथिली साहित्यक इतिहास, मायानन्द मिश्र, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, पृ.-243.

[10] क्यो नहि दै अछि आगि, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, सृजन प्रकाशन, पृ.- XIII.

[11] मैथिली साहित्य ओ राजनीति, डॉ. रमानन्द झा 'रमण', अखियासल प्रकाशन, पृ-86.

[12] आधुनिक गीतिकाव्य, डॉ. उमाशंकर तिवारी, वाणी प्रकाशन, पृ-359

[13] मधुपक बीछल बेरायल कविता, साहित्य अकादेमी, सं- फूलचन्द्र झा प्रवीण, पृ.- 31.

[14] मैथिली साहित्य ओ राजनीति, पूर्वोक्त- 12, पृ-87

[15] उपर्युक्त, पृ-87

[16] उपर्युक्त, पृ-88

[17] अवान्तर, मायानन्द मिश्र, मैथिली चेतना परिषद, सहरसा, पृ.-6

षष्ठ अध्यायः समकालीन मैथिली गीतिकाव्य

प्रत्येक कालखण्डक अपन निजी विशेषता होइत छैक। प्रत्येक कालखण्ड अपन पूर्ववर्ती कालखण्डसँ स्वाभाविक रूपेँ अधिक विकसित आ अधिक चेतना सम्पन्न सेहो होइत अछि। परवर्ती पीढ़ी अपन पूर्ववर्ती पीढ़ीसँ जे सिखैत अछि ताहि आधारपर अपन युगकेँ सजयबाक चेष्टा करैत अछि आ एहि प्रक्रियामे किछु नव करबाक ओकर लिलसा, ओकर जीवनक किछु नव आवश्यकता सेहो सोझाँ अबैत छैक। एतहि ओकर विकास-यात्रा आरम्भ होइत छैक आ एहि प्रकार एकटा नव कालखण्डक रूपरेखा निर्धारित हुअय लगैत अछि।

मानव सभ्यताक इतिहासमे, खास कऽ भारतीय परिप्रेक्ष्यमे बीसम शताब्दीक आगमन एहने वातावरणमे भेल जखन एतुका लोक अपन नव आवश्यकताक पूर्ति हेतु किछु नव करबाक हेतु, किछु नवीन गढ़बाक हेतु छटपटा रहल छलाह। एहि छटपटाहटिक पृष्ठभूमिमे छल परम्पराक जड़तासँ मुक्तिक अभिलाषा आ स्वातंत्र्य-चेतना। अंग्रेजी सभ्यताक डेढ़ सय वर्षक राजनीतिक दासतासँ आक्रान्त भारतीय समाज ओकर सभक यांत्रिक सभ्यतासँ जखन परिचय पओलक तँ एतुका सामन्ती व्यवस्था आधारित मध्ययुगीन जीवन-व्याकरणक नियम-कायदा ध्वस्त हुअय लागल आ सम्पूर्ण देशमे क्रमशः नवजागरणक लहरि उठय लागल। सांस्कृतिक ओ प्रगतिकामी चेतनाक बीज सामान्य जनमानसमे अंकुरित हुअय लागल। लोक आब स्थापित मान्यतापर शंका करबाक दृष्टि पओलनि। फलतः वैज्ञानिक आविष्कारसँ एतुका जीवनकेँ गति भेटल। वैज्ञानिक विकास जीवनक हरेक पक्षकेँ प्रभावित करय लागल। जड़ताक विरुद्ध लोक ठाढ़ हुअय लागल। सामाजिक समस्याक निवारण हेतु अथवा असामाजिक तत्वक विरोधमे वृहद् समाजक लोक संगठित हुअय लागल। लोक आब संगठनक शक्तिसँ आर नव रूपमे परिचित छलाह आ तकर उपयोग देश-समाजक हित लेल करबाक हेतु तत्पर छलाह। स्वाधीनता आन्दोलनक सफलतासँ उत्साहित लोककेँ विश्वास भऽ गेल छलनि जे संगठन-शक्तिक बलपर पैघसँ पैघ समस्याक समाधान ताकल जा सकैत अछि, एकत्रित प्रयाससँ पैघसँ पैघ लक्ष्य हासिल कयल जा सकैत अछि।

जखन भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन चरम पर छल प्रायः तखनहि एहि देशक साहित्यधारामे नव-नव सामाजिक सरोकार सेहो सन्हियाल, रूढ़ि-भञ्जनक प्रयास आरम्भ भेल आ अन्यान्य भारतीय भाषा जकाँ मैथिली भाषा-साहित्यमे सेहो एकटा नव विचारधारा मुखरित भेल जे पहिने छायावादी आ पश्चात प्रगतिवादी ओ प्रयोगवादी प्रवृतिक रूपमे विकसित भेल। देशक राजनीतिक, धार्मिक मान्यता, अर्थव्यवस्था, सामाजिक ओ

मानवीय मूल्यमे जे परिवर्तन आयल, साहित्यिक पटलपर तकर चित्रण अवश्यंभावी छल आ से क्रमशः एकटा नव आन्दोलनक रूप धारण कयलक। युगीन जटिलता, अंतर्विरोध, वैयक्तिक अंतर्द्वन्द्वकेँ सोझरयबाक तथा युग-जीवनक विसंगति ओ बिडम्बनाक उद्घाटनक साहित्यिक प्रयास 'नव-लेखन'क रूपमे सोझाँ आयल जाहि अन्तर्गत आब रचनाकार लोकनि जीवन-जगतक कोनो टा नीक-बेजाय पक्षकेँ झाँपि कऽ रखबाक पक्षमे नहि छलाह। नवलेखन अपन पूर्ववर्ती लेखकीय परम्परासँ भिन्न एक पृथक सर्जना-रीतिकेँ अपनौलक।

मुदा, स्वतन्त्रता आन्दोलनक अभ्यंतर स्वदेश-प्रेमक तरमे प्रगतिशीलता दबल रहि गेल तहिना एहि समयमे भारतीय दर्शनक सिद्धान्त "बसुधैव कुटुम्बकम्" सेहो व्यवहारतः संकुचित भऽ गेल। पुनः स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद "विश्वगुरू"क बदला "सुपर-पावर" कहायब भारतीय चिन्तक लोकनिक अभिष्ट बनि गेलनि आ क्रमशः "प्रगतिशीलता" विचारधारासँ "आधुनिकता"क भौतिकतामे परिणत होइत चल गेल। एतहिसँ वर्ग-संघर्षक नव शुरूआत सेहो भेलैक आ नवतावादी लोकनिक बाँहि पुरबाक लेल वामपंथीक सेहो सशक्तिकरण भेल। मुदा, एहि वर्ग-संघर्षक सह-उत्पादक रूपमे समाजमे एकटा नव "दलाल"वर्गक उदय भेलैक जे ने केवल दलित-शोषित हक मारलकै बल्कि व्यवस्थामे भ्रष्टाचारक विष सेहो घोरलक। क्षेत्रवाद, सम्प्रदायवाद, आतंकवाद आदि कट्टरता पसरल।

स्वाधीन भारतमे राजनीतिक छल-प्रपंच, स्वार्थपरता तथा राजनेता द्वारा सामाजिक वातावरणकेँ विषाक्त करबाक कुत्सित प्रयास नवलेखनमे व्यवस्थाक प्रति अनास्था, असंतोष आ अविश्वासकेँ जन्म देलक। धनाढ्य ओ शक्तिसंपन्न वर्ग गरीब-वंचितक जे शोषण कऽ रहल छल तकरा प्रति विद्रोहक भावनाकेँ नव लेखखगण अभिव्यक्ति देलनि। ई विद्रोह भाव ध्वंसात्मक नहि छल अपितु ई नव समाजक निर्माणक एकटा सकारात्मक प्रयास छल। नवलेखन एहि सकारात्मक पक्षकेँ मैथिली गीतिकार लोकनि खूब रूचिपूर्वक अपनओलनि आ नवगीत परम्पराक अन्तर्गत तकरा स्वर देलनि। एहि क्रममे हुनका लोकनिक नजरि मिथिलाक स्थानीय समस्या यथा रौदी-दाही, किसानक बदहाली, अशिक्षा, बेरोजगारी ओ मानवीय मूल्यक क्षरणपर सेहो गेलनि। ओ लोकनि समाजमे व्याप्त बौद्धिक पाखण्डक पर्दाफाश कयलनि। जीवनक कटु-मधु अनुभवक यथार्थ चित्रण करब उचित बुझलनि।

सत्तरिक दशकक छात्र-आन्दोलन आ आपातकाल मैथिली नवगीतकार लोकनिकेँ आन्दोलित कयलकनि। ओ लोकनि व्यवस्था-परिवर्तनक पक्षमे आर अधिक मुखर भेलाह। संगहि राजनीतिक ओ सामाजिक विसंगति एवम् राजनीतिज्ञक आचरण ओ समाजमे पसरैत आपराधिक प्रवृतिपर आर अधिक सूक्ष्मतासँ विचार कयलनि, आर अधिक कठोरतासँ प्रहार कयलनि। व्यवस्थाक अराजकताक विरुद्ध आर अधिक मुखर भेलाह।

नब्बेक दशकमे भूमण्डलीकरण ओ नव बाजारवादक जखन चलनि भेल तँ गीतिकार लोकनि अपन क्षेत्रीय अस्मिताक संरक्षणक प्रति सतर्क भेलाह। एहि समयमे दलित चेतना, भाषायी अस्मिता, सामाजिक सौहार्द, सम्बन्धक विघटन, वंशवाद, लूट-हत्या-अपहरण, पूँजीवादी अर्थव्यवस्थाक दुष्परिणामक आशंका ओ तकर विरोध तथा आयातित संस्कृतिक प्रसारक विरोधक स्वर मैथिली गीतिकाव्यमे मुख्यतः मुखरित भेल।

तहिना भ्रष्टाचार, स्त्रीपर अत्याचार, यौनाचार, पलायानक दंश आदिसँ मर्माहत मैथिली नवगीतकार लोकनि, एहि समस्या सभसँ त्राण पयबाक बाट ताकय लगलाह। मिथिलाक आँचलिक सौन्दर्य-वर्णन, अपन संस्कृतिक महिमागान, बन्धुत्व ओ मानवताक कामना, विश्वप्रेम, सर्वहाराक सर्वांगीण विकासक आकांक्षा, श्रम ओ संघर्षक जयगान आदि एहि कालखण्डक मैथिली गीतिकाव्यक प्रमुख सकारात्मक स्वर थिक। बीसम शताब्दीक एहि वैचारिक खण्डन-विखण्डनसँ समकालीन-साहित्यक प्रवृति सेहो अप्रभावित नहि रहि सकल अछि। समकालीन अर्थात् एकैसम शताब्दीक मैथिली गीतिकाव्य सेहो विगत शताब्दीक अपन एहि पृष्ठभूमिसँ मुक्त नहि भऽ सकल अछि।

एकैसम शताब्दीमे मैथिली गीतिकाव्य

एकैसम शताब्दी जीवनक हरेक क्षेत्रमे नव संभावना आ नव चुनौती लऽ कऽ आयल। वैश्वीकरण आ संचारक्रान्ति एहि सदीक दू-गोट महत्वपूर्ण घटना थिक जकर परिणामस्वरूप आइ समूचा संसार विश्वग्राममे परिणत भेल सन प्रतीत भऽ रहल अछि। आइ जँ मानवकेँ विश्वक कोनो एक कोनमे कोनोटा उपलब्धि प्राप्त होइत छैक अथवा कतहु कोनो घटना-दुर्घटना घटित होइत छैक तँ ओकर सूचना-प्रभाव संसारक अन्यान्य भागधरि किछु क्षण मात्रमे पहुँचि जाइत अछि आ सम्पूर्ण मानवजातिक तदनुकूल प्रतिक्रिया हमरा लोकनिक समक्ष आबि जाइत अछि। एहन संवाद-स्थापनासँ आइ विश्वभरिक मानव, समुदाय आ सभ्यता जेना एक कड़ीमे आबद्ध भेल सन प्रतीत होइत अछि। भौगोलिक सीमासँ पृथक प्रत्येक व्यक्ति आइ विश्वमानव बनि चुकल अछि। मुदा सभ्यताक यैह उपलब्धि आजुक युगीन त्रासदी सेहो बनि रहल अछि।

एकैसम शताब्दीक आरम्भहिसँ संचार-क्रान्तिक बाद सम्पूर्ण विश्व जेना एकटा गाममे परिणत भऽ गेल अछि। एहि संचारक्रांतिक युगमे "वसुधैव कुटुम्बकम"क भावना कतेक बचल छैक से तऽ नहि कहि मुदा, "बसुधैव ग्रामम्" अवस्से चरितार्थ भऽ रहल अछि | वैश्वीकरण आ बाजारवादक परिधिमे संपूर्ण विश्व एकटा गाम सदृश बनि गेल | विभिन्न संचार माध्यम, खासकऽ टेलीफोन आ' इंटरनेट, विश्वक कोण-कोणमे बसल लोकक बीच संवाद स्थापित करबाक अलावे सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भमे रचनात्मक उद्देश्यक लेल सेहो प्रयुक्त भऽ रहल अछि | आइ-काल्हि 'सोशल साइटस' तऽ जेना लोकक जीवनमे अपरिहार्य भऽ गेल छैक | भारतीय परिप्रेक्ष्यमे एतबा दिन ई मात्र नगरे धरि सिमित छल किंतु आब गाम-गाम धरि सेहो पसरल जा रहल अछि | वर्तमानमे ट्वीटर,फेसबुक सन सोशल साइट्स सामाजिक परिवर्तनक लेल लोकक मध्य संवाद स्थापित करबाक बास्ते एकटा सशक्त माध्यमक रूपमे सोझाँ आयल अछि | मुदा, विश्व-ग्रामक अवधारणाक अछैतो आब "बसुधैव कुटुम्बकम्" बला आपकता नहि रहि गेलैक। पछिला पचास-साठि बरखमे मानवीय-मूल्य सभसँ द्रुत गतिएँ ह्रासित भेल अछि, मानव मात्र क्रेता-विक्रेता कि उपभोक्ता बनि गेल अछि। कखनो-कखनो मानवीय व्यवहारक विद्रूपता तऽ जेना मानवक सामाजिक प्राणी हेबाक परिकल्पनेकेँ ध्वस्त करैत प्रतीत होइत अछि। भूमण्डलीकरणक कारणे सूचनाक स्तरपर हमरा लोकनि विश्वभरिमे एकदोसरासँ निकट तँ अयलहुँ अछि मुदा पारस्परिक आत्मीय सम्बन्धमे लगातार विघटन आबि रहल अछि। जीवनक अन्तर्द्वन्द्वमे ओझरायल मानवक

चिन्ता-चिन्तनक, सीमा-बन्धनक आ मुक्ति-आकांक्षाक चित्रण साहित्यमे होयब स्वाभाविक अछि। समकालीन मैथिली गीतिकाव्यमे एहन अनुभूति-चित्रण प्रचूर मात्रामे भेल अछि।

समकालीन मैथिली गीतिकाव्यक स्वर-वैविध्य

एकैसम शताब्दीमे मैथिली गीतिक स्वरूपमे बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्धक गीति-रचना शैलीक अपेक्षा कोनो परिवर्तन एखनधरि नहि आयल अछि। मुदा एकर स्वरमे अनेक परिवर्तन आयल अछि। भक्ति, संस्कार, प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति वर्णन ओ मंचीय प्रस्तुतिक अनुकूल विषय-वस्तु आधारित गीतिक रचना-परम्परा जतय एकदिस अविच्छिन्न अछि तँ दोसर दिस साहित्यिक दृष्टिकोणसँ अनेक स्वर-वैविध्य समकालीन मैथिली गीतिमे दृष्टिगोचर होइत अछि।

एकर संघर्ष चेतनामे विगत शताब्दीक अनास्था ओ विद्रोहक भाव कनेक नरम पड़ल (पूर्णतः समाप्त नहि भेल) अछि। मैथिली गीतिकाव्य आब विकासक आस ओ उमेदक प्रकाश लऽ अपन अधिकार ओ उद्देश्यप्राप्तिक लेल संघर्षरत समाजक, श्रमिकक सम्वेदनाक विवेकपूर्ण चित्रण लेल उद्यत भेल अछि। आजुक गीति मानव जीवनकेँ बेहार करयबला समस्या, मानवीय व्यक्तित्व ओ संवेदनाकेँ क्षीण करयबला शक्ति तथा मनुष्यक दुष्प्रवृत्तिक पहचान कऽ ओहिसँ मुक्त होयबाक बाट तकैत अछि, संगहि सामाजिक व्यवस्थाक ओहि कारक सभकेँ प्रश्नांकित करैत अछि जाहि कारणे मनुष्य जीवन दूभर भेल जा रहल छैक। एकरा स्वरमे ग्राम्य-गौरव ओ मिथिलाक सांस्कृतिक मूल्यक नवरूपमे पुनर्स्थापनाक भाव मुखर भेल अछि। समकालीन मैथिली गीत देश-समाजक सर्वांगीण विकासक हेतु आवाज उठबैत प्रतीत होइत अछि।

वैश्वीकरणक युगमे प्रायः सभ क्षेत्रक लोक अपन आँचलिक जीवन-संस्कृतिक परिचितिक संरक्षण हेतु पहिनेसँ अधिक सचेत भेल अछि। मैथिली गीतिकाव्य सेहो अपन आँचलिकताक विविध आयामकेँ पुनर्प्रतिष्ठित देखय चाहैत अछि। आ से तखने सम्भव छैक जखन एतुका गामक जीवन-व्याकरण सुरक्षित रहत। गीतिकार लोकनि अपन गाम, अपन मातृभूमिक सरोकार-सम्वेदनाकेँ जनबाक लेल जखन गामक जिनगीक विविध पक्षकेँ सूक्ष्मतासँ अध्ययन कयलनि तँ हुनका गामक दुर्गति, अभाव, राजनीतिक छद्म, प्रपंच, शोषण आ संघर्ष, नारीक दूरावस्था, मूलभूत सुविधाक अभाव आ शहरी चकाचौन्धसँ आकर्षित गामक लोक भेटलनि। स्वाभाविक रूपेँ ई सभ विषय-वस्तु समकालीन गीतिकाव्यक प्रमुख स्वर बनि उभरल अछि। एकैसम शदीक आदर्श गामक तत्वबोध, विकास ओ सौन्दर्यक मीमांसा प्रायः सभ समकालीन गीतिकार लोकनि अपन रचनाक माध्यमे कयलनि अछि।

पलायन एहि शताब्दीक गामक एक प्रमुख समस्या रहल अछि। विगत शताब्दीक उत्तरार्द्धमे ग्रामीण अर्थव्यवस्था निरन्तर अधोमुखी भेल। एहनामे गामक लोक रोजी-रोटीक खोजमे शहर-महानगर दिस पलयान करबाक लेल विवश भेलाह। एहि पलायनसँ शहरमे मजदूर बनल मिथिलाक गामक लोक अपन डीह-डाबर, खेत-पथार आ भाषा-संस्कृतिसँ कोन तरहेँ अलग भऽ गेल छथि, एहि अलगावक टीस कतेक गहींर छैक तकर अनुमान समकालीन गीतकारकेँ छनि।

जीवनक प्रति आस्था, जिजीविषा आ सत्यक प्रति निष्ठाक भाव एहि सदीक गीतिमे आर गाढ़ भेल अछि । नवगीतकार लोकनि अनेक विपरीत परिस्थितिक अछैतो बेर-बेर जीवनक गीत गबैत छथि । मानवतावादी जीवन मूल्यक पक्षमे ठाढ़ भऽ कऽ मानवक उज्ज्वल भविष्यक कल्पना करैत छथि।

विगत शताब्दीक अन्तिम दशकमे आर्थिक क्षेत्रमे अनेक एहन नीति अपनाओल गेल जाहिसँ भारतीय अर्थव्यवस्थाकेँ विश्वक लेल खोलल जा सकय। एहि उदारवादक उद्देश्य छल जे एहिसँ देशक माली हालतमे सुधार होयत आ लोककेँ रोजगार भेटत, समावेशी विकासक बाट प्रशस्त होयत । मगर बाजारवादी शक्ति सुधारक लोकनिक सपनाकेँ चूर-चूर कऽ देलक। देशक आर्थिक उन्नयन तँ अवश्य भेल मुदा समाजक आर्थिक संरचना आर अधिक अस्त-व्यस्त आ असंतुलित होइत चल गेल । बाजार पैघ-पैग औद्योगिक घराना आ निगमक चाँगुरमे फँसि गेल, विदेशी पूँजी निवेशक आ कारोबारीक प्रभावमे आबि गेल। अधिकसँ अधिक लाभ कमायब मात्र समूचा आर्थिक तंत्रक मूल उद्देश्य बनि गेल। परिणामस्वरूप धनिक आ गरीबक बीचक दूरी आर बढ़ि गेल । सीमान्त लोकक जीवन आर संघर्षमय भऽ गेल । गीतिकार लोकनि लोकक एहि संघर्षगाथाकेँ सफलता पूर्वक अपन रचनामे उजागर कयलनि अछि, समकालीन गीतिकाव्यमे बाजारवादक एहि खेल-बेलकेँ देखार कयल गेल अछि ।

भ्रष्टाचार विगत दू दशकमे एकटा पैघ मुद्दा रहल अछि जकर विरोधमे समाज बेर-बेर उद्वेलित भेल, कतिपय बेर सत्ता-परिवर्तन भेल। मुदा आब तँ जेना शासन-प्रशासनमे ई कुकृत्य एकटा परम्परा बनि गेल अछि। राजनीतिक दल जनताकेँ एहिसँ उबाड़बाक स्वप्न देखाय रहल छथि, आ ओकर वोट पाबि अपन सिंहासन कायम रखने छथि। ई छद्म जनता सेहो बूझि रहल अछि आ बेर-बेर तकर प्रतिकारक उपाय तकबाक प्रयास सेहो कऽ रहल अछि मुदा ओकरा सभ बेर निराशा हाथ लगैत छैक, सभ बेर ओकरा विश्वासघातक सामना करय पड़ैत छैक। एहनामे ओकर निराश होयब स्वाभाविक मुदा गीतिकार लोकनि बेर-बेर अपन संघर्षक स्वर तेज करैत छथि, जनताकेँ भरोस दैत छथि, ओकर संघर्षकेँ बल दैत छथि।

समाजमे व्याप्त दैन्य, दुःख, अन्याय, अत्याचार आ असत्यक विरुद्ध लोककेँ संगठित नहि हुअय देबाक लेल सत्ता सदैव अपन छल-बलक प्रयोग करैत रहैत अछि। जातिवाद आ सम्प्रदायवादक कट्टरता एहने उपक्रम थिक। जातिवाद ओ सम्प्रदायवाद समाजकेँ खण्ड-खण्डमे बाँटि रहल अछि। धार्मिक कट्टरता आइ समूचा विश्वमे आतंकवादी स्वरूप ग्रहण कयने जा रहल अछि आ मानवतापर गंभीर संकट उत्पन्न कऽ रहल अछि। मुदा गीतिकार लोकनि तकर विरुद्ध मुखर छथि आ जनसामान्यकेँ एहि छद्मक असलियतसँ परिचय करयबाक कोनो टा प्रयास कि अवसर नहि चूकय छथि। उदाहरणस्वरूप तारानन्द वियोगीक गीतक किछु पाँति द्रष्टव्य अछि-

यौ भाइजी किए लड़ै छी जाति-धरम के नाम पर
घुरियौ अप्पन ठाम पर यौ।
एक्के चान-सुरुज ओ तारा
एक्के धरती माँक सहारा

जलमे किसिम किसिम के मोती
लेकिन एक्के कूल किनारा।
यौ भाइजी, एके बात लागू छै अल्ला राम पर
घुरियौ अप्पन ठाम पर यौ।

(अपन युद्धक साक्ष्य, 2017 पृ.-101)

एकर अलावे जीवनमे संबंधक विसंगति, आधुनिक सोचसँ उत्पन्न अतरद्वंद्व एवं कोलाहल, आम स्त्रीक जीवनक विविध पक्ष, नवीन जीवन-पद्धतिमे विस्मृति होइत परिवार, सफलताक घोड़दौरमे बाझल युवा जीवनक बेचैनी, असफलताक स्थितिमे युवा पीढ़ीक अपराधक प्रति झुकाव, आधुनिक जीवन-शैली आ भौतिक विकासक दुष्परिणामसँ उत्पन्न पर्यावरण संकटक चिन्ता-बोध, मँहगी, सुविधाक अभाव, बेरोजगारी, अशिक्षा, यौन-अपराध, क्षद्म, प्रपंच, राजनीतिक मूल्यक स्खलन, मानवीय मूल्यक पतन आदि समकालीन मैथिली गीतिक मुख्य वर्ण्य-विषय थिक।

समकालीन मैथिली गीतिकाव्यक निशानापर ओ व्यवस्था अछि जे समाजमे समानता आ बन्धुत्वक मार्गमे बाधक बनल ठाढ़ अछि। जे अपन वर्गीय स्वार्थपरताक कारणे वास्तविकताक मूल्यांकनक वातावरण ओ औजारकेँ समाप्त करबाक व्योंतमे अछि। समकालीन मैथिली गीतिकार लोकनि खूब साकांक्ष भऽ कऽ समय आ समाजक मूल्यांनमे लागल छथि। ओ लोकनि एहन समस्त प्रयास आ विचारकेँ निर्मूल करबामे लागल छथि जाहिसँ मानवक विकास, सामाजिक प्रगति अबरुद्ध होइत अछि। आजुक मैथिली गीति सामाजिक समताकेँ हतोत्साहित करयबला प्रत्येक नीति, नीयत आ नियंताक विरोधमे ठाढ़ होइत अछि। आजुक मैथिली गीति समाजक ओहन लोकक नेतृत्व करैत अछि जे हाशियापर अछि, जे दलित-प्रताड़ित अछि, जकर पक्षधरता बौद्धिक वर्गक दायित्व थिक।

निष्कर्षतः कहल जा सकैत अछि जे समकालीन मैथिली गीतिकार एक संग अनेक मोर्चापर संघर्ष कऽ रहल छथि। एकदिस जतय ओ वैश्वीकरणसँ उपजल अपसंस्कृति आ ताहि कारणे निज सांस्कृतिक परिचितिपर मड़राइत संकट सभसँ परिचित छथि,सचेत छथि आ अपन संस्कृतिक समृद्धि ओ वैविध्यक संरक्षण हेतु प्रयासरत छथि तँ दोसर दिस 'वसुधैव कुटुम्बकम्"क मर्यादाकेँ सेहो अक्षुण्ण रखबाक लेल बाट निकालैत छथि। मनुष्यक यांत्रिक जीवनक दुःख-दर्दसँ दग्ध गीतिकार लोकनि निरंतर क्षीण होइत जा रहल मानवताक बचयबाक लेल तत्पर बुझना जाइत छथि। हिनका लोकनिकेँ ज्ञात छनि जे सांस्कृतिक उन्नयन अथवा मानवताक संरक्षण तखनहि संभव अछि जखन मानव जीवनमे उच्चतम आदर्शक स्थापना होयत।

वर्तमान युग सांस्कृतिक पुनर्निमाणक युग कहल जाइत अछि। इतिहासक महान पात्र ओ घटना सभक भविष्यक दृष्टिएँ पुनर्मूल्यांकन भऽ रहल अछि। एहि मूल्यांकनक क्रममे समकालीन मैथिली गीतिकार खूब सचेत प्रतीत होइत छथि जे हुनक सांस्कृतिक पुनर्निर्माणक कोनो प्रयासमे रूढ़िक आवलंबन नहि हो। धार्मिक कट्टरता संसार भरिमे विध्वंसक रूप ग्रहण कयने जा रहल अछि। धार्मिक आस्था क्रमेण उन्माद आ अतिवादमे परिणत भेल जा रहल अछि। अतः गीतिकार लोकनि अपन रचनाक माध्यमे लोककेँ एहन अतिवादी विचारधाराक प्रति

सचेत करैत छथि। लोकतांत्रिक मूल्यक संरक्षण, व्यक्ति-स्वातंत्र्य आ विमर्शक परिधिक विस्तार हेतु प्रयास कऽ रहल छथि।

समकालीन मैथिली गजल

एकैसम शताब्दीक पहिल दशककेँ, मैथिली गजलक इतिहासमे, जँ नवजागरण काल कहल जाए तऽ कोनो अतिशयोक्ति नहि होयत। एहि दशकमे मैथिली गजल अपन नवस्वरूप ओ नवीन छटा'क संग साहित्य-प्रेमी लोकनिक सोझाँ उपस्थित भेल अछि। एहि समयावधिमे मैथिली गजलकेँ अपन फराक गजलशास्त्र भेटलैक जे खाली गजले नहि अपितु रुबाइ, कता, नात आदिक रचना हेतु सेहो व्याकरणिक पृष्ठभूमि तैयार कयलक। ई गजलशास्त्र मैथिली गजलकेँ अरबी, फारसी ओ उर्दू गजलक समकक्ष पहुँचेबामे सहायक सिद्ध भऽ रहल अछि। मैथिली गजल-लोक'क परिधिकेँ विस्तृत ओ सुदृढ़ बना रहल अछि। एहिसँ गजल कहबाक (लिखबाक) व्याकरण सम्मत मानक तैयार भेल अछि जाहिसँ सचेष्ट लोक, गजल कहबाक शैली ओ शिल्पक ज्ञान सहजतापूर्वक अर्जित कऽ सकैत छथि।

एहि सूचनाक्रांतिक युगमे “इंटरनेट” मैथिली गजल ओ गजलशास्त्रकेँ मैथिली-साहित्यप्रेमी धरि पहुँचेबामे महत्वपूर्ण माध्यम साबित भऽ रहल अछि। संगहि एकर विभिन्न पक्षपर चर्चा-परिचर्चाक अत्यंत सुभितगर मंच उपलब्ध करा रहल अछि। "अनचिन्हार आखर" नाम्ना ब्लाग मैथिली गजलक विकास ओ विस्तारक हेतु पूर्णतः समर्पित अछि। नेपालमे सेहो मैथिली गजलक एहि नवस्वरूप केर विकासक हेतु किछु एहने सन प्रयास भऽ रहल अछि। कुल मिला कऽ कही जे पछिला दसेक बरखसँ किछु सजग नवतुरिया मैथिल साहित्यकार लोकनि, गजल प्रेमी लोकनि , मैथिली गजल'क भाषायी ओ शिल्पगत विकासक हेतु अभियान चलौने छथि। ई अभियान एकटा ऐतिहासिक प्रयास थिक।

वर्तमान समयमे मैथिलीक नवतूरक साहित्यकार लोकनि मैथिली गजलक सर्वांगीण विकास हेतु प्रतिबद्ध छथि। एकदिस जतय ई सभ नव-नव गजलकार लोकनिकेँ प्रशिक्षित-प्रतिष्ठित करबामे लागल छथि ततहि दोसर दिस पूर्ववर्ती गजलकार सभक रचना संसारक जोत-कोड़क तकतान सेहो हिनका सभकेँ रहैत छनि। पूर्वक एहि रचना सभसँ उपयोगी- अनुपयोगी तत्वकेँ बेरा रहल छथि। प्रतिफलस्वरूप मैथिली गजलक विभिन्न ऐतिहासिक पक्षसँ मैथिली साहित्यप्रेमी लोकनि अवगत भऽ रहल छथि आ नवतुरिया साहित्यकार वर्गकेँ एहिसँ भविष्यक दिशा-निर्देश सेहो भेटि जाइत छनि। तखन एहि नवतुरिया अभियानी लोकनिकेँ अपन पूर्ववर्तीक कृतिक (गजल / गजलेसन किछु) समीक्षा करैत काल एतबा अवश्य ध्यान राखय पड़तनि जे हिनकर सभक रचनामे जे-जतबा सकारात्मक पक्ष अछि तकर बेसी चर्चा-परिचर्चा करथि। एहिसँ एकटा सकारात्मक वातावरण बनत। गजल आर लोकप्रिय होयत। गजलकार आर बेसी सम्मानित हेताह। गजलक परंपरा आर सुदृढ़ हेतैक।

विगत अध्यायमे मैथिली गजलक उद्भव ओ विकासक क्रममे चर्चा भेल अछि जे मैथिली गजलक बाल्यकाल केर शब्द, शिल्प ओ स्वरूप'क मर्यादासँ बान्हल सुसंस्कारी स्वभाव एकर किशोरावस्था अबैत-अबैत जेना अल्हड़पनमे बदलि गेल। गजलकार लोकनि अरबी बहर-विधान आ मैथिलीक पारंपरिक छंदशास्त्रक अनुशीलन कए एहि दुनूक मध्य कोनो तरहक सामंजस्य स्थापित नहि कऽ सकलाह। फलतः मैथिली गजल व्याकरणहीन रहल आ हिनकर सभक

गजल काफिया मिलानी धरि सीमित भऽ गेल। मुदा समकालीन गजलकार लोकनि खास कऽ एहि शदीक दोसर दशकमे आबि कऽ अरबी बहर-विधानकेँ गंभीरतापूर्वक अपनौलनि अछि । एकैसम शताब्दी मैथिली गजलक शताधिक बरखक इतिहासमे नित्य नव-नव अध्याय जोड़ि रहल अछि । पछिला डेढ़ दशकमे मैथिली गजल-भण्डारकेँ समृद्ध करबा निमित्त अनेक गजलकार लोकनि गजल रचना दिस कलम घुमौलनि अछि। मात्र गजले नहि अपितु ओकर व्याकरण आ समालोचना पक्षपर सेहो गंभीरतापुर्वक काज कएल जा रहल अछि । एहि बीच मैथिली गजलक स्वर ओ स्वरूपमे कतेको परिवर्तन-परिवर्धन भेल अछि।

कथ्यक स्तरपर आब प्रायः हरेक भाषामे गजल प्रेमी-युगलक आख्ययिका'क परिचय-परिधिकेँ तोड़ि आमजनक सुख-दुख'क मुखरित स्वर बनि गेल अछि । समकालीन मैथिली गजल सेहो युगीन भावबोधसँ अनुप्राणित अछि। आजुक गजलक सुदृढ़ परिधिमे मानवीय संवेदना, सामाजिक विषमता, संस्कृति ओ परंपराक विशिष्टता, प्रेम, करुणा, आदिक भावक संगहि कल्पनाक सहज ओ संतुलित अटावेश भेल अछि । आजुक गजलकारकेँ ज्ञात छनि जे जिनगीक बाटपर चलब आसान नहि अछि। एतय सुख-दुख सदति संगहि चलैत रहैत अछि। एहि सुख-दुखकेँ गुनि गजलकार दीपनारायण जी जिनगीक यथार्थ लिखबामे सक्षम होइत छथि-

"जिनगी जीयब भाइ बड्ड मोशकिल मरब आसान सभ दिन रहल
जिनगीक बाटमे कखनो चढ़ाइ कखनो ढ़लान सभ दिन रहल"

(जे कहि नञि सकलहुँ)

आइ लोक अपन-आनक द्वंदमे फँसल अछि । ओ आधुनिकताक नामपर पसरल भौतिकताक चकचौन्हमे लोक तेना ने आन्हर भऽ गेल अछि जे आब मोनक मर्मकेँ बूझबाक सामर्थ्य ओकर दृष्टिमे नहि बाँचल छैक। ओकरा मात्र बाहरी रंग-रोगन धरि सूझैत छथि। एहनामे मानवीय मूल्यक ह्रास ओ संबंधक जड़ताक टीस गजलकार ओमप्रकाश जीक करेजासँ सेहो बहराइए जाइत छनि -

कहू की कियो बूझि नै सकल हमरा
हँसी सभक लागल बहुत ठरल हमरा

(कियो बूझि नै सकल हमरा)

एवं प्रकार वैश्विक चिंतन, अतिवाद, सामाजिक विद्रूपता, मानवीय मूल्यबोध, सांस्कृतिक चेतना, आँचलिक सौन्दर्यक संगहि जीवनक प्रत्येक पक्षकेँसमकालीन मैथिली गजल सफलतापूर्वक अभिव्यक्ति दऽ रहल अछि।

विजयनाथ झा, जगदीशचन्द्र ठाकुर अनिल, कमलमोहन चुन्नू, गजेन्द्र ठाकुर, अरविन्द ठाकुर, आशीष अनचिन्हार, मुन्नाजी, ओमप्रकाश, शान्तिलक्ष्मी चौधरी, सदरे आलम गौहर, अमित मिश्र, नवलश्री पंकज, राजीव रंजन मिश्र, आशीष अनचिन्हार आदि एहि सदीक प्रमुख गजलकार छथि।

आशीष अनचिन्हारक 'अनचिन्हार आखर', गजेन्द्र ठाकुरक '"धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छी " अरविन्द ठाकुरक 'बहुरुपिया प्रदेशमे', मुन्नाजीक 'माँझ आँगनमे कतिआयल छी" अमित मिश्र 'नवअंशु'

चन्दनकुमार झा 'मोनक बात', दीपनारायण विद्यार्थीक 'जे कहि नञि सकलहुँ', जगदानन्द झा मनु'क "नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर" आदि समकालीन गजलक प्रमुख संग्रह थिक।

*****

सप्तम अध्याय : प्रतिनिधि गीतकार आ गीत-संग्रह

कवीश्वर चन्दा झाक पश्चात् शताधिक गीतकार भेलाह अछि जे आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यकेँ विगत शताब्दीसँ लऽ कऽ आइ धरि विकासक बाटपर अपन गीति रचनाक माध्यमे आगाँ पथ-प्रदर्शन करैत रहलाह, अपन कलमक मसि पिया मैथिली गीति-परपराक संपोषण कयलनि । दुर्भाग्यवश एतय समय आ साधनक अभावक कारणे ओहि सभ गीतकारक चर्च ओ हुनकर कृतिक विस्तृत विवेचन-विश्लेषण संभव नहि अछि तथापि किछु प्रतिनिधि रचनाकार ओ हुनक कृतिक विहंगावलोकन प्रस्तुत अछि-

कविवर जीवन झा (1848-1912)- आधुनिक मैथिली साहित्यक शीर्षस्थ निर्मातृगणमे कविवर जीवन झाक स्थान अक्षुण्ण छनि । कवीश्वरक पश्चात् मैथिली साहित्यकेँ सर्जनात्मक दिशा प्रदान कयनिहार जीवन झा आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रथम नाटककार थिकाह । कविवर केवल नाटके नहि, नाटकक माध्यमे मैथिली गीतक भाव ओ भाषाकेँ नव-स्वरूप प्रदान कयलनि । संस्कृतक निविष्ट विद्वान कविवर जीवन झाक मैथिलीमे चारि गोट नाटक - सुन्दर संयोग, नर्मदा-सागर सट्टक, सामवती पुनर्जन्म तथा मैथिली सट्टक उपलब्ध अछि । एहि नाटक सभमे मैथिली गीत आ गजलक प्रयोग भेल अछि । एकर अलावे हिनक पाँच गोट स्फुट गीत सेहो उपलब्ध अछि जे 'कविवर जीवन झा रचनावली'मे संग्रहित अछि । ई गीति सभ मुख्यरूपसँ शृंगार पक्षक अछि जकर भाषाक सहजता, कथ्यक स्पष्ट तथा युगीन भावबोध विशेष आकर्षण थिक । कविवर मैथिली गजलक प्रणेता सेहो थिकाह । कविवर मैथिलीक एक भावुक ओ कल्पनाशील गीतकार छलाह । हिनक रचनामे एहन माधुर्य ओ तरलता छनि जे सहजहि सहृदयक अन्तः-करणमे प्रवेश कऽ देबाक क्षमता रखैत अछि ।[1]

जीवन झाक गीतिकाव्यपर विचार करैत प्रो. मायानन्द मिश्र लिखैत छथि- 'ई महेशवाणी ओ भासगीतक संगहि प्रथम-प्रथम मैथिलीमे गजलक रचना कयल जाहिमे भावक माधुर्य ओ कवित्व शक्तिक चमत्कार देखल जा सकैत अछि । ई यद्यपि भक्तिपदक रचना सेहो कयल किन्तु हिनक शृंगारिक रचना अपेक्षाकृत श्रेष्ठ ओ कवित्वपूर्ण अछि जाहिमे कल्पनाक सूक्ष्मता, भावक कोमलता तथा शब्द विन्यासमे चमत्कार अछि । ई मूलत: रोमांटिक कवि ओ नाटककार छलाह । ई आधुनिक कालक अति प्रगतिशील विचारक लोक छलाह ।'[2] एवं प्रकार स्पष्ट अछि जे मैथिली गीतिकाव्यकेँ आधुनिकताक दीप देखौनिहार कविवर जीवन झा भेलाह ।

यदुनाथ झा "यदुवर" (1888-1935)- यदुवर जी मैथिली साहित्यमे राष्ट्रवादी चेतनाक पुरोधा कवि छथि । हिनका द्वारा संगृहीत सम्पादित 'मिथिला गीतांजलि' मैथिलीक राष्ट्रिय मूल्यक प्रथम रचना संग्रह थीक ।

प्रत्येक कविक अपन दृष्टि आ जीवन मूल्य होइत अछि तथा यैह जीवन दृष्टि ओकर रचनाक आधार होइत अछि । कवि यदुवर जीक जीवनक पहिल लक्ष्य छनि-देशोत्थान । राष्ट्रिय चेतनासँ सम्पृक्त कविक रचनामे मातृभूमिक प्रति अनुराग तँ भेटिते अछि, संगहि मिथिलाक परिवेश ओ सांस्कृतिक उत्कर्षक वर्णन सेहो समाहित अछि । हिनक रचनामे मिथिलाक स्वर्णिम अतीतक एकदिस जतय गौरवगान भेल अछि ओतहि दोसर दिस वर्तमान अधोगति पर क्षोभ व्यक्त कयल गेल अछि, संगहि मातृभूमिक विकाससँ विरक्त देशवासीकेँ धिक्कारबासँ कवि नहि चुकैत छथि-

धिक धिक जीवन थीक अहाँक
कहियो नहि उपकार कैल किछु
देश जाति भाषाक
वकवादहि मे जन्म गमाओल
हेतु नाम करवाक।'[3]

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' द्वारा सम्पादित 'यदुवर रचनावली'मे हिनक 79 गोट गीत संकलित अछि । एहि गीत सभमे कवि मुख्यतः अपन लोकवादी ओ राष्ट्रवादी भावनाकेँ अभिव्यक्त कयलनि अछि । देशानुराग, देश ओ समाजमे व्याप्त कुरीतिक निवारणार्थ उद्बोधन ओ मातृभूमिक प्रति कर्तव्यबोध हिनक रचनाक केन्द्रिय भाव अछि । कवि देशोत्थान लेल सामाजिक एकतापर बल दैत छथि तथा देशवासीकेँ आपसी इर्ष्या-द्वेषसँ मुक्त होयबाक आह्वान करैत छथि । अशिक्षा, बाल-विवाह ओ जाति-पातिक विकृतिकेँ दूर कऽ विकासक पथ पर बढ़बाक लेल प्रेरित करैत छथि ।

सीताराम झा (1891-1975)- कविवर सीताराम झा आधुनिक मैथिली साहित्यक एक महत्वपूर्ण आधार-स्तंभ रूपमे समादृत छथि । हिनक काव्यधारा नवीन भाषा ओ विषयसँ परिपूर्ण अछि जे रूढ़ि-भंजक रूपमे आम-जनमानसकेँ आकर्षित कयलक । भाषाक सहजता, ठेठ शब्दावली तथा लोकोक्तिक संतुलित प्रयोग हिनक काव्यक विशिष्टता थिक ।

मैथिली गीतिकाव्यक क्षेत्रमे सीताराम झाक योगदान महत्पूर्ण अछि । 'मैथिली काव्य-षटरस' तथा 'मैथिली काव्योपवन - दू गोट संग्रह अछि जाहिमे हिनक मुक्तक काव्य संग्रहित अछि । एतद् अतिरिक्त हिनक अनेक गीत तथा गजल पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल अछि । हास्य-व्यंग्य हिनक कविताक मुख्य स्वर रहल मुदा मिथिलाक सांस्कृतिक वैभव ओ एतुका जीवन-जगतक विविध पक्ष सभ सेहो ततबे प्रमुखतासँ हिनक रचना सभमे रूपायित भेल अछि ।[4]

भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' (1907-1944)- भुवन जी वस्तुतः आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यक इतिहासमे एक युगान्तकारी रचनाकार भेलाह । हिनक आरम्भिक रचना राष्ट्रवादी चेतना ओ छायावादसँ जतय अनुप्राणित अछि ओतहि बादक रचनामे प्रगतिवादक आहटि सेहो अनुभव होइत अछि । भुवन जी आधुनिक मैथिली काव्य जगतमे नवीन भावबोध ओ शिल्प-संरचनाक क्षितिजक उद्घाटन करयबला अग्रणी रचनाकार भेलाह । आषाढ़ आ स्मृतिकण हिनक दू-गोट महत्वपूर्ण काव्य संग्रह थीक । अपन रचनामे भुवन जी मैथिलीक परम्परागत छन्दबन्धकेँ तोड़लनि, तथा नवीन शिल्प ओ सामाजिक चेतनासँ युक्त यथार्थवादी काव्यक रचना कयलनि ।

आषाढ़ आधुनिक मैथिली-गीति परम्परामे आषाढ़ एक सर्वथा नवीन भाव-भूमि तैयार कयलक। एहि संग्रहक रचनामे कविक अंतर्मुखी भाव नहि अपितु समस्त विश्वक लेल मंगल भावनासँ ओतप्रोत अछि। 'वंदना'मे कविक ई उदात्त भाव प्रकट होइत अछि-

दुख शोकक भए नाश
प्रकट हो पुनरपि श्री, सुख, शान्ति,
क्लान्त रहय नहि केओ देश मे,
हो विध्वंस अशान्ति।[5]

तहिना 'मंगल-गान' गबैत काल कवि अखिल भवकेँ नव भावमय होयबाक कामना कयलनि-

बहए मलयानिल निरन्तर,
रहए सजला मेघ-माला
पड़ए पाला नहि विनाशक,
जरए दुखद निदाघ ज्वाला,
आधि, व्याधि, उपाधि, जड़ता क्षय करए, नहि स्वयं क्षय हो।
अखिल भव नव-भाव-मय हो।।[6]

हिनक कवितामे सामाजिक चेतनाक मार्मिक निदर्शन भेल अछि। भुवन जी तात्कालीन सामाजिक विद्रूपता पर अपन लेखनीसँ प्रहार कयलनि संगहि देशोद्धारक हेतु जनमानसकेँ जगयबाक लेल ओजपुर्ण भाषामे काव्य रचना कयलनि। 'युगवाणी' हिनक एकगोट एहने रचना थिक जाहिमे कवि शोषित समाजक विद्रोहकेँ स्वर देलनि अछि, ओकर स्वाभिमान आ प्रगति-कामनाक चित्रण कयलनि अछि-

देखत जग हमरो आन-बान,
हम घुरा लेब चिर-लुप्त मान,
त्रिभुवनमे पसरत सुयश-गान,
हमर परम धर्म, हम ही प्रमाण,
गरजत पद-दलितक दल, जीवित
भए, उठा हाथ जय-मंगलमय!
हम करब प्रलय, हम करब प्रलय!!

मानव जीवनक रीति-नीति, मनुष्यक कर्तव्य, सामाजिक विषमता आ रूढ़ि-भंजन भुवन जीक गीतिक प्रमुख स्वर थिक।

काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (1906-1987)- मैथिली काव्य-साहित्यक इतिहासमे कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क काव्यक लोकप्रियता कविपति विद्यापतिक बाद प्रायः सर्वाधिक अछि। मधुप जी विशुद्ध रूपेँ कवि छलाह। हिनका पद्य लिखब सर्वाधिक रूचैत छल। गद्यलेखन हिनका कहियो नहि सोहेलनि। मधुपजीक विशिष्टता छल जे ई पत्राचारो कवितेक माध्यमसँ करैत छलाह। हिनकर कविता सभमेँ एकहि संग संस्कृतनिष्ठ ओ ठेठ शब्दाबलीक विलक्षण प्रयोग भेटैत अछि। हिनकर रचित काव्य-संसार भाषा ओ विषय-विविधताक विशाल भंडार अछि। 'मधुप'क सम्मोहक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक प्रभाव हिनकर परवर्ती

साहित्यकार लोकनिपर सेहो पड़ल अछि। मणिपद्म, बहेड़, अणु, किसुन, अमर आदि स्वयं स्वीकार कएने छथि जे ओ लोकनि हिनके प्रेरणासँ मैथिली रचना दिस प्रवृत भेलाह।

ई हिनक मातृभूमि ओ मातृभाषाक अनुरागेक परिणाम छल जे संस्कृत ओ हिन्दीक क्षमतावाद साहित्यविद रहितहुँ ई मिथिला-मैथिलीक सर्वांगिण विकास हेतु सदैव अपन लेखनीक संग तत्पर रहलाह। अपन कवि-व्यक्तित्वक बिनु परबाहे मैथिलीक घर-घर प्रचार हेतु फिल्मी तर्जपर गीत लिखैत रहलाह। मधुप जीक व्यक्तित्वमे एकहि संग परंपरा ओ प्रगतिवादक छाप भेटैत छल। संस्कृति-संस्कारक रक्षाक पक्षधर मधुप नहिए परंपराक अंधभक्त छलाह आ नहिए आधुनिकताक। समयक अनुरूप आचार-विचारकेँ बदलब हिनक प्रवृति छल। तहिना हिनकर साहित्यहुँमे एकदिस जतय पारंपरिक छन्द-शास्त्रक बेजोड़ प्रयोग भेटैत अछि ओतहि दोसरदिस मुक्तक, गद्यकाव्य, गजल, आदि नव-नव काव्य विधानक अनुशरण सेहो भेटैत अछि।

मधुप जी वस्तुतः एकटा एहन आशुकवि छलाह जिनका कविता लिखबाक हेतु समय, स्थान,कि वातावरण आदिक जरूरति नहि पड़ैत छलनि। ओ स्वयं अपना हिसाबेँ तकर निर्माण करैत छलथि। मधुपक साहित्य साधना आम जनता लेल समर्पित छल। समकालीन कविक मध्य 'मधुप' एकमात्र कवि भेलाह जिनकर रचना आम ओ खास दुनू वर्गमे समान रूपेँ सम्मानित भेल। हिनकर काव्यक लोकप्रियता देखि हिनका 'अभिनव विद्यापति' कहल जाए लगलनि। करुणरसक एहि रससिद्ध कवि व्यक्तित्व ओ कृतित्व दुनूमे विविध रस-भण्डार भेटैत अछि।

हिनक नओ गोट प्रकाशित तथा दू गोट अप्रकाशित गीत संग्रह छनि। **'अपूर्व रसगुल्ला"(1941)** चौदह गोट लौकिक गीतक संग्रह थिक जाहिमे तत्कालीन लोकप्रिय फिल्मी गीतक तर्जपर शृंगार-प्रधान गीतक संकलन अछि। 1945 मे प्रकाशित **'टटका जिलेबी'** हिनक दोसर गीत-संकलन छनि। एहिमे चौदह गोट विभिन्न गहना आधारित गीत अछि। हिनक तेसर गीत संग्रह **'पचमेर'**, जे कि 'अलि' छद्मनामसँ लिखल अछि, मे एकतीस गोट फिल्मी गीतक तर्जपर विभिन्न सामाजिक समस्या आधारित ओ शृंगार प्रधान गीतक संकलन अछि। पन्द्रह टा गीतक चारिम संकलन **'गीत-मंजरी'**मे महादेवक विभिन्न रूप ओ पारिवारिक वैचित्र्यक वर्णन अछि। पाँचम **'चौंकि-चुप्पे"** मधुप लिखित गीतक एक वृहत् संग्रह थिक। एहिमे नब्बे गोट गीत संकलित अछि जाहिमे अड़तालीस गोट नव तथा शेष 27 गोट पचमेर ओ 15 टा 'गीत-मंजरी'मे पूर्व संकलित गीत अछि। एहि संग्रहक गीतमे सामाजिक समस्या, मिथिलाक संस्कृति ओ पाबनि-तिहार तथा शृंगार भावक चित्रण भेल अछि। 1973 मे प्रकाशित छठम संग्रह **'विदागीत'** मे 14 गोट गीत संकलित अछि। सभ गीतक विषय-वस्तु दुरगमनियाँ कनियाँक सासुर जयबा काल थिक। ई संग्रह कन्याक मनोदशा, नैहरक प्रति स्नेह, नैहरक लोक द्वारा सासुरमे बसबाक ओ व्यवहारक उपदेश आदिक वर्णन अछि। सातम संग्रह **'वट-सावित्री'** 1975 मे प्रकाशित भेल। एहिमे 26 टा गीतक संग्रह अछि। सभ गीत सती-सावित्रीक आख्यान आधारित अछि। हिनक आठम प्रकाशित गीत संग्रह छनि- **'बोल-बम"**, जे 1981मे प्रकाशित भेल। एहि संग्रहमे 99 गोट गीतक संकलन अछि। एहि गीतसभमे सुलतानगंजसँ देवघरक दुर्गम बाट, काँबर यात्राक कष्ट, कमरथुआक मनकामना आ धर्मप्रेरित वैराग्य-भावक संग-संग महादेवक महिमाक वर्णन भेल अछि। **'दुलहा रे नंगटे नाचय'** मधुप जीक अन्तिम प्रकाशित गीत-संग्रह छनि जाहिमे 134 गोट गीत संकलित अछि। एहि संग्रहक गीत सभ मुख्यतः कालिदासकृत

'कुमारसम्भव'क कमोवेश गीतानुवाद थिक मुदा एकर स्वतंत्र अर्थवत्ता प्रत्येक गीतक विशिष्टता थिक। एकर अलावे **'विनयाञ्जलि',** आ **'गंगा-गीतामृत'** हिनक दू गोट अप्रकाशित गीत संग्रह अछि । मधुप जीक प्रत्येक गीत संग्रहक अधिकांश गीत फिल्मी-गीतक तर्जपर अछि तँ किछु गीत मिथिला संगीत-भास आधारित अछि।[7]

मधुपजीक अनेक गीत अछि जाहिमे दार्शनिक भावना प्रबल अछि। गीतिकाव्योचित गुणक दृष्टिएँ ई रचना सभ अत्यंत महत्वपूर्ण अछि। एहि रचना सभमे छायावादी प्रवृति स्पष्टतः देखल जा सकैत अछि । एकटा एहने रचना एतय किछु पंक्ति प्रस्तुत अछि-

जैं हमर निविर नीरद बरिसै की मुदित मयूर नचैए,
करितैंहिं करुण-क्रन्दन की कहु सभ लोचन कान मुनैए

कनने बिनु कथमपि हो न तृषित धरणी केर शान्त पिपासा
कनने बिनु कृषकक दग्ध हृदयमे नहि अदहन केर आशा
तैं निरवलम्ब नभ आँगनसँ ई नयन नीर बरिसैए[8]

राधाविरह (महाकाव्य), त्रिवेणी, त्रिकुशा, द्वादशी, झांकार, शतदल, प्रेरणा-पुंज, परिचय शतक आदि हिनक अन्य महत्वपूर्ण काव्य-ग्रन्थ थिक । भाषा आ विषयवस्तुक दृष्टिकोणसँ मधुपजीक काव्यपरिधि अत्यंत विस्तृत छनि। हिनक गीति सहित समस्त रचनामे संस्कृत ओ देसी शब्दावलीक अपूर्व संयोजन भेटैत अछि तहिना हिनक अद्भुत काव्यकलाक कारीगरी सेहो भेटैत अछि। यमक, उत्प्रेक्षा ओ श्लेष आदि अलंकारक कुशल प्रयोक्ता मधुपक समस्त रचनामे सहजगीतात्मकता विद्यमान अछि। भक्ति, शृंगारक संगहि वीर ओ करुण रसक धार हिनक रचनामे सहजहि भेटैत अछि ।

प्रो. ईशनाथ झा (1907-1965)- सरसकवि ईशनाथ झा एक विशिष्ट नाटककार ओ गीतकार छलाह । ई संगीताचार्य छलाह, जाहि प्रसादात हिनक अनेक गीतमे राग-निर्देश लिखल अछि। ईशनाथ झाक दू गोट मूल नाटक तथा दू अनुदित नाटक प्रकाशित अछि । एहि चारू नाटकमे हिनक लिखल गीत संकलित भेल अछि । हिनक द्वारा अनुदित संस्कृत नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम'मे सोलह रागमे निबद्ध कुल छब्बीस गोट गीत अछि । तहिना ई 'मृच्छकटिकम्'क अनुवादमे बीस गोट गीत संकलित अछि, किन्तु एहि नाटकक गीतमे राग-निर्देश नहि अछि आ ई गीत सभ लोकभासमे निबद्ध बुझना जाइत अछि ।

ईशनाथ झाक दू गोट मौलिक नाटक 'चीनिक लड्डू' आ 'उगना"मे सेहो अनेक गीत संकलित अछि । चीनीक लड्डूमे आठ गोट गीत, बिना राग-निबद्ध अछि मुदा विद्यापति आ उगना प्रसंग किंवदंती आधारित हिनक 'उगना' नाटकमे जे पन्द्रह गोट गीत उपलब्ध अछि से सभ शास्त्रीय राग ओ लोकभास निबद्ध अछि ।

हिनक जेठ बालक उमानन्द प्रसिद्ध 'गुना' द्वारा संकलित **'गीतिमाला'** नामक पुस्तिकामे सरसकवि ईशनाथ झाक सत्रह गोट गीत उपलब्ध अछि । एहि गीत सभक रचना विद्यापति गीति-शैलीसँ प्रभावमे भेल अछि तथा एहिमे भनितामे गीतिकारक नामक उल्लेख भेल अछि । एहि पुस्तिकामे विद्यापति, महेश ठाकुर, महिनाथ ठाकुर, तंत्रनाथ प्रसिद्ध 'मुकुन्द', विश्वनाथ प्रसिद्ध बालाजी, म.म. श्रीकृष्ण सिंह ठाकुर, आ जीवानन्द ठाकुरक

गीति सेहो संकलित अछि । एहि पुस्तिकामे संकलित ईशनाथ झा रचित गोसाउनिक गीत एतय द्रष्टव्य अछि जाहिमे कविक भक्ति-भाव ओ समर्पणक भावक निक्षेपण भेल अछि-

जय जय जगत जननि गिरि नन्दिनि, असुर निकन्दनि श्यामे।
सुनिअ सदय मिनती करुणाकरि, शंकरि शशिधर वामे।
जे जन गहल अहँक पद पंकज, पुरल तकर मन कामे।
एक हमहिँ अति दीन अभागल, रहलहुँ ठामक ठामे।
जँ किछु दोष पड़ल हो जननी, छमब जानि संताने।
अपन सुतक जँ लाज न राखब, राखत के पुनि आने।
अएलहुँ अहँक शरण हम पामर, अछि मनमे अभिमाने।
माइक अपन कुरूपहुँ शिशुपर, रहइछ भाव समाने।
विघटित राज सुरथ नृप पाओल, अहिंक कृपालव दाने।
करु करुणा कामेश्वर नृप प्रति ईशनाथ कवि भाने।[9]

सरसकविक दू गोट अन्य महत्वपूर्ण काव-कृति थिकनि- **माला** (प्रकाशित) आ **भावना** (अप्रकाशित)। एहि दुनू संग्रहमे क्रमशः अठारह ओ बाइस गोट पद्य-रचना संग्रहित अछि। एहि रचना सभमे संगीत-तत्वक प्रधानता ओ लालित्यक प्रचूरता पाओल जाइछ । प्रो. ईशनाथ झा वस्तुतः एहन रचनाकार छलाह जनिकर रचनामे प्राचीनता ओ आधुनिकताक संयोजन भेल अछि । डॉ. श्रीश जीक शब्दमे-" हिनक प्रतिभा नवीनताक प्रति संवेदनशील छल, तें हिनक रचनामे अभिव्यक्तिक नवीनताक संग-संग युगबोध सेहो सन्निहित भेल अछि, भेटैत अछि । मुदा कहबाक रीति हिनक सर्वथा नवीन नहि अछि, ओहिपर संस्कृतकाव्यरीतिक उत्कट प्रभाव अछि, तीव्र अलंकारिक प्रवृत्ति अछि । रमणीयार्थ उत्पन्न करबाक पाछाँ इहो एतेक लागि जाइत छथि जे कल्पनाशीलतामे आकण्ठ निमज्जित भए जाइत छथि। आत्माभिव्यक्तिक जे स्वाभाविकता चाही से तँ नहि रहि पबैत अछि, मुदा हिनक कल्पना धरि होइत अछि बड़ मधुर जे काव्यमर्मज्ञकेँ अत्यधिक आह्लादित करैत अछि।"[10]

आरसी प्रसाद सिंह (1911-1996)- आरसी प्रसाद सिंहक आधुनिक मैथिली गीतिकार मध्य एक विशिष्ट स्थान छनि । ई मैथिली आ हिन्दी भाषा साहित्यमे समान रूपेँ प्रतिष्ठित भेलाह आ हिनक अधिकांश रचना शृंगार आ प्रेम विषयक अछि । छायावादी प्रवृतिक छाहमे पल्लवित-पुष्पित आरसी प्रसाद सिंहक गीति पश्चात प्रगतिवादक बाट सेहो पकड़ल मुदा, हिनक गीति-रचनामे भक्तिक प्रगाढ़ता आ तीव्रता, मनुष्य ओ प्रकृतिक बीच सम्बन्धक घनिष्ठता तथा यौवनसुलभ प्रेमक तीव्रतर आवेग मुख्यतः रूपायित भेल अछि । देशवन्दना, देशदशा, उद्बोधन, ऋतुवर्णन, व्यंग्य, शृंगार, तथा करूण भावसँ ओत-प्रोत हिनक गीतिमे हिनक काव्य-प्रतिभाक विराटताक दर्शन होइत अछि ।

माटिक दीप, पूजाक फूल आ सूर्यमुखी- हिनक तीन गोट काव्य संग्रह थिक जाहिमे संकलित रचनासभ गीति-तत्वसँ परिपुष्ट अछि । **'माटिक दीप'** मे कुल उनतीस गोट रचना संकलित अछि तथा एहि रचना सभक मुख्य विषय-वस्तु प्राकृतिक सौन्दर्य ओ मातृभूमिक प्रति रचनाकारक प्रेम, केन्द्रित अछि । **'पूजाक फूल'** मे तीस गोट रचनाक संग्रह भेल अछि । एहि संग्रहक अधिकांश रचना सेहो भक्ति, ऋतुवर्णन ओ शृंगार विषयक

अछि। **'सूर्यमुखी'** हिनक तेसर काव्यकृति थिक। एहिमे बासठि गोट रचना संकलित अछि। एहिमे किछु एहन रचना अछि जकरा गीतिकाव्यक अंतर्गत परिगणित कयल जा सकैत अछि। एहि संग्रहक रचना सभक देशभक्ति, प्रकृतिवर्णन ओ शृंगार मुख्य विषय अछि।

रचनाकालमे "नग्न वा कटु यथार्थक अपेक्षा आरसी जीवन आ स्थितिक रम्यतर पक्षपर निर्भर रहैत छथि। वर्तमानकेँ आकार देबाक लेल ओ परम्पराकेँ सुरक्षित रखैत छथि ...आरसी मूलतः एक गीतकार छथि। आन्तरिक रूपसँ मनुष्य आ प्रकृतिक प्रेमी ओ एक समर्पित भक्त छथि। शृंगार आ भक्ति हुनक निजी विशेषता थिक।[11]

उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' (1916-1980)- उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' मूलतः गीतकार छथि। हिनक अधिकांश गीत आशावादी आ उद्बोधनात्मक अछि। हिनक गीतिकाव्य आधुनिक मैथिली साहित्यक बहुमूल्य निधि थिक जकर साहित्यिक दृष्टिएँ स्थायी मूल्य छैक। उपेन्द्र ठाकुर मोहन'क काव्यक्षेत्र खूब विस्तृत छनि। शिल्पक विविधताक संगहि भाव ओ वर्णनक विलक्षणता हिनक रचनामे भेटैत अछि। मानव मनोभावक रेखांकन तथा युगबोध हिनक गीतिक आकर्षण थिक। उपेन्द्र ठाकुर मोहनकेँ परम्परागत मूल्यक प्रति जतबे आस्था छनि, प्रगतिवादी प्रवृतिक प्रति ततबे सिनेह सेहो छनि। रूढ़िपर प्रहार, जीवन विषाद ओ जीवनक सौन्दर्यपर हिनक साकांक्ष दृष्टि रहैत छनि। डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क शब्दमे-"हिनक गीतक मुख्य आकर्षण थिक करुणभावक चित्रण। आरम्भमे छायावादी विषादक छाप हिनकामे उत्कट छल, मुदा पश्चात् आबि सांसारिक अनुभवजन्य विषादमे दार्शनिकताक मणिकांचन संयोग देखना जाइत अछि।"[12]

उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क तीन गोट काव्य-संग्रह प्रकाशित अछि- **फुलडाली, बाजि उठल मुरली** आ **इतिश्री**। फुलडाली'मे एकतीस गोट गीति संकलित अछि। 'शृंगारकुसुम' आ 'क्रान्तिकुसुम'- दू वर्गमे एहि संग्रहमे रचना सभक वर्गीकरण भेल अछि। पहिल वर्गमे यौवनसुलभ प्रेमाश्रित रचना आ दोसर वर्गमे वीर रसक युगीन-संदर्भबोध युक्त रचना अछि। 'बाजि उठल मुरली' 101 गीतक संकलन थीक। एहि संग्रहक रचना सभ छायावाद ओ प्रगतिवादसँ प्रभावित बुझना जाइत अछि। प्रेम, शृंगार, ऋतुवर्णन ओ दार्शनिकता एकर केन्द्रिय भाव अछि।

मायानन्द मिश्र (1934-2013)- मायानन्द मिश्र आधुनिक मैथिली गीतिकारक मध्य एक सशक्त हस्ताक्षर छथि। आरम्भमे हिनक साहित्यिक यात्रा एक कोमल प्राण कविक रूपमे शुरू भेल मुदा पश्चात ई अपन बहुमुखी प्रतिभासँ मैथिली साहित्यक प्रायः हरेक विधाकेँ सम्पन्न कयलनि। हिनक रचनाक शिल्प-शैली आ भावबोध अत्यंत परिष्कृत अछि जाहिमे भाषाक सहजता आ भावक संप्रेषणीयता हिनक गीति-रचनाकेँ लोकप्रिय बनबैत अछि।

हिनक आरम्भिक गीति परम्परागत चिन्तनसँ अनुप्राणित अछि मुदा पश्चात हिनक गीतमे आधुनिक भावक समावेश भेल। **'दिशान्तर'**क तेरह गोट नवगीत युग-जीवनक चेतनासँ संपन्न अछि। किछु रचना छायावादी अवश्य अछि मुदा अधिकांश प्रगतिवादक संपोषक अछि। कहि सकैत छी जे 'दिशान्तर'मे संग्रहित नवगीत, मैथिली नवगीतक आरम्भिक स्वरूपक अछि।

हिनक दोसर काव्य-संग्रह **'अवान्तर'** थिक जकर रचना अपेक्षाकृत अधिक परिपक्व अछि । एहि संग्रहमे कुल पचीस गोट गीतल आ सात टा नवगीत संग्रहित अछि। एकर अलावे उनैस गोट कविता सेहो एहिमे शामिल कयल गेल अछि।

गीतल, नवकविताक समयमे काव्यमे मैथिली काव्यजगतमे राग-तत्व ओ लय-तत्वक पुनर्स्थापन एवं पुनर्प्रतिष्ठापनक एक अभिनव प्रयास छल। ई वस्तुतः नवगीत थिक जकर लयात्मकता किछु-किछु गजल सन छैक। जेना कि मायानन्द मिश्र स्वयं एहि पोथीक भूमिकामे लिखने छथि- " गीतल परम्परागत गीत नञि थिक, एहिमे एकटा 'सुर' गजल केर सेहो लगैत अछि।" नवगीतक युगमे मायानन्द मिश्र मैथिली गीतिकाव्यकेँ शिखरपर लऽ जयबाक हेतु प्रयासरत भेलाह आ 'गीतल' परम्पराक रचना कयलनि। गीतल' भनहि गजलक स्थानापन्न नहि बनि सकल मुदा एकर उच्चस्तरीय भावबोध आ सहज संप्रेषणीयता मैथिली गजलक विकासक बाटमे अवश्य दिग्दर्शक भेल।

एहि संग्रहक रचना आधुनिक भाव बोधसँ अभिसिक्त अछि। गीतिकार मायानन्द मिश्रक रचना भावावेश आ प्रेमसँ स्पन्दनशील आ सौन्दर्य तथा प्रकृति सँ आप्लावित अछि । आँचलिकता, प्रतीकात्मकता व्यंग्यात्मकता आ भावाभिव्यंजकता हिनक गीतिक प्रमुख वैशिष्ट्य अछि।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर (1936)- रवीन्द्रनाथ ठाकुर आधुनिक युगक एक अत्यंत लोकप्रिय गीतकार छथि। हिनक गीतिक एकटा विशिष्टता अछि जे ई रचना सभ जतबे मंचपर लोकप्रिय भेल, साहित्यिक रूपसँ सेहो ओतबे महत्वपूर्ण अछि। कहब अतिशयोक्ति नहि होयत जे विद्यापति आ मधुपक पश्चात्प्रायः रवीन्द्रनाथ ठाकुरे एहन गीतकार भेलाह जनिक रचना सामान्य जन आ विद्वत समाजमे समान रूपेँ समादृत भेल। **चलू-चलू बहिना**, **जहिना छी तहिना**, **सुगीत**, **प्रगीत**, **अतिगीत**, **रवीन्द्र पदावली** हिनक प्रमुख गीति-संग्रह थिक।

हिनक मिथिलाक लोक-व्यवहार, पाबनि-तिहार आ संस्कार विषयक गीति खूब लोकप्रिय भेल। हिनक अनेक रचनामे प्रेमानुभूतिक गहन चित्रण भेल अछि, संगहि मिथिलाक स्थानीय समस्या, देश-दशा, सामाजिक विसंगतिक चित्रण सेहो हिनक रचनामे अत्यंत प्रभावी रूपमे भेल अछि। किछु गीत देशभक्तिपरक सेहो छनि जाहिमे भारत-चीन युद्धक समयक सामाजिक ओ राजनीतिक परिस्थितिक वर्णन भेल अछि । **रवीन्द्र पदावली**क उनचालिसो गीत भक्ति विषयक अछि। रवीन्द्रनाथ ठाकुर गीत आ ओकर मंचीय प्रस्तुति एकदिस जतय आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यकेँ नवीन आयाम देलक ओतहि दोसर दिस लोक बिच मैथिलत्वक अवधारणाकेँ संपुष्ट कयलक तथा अपन संस्कृतिक प्रतिलोक मनमे अनुरागकेँ दृढ़तर कयलक। गीतकार रवीन्द्र आधुनिक मैथिली गीतकेँ मंचे नहि लोकमनमे प्रतिष्ठापित कयलनि।

गंगेश गुंजन (1942)- गंगेश गुंजन आधुनिक युगक एक प्रतिनिधी नवगीतकार मानल जाइत छथि। संग्रह रूपमे एखनधरि हिनक यद्यपि एकटा संग्रह **'दुखक दुपहरिया मे'** प्रकाशित अछि तथापि हिनक अनेक गीति-रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल अछि। विगत शताब्दीक छठम-सातम शताब्दीसँ वर्तमान धरि ई

अनवरत गीति रचना कयलनि अछि फलतः हिनक रचनामे विगत छओ-सात दशकक सामाजिक ओ राजनीतिक चित्र प्रभावी रूपेँ चित्रित भेल अछि । हिनक रचना चिन्तन प्रधान होइत अछि जाहिमे मानवीय मनोभावक गहन चित्रण रहैत अछि । प्रेम ओ प्राकृतिक सौन्दर्य चेतनाक संगहि विभिन्न सामाजिक सरोकारक भावबोधसँ हिनक गीति अनुप्राणित रहैत अछि । नवगीतक वैचारिक विस्तार ओ नवकविताक समानान्तर बौद्धिकताक समवेत रूप हिनक गीतिमे अनुभव कयल जा सकैत अछि । यद्यपि हिनक रचना सामान्य जनमानसक बीच अत्यधिक लोकप्रिय भनहि नहि हुअय मुदा प्रबुद्ध वर्गक बीच हिनक गीतक उल्लेख आदर सहित होइत रहल अछि । गीतिक माध्यमे गंगेश गुंजन सदिखन मानव ओ समाजकेँ अपन चिन्तन धारासँ नव दिशा देखबैत छथि, जीवनक सकारात्मक पक्षकेँ उजागर करैत छथि तथा मानवीय कुंठा, संत्रास ओ वेदनाकेँ अपन कोमल शब्दसँ सोहरबैत छथि ।

गंगेश गुंजनक किछु रचना गीत ओ गजलक मिश्रण जकाँ लगैत अछि, जकरा स्वयं रचनाकार 'गजल सन' कहैत रहलाह अछि, तथा जाहिमे सुकुमार शब्द योजना, कोमल भावना, गहन अनुभूति ओ युग-जीवनक जटिलताक विलक्षण चित्रण रहैत अछि । एहि रचना सभक भाव प्रवणता, कल्पना शीलता ओ गेयधर्मिता आकर्षक अछि ।

मार्कण्डेय प्रवासी (1942-2011)- मार्कण्डेय प्रवासी स्वातंत्रयोत्तर कालक एक महत्वपूर्ण गीतकार छथि । हिनक गीत बौद्धिकता-प्रधान होइत अछि मुदा ओकर सहज-संप्रेषणीयता ओ सरल-भाषा सहजहि आकर्षक होइत अछि । विचारक स्पष्टता ओ विषयक उपस्थापनाक दृष्टिएँ हिनक गीत विलक्षण होइत अछि । राष्ट्रिय भावना ओ वर्तमान युगक विडम्बना पर तीक्ष्ण व्यंग्यक प्रहार, हिनक रचनाक मूल-स्वर अछि । आँचलिक सौन्दर्य बोध ओ सांस्कृतिक चेतनासँ अनुप्राणित हिनक अनेक गीत मैथिली नवगीतकेँ अन्य भाषाक नवगीतक समकक्ष स्थापित करैत अछि ।

'हम भेटब' हिनक गीत-नवगीतक संग्रह प्रकाशित छनि । एहि संग्रहमे कुल सतहत्तरि गोट गीत--नवगीत संग्रहित अछि । संग्रहक अधिकांश रचनाक केन्द्रमे सामाजिक बिडम्बना ओ विसंगति अछि । अनुभूतिक सघनता, भाव-प्रवणता, कल्पनाक कमनीयता ओ भावक विशदताक कारणे एहि संग्रहक प्रत्येक रचना आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यक निधि थिक । हिनक गीतक एक अन्य महत्वपूर्ण विशिष्टता अछि जे अनेकानेक समस्याक अछैतो ई सकारात्मकता, आशावादिता ओ नवजीवनक प्रति आसक्तिक सूत्रकेँ नहि छोड़ैत छथि आ युग-जीवनकेँ आगाँ बढ़बाक लेल, समाज मे व्याप्त असामाजिकता दिस आँगुर देखाय, विभिन्न समस्याक समाधान तकबाक लेल प्रेरित करैत छथि । हिनक गीत वस्तुतः एकैसम शताब्दीक मैथिली नवगीतक पृष्ठभूमि थिक ।

शान्ति सुमन (1942)-शान्ति सुमन मैथिलीक एक उत्कृष्ट नवगीतकार छथि । हिनक **'मेघ इन्द्रनील'** नामक मैथिली नवगीत संग्रह प्रकाशित छनि । हिनक गीतमे नारी संवेदनाक गहींर पकड़ तथा प्रेम ओ सौन्दर्यक नवीन आयाम भेटैत अछि । ई प्रेमक मनोदशाकेँ बड़ कौशलसँ कहैत छथि । गामसँ शहर धरिक जीवन-संघर्ष, छल-प्रपंच ओ अपन अस्मिताक पहचानक हेतु छटपटाइत चेतना केँ हिनक गीत स्वर देलक अछि ।

शान्ति सुमनकेँ गीतक माध्यमे बहुत किछु कहबाक लेल छनि। हिनक किछु गीत रोमानी सौन्दर्यबोध-युक्त अछि मुदा, अधिकांश गीत युग-जीवनक व्यथा-कथा थिक। युगीन परिवेशक साम्प्रतिक समस्याकेँ श्रीमती सुमन खूब स्पष्टता ओ निर्भीकताक संग सभक सोझाँ रखलनि अछि। शान्ति सुमनक अनेक गीत अछि जाहिमे प्रगतिशील चिन्तन अत्यंत प्रभावकारी रूपमे आयल अछि। मिथिलाक लोक-संस्कृति ओ स्थानीय बिम्ब हिनक गीतक सम्प्रेषणीयताकेँ आर मारक बनबैत अछि। जन सामान्यक कुंठा, पीड़ा, संत्रास, भूख ओ भय हिनक गीतक प्रमुख वर्ण्य विषय थिक।

सियाराम झा 'सरस' (1948)- सियाराम झा 'सरस' एक ख्यातिलब्ध गीतकार छथि। **'नै भेटतौ खालिस्तान", "आखर आखर गीत"** गीत संग्रह ओ **"शोनितायल पैरक निशान"**, **थोड़े आगि थोड़े पानि** गजल संग्रह रूपमे प्रकाशित छनि। संगहि सहयोगी प्रकाशनमे **लोकवेद आ लालकिला**मे हिनक गीति-रचना प्रकाशित अछि। एकर अलावे **"आँजुर भरि सिंगरहार"** आ **"धरि प्रश्न ई उठैए"** हिनक दू गोट अन्य महत्वपूर्ण काव्यग्रंथ थिक जाहिमे हिनक अनेक गीत सेहो संकलित अछि। 'माटिपानिक सौरभ-सुवासक विशिष्ट भाव-भंगिमा, नव-नव शिल्प तथा युगीन मनोदशाक चित्रणक संग 'सरस'क गीत अपन धुनक लोकप्रियतामे अग्रगण्य अछि।"[13]

हिनक गीतक विशेषता थिक जे ई मिथिलाक माटि-पानिक विसंगति ओ समस्या, तदजन्य मानवीय पीड़ाकेँ स्वर देबाक हेतु सटीक भाषा आ लोकोक्तिक प्रभावी प्रयोग करैत छथि। यथार्थक स्पष्ट चित्रण हिनक रचनाक कथ्यक मारकताकेँ बढ़बैत अछि। सामान्यजनक मनोभावकेँ व्यक्त करैत काल ई अपन गीतक प्रति लोकमनमे आकर्षण उत्पन्न करबाक निमित्त जे उपादान जुटबैत छथि तकर उपयोग करैत व्यवस्थागत विसंगति ओ सामाजिक विकृतिक उद्घाटन करबामे सेहो करैत छथि आ तखनहि हिनकर रचना अपन बेछप परिचिति बनबैत अछि। सियाराम झा 'सरस' वस्तुतः मैथिली नवगीतकेँ नव-विस्तार देबामे पूर्णतः सफल भेलाह अछि।

बुद्धिनाथ मिश्र (1949)- बुद्धिनाथ मिश्र मैथिली नवगीतकार मध्य एक ध्वजवाहक रचनाकार छथि। हिनक नवगीत आस्था, आक्रोश, आत्मालोचन, दार्शनिक चिन्तन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आंचलिकता, प्रेम, विरह, प्रकृति-चित्रण समेत जीवनक प्रायः प्रत्येक पक्षकेँ स्वर देलक। व्यवस्थाक विसंगति ओ राजनैतिक आ सामाजिक मूल्यहीनताकेँ अपन प्रतिपाद्य विषय बनेलक। बुद्धिनाथ मिश्र गीतिकाव्य अथवा छन्दबद्ध, लयात्मक काव्य-रचनाक आग्रही छथि। हिनक मानब छनि जे छन्द आ लय कोनो काव्य रचनाकेँ दीर्घजीवी बनबैत छैक।

'क्यो नहि दै अछि आगि' बुद्धिनाथ मिश्रक प्रथम मैथिली काव्य संग्रह थिकनि जाहिमे कुल 62 गोट गीत, नवगीत आ कविता संग्रहित अछि। ई संग्रह मात्र कविक विगत पाँच दशकक मैथिली काव्य यात्राक परिचायके नहि थिक अपितु एकर महत्ता एहि दृष्टिकोणसँ आर बढ़ि जाइत छैक जे एहिमे संग्रहित गीत-नवगीत वस्तुतः आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यक विकास-यात्राक, ओकर स्वर-वैविध्य और शिल्पगत विविधताकेँ जनबाक एक गोट प्रमुख दस्तावेज थिक। आश्चर्यक बात नहि जँ आगत पिढ़ी 'क्यो नहि दै अछि आगि' केँ आधुनिक मैथिली गीति काव्यक एक विशिष्ट-संग्रहक रूपहिमे देखत-परेखत। एहि संग्रह मे दर्जनाधिक नव

कविता संकलित भेल अछि। धरि एहि कविता सभ पर सेहो गीतकार बुद्धनाथ मिश्रक प्रभाव स्पष्टतः देखल जा सकैछ। कविता सभक भाव-प्रवणता आ लयात्मकता आकर्षित करैत अछि।

एकदिस जतय बुद्धिनाथ मिश्रक रचनामे सौन्दर्य-बोध, आशा, भारतीय मूल्यक प्रति आस्था, लोकजीवनसँ संपृक्ति, लौकिक बिम्ब, लोक-भाषाक माधुर्यक प्रचूरता अछि तँ दोसर दिस शहरीकरणक अवसाद ओ युगीन त्रासदी सभक चित्रण सेहो भेल अछि। अनेक विसंगति ओ प्रतिकूलताक अछैतो बुद्धिनाथजीकेँ जीवनसँ अत्यधिक लगाव छनि। ओ जीवनक निराशाकेँ आशामे बदलय चाहैत छथि, 'अच्छत चानन यथा भाग नहि' रहलाक अछैतो, रौदी-दाहीक मारल धरापुत्रक असोथकित विश्वास'केँ पुनः जगबय चाहैत छथि। मिथिलाक सामान्य-जनक संघर्ष आ मैथिल-अस्मिताकेँ बिसरय नहि छथि, ओ बेर-बेर अपन गाम-ठामक लोक केँ चेथरा भेल व्यवस्थाक प्रति चेतबैत छथि जे मिथिलाक दूभि काँटक बनमे छटपटा रहल अछि, ई अनठयबाक समय नहि अछि। नवगीतकार लोकनि सौन्दर्य आ प्रेमक भावमे भसियेबाक प्रति सामान्यतः साकाक्ष रहैत छथि धरि बुद्धिनाथजी नवगीतमे सांस्कृतिक दृष्टि आ सामाजिक चेतनाक संगहि प्रेम-भावनाकेँ सेहो प्रधान स्थान देलनि अछि। पंचतारा होटलमे ग्राम्य जीवन मोन पड़ब किंवा साँझक दीप जकाँ कोनो नाम मनमे बरब इएह प्रेम-भावना थिक। बुद्धिनाथ मिश्रक गीतिकाव्य सभमें शिल्पगत अनेक अभिनव प्रयोग भेल अछि।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' (1950)-जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल मूलतः गीतकार छथि। विगत शताब्दीक उत्तरार्द्धमे मैथिली गीतिकेँ नव आँखि-पाँखि देबयबला गीतकारमे हिनक नाम अग्रगण्य अछि। हिनक किछु गीत विभिन्न गायक लोकनि द्वारा रेकर्ड सेहो कयल गेल जे अत्यधिक लोकप्रिय भेल। **'तोरा अँगनामे'** आ **'गीत गंगा'** हिनक दू गोट गीत-संग्रह प्रकाशित छनि तथा एक गजल संग्रह **'गजल गंगा'** प्रकाशित छनि।

अनिल'क गीतिमे ग्राम्य-जीवन, ग्राम्य-अनुभवक चित्रण भेल अछि जाहि लेल ग्रामीण बिम्ब, प्रतीक ओ शब्दावलीक विलक्षण प्रयोग रचनाकार कयलनि अछि। गामक अभावग्रस्त जीवन और विसंगति, ओतुका वैयक्तिक, सामाजिक ओ राजनीतिक संदर्भ हिनक गीतिमे विस्तार पओलक अछि। निराशा ओ असफलताक स्थानपर हिनक गीतमे जिजीवषा, संघर्ष ओ उत्साह अधिक अछि। ओ अपन गीतक माध्यमे गामक पवित्रता, निश्छलता ओ सादगीकेँ जगबय चाहैत छथि। समाजकेँ बँटबाक राजनीतिक षडयंत्रक विरुद्ध स्वर मुखरित करैत छथि। लोककेँ व्यवस्थाक फर्जीवाड़ाक प्रति चेतबैत छथि। जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, अपन गीति-रचनाक माध्यमे समकालीन परिवेश ओ समस्याक चित्रणमे तथा सामान्यजनक चिन्ता ओ चिन्तनकेँ स्वर देबामे सफल भेलाह अछि।

चन्द्रमणि (1952)-डॉ. चन्द्रमणि झा एक अति प्रसिद्ध गायक आ गीतकार छथि। विगत शताब्दीक उत्तरार्द्धमे रवीन्द्रनाथ ठाकुरक पश्चात् एक गीतकारक रूपमे जतबा लोकप्रियता हिनका भेटलनि ततबा प्रायः कोनो आन गीतकारकेँ नहि भेटलनि। चन्द्रमणि मधुपक गीति-रचनासँ प्रभावित भेलाह आ भक्ति ओ शृंगार विषयक रचनासँ अपन गीति-यात्रा आरम्भ कयलनि। मुदा, कालक्रमे हिनक गीतमे नव भाव, नवीन भाषा, नव भंगिमा ओ त्वराक समावेश होइत गेल। **'रहि जो हमरे गाम'**, **गीताम्बुज'** आ **अनामिका** हिनक तीन गोट गीत

संग्रह प्रकाशित छनि । भाव, भाषा ओ अर्थवत्ताक स्तरपर एहि संग्रहक रचना सभ अपन फराक पहिचान बनओने अछि।

चन्द्रमणिक गीतमे विषयक वैविध्य ओ भाषाक प्राञ्जलता उल्लेखनीय अछि। एक दिस जतय हिनक शृंगारिक ओ भक्ति विषयक रचना खूब लोकप्रिय भेल तँ दोसर दिस एकटा संवेदनशील साहित्यकारक रूपमे हिनक गीत सामाजिक सरोकारकेँ सेहो रूपायित करबामे सफल प्रतीत होइत अछि । व्यक्ति चेतना-संपन्न हिनक किछु गीत जीवनक एकान्त-जन्य विषाद ओ द्वन्द्वक मार्मिक चित्रण करैत अछि । तहिना युगक पीड़ा, समयक यंत्रणा ओ मानवीय मूल्यक ह्रासकेँ रेखांकित करबाक लेल ई साधल बिम्ब ओ सुपरिचित प्रतीकक उपयोग करैत छथि। हिनक गीतक प्रेमानुभूति अपन सांकेतिक भाषाक कारणे मर्यादाक पार नहि करैत अछि। युगक अन्तर्विरोधपर चन्द्रमणि अपन गीतमे साधल चोट करैत छथि। चन्द्रमणि युग-जीवनक गायक रूपमे एक कुशल गीतिकार छथि।

ऊपर उल्लिखित गीतिकारक अतिरिक्त एहन अनेक गीतिकार छथि जनिक आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यक विकासमे अप्रतिम योगदान छनि। एहने गीतकार मध्य- श्यामानन्द झा, बदरीनाथ झा, सुरेन्द्र झा ‘सुमन’, तंत्रनाथ झा, मणिपद्म, यात्री, काञ्चीनाथ झा ‘किरण’, राधाकृष्ण बहेड़, चन्द्रनाथ मिश्र अमर, डॉ. महेन्द्र, रमानाथ मिश्र मिहिर, रामदेव झा, इन्द्रकान्त झा, गौरीकान्त चौधरी कान्त, चन्द्रभानु सिंह, डॉ. धीरेन्द्र, विश्वनाथ झा “विषपायी”, विद्यानाथ झा ‘विदित’, शेफालिका वर्मा, रामचैतन्य ‘धीरज’, कालीकान्त ‘बुच’, रमानन्द रेणु, सोमदेव, जगदीप नारायण दीपक, केदारनाथ लाभ, रामचरित्र पाण्डेय अणु, बल्लभ झा, तारानन्द तरुण, डॉ. कमलकान्त झा, मन्त्रेश्वर झा, हरिश्चन्द्र हरित, देवशंकर नवीन, फूलचन्द्र झा “प्रवीण”, चन्द्रमोहन पड़बा, रामलोचन ठाकुर, रमेश, आर.के. रमण, कलानन्द भट्ट, विजयचन्द्र झा, रेवतीरमण झा, बाबा बैद्यनाथ, जगदीश मंडल, अशोक कुमार मेहता, अजित आजाद, कमल मोहन चुन्नू, शंकरदेव झा, अमलेन्दु शेखर पाठक, दिलीप कुमार झा ‘लूटन’, शिवकुमार झा ’टिल्लू’, स्वयंप्रभा झा, दीपनारायण विद्यार्थी, गणेश झा, सतीश साजन, विजय इस्सर, किसलय कृष्ण, रानी झा, इन्द्रकान्त झा 'इन्द्र', मैथिल प्रशान्त, अमित पाठक, अमित मिश्र, अक्षय आनन्द आदिक नाम प्रमुखतासँ लेल जा सकैत अछि।

किरणक **'किरण कवितावली'** सुधांशु शेखर चौधरीक- **'गजल ओ गीत'** 'अमर'क **'विविध गीत'**, विषपायी'क **'निशीथिनी'**, दीपक'क **'आरती'**, गौरीकान्त चौधरी 'कान्त'क **'वंशी क्यो टेरय'**, विभूति आनन्दक **'उठा रहल घोघ तिमिर'**, आ ‘**झूमि रहल पाथर मन'** शेफालिका वर्माक **'विप्रलंभ'**, धीरेन्द्रक **'करुणा भरल ई गीत हमर'**, विलट पासवान 'विहंगम'क **'भैरवी'**, चन्द्रभानु सिंहक **'के ई गीत अलापै छै"** कालीकान्त झा 'बुच'क **"कलानिधि',** रामलोचन ठाकुरक **'अपूर्वा',** बैजू मिश्रक **' मुक्ति संग्राम'** रमेशक **'नागफेनी'**, देवशंकर नवीनक **'चानन-काजर'**, नरेश कुमार विकल'क **'अरिपन'**, रामदेव 'भावुक'क **'हंस के जीभ तरासल छइ'** तथा **हँसैत भावुक'**, डॉ. कमलकान्त झाक **'मुक्तक गीत कवित्त'**, डॉ. इन्द्रकान्त झा'क **'पाहुन बिलमि जाउ'**, नवलजीक **'असमंजसमे',** तारानन्द वियोगीक **"अपन युद्धक साक्ष्य"** फूलचन्द्र झा 'प्रवीण'क **"आयल नवल प्रभात", "बसन्तक बजनिआ"** आ **"हमरा मोनक खजन चिड़ैया"** सतीश साजनक **'सजना सिनेहिया'** आदि किछु

अन्य प्रमुख प्रकाशित पद्य-संग्रह थिक जाहिमे संकलित गीति-रचना सभ आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यक धरोहर थिक।

प्राचीनता ओ नवीनताक सन्धिस्थलपर ठाढ़ सुमनजीक गीतिमे भारतीय संस्कृतिक प्रति अटूट श्रद्धा ओ जीवनक प्रति आस्थाक पाण्डित्यपूर्ण चित्रण भेल अछि। किरणजी प्रगतिवादी काव्यधाराक रचनाकार छथि आ तकर छाप हिनक गीत सभपर पड़ल अछि। हिनक गीतक वैचारिक स्पष्टता तथा प्रौढ़ता, चिन्तनक मौलिकता आ भाषाक कोमलता उल्लेखनीय अछि। दलित-पीड़ितक पक्षधरता हिनक रचनाकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। किरणजीक रचनामे सहज-सरल भाषामे जीवनक विविध पक्षक यथार्थ चित्रण भेल अछि। पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' प्रगतिशील काव्यधाराक एक प्रमुख व्यंग्यकार छथि। हिनक गीतिमे सेहो व्यंग्यात्मकता भेटैत अछि। सामाजिक विषमता, प्राकृतिक रमणीयता आ युगक स्वार्थपरता पर पं. अमर अपन गीतिमे चोट करैत छथि। भक्ति ओ परम्परा-मूल्यबोधक हिनक किछु रचना सेहो सर्वथा नवीन रीतिएँ आकार लेने अछि। प्रगतिवादी लेखनक एक अन्य महत्वपूर्ण रचनाकार रामचरित्र पाण्डेय 'अणु' अपन गीतिमे प्रकृतिक मानवीकरण करैत ओहिमे जीवन-सौन्दर्य ओ जिजीविषाक ओ संघर्षक चित्रण कयलनि अछि। जगदीप नारायण दीपककेर काव्यसंग्रह **'आरती'** क गीति सभमे विभिन्न रसक आ आ भावक चित्रण भेल अछि। हिनक गीतिमे जन-जीवनक सुख-दुख, आशा-आकांक्षाक बहुरंगी चित्र भेटैत अछि। केदारनाथ लाभ आ चन्द्रभानु सिंह आधुनिक गीतकार मध्य चर्चित नाम छथि। हिनक गीतक भाषा ओ लयात्मकता आकर्षक होइत अछि। आशा-निराशा, आस्था-असंतोष आ मिथिलाक आँचलिकताक सौन्दर्यबोध हिनका लोकनिक गीतिक प्रमुख विशिष्टता थिक। कालीकान्त झा बुचक रचना सामान्य जनक जीवन व्याकरण सहज वृतान्त प्रस्तुत करैत अछि। विद्यानाथ झा विदित, रमानन्द रेणु, विलट पासवान विहंगम आ धीरेन्द्रक अधिकांश गीति अनुभूति प्रधान अछि। समाजक विद्रूपताक चित्रण, दलित वर्गक पीड़ा, प्रकृति चित्रण आ ग्राम्य जीवनक विविध आयामक चित्रण हिनका लोकनिक रचनाक विशिष्टता थिक। कोमल भावना,भावुकता, शब्दक लालित्य, भाषाक प्रांजलता, आदर्शक प्रेरणा एवं भविष्यक नव-निर्माणक कामना हिनक गीतिक प्रमुख स्वर थिकनि।

परवर्ती पीढीक गीतकार मध्य बिभूति आनन्द, फूलचन्द्र झा प्रवीण, तारानन्द वियोगी, रामचैतन्य धीरज, अशोक मेहता, अरविन्द अक्कू आदि प्रमुख छथि। विभूति आनन्दक गीति रचनामे एकटा विशेष प्रकारक सौन्दर्य चेतना अभरैत अछि जे रागात्मक ताना-बाना बुनैत अछि। मानव-जीवनक घुटन, पीड़ा, रागात्मक संबंधक अभाव, निरर्थकता आदि हिनक गीतिक मुख्य विषय-वस्तु थिक। तहिना फूलचन्द्र झा 'प्रवीण' आ अशोक मेहताक गीतिमे आधुनिक जीवनक पीड़ा, युगीन संत्रास आ जीवनक दुविधाकेँ मुख्यतः रेखांकित कयल गेल अछि। फूलचन्द्र झा 'प्रवीण'क आरम्भिक गीति सभ मुख्यतः राष्ट्रिय भावना आ शृंगारिकता भेटैत अछि मुदा पश्चात् राजनीतिक प्रपंच ओ व्यवस्थागत विसंगतिपर ई लोकनि अपन गीतिक माध्यमे सेहो प्रहार करैत छथि। तारानन्द वियोगी, रमेश, देवशंकर नवीन, कमलमोहन चुन्नू, अजित आजाद, हरिश्चन्द्र झा हरित आदिक गीतिमे मुख्यतः सामाजिक विसंगति ओ युयुत्सा आ आक्रोशबोध प्रकट भेल अछि। हिनका लोकनि गीति सहज ओ मुखर अछि। मनुष्यक देखावटी जीवन ओ समाजमे व्याप्त रूढ़ि ओ मिथ्याचारक प्रति ई लोकनि खास साकांक्ष छथि। डॉ. कमल मोहन चुन्नू एक गंभीर गीतकार छथि। हिनक

गीति अपन युगक पीड़ाक बयान करैत अछि। सामान्य लोकक भाषामे गूढ़सँ गूढ़ बात कहि देब हिनक विशिष्टता छनि। एहि पीढ़ीक गीतकारमे मध्यवर्गक जीवन आ ओकर सोच बेर-बेर सोझाँ अबैत अछि।

डॉ. रामचैतन्य 'धीरज' एहि पीढ़ीक एक महत्वपूर्ण गीतिकार छथि। हिनक एकमात्र संग्रह **'द्विपर्णा'** प्रकाशित अछि। हिनक गीतिमे सामाजिक विसंगति व्यवस्थागत विद्रूपताक मुख्यतः वर्णन भेल अछि। धीरजक गीतक लोकवादी चेतना समाजवादी विचारधारासँ प्रभावित अछि। भाव-प्रवणता, कोमल-कल्पनाक संग युग-यथार्थक सरल अभिव्यक्ति आ जीवनक नीक-बेजाय पक्षपर चिन्तन हिनक गीतिक वैशिष्ट्य थिक।

डॉ. अरविन्द अक्कू मूलतः नाटककार छथि आ तेँ हिनक अधिकांश रचना मंचोपयोगी अछि। कहू तऽ गाबि सुनाबी, चानीक रूपैया आ घुरि आउ गाम हिनक गीत-संग्रह प्रकाशित छनि। हिनक कतिपय गीत लोकप्रियताक शिखर धरि पहुँचल अछि। गीतकार अपन रचनामे प्रेमक कोमल संवेदनाक संग मानव-मनोभावक बहुरंगी विस्तारकेँ आकार दैत छथि। स्त्री-पुरुषक संबंध, तदजन्य अनुराग, उपराग, हिनक गीतिमे मुख्यतः चित्रित भेल अछि। सहज मानवीय आवेग ओ भावनाक तीव्रता संगहि अक्कू ग्रामीण परिवेशक बीच अपन अंतरंगता स्थापित करैत छथि तथा ओकरा गीतात्मक अभिव्यक्ति दैत छथि। हिनक गीतिक शब्दाबली ओ अंतरलय उल्लेखनीय अछि। हिनक किछु रचनामे दार्शनिक दृष्टिकोण ओ आत्मान्वेषणक स्वर भेटैत अछि।

अमित पाठक नव्यतम पीढ़ीक गीतकार छथि। प्रेम आ शृंगार हिनक मुख्य वर्ण्य विषय छनि। अपन पहिल संग्रह **"राग-उपराग'**मे ई विविध प्रेम ओ शृंगारिक प्रतीकक माध्यमे जीवनक विविध पक्षपर दृष्टिपात करैत छथि। एवं प्रकार आधुनिक मैथिली गीतिकारक एक सुदीर्घ शृंखला अछि जे विगत शताब्दीमे मैथिली गीतिकेँ नव-स्वर, नवीन-कलेवर प्रदान कयलनि अथवा एखनहु कऽ रहल छथि।

*****

[1] कविवर जीवन झा रचनावली, सं- श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', डॉ. रामदेव झा, मैथिली अकादमी, पटना,1980.
[2] मैथिली साहित्यक इतिहास, प्रो. मायानन्द मिश्र, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, 2014, पृ-206.
[3] नवीन मैथिली कविता, रमानन्द झा 'रमण', मैथिली अकादमी, पटना, पृ.- 159.
[4] सीताराम झा(मोनोग्राफ), डॉ. भीमनाथ झा, साहित्य अकादेमी, दिल्ली-1983.
[5] भुवन-भारती, बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', पृ.-6.
[6] उपर्युक्त, पृ.-1.
7 मधुपजीक बीछल बेरायल कविता, संकलन.- फूलचन्द्र झा 'प्रवीण' संपादक- चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली 2008, पृ.-15-16.
[8] उपर्युक्त, पृ.-139.
[9] ईशनाथ झा, वेदनाथ झा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1997, पृ.-48.
[10] मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991, पृ.-48-204.

[11] आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास, ले.-अनु.- देवकान्त झा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2017, पृ-71.

12 पूर्वकोक्त-10, पृ.-210.

13 आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास, ले.-अनु.- देवकान्त झा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2017, पृ-117.

उपसंहार

पूर्वक अध्याय सभमे मैथिली गीतिकाव्य खास कऽ आधुनिक मैथिली गीतिकाव्यक उद्भव, विकास तथा ओकर प्रवृत्ति इत्यादिक विशद विवेचना कयल गेल अछि। एहि विवेचनाक आधारपर निष्कर्षतः पाओल अछि जे गीतिकाव्यक उद्भवक सूत्र आजुक सभ्य जातिक आदिकालीन सभ्यतामे भेटैत अछि। विश्वक कोन-कोनमे वास करैत आदिवासी समुदायक संस्कारमे आइयो नृत्य-गीत तथा ताहिसँ सम्बद्ध पारम्परिक संगीतक जे चलनि भेटैत अछि, वास्तवमे से गीतिकाव्यकेँ आदिम युगक प्रथम साहित्यिक विधा-रूपमे पुष्टि करैत अछि आ एही आदिकालीन सामुहिक नृत्य-गीतक भाषागत अभिव्यंजना कालान्तरमे गीतिकाव्यक रूपमे विकसित होइत गेल अछि।

गीति-परम्पराक मूल रूप नृत्यमे प्रयुक्त गीत छल। विकासक क्रममे गीतक संग नृत्यक अनिवार्यता समाप्त होइत गेल। गीत नृत्यसँ मुक्त होइत गेल आ समवेत गायन (कोरस) आ समूहगानक परम्परा विकसित भेल। एहि समूहगानक आरम्भ 'टेक पद्धति'सँ भेल। आरम्भिक लोककाव्य, गीतिकाव्य अथवा गाथाकाव्यक रचना सुविचारित नहि होइत छल, बल्कि आकस्मिक होइत छल। कोनो अवसर विशेषपर, गबैया उपस्थित श्रोता समाजक बीच स्वतःस्फूर्त, तत्काल रचित रचना गबैत छलाह। एहि प्रकार ताहि समयमे कविताक जे विभिन्न मौखिक संस्करण तैयार होइत छल, से सुनियोजित वा सुविचारित नहि। एहि रचना सभक प्रारम्भ तथा समापनक कोनो विधान निश्चित नहि छल। गायक स्वकल्पित किंवा कोनो आन गबैयाक मुँहे सुनल-सिखल रचनाकेँ अपना हिसाबे जोड़ि-तोड़ि कऽ गबैत छलाह आ तेँ एहि काव्य सभमे कोनो विषयगत मौलिकता सेहो नहि रहैत छल।

काव्यक आने-आन विधा जकाँ गीतिकाव्यक सेहो कोनो सुनिश्चित आ सर्वमान्य परिभाषा नहि भेटैत अछि। आधुनिक कालमे विद्वान लोकनि, मुक्तक काव्यक दू भेद कहलनि अछि- पाठ्य आओर गेय। इएह गेय मुक्तक वस्तुतः गीतिकाव्य थिक। प्राचीन मुक्तक काव्य विशेषतः शृंगारिक तथा वीर रस प्रधान मुक्तकमे अनुभूतिक सघनता ओ तीव्र भावात्मकता आदि गीतिकाव्यक वैशिष्ट्यक समावेश भेटैत अछि। अतः आधुनिक गीतिकाव्य, वस्तुतः प्राचीन मुक्तक-परम्पराक विकसित स्वरूप थिक। वस्तुतः जीवन-जगतसँ प्राप्त अनुभूतिक क्षिप्रतम प्रारूपमे तिव्रतम ओ लयात्मक अभिव्यक्ति गीतिकाव्य थिक।

भारतीय वाङ्मयमे गीतिकाव्यक उदय वैदिक साहित्यसँ मानल जाइत अछि। वैदिक ऋचा भारतीय गीतिकाव्य परम्पराक समृद्ध आ आदिम कोश थिक। गीतिकाव्यक लक्षण, विशेषता ओ प्रभेदक दृष्टिएँ वैदिक

काव्य यथा ऋग्वेद, सामवेद आ अथर्ववेदक सूक्त सभ वैदिक युगक गीतिकाव्यक अंतर्गत परिगणित होइत अछि । अनेक पाश्चात्य विद्वान लोकनि ऋग्वेदक कतिपय ऋचा सभक काव्यतत्वक जे उद्घाटन कयलनि अछि ताहि आधारपर एहिमे गीति-तत्वक सहज परिदर्शन सम्भव होइत अछि । पुराण साहित्यक मध्य गीतिकाव्यक दृष्टिसँ श्रीमद्भागवत पुराण अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रन्थ अछि । एहिमे श्रीकृष्णक लीलावर्णन विषयक पद सभ लालित्य ओ माधुर्य भावसँ परिपूर्ण अछि आ एहि पदसभमे गीतात्मकता सहज-स्वाभाविक रूपेँ आबि गेल अछि । एहि ग्रन्थमे विविध लीला-प्रसंगकेँ 'गीत' यथा-वेणु-गीत, गोपी-गीत, युगल-गीत, पिंगला-गीत, भिक्षु-गीत, ऐल-गीत आदि कहल गेल अछि ।

प्राचीन संस्कृत नाट्य-साहित्यमे गीति-योजनाक अन्तर्गत गीतिकाव्यक उत्कृष्ट प्रयोग भेल अछि । भारतीय गीतिकाव्यक विकास-परम्परामे एहि गेय पद सभक महत्वपूर्ण स्थान अछि । नाटकमे प्रयुक्त एहन पद सभ मुख्यतः संगीत प्रधान अछि, मुदा एहि पद सभमे अनेक एहन पद अछि जे अनुभूतिक सघनताक कारणे आधुनिक गीतिकाव्यक कोटिमे परिगणित होइत अछि । जयदेवक गीतगोविन्दमे भक्तिरस आओर शृंगाररसक अद्भुत समायोजन अछि । जयदेवक भक्ति-सिद्धान्तसँ प्रेरणा पाबि एकदिस जतय कृष्ण-भक्तिक धारा प्रबल भेल ओतहि हुनक राधा-कृष्ण सामान्य नायक-नायिकाक रूपमे काव्यजगतमे अवतीर्ण भेलाह ।

मिथिलाक सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवनमे गीत-संगीतक परंपरा हजारो वर्षसँ अविच्छिन्न रूपेँ प्रवहमान अछि । मैथिली साहित्यक विकासमे गीति-साहित्यक सर्वाधिक योगदान अछि । कहबाक प्रयोजन नहि जे आदिकालसँ आधुनिक काल धरि मैथिली साहित्येतिहास गीतिमय रहल अछि । विविध विषयक अजस्र मैथिली लोकगीत ओ महाकवि विद्यापति रचित असंख्य पद मैथिली गीति-साहित्यक प्राचीनता ओ समृद्धिक सर्वोत्तम उदाहरण थिक ।

विविध प्रकारक मैथिली लोकगीतक अपन विशिष्ट गायन शैली अछि जकरा भास कहल जाइत अछि । गायन पद्धतिक रूपमे भास, रागक समकक्ष मानल जाइत अछि । मैथिलीक पारम्परिक गीति-साहित्यमे मिथिलाक ग्राम्य-जीवनक सहज-सरल मनोभावक तीव्र अभिव्यक्ति भेल अछि । मैथिली साहित्येतिहासमे गीतिकाव्यक परम्परा कमसँ कम 1200 वर्ष प्राचीन प्रतीत होइत अछि । प्राकृत तथा प्राकृत-अपभ्रंश एहि परम्पराक आदिम स्रोत थिक तथा एकर प्राचीनतम स्वरूप 'चर्यापद', 'प्राकृत पैंगलम', ज्योतिरीश्वरक नाटक 'धूर्तसमागम' तथा आधुनिक भारतीय भाषाक प्राचीनतम गद्यग्रंथ 'वर्णरत्नाकर' आदिमे उद्धृत अथवा वर्णित अछि । चर्यापदकेँ मैथिली गीति-साहित्यक प्रारम्भिक रचना मानल जाइत अछि । मध्यकालमे लोकभाषामे मुख्यतः गीतेक रचना भेल । एहि युगमे महाकवि विद्यापति तथा हिनक परवर्त्ती कवि लोकनिक विभिन्न भाव-भूमिपर रचित गीत मैथिली साहित्यक अमूल्य धरोहर थिक । विद्यापति 'देसिल वयना'मे जे पदावलीक रचना कयलनि तकर छन्द, भास, धुनि, स्वर तथा शब्द-विन्यास आदि लोकजीवनसँ अनुप्राणित छल । हिनक रचित पदावली वस्तुतः तत्कालीन समाजक दर्पण थिक । विद्यापति रचित गीत समाजक प्रत्येक वर्गमे प्रतिष्ठित भेल तथा परम्परात एवं संस्कृतनिष्ठ साहित्यक प्रति स्थापित लोक-मान्यताकेँ सेहो ध्वस्त कयलक । ई गीत सभ मात्र मिथिले नहि अपितु सम्पूर्ण पूर्वांचलमे करीब छओ सय वर्ष धरि अपन प्रभाव बनओने रहल, जाहिसँ विद्यापतिक अतुलनीय काव्य-प्रतिभाक अनुमान सेहो सहजहिँ लगाओल जा सकैत अछि ।

मैथिली गीति-साहित्यक क्षेत्रमे विद्यापतिक प्रभाव बीसम शताब्दीक मध्य धरि स्पष्ट देखल जा सकैत अछि । उनैसम-बीसम शताब्दीमे कवीश्वर चन्दाझा मैथिली साहित्यक आधुनिक कालक प्रणेता भेलाह । हिनकहि द्वारा कयल गेल गीत-रचनाक संग मैथिलीक आधुनिक गीत-परम्पराक आरम्भ होइत अछि। एहि युगमे विभिन्न सामाजिक आन्दोलनक प्रभाव अन्यान्य भाषा-साहित्ये जकाँ मैथिली साहित्यपर सेहो पड़ल आ एहि साहित्यिक नवजागरणक सूत्रधारक रूपमे कवीश्वर चन्दाझा अपन गीत सभमे समाजक यथार्थ आ लोक अनुभूतिक सहज अभिव्यक्तिकेँ समाहित कयलनि। पछाति मैथिलीक आधुनिक गीत-परम्पराकेँ आगाँ बढ़यबामे अनेक गीतकार-कवि लोकनि अपन उल्लेखनीय योगदान देलनि।

प्राचीन ओ मध्यकालीन युगमे जहिना मैथिली गीतिकाव्य अपन चारूकातक समाजकेँ आलोड़ित-आनन्दित करैत रहल तहिना आधुनिको कालमे मैथिली गीति मानवमनकेँ स्पन्दित-आनन्दित कऽ रहल अछि आ ताहि लेल अपन स्वर, स्वरूप ओ त्वरामे सेहो निरंतर परिवर्त्तन-परिवर्द्धन करैत रहल अछि। ज्ञान-विज्ञानक एहि युगमे जखन विश्वमानवता ओ विश्वग्रामक कल्पना कयल जा रहल अछि, मैथिली गीतिकाव्य सेहो जन-सामान्यक जीवन-यथार्थक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यमे अपनाकेँ अनुकुलित करबासँ नहि चुकल अछि । राष्ट्रवाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद ओ यथार्थवाद आदि प्रवृतिकेँ अँगेजि विश्व-समुदायक सुरसँ सुर मिला रहल अछि।

एहि युगमे गीतिकाव्यक माध्यमे समाजक मध्यवित्तक अन्तर्द्वन्द्व ओ संघर्षक कथा कहल जा रहल अछि संगहि विभिन्न सामाजिक-राजनीतिक समस्याक समाधान सेहो तकवाक प्रयास कयल जा रहल अछि जाहिसँ सामान्य जन-जीवनक आशा-अभिलाषा पूर्ण हो। अतः कहि सकैत छी जे आधुनिक मैथिली गीतिकाव्य मात्र जन-मनोरंजनार्थ नहि अपितु सामाजिक-सांस्कृतिक उन्नयनार्थ सेहो लिखल जा रहल अछि । कहबाक प्रयोजन नहि जे एहि द्रुतगामी ओ ज्ञान-विज्ञानक नवयुगमे एकर प्रयोजन ओ महत्व मानव सभ्यतामे सर्वाधिक भऽ गेल अछि

मैथिलीक आधुनिक गीतिकाव्य, मनुष्यक अन्यतम अनुभूतिक सहज अभिव्यक्ति थिक। जतय प्राचीन एवं मध्ययुगमे मैथिली गीतिकाव्य संगीतशास्त्रसँ आबद्ध छल ततय आधुनिक मैथिली गीतिकाव्य संगीत-शास्त्रीय जटिलतासँ मुक्त अछि । वस्तुतः आधुनिक मैथिली गीतिकाव्य कविक तीव्रतम भावाभिव्यक्ति एवं सहज-सरल संगीतात्मकतासँ अनुप्राणित अछि । नवगीतकार लोकनि पारम्परिक छन्दशास्त्र ओ सांगितिक सूत्रसँ फराक मात्र लयात्मकता ओ प्रवाहपूर्ण गेयात्मकताकेँ प्राथमिकता देलनि।

आधुनिक मैथिली गीत अपन विषयगत ओ शिल्पगत अभिनवता ओ प्रयोगधर्मिताक कारणेँ युगीन विषयवस्तुकेँ, जीवनक जटिलताकेँ आ व्यवहारगत विसंगतिकेँ सहज ओ लोकप्रिय ढ़ंगसँ सम्प्रेषित करबामे सक्षम भेल अछि । युगबोध, बौद्धिक चैतन्य, सांस्कृतिक निष्ठा, राष्ट्रीय चेतना, समष्टिमूलक आ मूल्यबोधक विशेषता आधुनिक मैथिली गीतकेँ मानवीय संवेदनशीलताक संरक्षक बना देलक अछि।

सामान्यतः ई मानल जाइत अछि जे आजुक वैज्ञानिक और औद्योगिक युगमे गीतिकाव्यक कोनो विशेष प्रासंगिकता शेष नहि अछि कारण ई जटिल अनुभूति ओ घनीभूत बौद्धिकताक युग थीक जाहिमे गीतिक रागात्मकता,सहजता, तथा लयात्मकताक लेल कोनो अवकाश नहि अछि। मुदा, ई एकटा भ्रान्त धारणा अछि। वास्तविकता अछि जे एहि बौद्धिक ओ यांत्रिक युगमे रागात्मक अनुभूतिक आर अधिक आवश्यकता अछि।

अन्यथा मानवतापर संकट उत्पन्न होयत। मानवताक संरक्षण हेतु वैयक्तिक रागात्मकता आ बौद्धिकता संतुलन परम आवश्यक अछि।

आइ ई मानबामे कोनो असोकर्य नहि जे मानव पूर्वसँ अधिक बौद्धिक भेल अछि मुदा इहो सत्य जे ओकरा जीवनसँ रागात्मकता लोप नहि भेलैक अछि। तखन मानव-जीवनमे रागात्मकताक क्षरण अवश्य भेलैक अछि आ तेँ समाजमे मनुष्यताक स्खलन सेहो देखबामे अबैत अछि।

बौद्धिक ओ वैज्ञानिक विकासक मूल उद्देश्य सेहो मानवताक रक्षा अछि अा तेँ समाजमे चाहे कतबो बौद्धिकता ओ वैज्ञानिकताक प्रसार हो ओकर केन्द्रमे मानवता अवश्य रहत आ जाधरि मानवता कायम रहत ताधरि मनुष्यक जीवनसँ रागात्मकताक मेटायब असंभव अछि। जँ आइ एहन आशंका उत्पन्न भऽ रहल अछि जे विकासक दौड़मे जीवनसँ मानवता कतहु पाँछा छुटल जा रहल अछि तँ एहनामे मानवजीवनमे रागात्मकता कायम रखबा लेल गीतिकाव्यक अधिकाधिक रचना ओ प्रसार अधिक प्रासंगिक भऽ जाइत अछि।

सभ्यताक संतुलित विकास हेतु आवश्यक अछि जे समाजमे बौद्धिकता ओ रागात्मकताक समान रूपेँ विकास हो तखनहि मानवक सर्वांगीण विकास सम्भव होयत। गीतिकाव्य रागात्मकताक प्रसार ओ जीवनमे स्थपनाक सर्वोत्तम विधा मानल जाइत अछि। अतः आवश्यकता अछि जे गीतिकार लोकनि युग-जीवनक जटिलता ओ समाजक बौद्धिक स्तरकेँ ध्यानमे रखैत गीतिरचना करथि। जाहिसँ कला आ विज्ञानक बीच तादात्म्य स्थापित भऽ सकय। संतोषक विषय अछि जे मैथिली नवगीत एक सीमाधरि एहि कसौटीपर ठाढ़ अछि। तखन आवश्यकता अछि जे गीतिकाव्यक प्रासंगिकता भविष्यमे सेहो बचल रहय, गीतिकाव्य जीवन-जगत विकासक संग विकसित हुअय ताहि हेतु निरन्तर एकर स्वर ओ स्वरूपक समीक्षा होइत रहबाक चाही।

*****

सहायक ग्रन्थ सूचीः-

1. बाङ्ला साहित्य का इतिहास, डॉ. सुकुमार सेन, साहित्य अकादेमी।
2. गीतिकाव्य, डॉ. रामखेलावन पाण्डेय ।
3. गीतिकाव्य का विकास, पं. लीलाधर त्रिपाठी 'प्रवासी', हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।
4. आधुनिक गीतिकाव्य, डॉ. उमाशंकर तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997।
5. आधुनिक गीतिकाव्य, सच्चिदानन्द तिवारी ।
6. आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य का स्वरूप और विकास, डॉ. आशा किशोर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1971।
7. संस्कृत गीति-काव्य का विकास, प्रकाशन प्रतिष्ठान, मेरठ।
8. बीसवीं सदी का हिन्दी साहित्य, सं- डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, भारतीय ज्ञानपीठ, 2012।
9. शिखरणी, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, 2005 ।
10. विद्यापति,डॉ. शिवप्रसाद सिंह।
11. आधुनिक हिन्दी कविता में गीति-तत्त्व, डॉ. सच्चिदानन्द तिवारी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
12. विद्यापति ठाकुरेर पदावली, सं.- नगेन्द्रनाथगुप्त, बंगीय साहित्य परिषद।
13. वैष्णव पद सञ्चयन, सं.- विष्णुपद पाण्डा, बसुमती कॉर्पोरेशन लि., कोलकाता।
14. मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991।
15. मिथिलातत्वविमर्श, म.म. परमेश्वरझा, मैथिलीअकादमीपटना।
16. वर्णरत्नाकर, सं.-प्रो. आनन्द मिश्र, पं. गोविन्द झा, मैथिली अकादमी पटना1980।
17. ब्रजबोली साहित्य, डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1974।
18. मैथिली साहित्यक इतिहास-डॉ. जयकान्त मिश्र, साहित्य अकादेमी, 1988।
19. मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. बालगोविन्द झा 'व्यथित', मिथिलांचल प्रकाशन, दरभंगा, 1988।
20. मैथिली साहित्यक इतिहास, प्रो. मायानन्द मिश्र, किशुन संकल्प लोक, सुपौल।
21. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. दिनेश कुमार झा, मैथिली अकादमी पटना, 1979।
22. मैथिली साहित्यक रूपरेखा, सं.-डॉ. वासुकीनाथ झा, चेतना समिति, पटना।
23. मैथिली भाषा साहित्य ; बीसम शताब्दी, प्रेमशंकर सिंह, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली, 2009।
24. उमापति, डॉ. रामदेवझा, मैथिली अकादमी पटना।
25. मिथिलाक लोक साहित्यक भूमिका, डॉ. जयकान्त मिश्र (मै. अ.-डॉ. रेवती मिश्र), शेखर प्रकाशन, पटना, 2011।
26. मिथिला-संगीतक भास पद्धति, डॉ. कविता कुमारी, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर, 2013।
27. युग प्रवर्तक कवीश्वर चन्दा झा, सं.- रामलोचन ठाकुर, अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, 2007।
28. चन्द्र-रचनावली, सं-डॉ. विश्वेश्वर मिश्र, मैथिली अकादमी, पटना, 1981।

29. मैथिली गीत रत्नावली, सं- बदरीनाथ झा, 1961।
30. मैथिली गीतिकाव्यक उद्भव ओ विकास, डॉ. नन्द किशोर मिश्र, इन्दु प्रकाशन, भुसकौल, दरभंगा, 1990।
31. मैथिली गीत साहित्यक विकास आ परम्परा- प्रो. वीणा ठाकुर,मैथिलीअकादमी, पटना, 2012।
32. काव्यशास्त्रक रूपरेखा, डॉ. धीरेन्द्र, जेनरल बुक एजेन्सी, पटना, 1997।
33. नवीन मैथिली कविता, डॉ. रमानन्द झा 'रमण', मैथिली अकादमी, पटना, 1981।
34. मैथिली नऽव कविता, डॉ. रमानन्द झा 'रमण', शेखर प्रकाशन, पटना,1993।
35. मैथिली साहित्य ओ राजनीति, डॉ. रमानन्द झा 'रमण', अखियासल प्रकाशन, 1994।
36. कविवर जीवन झा रचनावली, सं.- श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', डॉ. रामदेव झा, मैथिली अकादमी पटना,1980।
37. यदुवर रचनावली, सं.- डॉ. रमानन्द झा रमण, मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी, असम,2003।
38. स्वातन्त्र्यस्वर, सं- पं. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', भूमिका, साहित्य अकादेमी, दिल्ली, 1994।
39. मधुपक बीछल बेरायल कविता, साहित्य अकादेमी, सं- फूलचन्द्र झा प्रवीण,2008 ।
40. मधुप, अमर कीर्ति कवि तोर, सं-डॉ. अशर्फी झा 'अमरेश', मिथिला सांस्कृतिक समिति, कलकत्ता, 1988।
41. सीमान्त, कीर्तिनारायण मिश्र।
42. पूर्वांचलीय गीति साहित्य, पं. गोविन्द झा (सम्पादक), चेतना समिति, पटना।
43. आधुनिक मैथिली कविता, डॉ. हरिमोहन मिश्र, मैथिली अकादमी, पटना, 1980।
44. आधुनिक मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमि, डॉ. अमरनाथ झा, अमृत प्रकाशन, दरभंगा, 1994।
45. ईशनाथ झा, वेदनाथा झा, साहित्य अकादेमी, दिल्ली, 1997।
46. श्यामानन्द झा, किशोरनाथ झा, साहित्य अकादेमी, दिल्ली, 2012।
47. काञ्चीनाथ झा 'किरण', कुलानन्द मिश्र, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1998।
48. सीताराम झा, डॉ. भीमनाथ झा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1983।
49. सुरेन्द्र झा 'सुमन' रचना संचयन, सं.- श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', श्री शंकरदेव झा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2012।
50. सुरेन्द्र झा 'सुमन', जयमंत मिश्र, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2005।
51. मैथिली साहित्य विमर्श, गोविन्द झा, नवारम्भ पटना, 2017।
52. मैथिली साहित्यकारत्रय, सं-देवेन्द्र झा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2010।
53. भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', नरेश कुमार विकल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2007।
54. मैथिली गद्य-पद्य संग्रह, मैथिली अकादेमी, पटना, 2000।
55. हम भेटब, मार्कण्डेय प्रवासी, जखन-तखन, दरभंगा, 2004।
56. सूर्यमुखी, आरसी प्रसाद सिंह, मैथिली अकादेमी पटना, 1981।
57. अवान्तर, मायानन्द मिश्र, मैथिली चेतना परिषद, सहरसा, 1988।

58. प्रगीत, श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, पूर्वांचल प्रकाशन, 1977।
59. सुगीत, श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, पूर्वांचल प्रकाशन, 1977।
60. अपूर्वा, रामलोचन ठाकुर, मिथिला समाद, कलकत्ता, 1996।
61. थोड़े आगि थोड़े पानि, सियाराम झा 'सरस', नवारम्भ, पटना, 2008।
62. नै भेटतौ खालिस्तान, सियाराम झा 'सरस', सरला प्रकाशन, 1994।
63. धरि प्रश्न ई उठैए, सियाराम झा 'सरस' झारखंड मिथिला मंच, राँची, 2015।
64. आखर आखर गीत, सियाराम झा 'सरस', सरला प्रकाशन, 1999।
65. षष्ठी तत्पुरुष, संपर्क, राँची, 2010।
66. शोणितायल पैरक निशान, सियाराम झा 'सरस', सरला प्रकाशन, 1989।
67. लोकवेद आ लालकिला, सं- सियाराम झा 'सरस', विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा, 1990।
68. बाजि उठल मुरली, उपेन्द्र ठाकुर, 'मोहन', श्री नागेन्द्र ठाकुर, शुभंकरपुर, 1977।
69. मैथिली पद्य-मालिका, बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना,1999।
70. कविवर जीवन झा रचनावली, सं.- श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', डॉ. रामदेव झा, मैथिली अकादमी पटना ,1980.
71. हिलकोर, ताराकान्त झा, कल्याणी लेजर, कोलकाता, 2015।
72. बहुवचन, तारानन्द वियोगी, किशुन संकल्प लोक, 2015।
73. अपन युद्धक साक्ष्य, तारानन्द वियोगी, किसुन संकल्प लोक, 2016।
74. क्यो नहि दै अछि आगि, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, सृजन प्रकाशन,2016।
75. अनामिका, डॉ. चन्द्रमणि झा, नवारम्भ, पटना, 2016।
76. बहुरूपिया प्रदेशमे, अरविन्द ठाकुर, नवारम्भ, पटना, 2011।
77. सरिता, जगदीश प्रसाद मण्डल, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली, 2013।
78. तीन जेठ एगारहम माघ, जगदीश प्रसाद मण्डल, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली, 2013।
79. कलानिधि, कालीकांत झा 'बुच', श्रुति प्रकाशन, दिल्ली, 2010।
80. घुरि आउ गाम, डॉ. अरविन्द अक्कू, नवारम्भ, 2017।
81. मैथिली पद्य-मालिका, बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना,1999।
82. जे कहि नञि सकलहुँ, मैथिली साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति, मधुबनी, 2014।
83. राग-उपराग, अमित पाठक, नवारम्भ,2017।
84. तोरा अंगनामे , जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', हेमचन्द्र लाल कर्ण, 1978।
85. गीत गंगा, जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'शेखर प्रकाशन, 2013।
86. गजल गंगा, जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' (अप्रकाशित)।
87. अनचिन्हार आखर, आशीष अनचिन्हार, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली।
88. पहरा इमानपर, बाब बैद्यनाथ, गौरी प्रकाशन, 1989।
89. कान्हपर लहास हमर, कलानन्द भट्ट, किसुन संकल्प लोक, 1983।
90. गजल ओ गीत, सुधांशु शेखर चौधरी, शेखर प्रकाशन, 1991।

91. किओ बूझि नै सकल हमरा, ओमप्रकाश झा, श्रुति प्रकाशन, 2012।
92. नव अंशु, अमित मिश्र, श्रुति प्रकाशन, 212।
93. मोनक बात, चन्दनकुमार झा, श्रुति प्रकाशन, 2012।
94. दुखक दुपहरिया, गंगेश गुंजन, क्रांतिपीठ प्रकाशन, 1999।
95. अहींक लेल, विजयनाथ झा, शेखर प्रकाशन, 2008।
96. माँझ आँगनमे कतिआयल छी, मुन्नाजी, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली, ।
97. धाँगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छ, गजेन्द्र ठाकुर, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली।
98. History of Maithili Literature, Part-2, Dr. Jaykant Mishra.
99. ChandaJha, Jayadeva Mishra, Sahitya Akademi, 1981.
100. A Survey of Maithili Literature, Dr. Radhakrishna Chaudhary, Shruti Publication Delhi, 2010.
101. A History of Modern Maithili Literature, Devakant Jha, Sahitya Akademi, 2004.
102. Maithili Chrestomathy- G A Grierson, Aisatic Society, Kolkata, 1881.
103. The Origin & Development of the Bengali Language, Pt-I, Dr. Suniti Kumar Chatterji, Calcutta University Press, 1926.
104. A History of Brajabuli Literature, Dr. Sukumar Sen, University of Calcutta, 1935.
105. The Vaishnav Literature of Mediaeval Bengal, Dr. Dinesh Chandra Sen, University of Calcutta, 1917.
106. Studies in Several Literature, H T Peck, Dodd Mead and Company, 1909.
107. A Handbook of Poetics, B. Gummere, GINN AND COMPANY, 1988.
108. Methods and Materials of Literary Criticism, Dr. Charles Mills Gayley, GINN AND COMPANY, 1919.
109. The Golden Treasury of the best Songs and Lyrical Poems, Macmillan and Co. London, 1861.
110. Philosophy of Fine Arts, GWF Hegel.

पत्र-पत्रिका

1. भारती-मंडन
2. मिथिला समाद
3. रचना
4. मिथिला दर्शन
5. समय साल
6. घर-बाहर

7. मिथिला दर्पण
8. मैथिली दर्पण
9. कर्णामृत
10. पूर्वोत्त मैथिल
11. श्री मिथिला
12. अरुणिमा
13. देसिल वयना
14. विदेह, ई-पत्रिका

*****